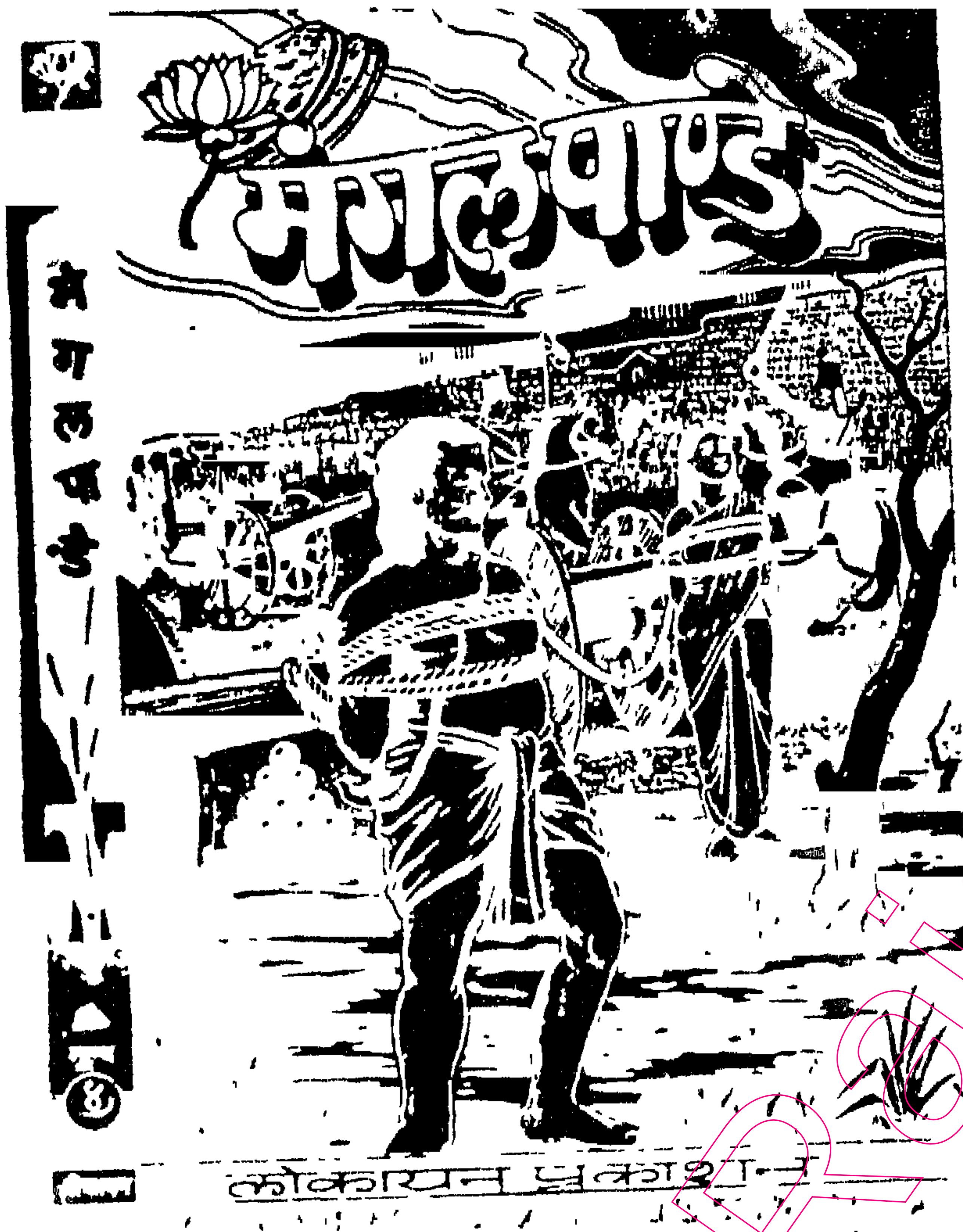


मंगल पाँडे

लोकायन
बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा
सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा
शैक्षणिक साहित्य के प्रकाशक

पहले भारतीय विद्रोह का पहला सेनानी
स्वतन्त्रता संग्राम का अमर शहीद

मंगल पाण्डे

(ऐतिहासिक उपन्यास)

लेखक

डा० श्यामसुन्दरलाल दीक्षित
(एम० ए०, पी-एच० डी०, साहित्यरत्न, प्रभाकर)

प्रकाशक

लोकायन
मोती मसजिद, भूपाल

सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा
शैक्षणिक साहित्य के प्रकाशक

Uploaded By Rajesh Tanti.

प्रकाशक :—
देवेन्द्रकुमार दीक्षित
अध्यक्ष, लोकायन,
पोस्ट बाक्स नं० २५
मोती मसजिद, भूपाल
(मध्य प्रदेश)

शाखा :—
लोकायन
(जज साहब का बाड़ा)
बाग मुजफ्फरखाँ, (आगरा उ० प्र०)

छबिकार
देवीसिंह चित्रकार
चित्रकुटीर, देहरादून

ब्लाक्स—
१. एस० ई० बुकानेन एण्ड कं० प्रा० लि०
१७ मंगलोरस्ट्रीट, फोर्ट बम्बई,
२. भूपाल प्रोसेस स्टूडियो
मोतियापार्क भूपाल ।

मूल्य चार रुपया
अथवा
(चार सौ नए पैसे)

पहला संस्करण
१९५७ प्रतियाँ
३१मई, १९५७ ई०

मुद्रक—
लक्ष्मीनारायण यादव,
यादव प्रेस,
राजामण्डी,
आगरा ।



अर्ज करता हूँ.......

"न किसी के भाव का भार हूँ, न किसी के प्राण का प्यार हूँ।
न मैं कल्पना का श्रृङ्गार हूँ, न मैं साधना का विहार हूँ॥
जो जली-बुझी वो शमग्रा हूँ मैं, जो बिखर गई है वो छार हूँ।
जो कभी चढ़ा वो नशा हूँ मैं, जो उतर गया वो खुमार हूँ॥"

महामना ज़फ़र की जमीन में आत्म-परिचय है यह। उनका सब कुछ आज़ादी के संघर्ष में लुट गया तो अपना आजादी के बाद। शिकायत है न शिकवा, क्योंकि दर्द की दुनियाँ देकर ही 'दिलवालों' को यहाँ भेजा जाता है। किशोरावस्था से पूर्व ही जीवन पर पूज्य ताऊजी पं० गेंदालालजी दीक्षित का प्रभाव था—वे पहले क्रान्तिकारी थे, शस्त्रोपजीवी, एक हाथ में रिवाल्वर और दूसरे में प्राण लेकर चलने वाले। रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाकउल्ला तथा रोशनसिंह उन्हीं की शिष्य परम्परा में शहीद हुए। १९२८ ई० में, स्वतन्त्रता की लहरों में बह गया। कितने ही चेहरे देखने में आए परन्तु एक विशिष्ट व्यक्ति ने अत्याधिक आकर्षित किया—आज भी हैं वह, अपने मकान की बाहरी कोठरी के द्वार पर बैठने वाले, हँसमुख प्राणी, समस्त स्नेह उँडेल देने वाले बच्चा बाबू! आगरा में रेवोल्यूशनरी पार्टी के प्राण। १९३४ ई० में फाँसी की सजा पाने वाले परन्तु स्व० श्री कपिलदेव मालवीय की कुशलता-प्रवीणता से जीवन प्राप्त हुआ। मैंने उनसे कहा, "मंगलपाण्डे पर उपन्यास लिख रहा हूं। आपका सुपुत्र देवेन्द्र उसे लेकर आपके पास आयेगा—आशीर्वाद दीजियेगा।" खिलखिलाकर हँस पड़े बच्चा बाबू, बोले—"जैसों के तैसे ही होंगे—भेजना उसे, जी भरकर आशीर्वाद दूँगा। यह बच्चे ही तो भावी भारत की आशा हैं।"

हाँ, तो १९४७ तक ऐसा ही कुछ 'धन्धा' करता रहा और उसके बाद अपनी सरकार ने लगभग एक-डेढ लाख की जमीन्दारी 'पब्लिक परपज' के

लिए प्राप्त करली जो कुछ मुआवजा मिला वह एक 'कृपालु रिश्तेदार' ने स्वीकार कर लिया। यह अन्तिम आर्थिक बलिदान हुआ।

न तो सेवा बेचने की भावना ही थी और न अपने लेखे कुछ ऐसा काम ही किया था कि सरकार से 'कम्पेनसेशन' मिल जाता, अतएव छोड़ी हुई पढ़ाई फिर से आरम्भ करदी। आज शिक्षा के क्षेत्र में बैठा हुआ हूँ—क़लम हाथ में है, सैकड़ों बेटे-बेटियाँ (विद्यार्थीगण) सामने हैं। देश-नारायण की सेवा में लगा हुआ हूँ।

जीवन में अपमान भी पाया है और सम्मान भी, धूल भी फाँकी है और धक्के भी खाए हैं—तीखी वाणी में भी बोला हूँ और प्रशंसा के स्वर भी निकाले हैं, लेकिन अन्तिम परिणति यह है कि 'लौट कर घर आगया हूँ।'

हमेशा 'बड़े लोगों' के गुण-गान होते रहे हैं—यह परिपाटी राजनीति में भी रही है। अधिकार और शक्ति की पूजा संसार ने की है—गाँधीजी ने नहीं, उन्होंने उसकी उपेक्षा की और तभी वे महात्मा हुए। सुसंस्कृत व्यक्ति, समझदारी के साथ, भवन की नींव देखता है, कितनी मज़बूत है और कितनी गहरी। नींव के पत्थर बोलते नहीं है, छिपे-दबे पड़े रहते हैं। आकर्षित करते हैं सुन्दर-शिखर, जो झूम-झूमकर अपना सौन्दर्य लुटाते-बिखराते हैं—जिनके 'जुकाम की छींक' भी अखबारों में छप जाया करती है।

मेरा मंगल 'नींव का पत्थर' है—मेरी ऐसी मान्यता है। अपने दूसरे जन्म में भी वह ऐसा ही रहा—यह मेरा विश्वास है। आप भिन्न सम्मति रख सकते है, प्रजातन्त्र के युग में, मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। वह 'दरिद्रनारायण' था, उसकी 'भारती' उसके जीवन की आरती थी। विपदा के बादल उसकी भौंहों पर बल नहीं डाल सके। तोप का धडाका अथवा गोली का तड़ाका उस अचल को विचल नहीं कर सका। परन्तु, वियोग की बेला में 'हिमालय की आँखों में आँसू' भर आए थे। उसके शरीर में 'मा का मन' था। उस मोहन-मंगल को मेरा और मेरे राष्ट्र के मेरे जैसे करोड़ों व्यक्तियों का श्रद्धार्चन है यह मेरा उपन्यास।

यह मेरा पहला उपन्यास है। माँसल और रोमानी छोटी कहानियाँ तो ढेरों लिखी हैं। यदि आप औपन्यासिक तत्त्वों के आधार इसे उपन्यास स्वीकार नहीं करें तो, मेरा निवेदन है कि यह प्रजातन्त्र के धरातल पर मेरी इति-कर्त्तव्यता है, मेरा एक फ़र्ज़ है जिसे मैंने जमहूरियत में पूरा किया है—बस! बड़े पैमाने पर राष्ट्र की ओर से शताब्दि मनाई जारही है। उस विशाल दीपक की ज्योति में मेरी यह छोटी-सी 'वार्ता' है—इसे यों मानकर अनुगृहीत कीजिए।

ऐतिहासिक उपन्यास का बाना पहनाकर भी, जो मैंने उपन्यासकार के स्वातन्त्र्य और कल्पना का अपना अधिकार नहीं छोड़ा है, उसे सामने रखकर सफलता की बात करना शायद ठीक नहीं होगा। ऐतिहासिक उपन्यास के प्राणों में तथ्यात्मक कठोरता छिपी रहती है—मैंने यत्र-तत्र उसका भी उपयोग किया है और बहुत सँभल कर। फिर भी आशंका है कि आप कहीं, किसी स्थान पर ऊब उठें, तो उसे मेरे पहले प्रयास की सीमा-बद्धता अथवा अन-भिज्ञता जानकर छोड़ दें। जहाँ कहीं आपका मन रमे, कोई स्थल आपको प्रिय जान पड़े तो उसका श्रेय मंगलमयी भावना को दीजिए। मैंने तो एक उपेक्षित व्यक्ति को अपेक्षित प्रमाणित किया। जो लोग, मात्र जोश की पृष्ठ-भूमि पर ही मंगलपाण्डे की स्थिति मानते रहे हैं, उनको ज्ञात होगा कि मेरा मंगल होश की 'कैनवास' है, जिस पर बड़ी सफलता के साथ प्रथम-स्वतन्त्रता-संग्राम का संघर्ष चित्रित हो सका है।

अपने पक्ष-समर्थन में जिन लेखकों का साहाय्य मिला है, मैं उनका अनुगृहीत हूँ। धन्यवाद के पात्र है श्री देवीसिहजी चित्रकार और श्री भगवान-दासजी यादव और श्री लक्ष्मी नारायणजी यादव। तीनों ने, उपन्यास को साज-सज्जा प्रदान की है।

मेरे शिष्य हैं चिरंजीव राजेन्द्र 'नूतन'—जिसे प्यार से मेरा पुत्र भी 'सालीसिल' कहता है। मुस्कुराहट ही जिसका जीवन है। ज्वराक्रान्त 'चाचाजी' के समीप बैठकर—मेरा 'डिक्टेशन' लेता रहा और इस प्रकार यह उपन्यास समय से पूरा हो गया। मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद।

'आत्मा वै जायते पुत्र'—चिरंजीव देवेन्द्रकुमार दीक्षित है। किशोरावस्था से ऊपर उठते ही जिसने अपनी जिम्मेदारी समझी है और जो 'मंगलपाण्डे' को लेकर 'भारत भ्रमण' के लिए चल पड़ा है। मैं आशा करता हूँ उसका 'साहसिक अभियान' पाठकों और पुस्तक विक्रेताओं का सहयोग पा सकेगा।

इसी वर्ष, तीन उपन्यास और भी आ रहे हैं, बटवारा, तलाक और जुगुप्सा। राजनीति के धरातल पर स्नेह सम्बन्धों से पूरित उपन्यास है बटवारा, तो सामाजिक विषमताओं और महत्त्वाकांक्षाओं तथा 'वैराइटीज' से भरपूर है तलाक, जिसके पात्र आपको सजीव और अजीब लगेंगे। तीसरा उपन्यास जुगुप्सा संभवतः मेरे 'जीवन भर की कमाई' होगा। मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, मर्मस्पर्शी—जिसे आप कम से कम पाँच बार पढ़ेंगे। पहली बार केवल उपन्यास समझकर, दूसरी बार कथावस्तु और उद्देश्य का बारीक निरीक्षण करने के हेतु; तीसरी बार रोमान्स और विचारधारा के अध्ययन के लिए, चौथी बार अपनी जिज्ञासा और कौतूहल वृत्ति की सान्त्वना के अर्थ तथा पाँचवी बार उपन्यास का आकर्षण आपको मजबूर करेगा पढ़ने के लिए। मैं चेष्टा करूँगा कि उसे ऐसा बनाया जाय कि आप उसे दो बार और भी अधिक पढ़े।

एक अन्य ऐतिहासिक उपन्यास भी चल रहा है—उसमें कुछ देरी की सम्भावना है—नाम है 'प्रियदर्शिनी'—मेवाड़ की पद्मिनी के जीवन-वृत्त से सम्बन्ध, कुछ नवीनतम विचारधाराओं को लेकर चल रहा हूँ।

'मंगल पाण्डे' का लेखन कार्य ८ एप्रिल १९५७ ई० को समाप्त हुआ—उस दिन, जिस दिन पाण्डे का यशोगान तोपों ने किया। अनायास ही सुयोग पाकर प्रसन्न होना स्वाभाविक था।

पाण्डे की पवित्र गाथा आपके कर-कमलो में है।

नमस्कार!

लोकायन,
भूपाल
८—४—५७

विनीत—
श्यामसुन्दरलाल दीक्षित

मंगल पाण्डे

मंगल पाण्डे

अभियान

(१)

आकाश मे बादल साफ थे और समुद्र की लहरों में एक अजीब-सी खामोशी थी। पानी के साथ जोश और जवानी लेकर संघर्ष करने वाला वास्को-दे-गामा समुद्र-तट पर खड़ा हुआ पूर्व की ओर देख रहा था। उसके परिवार के लोग उसे विदा करने आए हैं। राज-परिवार की ओर से भी उसके सम्मान का समुचित प्रबन्ध किया गया है।

एक पुराने ढङ्ग का जलपोत, अगणित सुन्दर रज्जुओ से सुशोभित, दुग्ध फेन के समान पालो से परिवेष्ठित आता हुआ दिखाई पडा। उसके किनारो पर रंगीन चित्र बने हुए थे और मल्लाह लोग पुर्तगाली भाषा मे प्रयाण-गीत गारहे थे—"मुसाफिर! तुझे बहुत दूर जाना है, बहुत दूर, उस देश तक जहाँ का आकाश चाँदी का है और धरती सोने की है, जहाँ हीरे-माणिक बिखरे पडे हैं, जहाँ की सभ्यता और संस्कृति ने सारे विश्व को अभिभूत कर रखा है। नाविक! चलो, अपने देश को समृद्धिशाली बनाने के हेतु जम्बूद्वीप चलो, आर्यावर्त चलो, भरत-खण्ड चलो! चलो साहस के पुतले बनकर, तुम्हारा देश तुमसे यही माँग रहा है।"

तट के समीप आते-आते गीत की ध्वनि मन्द पड़ गई। पुर्तगाल-नरेश के प्रतिनिधि ने वास्को-दे-गामा को अपने देश का झण्डा भेंट करते हुए कहा—"गामा! हम आशा करते हैं कि तुम अपने उद्देश्य मे सफलता प्राप्त करोगे!"

"शान्ति-दूत ईसा की दया हमारे साथ है जनरल! हमे पूरा विश्वास है कि हम भारत पहुँचने के लिए कोई नया मार्ग खोज ही निकालेंगे।"

[२]

इसके बाद अपने साथियों के सहित वास्को-दे-गामा उस जलपोत पर सवार होगया और जय-ध्वनि के साथ एक भीषण घरघराहट करता हुआ जलपोत अतल सागर के हृदय को चीर कर आगे बढ़ गया। सैकड़ों पतवारें एक साथ क्रीड़ा करने लगी और मोतियों जैसी पानी की बून्दें उछल-उछल कर जल में तिरोहित होने लगी। ऐसा लगता था मानो सुन्दरियाँ अपनी हथेलियों से मोतियों के गुच्छे उछाल रही हैं।

न जाने कितने दिन, कितने सप्ताह और कितने महीनों तक वास्को-दे-गामा समुद्र में भटकता रहा। उसका जहाज अफ्रीका के पास से होकर निकला और अन्तरीप के पास पहुँचा। थके हुए, चूर-चूर हो चुके मल्लाहों के हाथ शिथिल पड़ गये थे। उनका साहस उनका साथ छोड़ रहा था। महीनों से, चारों ओर जल ही जल देखते-देखते उनकी आँखें ऊब गई थीं, जी घबरा गया था। सदैव ही पानी की शैया पर सोने वाले नाविक धरती के दर्शन चाहते थे।

"देखो, देखो, हम किसी अन्तरीप के पास आगये हैं।" प्रधान नाविक ने हर्षोन्मत्त होकर नाचते हुए कहा।

"हाँ हाँ, धरती के दर्शन हो रहे हैं।" बीसियों कण्ठों से एक वाणी, एक ही ध्वनि सुनाई पड़ने लगी।

"साथी! दौड़ कर मालिक को खबर दे दो। हमारी जय और हमारा जीवन दोनों पास आते जारहे हैं।"

—और तब प्रधान नाविक अपने हाथ की पतवार छोड़ कर गामा के अन्त:पुर की ओर दौड़ा। यहाँ तक आने की अनुज्ञा किसी को भी नहीं थी—फिर भी साहस करता हुआ नाविक द्वार तक पहुँच ही गया।

"मालिक!" उसने भीगी हुई वाणी से पुकारा और दूसरे ही क्षण जैसे उसने द्वार पर पड़ा हुआ परदा उठाया तो देखा कि वास्को-दे-गामा घुटनों के बल बैठा हुआ, हाथ ऊपर उठाए, भगवान् से प्रार्थना कर रहा है। प्रधान नाविक के सम्बोधन से उसका ध्यान भंग होगया!

"क्या है नाविक ! तुमने मेरी प्रार्थना मे विघ्न क्यो डाल दिया ? हे भगवान् ! न जाने क्या होने वाला है।" गामा ने खड़े हुए नाविक की ओर आग्नेय दृष्टि डालते हुए पूछा—"क्या है ?"

"मालिक आपकी दुआ कुबूल होगई।"

"क्या ?"

"हाँ मालिक ! हम किसी अन्तरीप के समीप पहुंच रहे हैं। उसका पतला-सा भाग प्रत्यक्ष दिखाई देरहा है।"

"सचमुच ! क्या यह सच है नाविक ! महीनों के बाद क्या हम धरती-माता की गोद में आने वाले हैं।"

"हाँ मालिक ! हाँ—बात यही है।"

"तो चलो प्रधान ! मै भी उस पुण्यभूमि के दर्शन करना चाहता हूँ। चलो, शीघ्रता करो।"

जलयान के सबसे ऊचे स्थान पर खडे होकर वास्को-दे-गामा ने अपनी दूरबीन के सहारे देखा कि एक हरी-भरी पृथ्वी है, जिस पर हरियाली छाई हुई है। कुछ दूरी पर चहल-पहल भी मालूम होती है। गामा खुशी से फूल गया—"अब तुम शराब का आखिरी पीपा भी खोल सकते हो नाविक ! आज की रात हम इसी किनारे पर विश्राम करेंगे और आज से इस द्वीप का नाम 'आशा अन्तरीप' (केप ऑफ गुड होप) होगा"

आशा अन्तरीप के समीप लंगर डाल दिया गया। नाविकों ने जी भर कर शराब पी और रात को नाच-गाना हुआ। वास्को-दे-गामा की आन्तरिक और बाह्य प्रसन्नता ने उत्सव में जान डालदी।

दूसरे दिन प्रातः काल लंगर उठा लिया गया। पाल खोल दिये गये और फ्रान्स की हँसिनी पालों के पर खोल कर हिन्द महासागर में तैरने लगी।

२२ मई १४९८ ईस्वी के दिन मलाबार के तट पर, कालीकट के पास आकर वास्को दे गामा का जलयान ठहरा। सभी ने सुख और सन्तोष की साँस ली। जहाज पर लदा हुआ सामान नीचे उतारा जाने लगा। गामा ने

आने-जाने वाले कुछ लोगो को रोका और फ्रान्सीसी भाषा में पूछा—"क्या इसी देश का नाम भारत है ?" उन लोगो की समझ मे केवल भारत ही आया और वे स्वीकृति सूचक सिर हिला कर चल पड़े—तात्पर्य यह था कि गामा इस समय भारत की भूमि पर था।

× × ×

"हा, हां, सरकार ! मैंने स्वय उनको जहाज से उतरते हुए देखा है। लम्बी दाढ़ी, घने और बडे बाल, घुटनो तक मोजे पहने हुए और उसके ऊपर पाजामानुमा चौडा घाघरा; शिकारियो की जैसी कुर्ती और गले मे ईसामसीह का चिह्न 'क्रास' लटकाये हुए। वे जरुर ईसाई हैं।" दूत ने सक्षिप्त-सा विवरण देते हुए कालीकट के राजा सामुरी की सेवा मे निवेदन किया।

'तो हमे उनका सत्कार करना चाहिए। जाओ हमारे प्रधान सेनापति को लेजाओ" इस प्रकार प्रधान मन्त्री की ओर निर्देश करते हुए सामुरी ने कहा—"सब प्रकार की व्यवस्था की जाय। हमारे अतिथियो को कोई कष्ट नहीं होना चाहिए।

इस समय कालीकट का राजा हिन्दू था। उसका नाम सामुद्रिक या सामुरी अथवा जामोरिन पुकारते थे। सामुरी का प्रधान मन्त्री टूटी-फूटी फ्रान्सीसी और अग्रेजी जानता था। उसने अपने सीमित ज्ञान के सहारे वास्को-दे-गामा और उसके साथियो को भारतीय पद्धति से अवगत कराया। उनके विराम-विश्राम का इन्तजाम करने के पश्चात् गामा को सामुरी के दरबार में उपस्थित किया गया।

सामुरी एक वृद्ध नरेश था। भारतीय परम्परा के अनुसार उसकी आयु माया मोह से दूर रहने की थी। वह एक चौकोर सिहासन के समीप मोटे रेशमी गद्दे पर बैठा हुआ था। पीछे कई तकिये लगे हुए थे। शरीर पर बहुमूल्य सफेद रेशम का लम्बा कुरता और सिर पर एक साफा जैसी एक पगडी थी जिस पर मणि-माणिक-जटित मुकुट बंधा हुआ था। वक्षस्थल पर बड़े-बड़े मोतियो की माला झूल रही थी। उसके पास प्रधान-मन्त्री और सेनापति खड़े हुए थे—गामा ने फ्रान्स के शहशाह का एक पत्र उपस्थित करते हुए घुटनो के बल बैठ कर तीन बार झुक कर राजा को प्रणाम

किया। प्रधान मन्त्री ने परिचय-पत्र पढ़ कर सुनाया और बताया कि बास्को दे गामा अपने साथियों के सहित इस देश में व्यापार करने आया है। उसे सामुरी नरेश की आज्ञा मिलनी चाहिए।

राजा ने बड़ी प्रसन्नता से गामा से हाथ मिलाया और 'मित्र' कहकर सम्बोधन किया—"तुम हमारे राज में जी चाहे तब तक रह सकते हो और व्यापार भी कर सकते हो।"

गामा ने कृतज्ञता सूचक स्वर में हर्षध्वनि करते हुए राजा को प्रणाम किया और जवाहर-जटित एक तलवार मैत्री के चिह्न स्वरूप भेंट में दी।

इस प्रकार सबसे प्रथम पुर्तगाल के लोगों ने भारत की भूमि पर अपने चरण रक्खे। पुर्तगालियों का आना-जाना आरम्भ होगया।

सन् १५०० में पुर्तगालियों ने अपने व्यापार के लिए कालीकट में एक कोठी बनबाई और तीन साल के पश्चात उस कोठी की किलेबन्दी कर डाली तथा एक फौजी अफसर अलबुकर्क को उसका किलेदार बना दिया। अलबुकर्क ने उत्तर की ओर बढ़ना आरम्भ कर दिया और किनारे किनारे जाकर सन् १५०६ ई० में गोआ नगर पर कब्जा कर लिया। कहा यह गया कि समुद्री तट की रक्षा के लिए इस नगर का संरक्षण आवश्यक है, इसलिए पुर्तगाल सरकार मैत्रीपूर्ण ढंग से इस शहर को अपनी सुरक्षा में लेरही है।

तीन चार वर्ष में ही इन विदेशियों ने अपना वास्तविक रूप-प्रदर्शन करना आरम्भ कर दिया। पुर्तगालियों के जहाज पूर्वी और पश्चिमी तटों पर बराबर चक्कर लगाया करते थे और जब कोई भी भारतीय जलयान आस-पास से निकलता था तो उसे लूट लिया करते थे। इसके अतिरिक्त समुद्र-तटों से लगी हुई बस्तियों पर भी धावा बोल दिया करते और वहाँ के स्त्री पुरुष तथा बच्चों को पकड़ लाते तथा विदेशों मे गुलामों के रूप मे उनको बेच दिया करते थे। दूसरे पुर्तगाली अपने जहाजों में अफरीका आदि महाद्वीपों से बहुत से नर-नारियों को भर कर लाते थे, जिन्हें भारत के बाजारों में

और विशेषकर उन स्थानो मे सस्ते दामो पर बेच देते थे, जो पुर्तगालियों के आधीन रहते थे।

× × × ×

"नही, नही, तुम ला मजहब हो। तुम्हारा कोई दीनो ईमान नही है। तुमको ईसा की शरण में जाना ही होगा।" एक पुर्तगाली फौजी अफसर ने चार-पाँच आदमियो को सम्बोधित करते हुए कहा—"हिन्दू धर्म कोई धर्म नही है।"

"हे मालिक ! हमारी चोटी देख लो। हमारा जनेऊ देख लो।" गिड़गिड़ाते हुए श्याम-वर्ण व्यक्ति ने कहा।

"यह सब दिखावा है, ढोग है। सूत के धागे किसी को मुक्ति नही दिला सकते है। सिर्फ बाइबिल के द्वारा ही तुम अपने पापो से छुटकारा पा सकते हो।" पुर्तगाली अधिकारी ने कहा।

"अपने धर्म के लिए हम प्राण भी दे देगे लेकिन अत्याचार से किसी भी धर्म को स्वीकार नही करेगे।" दूसरे बन्दी ने तनिक आवेशपूर्ण-स्वर में कहा।

"इतना जोश अच्छा नही होता हिन्दू के बच्चे !" एक ठोकर मारते हुए अधिकारी ने गरजते हुए कहा—"तेरी ऐठ अभी-अभी निकाल दी जायगी।"

ताली बजाते ही दो सैनिक उपस्थित होगए।

"इस आदमी को गुनाहो से छुटकारा देना है। घोडे की पूंछ से बांध कर तमाम शहर में इसे घुमाया जाय।"

"जो भी हो, लेकिन हम अपना धर्म छोडने को तैयार नही है।" बाकी बचे हुए दो कैदियो मे से एक ने कहा—"यदि तुम हमारे हाथो से हथकडियाँ खोल दो तो हम तुम्हे बता सकते है कि भारतीय धर्म के हाथ कितने मजबूत हैं।"

"हथकडियाँ तो कल खोल दी जायेगी—तुमको अदालत के सामने पेश किया जायगा।"

चौथे व्यक्ति ने बड़े अदब से ईसाई बनना स्वीकार कर लिया। उसके

बन्धन खोल दिये गये और आज्ञा दी गई कि उसे एक अच्छे ओहदे पर नियुक्त कर दिया जाय।

दूसरे व्यक्ति को घोड़े की पूँछ से बाँध कर तमाम गोआ की सड़कों पर घसीटा गया। जब घोड़े की चाल मन्द हो जाती थी तो उसे चाबुक मार कर तेज गति से दौड़ाया जाता था। कई मील घिसटने के बाद बेचारे महादेवा के प्राण-पखेरू उड़ गये और तब उसे घृणा के साथ समुद्र में फेंक दिया गया। उसे मुक्ति मिल गई।

× × ×

पुर्तगालियों ने धीरे-धीरे मंगलोर, कच्चिन, लंका, दिव, गोआ, नेगापट्टन और बम्बई के टापुओं पर अधिकार कर लिया था। बम्बई में "ला मजहब" लोगों के लिए एक अदालत की स्थापना की गई थी। जिसे "इन्क्विजीशन' कहा करते थे—जिसका अर्थ होता है पाखण्डियों के सम्बन्ध में विचार करने वाली संस्था, जो व्यक्ति धर्म के प्रति अपराधी पाया जाय उसके सम्बन्ध में रोमन कैथोलिक गिर्जे के द्वारा किया गया निर्णय।

ऐसी ही एक अदालत में, ईसाई धर्म स्वीकार न करने वाले रामचन्द्रन को उपस्थित किया गया और आरोप लगाया गया कि वह प्रभु ईसामसीह पर ईमान लाने से इन्कार करता है। रामचन्द्रन के लाख कहने-सुनने या रोने-धोने पर भी कोई बात नही सुनी गई और न्यायाधिकरण की आज्ञानुसार उसे जीवित जला देने का दण्ड दे दिया गया।

और शहर के मध्य-भाग में उस निरीह व्यक्ति को लकड़ियों के ढेर से बाँध कर जला दिया गया।

परिणाम स्वरूप गोआ की अधिकाँश आबादी ईसाई धर्म में प्रविष्ट होगई। किसी ने प्राण रक्षा के उद्देश्य से, किसी ने अच्छा ओहदा पाने की आकांक्षा से, तो किसी ने पेट की ज्वाला बुझाने के लिए ईसामसीह के चरणों में, करुणामूर्ति ईसा के निरंकुश अनुयायियों की इच्छा-वेदी पर अपने आप को बलिदान कर दिया। सभी स्थानों पर पादरियों और मिशनरियों का बोल-बाला होगया।

× × ×

"देखा आपने ? आखिर इस जामोरिन की हिम्मत यहां तक बढ़ गई कि वह हमारी ताकत से टकराना चाहता है।" अलबुकर्क ने अपने विचार-कक्ष मे टहलते हुए वास्को-दे-गामा से कहा।

"क्या लिखा है उसने सेनापति ?" गामा ने पूछा।

"लिखा है, तुम लोग हमारी प्रजा को जिस तरह कष्ट पहुँचा रहे हो, वह सहन नही किया जा सकता है। तुम्हारे धार्मिक अत्याचार और राजनैतिक अनाचारों के समाचार से महाराज को यह लिखने के लिए बाध्य होना पड रहा है कि यदि तुम लोग अपने आपको सुधारने की चेष्टा नही करोगे तो तुमको भारत की भूमि से बलपूर्वक निकाल दिया जायगा।"

और तब गामा की उन्मुक्त हसी से सारा वातावरण गूंज उठा—"बूढा कुत्ता ! वह स्वयं नही जानता, वह क्या कहना चाहता है। क्या जबाब देना चाहते हो सेनापति !"

मेरी राय में इसका उत्तर हमारी बंदूके दे सकेंगी। मै कल यहाँ से कालीकट के लिए चल देना चाहता हूँ। रात के गहरे अँधियारे में जामोरिन के महलों पर धावा कर दिया जायगा। बेखबर सोते हुए लोग घबराकर दौड़ने लगेंगे, इसी समय महलों में आग लगादी जायगी।"

"योजना सुन्दर है सेनापति ! लेकिन··· ।"

"फतह अपनी होगी, आप विश्वास रखे।"

१५१० ईसवी के सितम्बर मास के कृष्ण-पक्ष में, एक रात को जब गहरा अन्धकार छाया हुआ था, अलबुकर्क अपनी सेना के सहित कालीकट जा पहुँचा। उसने अपनी योजनानुसार महल के चारों ओर प्रचण्ड अग्नि-शिखा प्रज्वलित करदी और सामुरी के महलों पर धावा बोल दिया। आग मे बचने के लिए जब लोग बाहर भागने लगे तो पुर्तगालियों की बन्दूकों ने उनका स्वागत किया। लोग धराशायी होने लगे। महल के भीतर से बरछी, बाणों और भालो के सहारे रक्षा के जितने भी उपाय किये गये, वे सभी निष्फल सिद्ध हुए और प्रातःकाल की बेला में विजयी अलबुकर्क के सामने जामोरिन अर्थात् सामुरी बन्दी के रूप में खड़ा हुआ था।

"सेनापति ! तुमने धोखा किया है।" सामुरी ने कहा—"रात में चढ़ाई करना और महलों को आग लगा देना, निरीह नर-नारियों को गोलियों से भून डालना—क्या तुम्हारा धर्म तुम्हें यही सिखाता है ?"

"धर्म की बात धर्म के साथ होती है सामुरी ! राजनीति में सब कुछ चलता है।" अलबुकर्क ने हँसते हुए कहा—"समय का खेल है। कल जो लोग तुम्हारे सामने झुककर सलाम कर रहे थे आज तुम्हें उनके सामने झुकना पड़ेगा।"

"भारत की मिट्टी से बने हुए सामुरी के टुकड़े हो सकते हैं पुर्तगाली पतित ! उसे झुकाया नहीं जा सकता।"

"ब्लैडी !" और इसके साथ ही साथ अलबुकर्क के हाथ की पिस्तौल गरज उठी। एक साथ छह गोलियाँ सामुरी के शरीर में प्रवेश कर गईं। बूढ़ा लड़खड़ाता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा और क्षण मात्र में उसका निर्जीव शरीर शेष रह गया।

केवल बारह साल पहले जिस स्थान पर वास्को-दे-गामा ने धरती को चूम कर आश्रय पाया था, वही स्थान मेजबान के रक्त से लाल होगया था। कृतघ्नता और अकृतज्ञता का ऐसा उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं मिलेगा।

कालीकट भी पुर्तगालियों के अधिकार में आगया। सौ-सवा सौ वर्षों के अन्दर, न जाने कितने अलबुकर्क आए और न जाने कितने वास्को-दे-गामा भारत की भूमि पर पल्लवित हुए—परिणाम यह हुआ कि भारत की लूट से पुर्तगाल चमक उठा और १७ वीं शताब्दि के आरम्भ तक पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक सम्पदा से समस्त योरप की आँखों में चकाचौंध पैदा कर दिया।

\+ + + +

सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में पुर्तगालियों का व्यापार भली प्रकार फैल गया था। धीरे-धीरे उनके व्यापार की सीमा बंगाल की ओर धावित होने लगी; यों तो बंगाल के किसी भी भाग पर उनका राज्य स्थापित नहीं हो

सका; फिर भी लूट-पाट के अभ्यस्त पुर्तगाली लोगों ने बंगाल के आस-पास के नगरों और ग्रामों मे लूट-पाट करना जारी रखा। वही अत्याचार, वही गुलाम और बाँदियो का व्यापार। उनके किसी भी काम में कोई कमी नहीं दिखाई पड़ती थी।

इस समय मुगल-साम्राज्य की जड़ें पक्की हो चुकी थीं। शाहजहाँ दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान थे, और जनता में सब प्रकार की सुख-शान्ति तथा पारस्परिक प्रेम की भावना विद्यमान थी।

दिल्ली के तख्ते-ताउस पर राजसी वेष-भूषा में दरबार के मध्य बैठे हुए शाहजहाँ के सामने एक राज-सेवक हाथ बाँधे खड़ा हुआ है और बादशाह की आज्ञा का इन्तजार कर रहा है।

"क्या कहना चाहते हो अहलकार! बंगाल की हुकूमत ठीक तरह से चलाई जारही है या नहीं?" बादशाह ने गंभीर वाणी में प्रश्न किया।

"पनाहे आलम!" सेवक ने झुककर सलाम करते हुए कहा—"सरकार के जाहोजलाल से तमाम रियासत में अम्न और चैन है। सारा बंगाल शहशाहे दो आलम की जय-जयकार कर रहा है, लेकिन...."

"लेकिन क्या? तुम आखिर हमारे हुजूर मे क्या कहना चाहते हो! मा बदौलत सब कुछ सुनना चाहते हैं। सब कुछ कहो मफीर! डरने की कोई बात नहीं है।"

"आलीजाह! एक अरसे से पुर्तगाली लोगो ने बंगाल के आसपास तबाही मचा रखी है। जहाजों को लूट लेना, जबरिया ईसाई बना लेना, आने जाने वालों से खिराज वसूल करना—गोया अमत-बरदारी और हुकूमत शहंशाहे हिन्दोस्तान की नहीं है।"

"और हमारे सूबेदार ने यह सब क्यों होने दिया?"

"सरकारे आलिया! सूबेदार रहमान खान ने पुर्तगालियों को कितनी मर्तबा बाबर किया और हुजूर की नाराजी का डर भी दिखलाया लेकिन कोई असर नहीं हुआ।" संयत भाषा में राजदूत ने निवेदन किया।

"सूबेदार ने फौज को हुकुम नहीं दिया ?"

"सिर्फ हुजूर के हुक्म का इन्तजार है।"

"सेनापति ! हमारा हुक्म है कि फ़ौरन बंगाल के लिए कूच कर दिया जाय और इन पुर्तगालियों को ऐसा सबक दिया जाय कि वे लोग जिन्दगी-भर फिर कभी सिर न उठा सकें। सफीर ! सूबेदार के पास हम अपना फरमान भेज रहे हैं।"

सेनापति ने झुक कर सलाम किया और सफीर ने भी। दोनों एक ही मंजिल की तरफ चल पड़े। धावा मारती हुई मुगल-सेना और राजपूत सैनिकों की टुकड़ी हुगली तक जा पहुँची। साथ ही दूसरी ओर से बंगाल का सूबेदार अपनी सेना लेकर आगया। थोड़े ही समय के भीतर पुर्तगाली हरा दिए गए। उनकी हुगली की कोठियाँ नष्ट करदी गईं और उनके जहाज जला डाले गए तथा जो पुर्तगाली शेष रह गए थे उनको बन्दी बनाकर आगरा भेज दिया गया। इस प्रकार भारत से पुर्तगाली सत्ता समाप्त करदी गई। केवल गोआ में उनका राज्य शेष रह गया और उनके पश्चात् डच लोग भारत में पहुँचे। यह लोग हालेण्ड के रहने वाले थे और इन्होंने रहे बचे पुर्तगालियों के जहाजों और कोठियों पर अधिकार जमा लिया तथा उनकी बची हुई सत्ता अपने हाथों में ले ली।

एक पुर्तगाली लेखक ने पुर्तगाली सत्ता के पतन के विषय में लिखा है—"पुर्तगाल निवासियों ने एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में सलीब (क्रास) लेकर भारत में प्रवेश किया किन्तु जब उन्हें यहाँ बहुत अधिक सोना दिखाई पड़ा तो उन्होंने सलीब को दूर रख दिया और उस हाथ से अपनी जेबें भरनी शुरू करदीं और जब उनकी जेबें इतनी भारी हो गईं कि वे उन्हें एक हाथ से न संभाल सके तो उन्होंने तलवार भी फेंक दी। ऐसी दशा में जो लोग पुर्तगालियों के पश्चात् भारत में आए वे बिना किसी कठिनाई के उन पर छा गए।"*

ALFONZO.

---

*Alfonzo-de-Souza, Governor of Portuguese India, 1545.

सन् १४९८ मे, जिस दिन योरोप का सबसे पहला निवासी वास्को-दे-गामा भारत की भूमि पर आया, उस समय दिल्ली के सिंहासन पर इब्राहीम लोदी मुल्तान के रूप में आसीन था। सारे देश मे हलचल का वातावरण था। इससे कुछ ही पूर्व १४९१ ई० मे सिकन्दर लोधी ने समस्त बिहार को विजय कर लिया और जौनपुर के अन्तिम शासक हुसेन शाह को भगा दिया। इस समय बँगाल में सिकन्दर शाह का शासन था और गुजरात में सुल्तान महमूद बीगड़ का। मालवा खान देश में महमूद खिलजी का शासन चल रहा था। राजपूताना में रायमल की धाक थी और अनेकों राजपूत राजा लोग परस्पर एक दूसरे को पराजित करने मे प्रयत्नशील थे। इन्ही दिनो में पुर्तगालियो के व्यापार के कारण पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन का महत्त्व और भी बढ़ने लगा था। यूरोप मे डच लोगो ने विभव और वैभव का वर्णन सुना तो उनका हृदय भी धन कमाने की ओर आकर्षित हो गया। १५९८ ई० में डच लोगों के जहाज अफ्रीका के नीचे के जावा होकर भारत पहुँचने लगे। इस समय भारत के सिंहासन पर अकबर महान सुशोभित था, जिसने शान्ति और प्रजा की सहानुभूति के आधार पर मुगल साम्राज्य की स्थापना की थी।

ऐतिहासिक खोज से यह पता चलता है कि दक्षिण भारत उत्तरी भारत से इस समय बिल्कुल पृथक पड़ा हुआ था। डच जाति के लोग सबसे पहले पुलीकट पहुँचे और तत्कालीन नरेशो ने उनका वैसा ही स्वागत किया जैसा कि पुर्तगालियो का हुआ था। धीरे-धीरे पुलीकट से आगे बढकर मद्रास मे डच लोगों ने अपनी कोठियाँ बनवाई और किले खडे किये। पुलीकट वर्तमान मद्रास के उत्तर में है और मद्रास दक्षिण में है। डच लोगो ने भारतवासियो से पुर्तगालियो की बड़ी निन्दा की और जिस तरह पुर्तगालियों ने अरब सौदागरो की रोजी और रोटी छीनली थी ठीक उसी प्रकार डच लोगो ने भी पुर्तगालियों का व्यापार छीनना आरम्भ करदिया। १६६३ ई० में आगरा में डच लोगों की एक कोठी बन चुकी थी जहां जौ को सडा कर

शराब बनाई जाती थी । इसके बाद सूरत, अहमदाबाद और पटना में भी उनकी कोठियाँ स्थापित होगई । धीरे-धीरे उनका व्यापार बढ़ने लगा और बगाल मे प्रवेश पाते हुए डच लोगो ने चुचडा (चिनसुरा) में एक कोठी बनाली, जिसका निर्माण १६७५ ई० मे हुआ। डच लोगो की अभिलाषा अब अपना राज्य स्थापित करने की होगई परन्तु इसी समय अ ग्रेज लोगो का ध्यान भारत की ओर आकर्षित हुआ और एक साधारण घटना के द्वारा अंग्रेजो को उस जलमार्ग का पता चल गया जिसके द्वारा आसानी से भारत पहुचा जा सकता था।

× × ×

समुद्र कुछ शान्त था, ऐसा ज्ञात होता था कि थोड़े समय के पश्चात् कोई तूफान आने वाला है। नीले आकाश मे सफेद बादलो के टुकडे बड़े भले और सुहावने मालूम होरहे थे। दूर-दूर तक फैला हुआ प्रकाश जल-मार्ग से जाने वाले जहाजो के लिए बडा आशाप्रद था। एक पुर्तगाली जहाजो का बेड़ा इस समुद्र में बड़ी शान के साथ अपना राष्ट्रीय ध्वज लहराता हुआ चला जारहा है। नाविक लोग अपनी परम्परा के अनुसार समुद्र का गीत गाते हुए चले जा रहे है। पोत के मध्य में बहुत-सा कच्चा माल भरा हुआ है और बहुत-सा ऐसा तैय्यार माल भी है जिसे विदेशो में बेचने पर बहुत बडा लाभ हो सकता है। पोत के कक्ष मे कुछ लोग बैठे हुए हर्षोल्लास से बाते कर रहे हैं।

"इस बार निश्चित रूप से हम लोग कई करोड़ रुपया लेकर भारत से वापस लौटेगे।" अपनी दाढी पर हाथ फेरते हुए वृद्ध व्यक्ति ने कहा और प्रसन्नता की रेखा उसके चेहरे पर नाचने लगी।

"लेकिन इस बार मै आपकी कोई बात नही मानूँगा और अपने लिए सोने के कडे अवश्य बनवाऊँगा, जिनमें जवाहर और माणिक जड़े हुए होंगे। पैरो मे पहन कर जब मै पुर्तगाली समाज में उनका प्रदर्शन करूँगा तो देखने वालों की आँखे चौध जायँगी।" उस नवयुवक ने उत्तर में बोलते हुए वृद्ध पुरुष की ओर ममता की दृष्टि से देखा।

"नहीं, नहीं मैं दोनो पैरों में सोने के कडे नही पहना सकूँगा। लेकिन वादा करता हू कि एक पैर का कड़ा तुमको अवश्य मिल जायगा।"

"भगवान करे तुम्हारी यह यात्रा कभी पूरी न हो, तुम मेरी छोटी-सी बात भी नही रखना चाहते हो।" युवक गुस्से के मारे इतना कहकर भीतर के कक्ष मे से निकल कर बाहर की ओर चला गया।

सहसा वृद्ध के कानो में नाविको के चिल्लाने की आवाज आई और जब उसने जहाज के ऊपरी भाग में जाकर देखा तो वह आश्चर्य चकित रह गया। सामने की ओर से एक जंगी जहाजों का बेड़ा चला आरहा था। सबसे आगे-आगे जो जहाज आरहा था; उसमें छोटे-बडे सैकड़ों पाल लगे हुए थे और वह मन्द-मन्द मन्थर-मन्थर गति से चलता हुआ दिखाई दे रहा था; जिसके मस्तूल पर इँगिलिस्तान का राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा था। धीरे-धीरे इस आने वाले बेडे ने पुर्तगाली जहाजों को चारों ओर से घेर लिया और एकाएक बिना किसी प्रकार की सूचना दिए हुए अँग्रेज आरोहियों ने पुर्तगाली जहाजों पर आक्रमण कर दिया। पुर्तगाली लोगों ने इन आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला किया लेकिन अन्त मे उनको आत्म-समर्पण करना पडा।

"ऐसा मालूम होता है कि तुम लोग भारत की ओर जारहे हो?" अंग्रेजी प्रधान नाविक ने बूढ़े पुर्तगाली से पूछा।

"आपका ख्याल ठीक है। हम लोग भारत जारहे हैं और वहां जाकर व्यापार के द्वारा धन पैदा करना चाहते हैं।"

"क्या सचमुच भारत की जमीन सोना उगलती है? कुछ ही वर्षों में लिस्बन का वैभव इतना विराट हो गया है कि अनुमान नही किया जा सकता। जमीन पर सोने वाले महलो में बस रहे हैं और जो लोग पहले से ही धनी थे उनकी अवस्था बहुत उन्नत हो गई है। इससे हम समझते हैं कि भारत की ओर से पुर्तगाल मे जो धन आया है वह अपार है और उसका अनुमान नहीं किया जा सकता।"

"आप ठीक कहते हैं।"

'हम चाहते हैं कि तुम लोग हमको भारत के जल-मार्ग का नक्शा दे दो ताकि अंग्रेज लोग भी अपने देश को समृद्धिशाली बना सकें।'

"लेकिन हमारे पास तो कोई नकशा नही हैं।" वृद्ध पुर्तगाली ने रुख बदलते हुए उत्तर दिया। तत्काल अंग्रेज नाविक ने अपनी पिस्तौल का मुँह वृद्ध की ओर कर दिया और कहा—"या तो जल-मार्ग का नक्शा मेरे हवाले करदो वरना जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

वृद्ध ने पर्याप्त अनुनय-विनय किया परन्तु अँगरेज नाविक द्रवित नहीं हुआ और अन्त में उसने बूढ़े पुर्तगाली को जूते की ठोकर से नीचे गिरा दिया तथा एक हवाई फायर के द्वारा आतंकित भी कर दिया। वृद्ध ने जब सुरक्षा का कोई उपाय शेष नहीं देखा तो जल-मार्ग के नक्शे आक्रान्ता के हवाले कर दिए।

सन् १५७८ में इस प्रकार की घटना यूरोप के मध्य सागर में घटित हुई और पहली बार अंग्रेज लोगों के हाथ में भारत के जल-मार्ग के नक्शे आगए।

पुर्तगाली वैभव से आकर्षित होकर अपने देश इंगलैण्ड को भी धनवान बनाने के लिए मध्य सागर में पुर्तगाली जहाजों को लूटने वाला प्रख्यात नाविक फ्रैंसिस ड्रेक था, जिसको राजभक्ति और देशभक्ति के उपलक्ष में "सर" की उपाधि से विभूषित किया गया। लूट में जो भी धन सरफ्रैंसिस ड्रेक को मिला उसके अतिरिक्त जो सबसे बड़ा लाभ अंग्रेज जाति को हुआ वह था भारत के जल-मार्ग का पता लग जाना।

+ + + +

इङ्गलैण्ड के इतिहास पर दृष्टि डालने से यह पता चलता है कि ईसा से कितनी ही शताब्दि पूर्व इङ्गलैण्ड के निवासी पूर्णतया जङ्गली थे। पर्वतों की कन्दराओं में रहते और जंगली जानवरों का शिकार करके अपनी जीविका चलाते थे। प्रायः समस्त देश असभ्य जातियों से भरा हुआ था। कुछ समय के पश्चात् आईबीरियन नाम की एक जाति यहाँ आकर बसी; जिसकी जीविका खेती और ऊनी कपड़े थे; धीरे-धीरे इनका सम्पर्क बाहर के लोगों से

स्थापित हुआ और तब ईसा से लगभग ७०० वर्ष पहले एक गोरे रङ्ग की जाति यहाँ आकर बसी। इस जाति का नाम कैल्ट था। यह जाति आयरलैण्ड में स्काट के नाम से तथा ब्रिटेन के उत्तर में पिक्ट नाम से और दक्षिण मे ब्रिटेन नाम से प्रख्यात हुई। तीसरी शाखा की संख्या अधिक होने के कारण ही इस देश का नाम ब्रिटेन पड गया। यह सभी लोग खेती करते थे और सूर्य, चन्द्र, अग्नि तथा जल आदि प्रकृति-प्रदत्त पदार्थों की पूजा करते थे और साधारण रूप से मामूली सभ्य थे। ईसा से ५५ वर्ष पूर्व रोम के प्रसिद्ध सेनापति जुलियस सीजर ने ब्रिटेन पर आक्रमण किया और इस जाति को छिन्न-भिन्न कर दिया। सन् ४३ से ४१० तक दक्षिण ब्रिटेन पर रोम का शासन रहा। इस युग मे इङ्गलैण्ड का कलात्मक विकास हुआ और तत्कालीन ब्रिटन्स पर्याप्त सभ्य बन सके।

रोमन राज्य की समाप्ति पर जर्मनी के उत्तरी निवासी आंग्ल, जूट और सेक्सन जातियों ने आक्रमण किए। लगभग डेढ़ सौ वर्ष में इन लोगो ने समस्त इङ्गलैंड पर अपना अधिकार कर लिया। इन लोगो के समय मे भी साहित्य और कला का कोई विशेष प्रचार नही हुआ, लेकिन इस समय तक ईसाई धर्म का काफी प्रचार हो चुका था। पादरी लोग अपने मत के प्रसार के लिये इधर-उधर जाते थे और कई स्थानो पर गिरजाघर भी बन गए। सन् ८२६ ई० में इङ्गलैंड मे राजवंश की नींव पडी और १०६६ तक, आंग्ल-सेक्सन राज्य चलता रहा। इसी वर्ष २५ दिसम्बर को, एक नार्मन राजपुत्र इङ्गलैंड के सिंहासन पर बैठा, जिसका नाम विलियम था। यद्यपि उसके शासनकाल में काफी विद्रोह हुआ फिर भी नार्मन राजवंश का आधिपत्य कई सौ वर्ष तक रहा। ट्यूडर वंश के राजाओ मे हेनरी सप्तम और हेनरी अष्टम ने पर्याप्त रूप से देश को उन्नत किया। इस समय देश में धार्मिक संघर्ष चल पड़ा था। प्रोटेस्टैंट और रोमन कैथोलिक दो सम्प्रदाय थे, जो परस्पर एक दूसरे के शत्रु थे।

सन् १५५८ ई० मे महारानी एलिजाबेथ का राज्याभिषेक हुआ। इस महिला के शासनकाल मे शेक्सपियर जैसा साहित्यक उत्पन्न हुआ और शिक्षा का प्रसार उत्तरोत्तर बढता गया।

सन् १४५३ के बाद जब तुर्क लोगों ने कुसतुन्तुनियाँ पर अधिकार कर लिया तो यूरोप का समुद्री मार्ग बन्द हो गया। इँग्लैण्ड से रेशम, मसाले और सोना आदि चीन तथा भारत आदि पूर्वीय देशों को भेजे जाते थे। इसलिए नवीन जल-मार्ग की खोज आरम्भ होगई। इसी अन्वेषण के फलस्वरूप १५७८ ई० में सर फ्रेंसिस ड्रेक के हाथ पुर्तगालियों की लूट में वे नक्शे लगे जिन से भारत के नवीन जल-मार्ग का पता लग गया।

× × ×

इँग्लैण्ड के विशाल राज-प्रसाद में महारानी एलिजाबेथ सिंहासन पर बैठी हुई हैं और उनके सामने कितने ही दरबारी लोग यथा स्थान बैठे हुए हैं अथवा खड़े हुए हैं। सारा दरबार विभिन्न प्रकार के झाड़-फानूसों से सजाया हुआ है। विलियम सोसिल मन्त्री पद पर आसीन हैं और उनके पास ही बाल-सिंघक जैसा अत्यन्त कुशल और गुप्तचर विभाग का अध्यक्ष बैठा हुआ है। नृत्य और गान विद्या की अत्यन्त शौकीन होने के कारण उसके दरबार मे कलाकारो का यथेष्ठ सम्मान किया जाता था। महारानी एलिजाबेथ अत्यन्त सुन्दरी, विद्वान् और बुद्धिमान होने के साथ ही साथ निर्भीक तथा गुण-ग्राहक महिला थी। इसी समय द्वार-पाल ने आकर नमन किया।

"पोप पधारे हुए हैं।" द्वारपाल ने निवेदन किया "और उनके साथ ही साथ रोमन कैथोलिक चर्च के प्रधान भी पधारे हैं।"

"दोनो का सम्मान पूर्वक दरबार मे उपस्थित किया जाय।" महारानी ने अनुज्ञा प्रदान की।

विलियम सोसिल स्वयं उठ कर गए और धार्मिक नेताओ को अभ्यर्थना के साथ दरबार मे ले आए। एलिजाबेथ ने सिंहासन से उठ कर दोनो धर्म गुरुओ का सम्मान किया और दोनो ही महानुभावो से आशीर्वाद प्राप्त किया। दोनो धार्मिक नेताओ के स्थान ग्रहण करने के पश्चात् उनसे कहा—

"मेरे पिता हेनरी अष्टम के जमाने से लेकर अब तक जितने घोर अत्याचार और विद्रोह होते चले आरहे हैं उन सबका कारण केवल धार्मिक विवाद है। मैं जानती हूँ और मानती हूँ कि दमन के द्वारा किसी की भावना को समाप्त नही किया जा सकता। और यही कारण है कि प्रोटेस्टैन्ट धर्म के अनुयायियो

की संख्या काफी बढ गई है । मैं समझती हूँ कि हमारे देश के लिए सबसे श्रेष्ठ यही बात होगी कि दोनो धर्मों का समन्वय कर दिया जाय । इस विषय मे मैं आपकी सम्मति जानना चाहती हूँ ।"

"हम विश्वास के साथ कह सकते है कि हमारी महारानी का यह विचार अत्यधिक गंभीर है ।" पोप ने कहा ।

"जब समन्वय की बात है तो क्या आपत्ति हो सकती है ?" चर्च के प्रधान ने कहा ।

"आपकी शुभ सम्मति से हमे बडी प्रसन्नता हुई ।" महारानी एलिजाबेथ ने प्रसन्न मुद्रा मे कहा—"एंग्लिकन चर्च की स्थापना की जाय । न तो प्रोटेस्टेन्ट धर्म की उपेक्षा हो और न रोमन कैथोलिक धर्म का तिरस्कार किया जाय, मध्य मार्ग ग्रहण किया जाय, पादरियों को विवाह करने की आज्ञा दी जाय और पारस्परिक विरोध दूर किया जाय ।"

महारानी के इस सुन्दर निर्णय से समस्त दरबार में उसकी जयजयकार होने लगी, और तब एक दिन इंग्लैण्ड के कुछ अँग्रेज व्यापारियों की एक मण्डली महारानी के सामने उपस्थित हुई ।

"आप लोग क्या चाहते हैं ?"

"हम लोग भारत के साथ व्यापार करने की आज्ञा चाहते हैं ।" मण्डल के प्रधान ने कहा ।

"उसकी आज्ञा तो मिल सकती है लेकिन आप लोगो को साहसी लोगो की मण्डली (Society of Adventurers) बनानी पडेगी ।" महारानी ने कहा ।

"हमने उसका प्रारूप तैय्यार कर लिया है । उसका नाम ईस्ट इन्डिया कम्पनी होगा और हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि कम्पनी के डायरेक्टर्स ने यह निश्चय कर लिया है कि हम लोग किसी जिम्मेदारी की जगह पर किसी भद्र व्यक्ति को नियुक्त नही करेंगे ।"†

---

†"Not to employ any gentleman in any place of charge."—Bruces Annals of the Hon'ble East India Company, vol. i. p. 128.

महारानी एलियाबेथ ने इन अँग्रेजी व्यापारियों को "साहसी लोगों की मण्डली" में आयोजित कर दिया। इसका अर्थ यह हुआ कि यह मण्डली उन लोगों की है जो लूट, सट्टे आदि के लिए निकलते हैं और जो अपने धन कमाने के उपायों मे सच, झूठ, ईमानदारी, बेईमानी, न्याय और अन्याय का अधिक ख्याल नहीं रखते। इन व्यापारियों ने महारानी के समक्ष अपना जो आवेदन प्रस्तुत किया उसमे स्पष्ट कर दिया कि—"हमें अपना व्यापार अपने ही जैसे आदमियों के द्वारा चलाने की आज्ञा प्रदान की जाय, क्योंकि लोगों को यदि इस बात की थोड़ी सी भी शङ्का हो गई कि हम शरीफ लोगों को अपने यहां नौकर रखेगे, तो इस बात की सम्भावना है कि हमारे बहुत से साहसी साझीदार अपने हिस्से का धन वापस ले लेगे।"

× × ×

भारत की भूमि पर इस समय जहाँगीर का राज है, जिसने अपने जीवन में सुरा, सुन्दरी और स्वर्ण का मन चाहा उपयोग किया। नाम मात्र के इस भारत सम्राट के युग में एक नारी समस्त भारत की बागडोर अपने हाथोंमे लिए हुए थी और उसका नाम था नूरजहाँ। उसका पिता मिर्जा ग़यास बेग तेहरान का निवासी था; गरीबी के कारण गयास ने हिन्दुस्तान में आने का विचार किया। जीविका की खोज में अपनी गर्भवती पत्नी के साथ भारत की ओर चला। जब वे कन्धार पहुँचे तो उसकी पत्नी ने एक कन्या को जन्म दिया। इस परिवार की दुर्दशा पर द्रवित होकर एक धनी व्यापारी मलिक मसऊद ने, जिसके साथ वे भारत आरहे थे, उनकी सहायता की। मलिक मसऊद ने अपने प्रभाव से गयास का परिचय अकबर बादशाह से करा दिया और नौकरी में गयास की प्रतिभा खूब चमकी। वह रिश्वत लेने में बड़ा चतुर था, एक सुलेखक और कवि भी था। उसने अपनी लड़की का नाम 'मेहरुन्निसा' रख दिया और सत्रह वर्ष की अवस्था में उसका विवाह 'अली कुली इस्ताजलू' से हो गया, जो इतिहास में 'शेर-अफगन' के नाम से विख्यात है। यह एक मामूली आदमी था, जो फारस के शाह इसमाइल द्वितीय का दस्तरख़ान सजाने वाला था। भाग्य चक्र से वह भारत पहुँच गया और अकबर के दरबार में सैनिक बन गया। जब राजकुमार सलीम को राणा मेवाड़ पर चढाई करने की आज्ञा

मिली तो अली कुली भी सलीम के साथ गया। यहा उसने एक शेर मारा, जिसके कारण उसको राजकुमार सलीम ने शेरे अफगन का यह पद प्रदान किया। धीरे-धीरे वह बंगाल का सूबेदार बना दिया गया परन्तु उसने जहांगीर के प्रति विद्रोह का झडा उठाया और १६०६-७ ई० मे वह मारा गया। मेहरुन्निसा अपनी पुत्री के साथ आगरा भेज दी गई। चार वर्ष बाद, मार्च १६११ ई० मे, मीना बाजार मे, जहांगीर मेहरुन्निसा के रूप को देख कर मोहित हो गया और मई के अन्त मे उसका विवाह जहांगीर के साथ होगया। पन्द्रह वर्ष की अवस्था से ही मदिरा के हाथो अपने आपको समर्पित कर देने वाले जहांगीर को जब नूरजहा जैसी प्रमदा मिल गई तो मानो सुखद सयोग हो गया।

आगरा का दीवाने आम बादशाही वैभव से जगमगा रहा था. सरदार और सामन्त जहांगीर के कृपा पात्र बनने की चेष्टा में लगे हुए थे। इसी समय सन् १६०८ ई० में अर्थात् सर फ्रैंसिस ड्रेक को भारतीय जल-मार्ग के नक्शे मिलने के ३० वर्ष पश्चात, पहला अँग्रेजी जहाज भारत पहुंचा। इस जहाज का नाम हेक्टर था। प्राचीन यूनान मे 'हेक्टर' नाम का एक वीर योद्धा हुआ है। वैसे अग्रेजी मे हेक्टर शब्द का अर्थ हेकड़ी बाज या झगड़ालू होता है। यह जहाज सूरत के बन्दरगाह मे आकर ठहरा। इंग्लैण्ड के बादशाह जेम्स प्रथम की ओर से भारत सम्राट के नाम पत्र लाने वाला पहला अग्रेज हाकिन्स था। सूरत से मंजिल दर मंजिल तै करता हुआ हाकिन्स आगरा पहुचा और राज पौर के सामने उसने अपने काफिले को रोक दिया। उसने अपने दुभाषिये के द्वारा द्वारपाल से सम्राट की सेवा में यह निवेदन किया कि एक अग्रेज कप्तान हाकिन्स इग्लैण्ड के बादशाह का पत्र लेकर हाजिर हुआ है।

जहाँगीर की ओर से जेम्स प्रथम के पत्र वाहक हाकिन्स को आश्वासन दिया गया कि बादशाह सलामत ने उसकी मुलाकात तीसरे दिन हो सकेगी जब कि वह दरबारे आम में तशरीफ लाएँगे। यह सन्देशा जब हाकिन्स को मिला तो उसने खुदा का शुकरिया अदा किया और घुटनो के बल बैठकर ईसा मसीह से दुआ मांगी। शायद उस अग्रेज के जीवन मे यह पहला समय

था जबकि इतने बडे सम्राट ने पहली बार मे ही उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली थी।

× × × ×

आगरा का दीवाने आम खूब सजाया गया है। झाड और फानूसों के द्वारा एक अजीब प्रकार की चमक उत्पन्न हो गई है। जहाँ-तहाँ धूप-दान जल रहे, हैं जिनके कारण सारा वातावरण सुगन्धित हो रहा है। बीसियो खम्भो के आधार पर टिकी हुई दरबारे आम की छत पर सुनहले और रुपहले बेल बूटे काढे गए हैं, जो मुगल कालीन कला-प्रियता के जीते-जागते नमूने हैं। खम्भो पर भी बहुत सुन्दर नक्काशी का काम किया गया है। बादशाह के बैठने के लिए दरबारे-आम के धरातल से लगभग छह फीट ऊंचा एक मेहराबदार स्थान बनाया गया है, जिसमें कटाई का काम बडी सुन्दरता के साथ किया गया है। तमाम खम्भे और आसपास की पतली दीवारें सफेद संगमरमर से बनाई गई है जो चादी के समान चमक रही हैं। अमीर और उमराव लोग अपने-अपने स्थान पर बैठे हुए है और दरबार मे हाकिन्स हिन्दुस्तानी वेषभूषा मे अपने दो साथियो के सहित खडा हुआ है।

"बा अदब, बा होशियार। मालिके दो आलम, शहन्शाहे हिन्दोस्तान, आला हजरत तशरीफ ला रहे हैं।" नकीब ने बुलन्द आवाज में घोषणा की।

सब लोग चौकन्ने हो गए और हाकिन्स भी हाथ बाँध कर खडा हो गया। थोडी देर के बाद बादशाह सलामत अपनी बेगम नूरजहाँ के साथ दरबार की ओर तशरीफ लाए। ढाके की बनी हुई मलमल के पर्दे के पीछे मलिकाए मोअज्जमा के बैठने का प्रबन्ध था। नूरजहाँ के शरीर पर सुनहरी तारो से कढे हुए वस्त्र सुशोभित थे और कई दासियां मोर पख के छोटे-बडे पंखो से उसकी हवा कर रही थी। बादशाह जहाँगीर के सिर पर मुलायम और सफेद कपडे की राजसी पगडी थी, जिस पर जरदोज़ी का काम हो रहा था और एक बहुमूल्य कलगी उस पर सुशोभित थी, जिसके मध्य मे कोहेनूर हीरा लगा हुआ था और कितने ही बहुमूल्य मणियों तथा माणिकों से वह कलगी दमक रही थी। बादशाह लम्बा सफेद कपडे का अँगरखा पहने हुए थे और पैरों में चूडीदार पायजामा था तथा जरी के काम के जूते पहने हुए थे जिन पर

सामने की ओर लगे हुए दो हीरे दमक रहे थे। बादशाह के मुख पर एक भोली सी मुस्कान खेल रही थी और आंखो से मस्ती का सागर छलकता सा दिखाई दे रहा था।

दरबारी लोगों ने बड़े अदब के साथ उठकर बादशाह सलामत को सलाम अर्ज किया और कुछ राजे-महाराजाओ ने बादशाह की नजरें पेश की। इसके बाद हाकिन्स की बारी आई और बादशाह सलामत की नजर पड़ते ही वह दोनो घुटनो के बल धरती पर बैठ गया और जमीन चूम कर अपनी विनम्रता का परिचय दिया। बादशाह सलामत ने हाथ उठाकर उसके अभिवादन को स्वीकार किया। हाकिन्स के साथ जो दुभाषिया था उसने निवेदन किया कि इंगलिस्तान के बादशाह जेम्स अव्वल की तरफ से मुगल सम्राट के नाम हाकिन्स एक पत्र लेकर आया है।

"मावदौलत सुनना पसन्द करेगे कि उस खत मे हमारे अज़ीज़ दोस्त ने क्या लिखा है ?"

"जहाँपनाह! अपने इस खत के जरिए इंगलिस्तान के बादशाह ने आपके हुजूर मे यह दरखास्त पेश की है कि आप बराए करम अंग्रेजो को हिन्दुस्तान में रहने और तिजारत करने का हुकुम फरमाएं।"

"लेकिन हमारे दरबार में एक अर्से दराज से पुर्तगाली लोग दाखिल किए जा चुके हैं और उनको हमारे बुजुर्ग नामवार ने तिजारत करने की इजाजत दे रखी है। क्या यह उनकी हकतलफी नहीं होगी ?"

दुभाषिए ने हाकिन्स को अंग्रेजी मे बादशाह सलामत की राय से अवगत किया और उसके बाद हाकिन्स ने जो कहा उसे मुगल सम्राट की सेवा मे निवेदन किया।

"पनाहे आलम! पुर्तगाली लोग अगर अपनी जात खास की वजह से सरकारे आलिया से पनाह पाने के मुस्तहक हो सकते हैं तो इंग्लैंड के बादशाह का दर्जा किसी भी तरह पुर्तगाल वालो से छोटा शुमार नहीं किया जाना चाहिए।"

"मावदौलत इस बात की क़द्र करते हैं कि इंगलिस्तान के बादशाह ने हमारे नाम न सिर्फ दोस्ती का पैगाम भेजा है बल्कि इल्तिजा भी की है

और शहँशाहे हिन्दुस्तान को अपनी तहजीब और तमद्दुल के मुताबिक ही तमाम मसले पर गौर करना मुनासिब होगा।"

दुभाषिए ने जब हाकिन्स को बादशाह की राय से आगाह किया तो उसके चहरे पर खुशी की लहर दौड गई और थोड़ी देर के लिए अपनी सफलता को सामने देखकर वह यह भूल गया कि वह हिन्दुस्तान में खड़ा हुआ है और प्रसन्नता से उसने अंग्रेजी ढंग से बादशाह को सैल्युट पेश कर दिया। लेकिन जैसे ही दूसरे क्षण उसे यह भान हुआ कि भारत मे तो भारतीयता रखनी पडेगी, वह घबरा कर तत्काल दोजानू होकर पृथ्वी पर बैठ गया और उसने बादशाह को तीन बार सलाम किया। बादशाह सलामत उसके भोलेपन पर मुस्करा दिए और दुभाषिए की तरफ मुखातिब होकर बादशाह ने कहा—"मावदौलत इस अग्रेज के भोलेपन से बहुत खुश हुए।" और उन्होने प्रधान मन्त्री की ओर नजरे फिराकर कहा—"वजीरेआजम ! इंगलिस्तान के बादशाह को हमारी तरफ से लिख दिया जाय कि हम उनकी दोस्ती की कद्र करते हैं और उनके लिखने के मुताबिक अग्रेजों को हिन्दुस्तान में तिजारत करने का फरमान अदा करते हैं।"

प्रधान मन्त्री ने बादशाह की सेवा मे तीन बार सलाम किया और इसके बाद दरबार समाप्त हुआ। बादशाह और मलिका दोनों भीतर की ओर चले गए।

इस प्रकार ६ फरवरी १६१३ ई० को जहांगीर ने एक शाही फरमान के द्वारा अंग्रेजो को व्यापार करने के लिए सूरत में एक कोठी बनाने की आज्ञा प्रदान करदी और यह भी इजाजत दे दी गई कि मुगल दरबार में इंगलिस्तान का एक राजदूत रहा करेगा।

इसके पश्चात् सन् १६१५ ई० में इंगलिस्तान के बादशाह की ओर से सर टॉमस रो को अपना पहला राजदूत नियुक्त करके भेजा गया इस चतुर अंग्रेज ने अपनी विनम्रता और सौजन्य के द्वारा सम्राट से बहुत सी रियायतें प्राप्त करली और विशेष सुविधाओं के साथ ही साथ पुर्तगाली व्यापारियों का उच्छेदन करने में सफल हुआ।

सूरत के साथ कुछ पुर्तगाली जहाजों पर आक्रमण करके जब अंग्रेजों

ने उनकी कोठी छीन ली तो पुर्तगाली व्यापारी भयभीत हो गए। इनका प्रभाव घटने लगा और अंग्रेजो का व्यापारिक क्षेत्र विस्तृत होने लगा।

उस समय भारत मे रहने वाले अंग्रेज भारत सम्राट की प्रजा समझे जाते थे इसलिए उनको अपने पारस्परिक विचार भी भारतीय न्यायालयों मे तय कराने पड़ते थे। तथा वहीं से अगरेज दोषियो को दण्ड भी दिया जाता था।

सर टामसरो ने इसे ब्रिटिश कौम की अप्रतिष्ठा समझा और एक दिन जब सम्राट जहाँगीर आगरा के किले मे 'सम्मनबुर्ज' पर तफरीह कर रहे थे, टामसरो ने अंग्रेजी शराब की एक बोतल पेश करते हुए कहा—"इगलिस्तान के बादशाह ने हुजूर की खिदमत मे आला किस्म की शराब हाजिर करते हुए अर्ज किया है कि पनाहेआलम ! इस तोहफे को कुबूल फरमाकर हमे मशूकरो ममनून फरमाएँ।"

"मा बदौलत बहुत खुश हुए जनाब टामस" सम्राट जहाँगीर ने बोतल हाथ में लेते हुए कहा—"इसकी किस्म काफी अच्छी मालूम होती है लेकिन......... ।"

बादशाह को आगे बोलने का मौका न देते हुए सर रो ने कहा—"पनाहे-आलम ! पूरा एक जहाज आया है। फ्रान्स, इटली, नार्वे और योरप के मुख्तलिफ मुमालिक से चुन कर बोतलें लाई गई हैं।"

"सरटामस ! मा बदौलत की राय थी कि दुनिया के परदे पर सिर्फ हिन्दुस्तानी ही मेहमानी कर सकता है, लेकिन आज अपनी राय को बदलते हुए हमें बहुत मसर्रत हो रही है कि अंग्रेज लोग भी मेहमाननवाजी में लासिसाल है।"

अँग्रेज कायदे से दो जानू होकर सर टामस रो ने सम्राट जहागीर के सीधे हाथ पर चुम्बन अकित कर दिया।

"सर टामस !" बादशाह ने खुशी का इजहार करते हुए पूछा—"एक बात हमारी समझ मे नही आती है कि अँग्रेज लोगो में चूम लेने का बेहद रिवाज क्यों है ? यहाँ तक कि बाप भी बेटी की चुम्मी ले सकता है और वह भी जवान बेटी का चुम्बन।"

"इसकी वजह है पनाहेआलम ! अंग्रेज लोग अभी तक पूरी तरह तहज़ीब-

याफ्ता नहीं हो पाये हैं और वे अभी तक एक कमजोर क़ौम की शक्ल में पनप रहे है।" सर टामस रो ने समय को पहचानते हुए चतुरता से उत्तर दिया—"तहज़ीब और इल्म ही एक ऐसा नायाब जरिया है कि इन्सान अपने नफ्सी वक़ारो (वासनात्मक भावनाओ) पर काबू पा सकता है और नफ्स को खत्म करने के दो ही तरीके हैं, या तो उससे दूर हो जाओ या फिर उसमे घुल-मिल जाओ।"

"बिल्कुल तसव्वुक (वेदान्त) की जैसी बात समझा दी तुमने—बहुत खूब।"

"इसलिए हम लोग एक दूसरे को चूमना बुरा नही समझते। यह मुहब्बत और वफादारी साबित करने का तरीका भी है"

"अँग्रेज लोग अपनी मलिका का हाथ भी चूम सकते है ?"

"शहंशाहे आलम ! ऐसा खुशनसीब सरदार कोई विरला ही होता है।"

"लेकिन हिन्दुस्तान मे तो नजर उठा कर देखना भी गुनाह माना जाता है। मलिकाए मोअज्जमा की बात तो बहुत दूर है, कोई सरदार मा बदौलत की नजरो से नजरे मिलाने की ताब नही ला सकता।"

"इसी का नाम तहजीबो तमद्दुन (सभ्यता और संस्कृति) है। मिसाल के तौर पर देखिए कि इंगलिस्तान में हम चाहे तो अपने नौकरों को खुद सज़ा-याब कर सकते हैं, लेकिन आपकी सल्तनत में हमे हिन्दुस्तानी अदालतो में जाना पडता है।"

'यह तो कायदे की बात है। हमारी रियाया को हमारे हुजूर में आना ही चाहिए। सर टामस! आपने देखा होगा कि हमने महलों के बाहर एक घण्टा लगवा रखा है, उसमें लम्बी और पतली पीतल की जंजीर बँधी हुई है। तमाम रियाया को हक है कि जब उसे कही से इन्साफ न मिले, वह मा बदौलत का दरवाजा खटखटा सकती है।"

"दर असल आप बडे गरीब परवर और इन्साफ पसन्द बादशाह है तवारीख मे इस बात की कोई मिसाल नही। मुझे उस दिन की बात याद आती है जब एक भिश्ती अपने बैल की पीठपर पानी से भरी हुई मशकें लाद कर लिए जा रहा था और इत्तफाकिया वह बैल उस जंजीर से टकराया, उसके पांव में पीतल की जंजीर अटक गई और घण्टा बजने लगा—

हुजूर ने उसी वक्त कहा—"कौन है फरियादी जो अलस्सुबह अपना दर्द भरा अफसाना लेकर हमारे हुजूर में हाजिर होना चाहता है।" फौरन सिपाहियों ने भिश्ती और बैल दोनों को पनाहेआलम के रूबरू हाजिर किया तो माशाअल्लाह! आप बेसाख्ता हंस पड़े। लेकिन दूसरे ही लमहे आपने फरमाया—'हम जानते है भिश्ती! तुम्हारी ज्यादती से तंग आकर इस बेजुबान जानवर ने मा बदौलत से शिकायत की है।" इसकी मशक उतार कर जांच करो—इनमे इन्तहा दर्जे पानी भरा हुआ है, जितना कि यह बैल नहीं उठा सकता है। तब उसकी पानी की मशकें छोटी होगई और वह खामोश नजरों से आपको दुआ देता चला गया।"

"इन्साफ तो इन्साफ है सर टामस!

"यही तो मैं दस्तबस्ता अर्ज करना चाहता था कि······ ।"

"क्यो ?"

"इंगलिस्तान के मुआहिदो और कवानीन के मुताबिक़ अगर हम अपने अंग्रेज खिदमतगारो के मुकदमे तय नही कर सकेंगे तो हमारी तिजारत चौपट हो जायगी क्योकि सरकार दो आलम के यहाँ माफ़ी का खाना बहुत बड़ा है।"

"यह बात है? आपने ठीक कहा है सर टामस! आप लोग हमारी रियाया तो हैं लेकिन आपके कायदेजात हमसे मुख्तलिफ है। इसलिए हम जल्द-अज-जल्द यह फरमान जारी कर देंगे कि आइन्दा अपनी कोठी के अन्दर रहने वाले कम्पनी के किसी भी मुलाजिम के क़सूरमन्द होने पर अंग्रेज लोग उसे खुद सजायाब कर सकते हैं।"

और इस प्रकार १६२४ ई० में भारत सम्राट जहाँगीर ने प्रभु-सत्ता की पहली सीढ़ी पर अंग्रेजो को क़दम रखने की आज्ञा प्रदान करदी*।

---

* इस घटना की आलोचना करते हुए अंग्रेज इतिहासकार टान्स लिखता है—"बादशाह न्यायशील और बुद्धिमान था। वह उनकी आवश्यकताओं को समझता था। जो उन्होंने मांगा उसने मन्जूर कर लिया। उसे यह स्वप्न में भी नज़र न आसकता था कि एक दिन अंग्रेज इसी छोटी सी जड़ से बढते-बढते बादशाह की प्रजा और उसके उत्तराधिकारियों तक को दण्ड देने

धीरे-धीरे अंग्रेज लोगो ने कालीकट और मछली पट्टम में पक्की कोठियाँ बनवा ली। बंगाल से लेकर सूरत तक प्राय: सभी स्थानो मे अंग्रेजो की कोठियाँ बन चुकी थी। बगाल मे अंग्रेज लोग अपने झगडालू स्वभाव के लिए बहुत ही बदनाम हो चुके थे। सूरत का नवाब तो उनको 'नीच झगडालू' लोगो और जुआ चोरो की कम्पनी कहा करता था।

लोगो को भुलावे में डालकर अथवा अपने गौरवर्ण से प्रभावित करके अग्रेज लोग अपने यहाँ की सस्ती से सस्ती चीजो को अच्छे से अच्छे दामों पर बेच लिया करते थे। जो कोई उनके साथ झगडा करता अथवा प्रतियोगिता में खडा होता उसके साथ उनका व्यवहार बहुत ही निन्दनीय था। वे अपने विरोधी को सभी प्रकार से नीचा दिखलाने की चेष्टा करते थे। पुर्तगालियो साथ तो उनका व्यवहार बहुत ही घृणित था। हर अंग्रेज प्रत्येक पुर्तगाली को अपना जन्म जात शत्रु समझता था और उनके व्यापार को नष्ट करने की सतत चेष्टा करता था। इस प्रकार धीरे-धीरे पुर्तगालियों के समस्त व्यापारिक क्षेत्र पर अंग्रेजो ने अपना आधिपत्य जमा लिया और भारत में चारो ओर उन्होने अपनी सत्ता स्थापित करदी।

× × ×

का दावा करने लगेंगे और यदि उनका विरोध किया जायगा तो प्रजा का विध्वंस कर डालेगे और बादशाह के उत्तराधिकारी को बागी कह कर आजीवन कैद कर लेगे।"

"The Padishah, being a just man and wise, understood their needs and yielded what they asked, little dreaming that the time would come, when, from such root of little, they would claim jurisdiction over his subjects and, successors, and as the penalty of resistence, decimats the one, and imprison the other for life as guilty of rebellian"= Torren's Empire in Asia, pp, 10, 11, Allahabad.

जब विलास प्रिय जहाँगीर का शासन काल समाप्त हुआ तो ६ फ़रवरी १६२८ ई० को शाहजहाँ सिंहासनारूढ हुआ। यह ऐतिहासिक बात है कि शाहजहाँ धार्मिक विचारों में अपने पूर्वजो की अपेक्षा अधिक कट्टर था। उसने सौर वर्ष का व्यवहार बन्द करके चन्द्र वर्ष और हिजरी सन् के व्यवहार की घोषणा की। सिजदे की जगह जमीन चूमने का नियम बनाया गया और कुछ दिन बाद इसको भी बन्द करके चहार तसलीम की प्रथा आरम्भ कर दी गई।

शाहजहाँ की धर्म पत्नी का जन्म १५६४ ई० में हुआ और जब राज कुमारी पन्द्रह वर्ष की भी नहीं थी तब १६०६ ई० मे उसका सम्बन्ध युवराज खुर्रम के साथ निश्चित कर दिया गया। इस अनुपम सुन्दरी का बालकपन का नाम 'अर्जुमन्द बानू' था जो आगे चलकर मुमताज-महल के नाम से प्रसिद्ध हुई। उसने अपने अद्वितीय सौन्दर्य और हार्दिक प्रेम से पति को ही नहीं बल्कि सारी प्रजा को ही अपने वश मे कर लिया। १६३० ई० में जब मुमताज महल ने अपनी चौदहवीं सन्तान, एक पुत्री को जन्म दिया, उसी समय से वह बीमार रहने लगी और ७ जून १६३१ ई० को उसका शरीरान्त हो गया। मुमताज के प्रति स्नेह के स्मारक के रूप मे शाहजहाँ ने आगरा मे यमुना के किनारे एक ताज महल निर्मित कराया जो आज भी 'ससार की इमारतों का ताज' कहा जाता है।

× × × ×

बगाल का सूबा इस समय कासिम खाँ सूबेदार के शासन मे था। पुर्तगाल वालो ने समय पाकर धीरे-धीरे अपनी कोठियों को लम्बा-चौडा कर लिया और इन सभी स्थानों की किले बन्दी तोपों से करली गई। यह बात १६३१ ई० की है जब कुछ लोग अपनी प्रार्थनाएं लेकर सूबेदार कासिम खाँ के दरबार में उपस्थित हुए।

"सरकार एक जुल्म या ज्यादती हो तो उसकी बात करें। पुर्तगालियों के सभी चाल-चलन रियाया को परेशानी मे डालने वाले हैं।" एक सामन्त ने बडी विनम्रता से निवेदन किया।

"इससे आगे की बात यह है हुजूर।" एक मछुए ने सूबेदार से निवेदन किया—"हम लोग जो भी सामान अपने बन्दरगाह मे लाते हैं या बाहर ले

जाते हैं, उन सब के ऊपर हमे पुर्तगाली लोगो को बहुत काफी तादाद में पैसा देना पड़ता है।"

"तो बात यहाँ तक बढ़ गई है।" कासिम ने कहा।

"बढी हुई बात तो यहा तक है कि पादरी लोग हिन्दू और मुसलमानों को जबरन ईसाई बना लेते हैं। उनके पादरी लोग इसे बहुत बड़ा सवाब समझते हैं।" दरबार में बैठे हुए मौलवी साहब ने माला के दानों पर उँगलियां फेरते हुए कहा।

"और वे गुलामो की तिजारत भी करते हैं। नदी के दोनों किनारो के गाँवो में से गरीब लोगो को पकड ले जाते हैं और उन्हे, मजबूर करते हैं कि वे लोग ईसाई बन जाएँ। मना करने पर या तो उनको मार डाला जाता है या उनको विदेशो मे भेज कर गुलामो की तरह बेच दिया जाता है" पास ही खड़े हुए नगर के सेठ ने कहा।

"और इसका सबब हम जानते है।" कासिम ने कहा—"मरहूम बादशाह जहाँगीर ने पुर्तगालियों के खिलाफ अंग्रेजों को पनाह दी थी तो इन पुर्तगालियों ने उस वक्त मुमताज महल की दो कनीजो को पकड़ कर बेच दिया था, जब हुजूरे-आलम शाहजहा ने अपने वालिद शरीफ के खिलाफ बगावत की थी। आप लोग घबराए नही। मै इसका इन्तजाम जल्दी ही कर दूँगा।"

क़ासिम खाँ ने इन तमाम घटनाओं को एक सूत्र में पिरोकर बादशाह शाहजहाँ के पास भेज दिया। बादशाह कुछ तो पहले से ही नाराज था और इधर उसकी क्रोधाग्नि को अंग्रेजों ने और भी भड़काया। परिणाम यह हुआ कि पुर्तगालियो को समूल नष्ट करने के लिए स्थल-मार्ग और जल-मार्ग दोनों ओर से बादशाही सेनाएँ हुगली की तरफ बढी। पुर्तगालियो के विरुद्ध दोनों ओर से आक्रमण हुआ। पहले नदी के किनारे पर रहने वाले और गाँवो में बसने वाले पुर्तगालियों को मार डाला गया और उसके पश्चात जो भी पुर्तगाली जहाँ भी मिला उसे समाप्त कर दिया गया। पुर्तगालियों के पास लडाई की सामग्री प्रचुर मात्रा में थी, इसलिए हुगली का वेग साढ़े तीन महीने तक चला। अन्त में, पुर्तगालियो ने धूर्तता से काम लेकर आत्म समर्पण की भावना प्रगट की और ऐन मौके पर उन्होने अपनी सेना को

तैयार कर लिया तथा सात हजार तोपचियो के द्वारा मुगलो पर गोला बारी करके उनको समाप्त करने की योजना बनाली। लेकिन उनकी चाल खुल गई और एक भीषण संघर्ष के पश्चात पुर्तगाली लोग पूर्ण रूप मे पराजित हो गए। इस सघर्ष मे करीब दस हजार पुर्तगाली नर-नारी और बच्चे मारे गए और करीब साढे चार हजार कैद कर लिए गए। मुगलो की सेना मे से करीब एक हजार आदमी मारा गया।

शाहजहाँ ने पुर्तगालियो से बडा भयंकर बदला लिया। बन्दी प्राणियो को इस्लाम धर्म स्वीकार करने की आज्ञा दी गई, और जिन लोगों ने इस्लाम स्वीकार नही किया उनको जान से मार डाला गया। इस प्रकार एक ओर तो पुर्तगालियो के अत्याचार का अन्त हुआ और दूसरी ओर अंग्रेजों का प्रभाव बढने लगा। यूरोप के इतिहासकारों ने, जो उस समय भारत में आए थे, सभी ने शाहजहाँ की न्याय प्रियता और शूरवीरता की प्रशसा की है।

× × × ×

'आप को कुछ लम्बे अरसे तक आराम फरमाना होगा, वरना बीमारी बढ जाने का इमकान है।" शाही हकीम ने सम्राट शाहजहाँ के सामने बडे अदब से अपनी राय पेश की।

"आप जो चाहेगें हकीम साहब! वह तो मरीज को करना ही होगा क्योंकि इस वक्त तो आप इमराज के बादशाह हैं।" सम्राट ने मुस्कुराते हुए कहा।

"गुस्ताखी की माफी चाहता हूँ पनाहे आलम। मैं इमराज का फातेह और अदवियात का बादशाह हूँ।" हकीम साहब ने भी कुछ मुस्कुराते हुए कहा।

बादशाह सलामत मुस्कुरा कर रह गए और इसका अर्थ यह समझा गया कि सम्राट ने हकीम साहब की बात स्वीकार कर ली।

"लेकिन आपके लिए दवा का इन्तजाम शहजादी जहान आरा को करना होगा यानी आपके लिए दवा और पीने के लिए शोरबा शहजादी खुद तय्यार करेंगी।"

...ा, हाँ मुझे इससे ज्यादह और क्या मसर्रत हो सकती है कि मैं वालिद शरीफ की खिदमत कर सकूं।" बादशाह सलामत कुछ कहना चाहते थे लेकिन चुप हो गए।

हकीम साहब ने जहान आरा को तरकीब बता दी और खुद बैठ कर बादशाह सलामत से बातें करने लगे। लगभग आधे घन्टे के बाद जब जहान आरा दवा लेकर लौटी तो उसके चेहरे पर खुशी नाच रही थी। शाहजहाँ अपनी इस बेटी को बहुत अधिक प्यार करते थे और जब उन्होंने यह देखा कि उनकी प्रिय पुत्री सोने के थाल मे, रेशम के सालू से ढके हुए दवा और शोरबा ला रही है तो वह शय्या से जरा कुछ ऊँचे उठ कर देखने लगे। दूसरी ओर जहान आरा पिता की ओर से ऐसा प्रगाढ प्रेम पाकर हर्ष विभोर हो गई और तेजी से आगे बढ़ चली। सहसा उसका पैर फिसला और बहुत कुछ सँभालने पर भी थाल लौट कर उनके हाथों पर गिर पड़ा। गर्म दवा और चहकता-दहकता हुआ शोरबा उस सुकुमार बालिका के लिए घातक सिद्ध हुआ और उसके दोनो हाथ जल गए। वह चीख मार कर बेहोश हो गई।

बादशाह का उठा हुआ सिर तकिये से जा लगा और उनके नेत्रों में दो बूंद आँसू छलछला उठे। हकीम साहब ने दूसरे सेवकों की सहायता से जहानआरा को तत्काल एक सुकोमल शैय्या पर लिटा दिया और उसके हाथों पर लगाने के लिए शीघ्रता से औषधि तैय्यार होने लगी। थोडी देर बाद जब जहान आरा को होश आया तो उसने पूछा—"वालिद शरीफ की तबीयत कैसी है ?"

"अच्छी है बेटी !" हकीम साहब ने कहा—"घबराने की कोई बात नही है।"

"इस हादसे की वजह से उनके दिल को सख्त तकलीफ पहुंची होगी। मै जानती हूँ उनका दिल बहुत नाजुक है।" जहान आरा ने कहा।

"तुम ठीक कह रही हो बेटी।" हकीम साहब ने दवा लगाते हुए कहा—"तुम्हारे जले हुए हाथों को देख कर उनकी आंखें भर आई थीं।"

'या अल्लाह ! मेरे अब्बा की उम्र दराज़ करना।" और जैसे ही जहान आरा ने अपने दोनों हाथ दुआ माँगने के लिए ऊपर की ओर उठाए वैसे ही वह चीख़ कर शय्या पर लेट गई। उसके हाथ जलन के कारण खिचने लगे थे और उनमें बहुत ज़ोर की गर्मी मालूम होती थी।

कई दिन तक बराबर इलाज करने के बाद भी जहान आरा के हाथो से जलन नही जा सकी। बादशाह सलामत उस वक्त तक अच्छे हो चुके थे लेकिन उनकी प्यारी बेटी अभी तक परेशान थी।

एक दिन जब शाहजहाँ अंगूरी बाग में टहल रहे थे, बाँदी ने आकर उनसे अर्ज किया।

"जहाँ पनाह ! अंग्रेजी एलची हुजूर की खिदमत मे हाजिर होना चाहता है।"

"इस वक्त हम तख़लिया चाहते है।"

"शहन्शाह दो अलाम !" कनीज ने बहुत धीमे स्वर से कहा—'एलची के साथ एक अंग्रेज डाक्टर भी आया है जो शहजादी साहेबा के लिए कोई दवा लाया है।"

"तो उसे आने दिया जाय।"

और दूसरे ही क्षण सरटामसरो के साथ एक अंग्रेजी डाक्टर अपना बैग सँभाले हुए भारत सम्राट के सामने उपस्थित हुआ। दोनों ने शाही अदब के साथ बादशाह को झुक कर सलाम किया।

"तो आप शहजादी का इलाज करना चाहते हैं।" शाहजहाँ ने डाक्टर की ओर मुखातिब होकर कहा।

"यस सर" डाक्टर ने सिर झुका कर आदाब पेश करते हुए निवेदन किया।

"आइए।" इसके साथ ही साथ बादशाह सलामत जहानआरा के महल की तरफ बढे और कुछ ही देर के बाद पिता और पुत्री एक दूसरे के सामने थे। दोनों के नेत्रों में स्नेह का सागर लहरा रहा था।

"नूरे आलम ! हम तुम्हारे लिए अंग्रेजी डाक्टर लेकर आये हैं।"

"बडी तकलीफ है अब्बा हजूर ! हाथों में जलन पडने की वजह से रात को नींद भी नही आती।"

"आप फिकर न करें सब ठीक हो जायगा।" सर टामसरो ने कुछ मुस्कुराते हुए कहा और उसने अंग्रेजी में वह तमाम घटना बतला दी, जिसके कारण शहजादी के दोनो हाथ जल गये थे। डाक्टर ने आगे बढ कर शहजादी के हाथो पर से पट्टियाँ उतार दीं और बोरीक मिले हुए पानी से उसके दोनों हाथो को साफ कर दिया। इसके बाद उसने ग्लेसरीन का पेन्ट कर दिया और उस पर ऊपर से बोरिक भी डाल दिया। दोनो हाथों को खुले रहने की बात कह दी गई थी। अपने इलाज का परिणाम देखने के लिए डाक्टर और सर टामस दोनो ही लगभग एक घन्टे तक बाहर महलों में बैठे रहे और जब अंग्रेज डाक्टर के पास जहाँनआरा की बाँदी एक थाल में अशर्फियाँ और एक शर्बत का गिलास लेकर आई तो बादशाह सलामत खुशी से फूल उठे।

"मालूम होता है हमारी बेटी की तकलीफ कम हो चली है।"

"शहन्शाहे दो आलम ! शहजादी साहेबा ने आपके हुजूर में अर्ज किया है कि इस नई दवा से उनको राहत मिली है और उनके हाथो में ठण्डक पड़ गई है।"

बादशाह ने सर टामसरो की तरफ मुखातिब होकर कहा—"सर टामस ! शाबदौलत आज बहुत खुश हैं। हमारी तरफ से यह इनाम अग्रेज डाक्टर को देया जाता है।"

अग्रेज डाक्टर ने शर्बत का गिलास पी लिया और अशर्फियो का थाल लेकर उसने बादशाह के कदमों पर निछावर कर दिया।

"आप की खुशी हमारे लिए और हमारी कौम के लिए बहुत बड़ी बात है, बादशाह सलामत।" अग्रेज डाक्टर ने बडी विनम्रता से कहा—"जब शहजादी साहेबा बिल्कुल ठीक हो जाएँगी तब हम को बख्शिश मिलेगी ?"

"अच्छा जो तुम माँगोगे तुम्हे दिया जायगा ?"

और सचमुच एक दिन जब कि जहांनआरा बिल्कुल भली-चंगी हो गई थी, दीवाने-आम मे बैठ कर भरे दरबार मे, सम्राट जहाँगीर ने सर टामसरो और अंग्रेजी डाक्टर की ओर देखते हुए कहा—"माबदौलत इस बात से बहुत खुश हैं कि अंग्रेज लोग हमारी खिदमत उसी तरह अजाम दे रहे हैं, जिस तरह हमारी वफ़ादार हिन्दुस्तानी रियाया अपने फर्ज पूरा करती है। आज अंग्रेज डाक्टर ने हमारी बेटी को जो खुशी दी है, उसके बदले में हम अंग्रेज डाक्टर को मुँह माँगा इनाम देंगे।"

सर टामसरो ने बादशाह सलामत को झुक कर आदाब किया और दो कदम पीछे हट कर डाक्टर को शाहजहाँ के सामने उपस्थित कर दिया।

"जहाँपनाह की उम्र दराज़ हो।" डाक्टर ने इन शब्दो के साथ तीन बार झुक कर सलाम पेश किया और कहा—"हुजूर मैं अपने लिए कुछ नहीं माँगना चाहता। लेकिन जिस अंग्रेज काम को आपने पनाह दी है, उन पनाहगुज़ीर अंग्रेज़ो के लिए मेरी दरख्वास्त है कि बंगाल के अन्दर सभी जगह पर, अंग्रेजी माल पर चुंगी माफ कर दी जाय और बगाल मे कोठियाँ बनाने और अंग्रेजी जहाज़ो को हुगली तक आने की इजाजत फरमाई जाय।"

"शाबास! आज माबदौलत ने यह भी देखा कि अंग्रेज खुद परस्त नहीं होता है, वतन परस्त होता है। काश हिन्दुस्तान मे भी यह जजबा होता! तुमने जो कुछ माँगा माबदौलत ने उसे मन्जूर किया। वज़ीरे आज़म! बगाल के सूबेदार शाहशुजा के नाम फरमान भेज दिया जाय कि हमारे हुकुम से परदेशी अंग्रेजो को अपना कारोबार जमाने मे हर तरह से इमदाद की जाय।"

और इस प्रकार १६४० ई० में कलकत्ते की कोठी बनी और अंग्रेजी साम्राज्यवाद का पहला बीज भारत मे बो दिया गया।

× × × ×

१६६४ ई० के आसपास का समय ऐसा था जब औरंगजेब अपनी धार्मिकता के कारण अप्रिय हो रहा था और महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी हिन्दू धर्म के उत्थान के लिए सतत् प्रयत्नशील थे। बम्बई एक छोटा-सा टापू

था जहाँ उस समय एक छोटी सी पुर्तगाली बस्ती, वसी हुई थी और १६६१ ई० में पुर्तगालियो ने बम्बई को दहेज मे इँग्लैण्ड के बादशाह को दे दिया। पीछे १६८८ ई० मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने बम्बई को अपने बादशाह से खरीद लिया।

सूरत मे जो कोठी बनी हुई थी, वहाँ के अग्रेजो ने औरगज़ेब से वादा किया कि वे शिवाजी के विरुद्ध भारत सम्राट की सहायता करेंगे। इस वादे से प्रसन्न होकर औरंगजेब ने भी अग्रेजो को कई प्रकार की रियायते दी। यहाँ तक कि कितनी ही नई कोठिया स्थापित करने और अपनी सुरक्षा के लिए किलेबन्दी करने की आज्ञा भी प्रदान कर दी। औरंगजेब के समय में ही उसके पौत्र अज़ीमशाह ने बगाल के सूबेदार की हैसियत से अंग्रेजो को हुगली नदी के पास छूतानटी, कलकत्ता और गोविन्दपुर नाम के तीन गाँव जागीर के रूप मे कम्पनी को दे दिए। उसी समय फोर्टविलियम नामक किले की स्थापना की गई। यद्यपि इस खतरे की सूचना औरगजेब को भी दे दी गई कि यदि किसी प्रकार अंग्रेजों का बल बढ गया तो इस बात की सम्भावना हो सकती है कि वे लोग राज के कामों मे हस्तक्षेप करे। इसके उत्तर में औरंगजेब ने उपेक्षा की भावना प्रदर्शित की। क्योंकि उसकी सम्मति में अंग्रेज् लोग अत्यन्त तुच्छ थे, जिनको वह किसी भी समय कुचलने में समर्थ हो सकता था। इसके अतिरिक्त, वह अंग्रेजो को परदेशी और शरणागत भी मानता था तथा उनके साथ उदारता और दया का व्यवहार करना अपना कर्त्तव्य समझना था, इसलिये, औरगजेब ने उत्तर दिया—

"मैं इन चीजों में क्यों दखल दूँ ? बहुत मुमकिन है कि आसपास की मेरी देशी रियाया जलन रखती हो और झगड़े करती हो। अंग्रेज लोग अपनी ताक़त भर अपनी हिफ़ाजत का इन्तजाम क्यो न करे ? ये गरीब लोग इतनी दूर से आए है और अपनी रोजी के लिए कितनी मेहनत करते हैं। मैं इन्हे क्यों रोकूँ ? *

× × × ×

* Torrent's Empire in Asia, pp 4,5,

"धाँय, धाँय धाँय !"

बम्बई के समुद्र तट की ओर आने वाले एक यूरोपियन जहाज पर इस प्रकार की गोला-बारी अचानक शुरू हो गई और लगभग आठ छोटे बडे धूम्र पोतो ने उस आने वाले जहाज को चारो तरफ से घेर लिया। इस गोला बारी के बदले मे दूसरे जहाज वालो ने थोड़ा बहुत प्रतिरोध करते हुए गोलियो का उत्तर गोलियो से देना चाहा लेकिन कुछ ही घन्टो में नवागन्तुक जहाज पर काबू पा लिया गया। चारो ओर से घेरने वाले जहाज अपनी चाल धीमी करके उसके पास पहुच गए और थोड़ी देर के पश्चात ही अंग्रेज लोगों के दस्ते के दस्ते दूसरे जहाज मे कूद पडे। जिन लोगो ने प्रतिरोध किया उनको मौत के घाट उतार दिया गया और शेष बचे हुए लोगो को बन्दी बना लिया गया तथा उस जहाज को समस्त सामान के सहित, बम्बई के बन्दरगाह मे ले आया गया। उसमे जो कुछ भी व्यापारिक सामान था, उस पर अग्रेजो ने अधिकार कर लिया और थोड़े ही समय के अन्तर्गत वह सामान बम्बई से बगाल की कोठियों तक भारत मे बेचने के लिये भेज दिया गया।

और इस प्रकार अपनी ही जाति वालो के सैकड़ों जहाज अंग्रेजो के द्वारा इसलिए लूट लिए गये कि ईस्ट इन्डिया कम्पनी और उसके संचालक लोग भारत की भूमि पर किसी दूसरे व्यक्ति को प्रतिस्पर्धी के रूप मे, नही देखना चाहते थे और दूसरा कारण यह भी था कि भारत मे जो लूट-पाट उन्होने मचा रखी थी उसका रहस्य खुल जाने का भय था।

इसी प्रकार और किसी रूप मे इससे भी बुरा व्यवहार देशी लोगो के साथ किया जाता था।

× × × ×

सूरत की एक सडक पर एक हिन्दुस्तानी कुछ माल बेच रहा था जिसमें कच्ची रूई और मसाले विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कई भारतीय बेचने वाले के साथ मोल-तोल कर रहे थे और जब एक हिन्दुस्तानी सौदागर ने चार सौ रुपये की रुई का दाम दो सौ रुपया लगाया तो उस बेचने वाले ने कहा—"क्या तुम मुझे ईसाई समझते हो जो मैं तुम्हें धोखा देता फिरूँ ?"

"लेकिन तुम ऐसी बात क्यों कहते हो ?"

"मैं क्या झूठ कहता हूँ ?" भारतीय सौदागर ने कहा—"ईसाई मजहब कोई मजहब है ? ईसाई बहुत शराब पीते हैं और बहुत मारपीट करते हैं। दूसरों को बहुत गालियाँ देते हैं। लेकिन हिन्दुस्तानी बड़े सच्चे और ईमानदार हैं और अपने तमाम वादों को पूरा करने मे पक्के रहते हैं।" *

इसी समय एक अंग्रेज़ खरीदार आया और उसने भी रुई के ढेर का मोल-भाव किया, सौदागर ने अपनी निश्चित की हुई रकम चार सौ रुपया उस अंग्रेज़ को भी बताई।

"हम तुम को पाँच सौ रुपया देगा।" अंग्रेज खरीदार ने कहा।

"नही ! नही ! हम चार सौ से ज्यादा नही लेंगे। भारतीय सौदागर बोला

'ओह ! तुम बिल्कुल पागल आदमी मालूम होता है, सौ रुपया तुम को इसलिए दिया जाता है कि तुम सब खरीदा हुआ रुई सूरत कोठी के अन्दर पहुँचा देगा। यह लो किराये का सौ रुपया पेशगी और बाकी तुम्हारी कीमत का चार सौ रुपया तुम को कल कोठी में मिल जायगा।"

व्यापारी ने प्रसन्नता से साहब को सलाम किया और अंग्रेज खरीदार मुस्कुराता हुआ कोठी की ओर बढ़ गया।

दूसरे दिन जब बैलगाड़ियों पर रुई लाद कर भारतीय सौदागर सूरत की कोठी में पहुंचा तो उसका बहुत स्वागत-आगत किया गया और तमाम गाडी वालों को कोठी के खजान्ची ने किराया देकर विदा कर दिया। बहुत देर तक प्रतीक्षा करने के पश्चात भी जब सौदागर को उसके माल का मूल्य नहीं मिला तो उसने खजान्ची से पूछा।

---

* But according to Terry, the natives had formed a mean estimate of Christianity. It was not uncommon to hear them at Surat giving utterance to such remarks as: Christian religion, devil religion, Christian much drunk, Christian much do wrong, much beat, much abuse others. Terry admitted that the natives themselves were "very square" an exact to make good all their engagements, but if a dealer was offered much less for his articles than the price which he had named, he would apt to say, "what! dost thou think me a Christian, that I would go about to deceive thee ?"—I bid, p 32

"सेठ साहब हमारे माल का रुपया ?"

"कैसा रुपया ?"

"रुई जो आई है कोठी में, उसका रुपया।"

"गाड़ी वालों को उनका किराया दे दिया और अब तुम क्या चाहते हो ? तुमको तो कल ही साहब ने एक सौ रुपया दे दिया है।"

"वह तो किराए के लिए दिया था, माल की कीमत का चार सौ रुपया कोठी से मिलेगा।"

"यह सब झूठ बात है।" खजान्ची ने कहा—"तुम को रुपया दे दिया गया है।"

इसी समय एक अंग्रेज अधिकारी उस ओर आया और उसने ज्ञात किया कि मामला क्या है। उसके ताली बजाते ही चार अंग्रेज सिपाहियों ने उस सौदागर को पकड़ लिया।

"बेईमान आदमी ! रुपया मिल जाने के बाद भी तुम और ज्यादा पैसा माँगता है।" और गार्ड की ओर देखकर उस अंग्रेज ने कहा—"इस आदमी को तहखाने में बन्द कर दो कल सुबह इसे कोड़े लगाए जाएँगे।"

चारों अंग्रेज सिपाही उस भारतीय सौदागर को घसीट कर ले गए और उसे तहखाने में बन्द कर दिया।

दूसरे प्रभात में, जब उस सौदागर को अंग्रेज व्यापारियों के सामने उपस्थित किया गया, उस समय भूख और प्यास के मारे वह अधमरा हो रहा था। फिर भी उस गरीब को नंगा करके एक टिकटी से बाँध दिया गया और उसके नितम्बों पर तेल से भीगे हुए बेतों की मार पड़ने लगी !

"गाय खाने वाले और आग पीने वाले नीच दरिन्दो ! तुम लोग उन बड़े-बड़े कुत्तों से भी ज्यादा जंगली हो ; जिनको अपने साथ लाते हो। तुम लोग शैतान की तरह लड़ते हो और अपने बाप को भी धोखा दे लेते हो और दूसरों से अपना काम निकालने या उनकी चीज़ें ले लेने में गोलियों की बौछार या भालों की मार और माल की गठरी या रुपयों की थैली चारों में से किसी का भी इस्तेमाल करने के लिए हर समय तैयार रहते हो।"

इतनी बात सुनने के पश्चात कोडों की मार और भी तीव्र हो गई और जब वह सौदागर बेहोश हो गया तब उसको एक अँधेरी कोठरी मे फेंक दिया गया, जहाँ से कुछ दिनो के बाद उसकी सूखी हुई लाश निकाल कर दूर समुद्र के अतल में फेंक दी गई।

इस प्रकार न जाने कितने हजार व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया गया। जो निर्दोष थे और जिनका अपराध केवल यही था कि वे भारतीय सौदागर थे; जिनके कारण अंग्रेज लोग मन माने दामों पर चीजे नहीं बेच पाते थे। *

इस बीच मे धीरे-धीरे भारत के पूर्वीय और पश्चिमी तटों पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी की अनेक नई कोठियाँ बन गईं। भारत में अंग्रेजी व्यापार बराबर बढता चला गया और औरंगजेब के बाद मुगल साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया, इसलिये अंग्रेजों ने अत्याधिक अत्याचार आरम्भ कर दिए। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सभी छोटे-बडे साझीदार और नौकर-चाकर भारत के धन से माला-माल हो गए।

(२)

सबसे पहले पुर्तगाली आए और उसके बाद अंग्रेज लोग। अन्तिम यूरोपियन जाति के फ्रांसीसी भी भारत में आए। इन लोगों ने भी अपने देश मे १६६४ ई० मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समान ही एक व्यापारिक कम्पनी की स्थापना की। १६६८ ई० मे सूरत में, १६६९ मछली पट्टन में, और उद्दूचरी अर्थात् पाण्डिचेरि में फ्रासीसियों ने अपनी कोठियाँ बनाई। इन लोगों की नीति लड़ने झगडने की नहीं थी और सन्तोष तथा धीरज के साथ यह लोग

---

* As the number of adventurers increased the reputation of the English was not improved. Too many committed deeds of violence and dishonesty.

.. . ...Hindus and Musalmans considered the English a set of cow-eaters and fire-drinkers, vile brutes, fiercer than the mastiffs which they brought with them, who would fight like Edhis, cheat their own fathers, and exchange with the same readiness a broadside of shot and thrusts of boarding pikes, or a bale or goods and a bag of rupees"—The English in Western India, by Rev. Philip Anderson, p. 22.

अपना व्यापार बढ़ाने की चिन्ता करते रहते थे। उद्दुचरी का नगर उस समय कर्नाटक राज्य के अन्तर्गत था। फ्रांस की ओर से दूमास नियुक्त था और वह कर्नाटक के नवाब दोस्त अली खाँ का कृपा पात्र था। अट्ठारहवी सदी का आरम्भ था और औरंगजेब की मृत्यु हो चुकी थी और मुगल साम्राज्य का पतन हो गया था। इसी समय मराठो ने कर्नाटक पर आक्रमण किया। दूमास ने अवसर से लाभ उठाते हुए नवाब को सहायता का वचन दिया और उद्दूचरी में किले बन्दी करली तथा बारह सौ यूरोपियन और पाँच हजार भारतीय सेना एकत्रित करली। दूमास की सहायता से मराठो का अभियान निष्फल हो गया। नवाब और दिल्ली का सम्राट् दोनो ही बहुत प्रसन्न हुए तथा दूमास को नवाब की उपाधि प्रदान की गयी और उसे दो हज़ार घुडसवारो का सेनापति नियुक्त किया गया। इस प्रकार उद्दूचरी के समस्त क्षेत्र पर फ्रान्सीसियों का पूरा अधिकार हो गया।

१७४१ ई० में डूप्ले फ्रांसीसी कम्पनी की ओर से अधिकारी बना कर भेजा गया। वह दूसरा यूरोपियन था जिसके मस्तिष्क में भारत में उपनिवेश स्थापित करने की प्रबल आकाक्षा उत्पन्न हुई थी। डूप्ले यह भी जानता था कि भारतीय नरेशो मे एकता नही है और भारतीय सैनिको मे स्वामिभक्ति की भावना अत्यन्त उत्कट और दृढ़ है। जन साधारण राष्ट्रीयता अथवा स्वदेश की भावना से अपरिचित है, इसलिए भारत में फ्रान्सीसी राज्य सरलता से स्थापित किया जा सकता है, परन्तु उसके मार्ग का कण्टक केवल अंग्रेज़ थे। इन दिनों फ्रान्स और इंग्लिस्तान के बीच युद्ध शुरू हो गया था और इस प्रकार यूरोप की भूमि पर भी फ्रान्सीसी और अँग्रेज एक दूसरे के शत्रु थे। अवसर से लाभ उठाते हुए डूप्ले ने तत्कालीन कर्नाटक के नवाब अनवरउद्दीन के कान भर दिए और अँग्रेजो के विरुद्ध लाबूरदौने नामक फ्रान्सीसी के आधीन जल सेना मद्रास विजय के लिए भेज दी और नवाब से यह वादा किया कि मद्रास जीतने के बाद नवाब को दे दिया जायगा। लेकिन एसा नही किया गया और जब ४नवम्बर १७४६ ई० को नवाब ने डूप्ले के विरुद्ध संग्राम आरम्भ किया तो डूप्ले ने भारतीय सेना की सहायता से नवाब को पराजित कर दिया। इस प्रकार विदेशियों की पहली विजय

इतिहास में अंकित हुई। इस प्रकार लाबूरदौने ने अंग्रेजो से वादा किया था कि ४० हजार पाउन्ड देने पर वह मद्रास को अंग्रेजो को वापस कर देगा। लेकिन फ्रान्सीसी दोनो को धोखा दे गए। १७४८ ई० में अंग्रेजी सेना ने पाण्डुचरी पर हमला किया लेकिन डूप्ले ने उनको हरा दिया। इसी बीच में यूरोप के अन्दर फ्रान्स और इंगलिस्तान मे समझौता हो गया जिसके अनुसार अंग्रेजो को मद्रास वापस मिल गया; फिर भी डूप्ले किसी न किसी प्रकार भारत मे अपनी सत्ता बनाए रहा। भारतीय नरेशो के पारस्परिक संघर्षों में अंग्रेज और फ्रान्सीसी एक दूसरे से टकराने लगे और अन्त में त्रिचनापल्ली के संग्राम मे फ्रान्सीसी बुरी तरह पराजित हुए और १७५४ ई० में फ्रांस सरकार ने डूप्ले को वापस बुला लिया तथा अंग्रेजों के साथ यह सन्धि की गई कि भारत की देशी रियासतो के आपसी झगड़ो में दोनो मे से कोई कभी हस्तक्षेप न करे। लेकिन अंग्रेजो ने इस शर्त का पालन नही किया और धीरे २ करके तमाम फ्रान्सीसी क्षेत्र अंग्रेजो के अधिकार में आ गया। १७६६ ई० में फ्रान्सीसी कम्पनी तोड दी गई।

इस प्रकार अठारहवी सदी के मध्य तक पुर्तगालियों, डच और फ्रान्सीसी तीनो में से किसी की भी सत्ता भारत में शेष नही रही।

इसके बाद सन् १७५७ आया जब कि भारतीय स्वतन्त्रता के पलाश बन में सभ्य कहे जाने वाले अंग्रेजो ने चारों ओर से दावानल प्रज्वलित करके उसे भस्मी-भूत कर दिया। लेकिन कवि की वाणी ने मुखर होकर कहा—

"पसे मुर्दन बनाए जाँयगे साग़र मेरी गिल के।
लबे यां बख्श के बोसे मिलेंगे ख़ाक में मिलके।"

× × × ×

संघर्ष

(१) सिराजुद्दौला

बंगाल के वक्ष स्थल पर प्रफुल्लित पुष्प के समान मुर्शिदाबाद अपने समय का इतना लम्बा चौडा आबाद और धनवान नगर है जितना कि लन्दन का शहर। अन्तर केवल इतना है कि लन्दन के अमीर से अमीर आदमी के पास जितनी सम्पत्ति हो सकती है; उससे कहीं अधिक सम्पत्ति मुर्शिदाबाद के अनेकानेक नागरिको के पास है। १७०७ ई० में जब औरंगजेब का देहावसान हो गया, उस समय मुगल साम्राज्य के पतन के बीज अंकुरो के रूप में फूट निकले थे। इन दिनो नवाब अलीवर्दी खाँ मुगल सम्राट के अधीन बंगाल, बिहार और उड़ीसा तीन प्रान्तो का सूबेदार था। मराठों के आक्रमण बंगाल तक हो रहे थे और जब दिल्ली दरबार से माँगने पर भी अलीवर्दी खाँ को कोई सहायता प्राप्त नही हो सकी तो उसने सालाना मालगुजारी बन्द करदी और एक तरह से अपने आप को स्वतन्त्र उद्घोषित कर दिया फिर भी वह दिल्ली सम्राट के अधीन एक वफादार सूबेदार की तरह राज्य का प्रशासन चलाता रहा। उसके शासन में देश का व्यापार और दस्तकारियाँ करीब-करीब सब हिन्दुओ के ही हाथों में थी और मुसलमान तथा हिन्दू दोनो ही खुश थे। राजनीति की परिभाषा लोगों को पता नही थी। इसी समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी की दृष्टि बँगाल पर पड़ी और कम्पनी ने कुछ विदेशी ईसाई, कुछ मुसलमानो और एक धनवान पंजाबी व्यापारी अमीचन्द को अपनी ओर मिला लिया।

× × × ×

कर्नल स्काट ने अमीचन्द के महल में पहुँच कर अंग्रेज कम्पनी की ओर से विश्वास दिलाते हुए कहा—"इग्लिस्तान में तुम्हारा नाम इतना फैल जायगा जितना भारत में कभी नही हुआ था।"

"यह बात मैं जानता हूँ स्काट साहब! लेकिन इससे मुझे क्या ?"

"सेठ अमीचन्द !" कॅर्नल स्काट ने कहा—"हम दोनो ही व्यापारी हैं और इसलिए कौम के बनिये हैं और यह बात तुमको बताने की कोई जरूरत नही है कि अच्छी कीमत मिलने पर बनियाँ अपनी जिन्दगी को भी बेच सकता है।"

"तो बताइए न मुझे आप क्या देगे। "अमीचन्द ने पूछा।"

"अलीबर्दी खाँ के पास तीन करोड पाउण्ड यानी तीस करोड रुपया है, उसकी सालाना आमदनी कम से कम बीस लाख पाउण्ड होगी, तुमको हमारी मदद के लिए अधिक से अधिक दस-पन्द्रह लाख रुपया खर्च करना पडेगा। और उसके बदले मे हम तुमको तीस लाख रुपया नकद देगे।"

"बस इतना ही !"

"नही, नही ! नबाब के खजाने से जितना भी रुपया हम लोगों को मिलेगा उसमें से पाँच रुपया फी सैकडा तुमको और दिया जायगा।"

दस-पन्द्रह लाख रुपया लगाने के बाद कई करोड रुपया मिलने की आशा ने व्यापारी अमीचन्द का हृदय परिवर्तित कर दिया और उसने नवाब अलीवर्दी खाँ के विरुद्ध राजाओ, रईसो तथा अपने सम्बन्धियो और मित्रो को बहुत सारा रुपया देकर अपनी ओर कर लिया। इस प्रकार अंग्रेजो के द्वारा भारत की पवित्र भूमि मे देश द्रोह का पहला बीज बो दिया गया।

\+ \+ \+ \+

नवाब अलीवर्दी खाँ रोग शय्या पर हैं और उनका उत्तराधिकारी, उनका नवासा सिराजुद्दौला सामने बैठा हुआ है।

"तुम जानते हो सिराज ! कलकत्ते मे अंग्रेज और चन्द्र नगर में फ्रान्सीसी लोग बराबर किले बन्दी कर रहे हैं।"

"मैं जानता हूँ अब्बा मियाँ ! दक्खन मे और कर्मण्डल के किनारे पर अंग्रेज और फ्रान्सीसी दोनो अपने पैर फैलाते चले जा रहे हैं।"

"गजब के गुस्ताख हैं ये लोग !" बूढे नवाब अलीवर्दी खाँ ने करवट बदलते हुए कहा—"हमारी किसी बात पर ख्याल नही करते। अभी उस दिन मैंने अंग्रेज और फ्रान्सीसियो के वकीलो को अपने यहाँ बुलाकर ताकीद कर दी थी कि तुम लोग सौदागर हो, तुमको किलों की क्या जरूरत है ? जब

तुम मेरी हिफाजत में हो तो तुमको किसी दुश्मन का डर नहीं हो सकता। लेकिन कोई असर नही है।''

''और आपने कर्नल स्काट को भी तो बुलवाया था, वह भी बात को टाल कर मद्रास चला गया।'' सिराजुद्दौला ने कहा।

''मुल्क के अन्दर यूरोपियन कौमों की ताकत पर नज़र रखना सिराज! अगर खुदा मेरी उम्र कुछ और बढ़ा देता तो मै तुम्हे इस डर से भी आजाद कर देता—''कराहते हुए बूढे ने कहा—''अब मेरे बेटे! यह काम तुम्हे करना होगा। तैलंग देश मे उनकी लड़ाइयो और उनकी सियासी चालों की तरफ से तुमको बाखबर रहना चाहिए। अपने-अपने बादशाहों के बीच के घरेलू झगड़ो के बहाने इन लोगो ने शहन्शाह का मुल्क और शहन्शाह की रियाया का जरोमाल लूटकर आपस मे तकसीम कर लिया है, इन तीनों यूरोपियन कौमों को एक साथ कमजोर करने का ख्याल मत करना। अंग्रेजो की ताक़त बढ गई है। पहले उन्हे जेर करना, जब तुम अंग्रेजों पर काबू पालोगे तो बाकी दोनो कौमे तुम्हे ज्यादा तकलीफ नहीं दे सकेगी। मेरे बच्चे! इन लोगों को किले बनाने या फौजें रखने की इजाजत मत देना और अगर तुमने यह ग़लती की तो मुल्क तुम्हारे हाथ से निकल जायगा।''

एक गहरे दर्द के साथ बूढ़े नवाब को खाँसी का दौरा हुआ और न चाहते हुए भी उसे अपना मुल्क, अपनी रियाया और अपना शरीर छोड़ देना पड़ा। वह दुर्भाग्य पूर्ण दिन १० अप्रेल १७५६ ई० का था जब नवाब अलीवर्दी खाँ का शरीरान्त हो गया।

× × × ×

जिस समय सिराजुद्दौला अपने नाना की मसनद पर बैठा उस समय उसकी आयु केवल चौबीस वर्ष की थी। बंगाल की वह मसनद सिराजुद्दौला के लिए एक दिन भी फूलों की शय्या नही बन सकी। यहाँ तक कि अंग्रेज व्यापारी शुरू से ही उसके हृदय में कांटे की तरह चुभते रहे। प्राचीन प्रथा के अनुसार नए सूबेदार के मसनद पर बैठने के समय तमाम अधीनस्थ राजा अमीर और विदेशी जातियो के वकील दरबार में उपस्थित होकर नजरें पेश करते थे, लेकिन अंग्रेज कम्पनी की ओर से सिराजुद्दौला को कोई नजर पेश नही की गई।

अग्रेज लोग बड़े महत्वाकाक्षी हो चुके थे और उनके षडयन्त्र का सूत्र बहुत दूर-दूर तक फैल चुका था। किले बन्दियाँ जोरो से हो रही थी और गोला बारूद एकत्रित किया जा रहा था क्योंकि अग्रेज् यह जानता था कि सूरत का समुद्री तट प्रबल और सबल मराठो के द्वारा सुरक्षित है; लेकिन बगाल के पास न तो जल-सेना ही है और न सबल थल-सेना ही। इसलिए यहाँ की नदियाँ और यहाँ के बन्दरगाह दोनो विदेशियो के लिए खुले हुए हैं। बँगाल को आसानी से जीता जा सकता है; जितनी आसानी से कि स्पेन वालों ने अमरीका के नगे निवासियो को अपने आधीन कर लिया। भारत में अग्रज़ी सत्ता का सस्थापन और सिराजुद्दौला के विरुद्ध अग्रेजों के षडयन्त्र दोनो परस्पर सम्बद्ध हैं; इतिहास इस बात का साक्षी है।

और एक दिन जब सिराजुद्दौला को यह पता लगा कि अग्रेज् लोग उसकी मसनद पर उसी के एक रिश्तेदार और सामन्त शौकत जग को बिठाना चाहते हैं तो उसने पूर्निया पर चढाई कर दी। शौकत जग घबरा गया; उसने माफी माँगी और अग्रेजो के वे तमाम पत्र सिराजुद्दौला के सामने रख दिये जिनके द्वारा शौकत जग को षडयन्त्र में सम्मिलित किया गया था।

फिर भी भारतीय उदारता की असीम प्रतिमूर्ति सिराजुद्दौला ने शौकत जग को अपदस्थ नहीं किया और अग्रेजो तथा फ्रान्सीसियो को यह आज्ञा दी कि न कोई नया किला बनवाए और न पुराने किलो की मरम्मत करे। अग्रेजो ने उस पत्र को ठोकर मार कर फेंक दिया और हरकारे को अपमानित करके कोठी से बाहर निकाल दिया।

× × × ×

कासिम बाजार की कोठी मे आज सुबह से ही बडी हलचल है, कोठी के अग्रेज मुखिया वाट्स के सामने सिराजुद्दौला का एक दूत खड़ा हुआ है।

"नवाब साहब चाहते हैं कि उनके दीवान, राज वल्लभ के बेटे राजा किसन दास को आपने कलकत्ते बुलाकर अमीचन्द के मकान में पनाह दी है उसे वापस किया जाय। नवाब साहब की राय है कि दीवान राजवल्लभ हुकूमत से बगावत करने पर आमादा है।"

"इसके लिए अंग्रेज़ लोग क्या कर सकते है ? हम किस तरह से राजा किसन दास को वापस भेज सकते हैं ?"

"आप का यह जवाब खिदमत मे अर्ज कर दिया जायगा। इसके साथ ही साथ नवाब साहब ने यह भी फरमाया है कि अगर आप लोग अम्न के साथ तिजारत करना चाहते है तो खुशी से रहे और सूबे के हाकिम की हैसियत से उनका यह हुकुम है कि अग्रेज लोगो ने बिला इजाज़त जो किले बना डाले हैं उनको फौरन ज़मी-दोज कर दे।"

"नवाब की इस बात पर अग्रेज़ कम्पनी गौर करेगी।" इतना कह कर वाट्स घृणा से मुँह बिगाड़ता हुआ भीतर की ओर चला गया।

किले और भी तेज़ी से बनने लगे क्योंकि अंग्रेज़ लोग हर प्रकार से सिराजुद्दौला की अवज्ञा करना चाहते थे। अन्ततः सिराजुद्दौला ने २४ मई १७५६ ई० को कासिम बाज़ार की कोठी पर धावा कर दिया और वाट्स की सारी हेकडी ठिकाने लग गई। फिर भी नवाब ने राब को जीवन-दान दिया और वहाँ से बंदियो के साथ ५ जून को कलकत्ते की ओर बढा। गर्मी का महीना, रमजान के दिन, दिन-दिन भर रोजा रखने वाले मुसलमान सैनिक और अधिकारी, भारी-भारी तोपे—केवल ग्यारह दिन के अन्दर एक सौ साठ मील की यात्रा करते हुए सिदाजुद्दौला कलकत्ते जा पहुँचा।

सिराजुद्दौला के विरुद्ध पादरी लोग प्रचार कर रहे थे। चारो ओर रिश्वत का जाल फैलाया जा चुका था। अंग्रेजो की विशेष व्यवस्था के होते हुए भी रविवार २० जून १७५६ ई० को कलकत्ते की अग्रेजो कोठी का पतन हो गया। सिराजुद्दौला चाहता तो उसी समय मिस्टर हॉलवेल और उसके साथियों को मौत के घाट उतार देता लेकिन मानव-हृदय सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों के गिड़गिड़ाने पर और क्षमायाचना करने पर उनको माफ कर दिया। कलकत्ते का नाम अली नगर रखा गया और उसका दीवान राजा मानिक चन्द को बनाया गया।

१६ अगस्त १७५६ ई० को कलकत्ता पराजय का समाचार जब मद्रास पहुँचा; उस समय इतिहास प्रसिद्ध कॅर्नल क्लाइव ईस्ट इण्डिया कम्पनी को प्राप्त हो चुका था। अक्टूबर के मध्य में आठ सौ यूरोपियन और तेरह सौ

भारतीय सिपाही मद्रास से फल्ता भेजे गए। क्लाइव ने मानिकचन्द को रिश्वत देकर फोड़ लिया था। इसलिए २९ दिसम्बर को कलकत्ते से कुछ नीचे बजबज का किला क्लाइव के अधिकार मे आ गया। मानिकचन्द २ जनवरी १७५७ को हुगली पहुँचा और जब अंग्रेज़ी सेना ११ जनवरी के दिन किले मे दाखिल हुई उस समय वह खाली था और इसके बाद पूरे सात दिन हुगली की लूट मे खर्च किए गए और हज़ारों भारतीयों को निर्दयता के साथ कत्ल कर दिया गया। इसके साथ ही साथ दूसरी ओर क्लाइव ने और वॉट्सन ने सिराजुद्दौला को प्रेम पूर्ण पत्र लिखे और सन्धि करने के लिए आग्रह किया।

× × × ×

४ फरवरी १७५७ ई० को कलकत्ते का सुप्रसिद्ध अमीचन्द बाग काफी सजाया गया और जब अपने चुने हुए साथियो को लेकर सिराजुद्दौला कलकत्ता पहुँचा तो उसका अभूत पूर्व स्वागत किया गया। नवाब के विश्राम के लिए उन्होंने एक बहुत अच्छा और शानदार खेमा लगवा दिया था जिसमे एक छोटा सा तख्त भी रखा हुआ था; जो एक बहुमूल्य कालीन से सुशोभित था तथा ज़री के काम की मसनदे लगी हुई थी। इसी खेमे मे सिराजुद्दौला के सोने का भी प्रबन्ध था जिसके लिए बहुमूल्य पलग लगाया गया था।

"मामला कुछ गोलमाल दिखाई देता है।" सिराजुद्दौला ने अपने साथी मीरमदन से कहा।

"क्या कहा जा सकता है हुज़ूर।" सिराजुद्दौल के सेनापति मीरमदन ने कहा—"जब अपना दाँया हाथ ही बॉए हाथ के साथ गद्दारी करने लगे तो मुल्क की बद किस्मती है।"

"मीरमदन! हम को ऐसा लगता है कि हमारा दोस्त हमारा हमदर्द और हमारा खास सेनापति मीरजाफ़र हमारे साथ धोखा करना चाहता है।"

इसी समय वाल्श और स्क्रैफटन नाम के दो अंग्रेज़ वकीलो ने प्रवेश किया और इनके साथ भारतीय देश द्रोही राजा नवकृष्ण भी था। तीनों ने झुक कर सलाम किया।

"तो आप लोगो को क्लाइव साहब ने भेजा है ?" सिराजुद्दौला ने पूँछा।

"जी हुजूर ! और इस कागज पर सुलह की शर्तें लिख दी गई हैं। उनको आप कल सुबह मुलाहिजा फरमाले। हम दोनो वकील आपके खेमे के आजू-बाजू सो रहे हैं।"

."अच्छी बात है। मै खुद यह नही चाहता कि अंग्रेजों का नुकसान हो और न मै किसी किस्म की लड़ाई चाहता हूँ। आप लोग आराम फरमाएँ।"

इसके बाद दोनो अंग्रेज़ वकील अपने-अपने खेमो में चले गए। नवाब सिराजुद्दौला भी अपनी शय्या पर लेट गया और दोनो-तीनो खेमो की रोशनी बुझा दी गई।

४ तारीख की रात गुज़र चुकी थी। गहरा कोहरा चारो ओर छाया हुआ था और रात को दो बजे के लगभग दोनो अंग्रेज़ वकील तथा राजा नवकृष्ण धीरे से अपने खेमों से भाग कर क्लाइव के पास जा पहुँचे। सुबह के समय यानी ५ फरवरी के प्रातःकाल में जब कोहरा और शीत दोनो के कारण सिराजुद्दौला का प्रत्येक सिपाही पैरो में घुटने दिए हुए बेखबर सो रहा था कर्नल क्लाइव ने अपनी सुसज्जित सेना के साथ सिराजुद्दौला के खेमे पर हमला किया। क्लाइव और उसके साथियो का षड्यन्त्र था कि सिराजुद्दौला को मार डाला जाय, लेकिन उन लोगो को बड़ा आश्चर्य तब हुआ जब यह पता लगा कि सिराजुद्दौला रात को जिस खेमे मे सोया था, वह खाली पड़ा हुआ था और जब क्लाइव ने धावा किया उस समय सिराजुद्दौला ने अपनी सेना के साथ ऐसा मुँह तोड़ जबाव दिया कि अंग्रेज़ी सेना में भगदड़ मच गई और इस युद्ध में लगभग दो सौ अंग्रेज़ काम आए।

प्रभात की किरणो के फैलने के साथ ही साथ सिराजुद्दौला के मन्त्रियो ने इस बात पर जोर दिया कि अंग्रेजो के साथ सन्धि करली जाय। सिराजुद्दौला को यह मालूम हो चुका था कि उसके अधिकांश मन्त्री लोग रिश्वत के शिकार हो चुके हैं और इसलिए उसने अंग्रेजों की कड़ी से कड़ी बड़ी से बड़ी और बुरी से बुरी शर्तें भी स्वीकार कर ली। ६ फरवरी १७५७

ई० को अंग्रेजों के साथ जो समझौता हुआ वह इतिहास में "अलीनगर की सन्धि" के नाम से प्रसिद्ध है।

× × × ×

मुर्शिदाबाद से बीस मील दूर पलाश के वृक्षों का एक बहुत बडा जंगल था, जिसे पलाशी बाग कहते थे। उसी वन के पास प्लासी नामक मैदान में २३ जून १७५७ ई० को सिराजुद्दौला की और अंग्रेजों की सेनाएं संघर्ष के लिए एकत्रित हुईं। सन्धि करके भी अंग्रेजों ने उसका पालन नही किया और ४ जून १७५७ ई० की आधीरात के बाद एक जनानी पालकी में बैठकर चोरी-चोरी वॉट्स ने मीरजाफर के महल में प्रवेश किया और उसे नवाब बना देने की रिश्वत देते हुए एक गुप्त सन्धि-पत्र लिखा गया। बीसियो प्रकार से सिराजुद्दौला को अंग्रेजों ने धोखा दिया और उसके साथियों ने भी विश्वास घात करने में कोई कसर बाकी नही छोडी। अन्त में लाचार होकर अपनी जवानी को समेट कर सिराजुद्दौला प्लासी के युद्ध में उतर पड़ा। उसकी सेना में प्रधान सेनापति मीरजाफर के अतिरिक्त तीन व्यक्ति और भी थे, यारलुत्फ़ खाँ राजा दुर्लभ राम और मीर मदन, जिसे मुईउद्दीन कहते थे।

दोनो ओर के संघर्ष में; जिस समय खूब मार-काट हो रही थी सिराजुद्दौला ने मीरजाफर को अपने पास बुलाकर कहा—"मीरजाफर! यह पगड़ी अलीवर्दी खाँ की है। आज मैं इसे उतार कर तुम्हारे हाथो में रख रहा हूँ, इस पगड़ी की इज्जत रखना।"

"मैं अपनी वफ़ादारी का इतमीनान आपको दिलाता हूँ। खुदा गवाह है मैं इस पगड़ी को बेइज्जत नही होने दूँगा।"

सिराजुद्दौला का विश्वास तो जम गया लेकिन मीरजाफर ने जान बूझ कर अपनी आत्मा को धोखा दिया और जब कि विजय सिराजुद्दौला के चरण चूमना चाहती थी, मीरजाफर, दुर्लभ राम और यारलुत्फ तीनों अपने पैंतालीस हजार सैनिक लेकर अंग्रेजों से जा मिले। अकेला मीर मदन बारह हजार सैनिको के साथ क्लाइव वाट्सन और तीनों भारतीय देश-द्रोहियों के दाँत खट्टे करता रहा। अन्त में २३ तारीख़ की शाम को जब

मीर मदन भी मारा गया तो असहाय सिराजुद्दौला अपने हाथी की नंगी पीठ पर बैठकर मुर्शिदाबाद की ओर भाग गया।

और २९ तारीख को जब सिर्फ दो सौ गोरे और पाँच सौ हिन्दुस्तानी सिपाही विजेता के रूप मे क्लाइव के साथ मुर्शिदाबाद मे प्रविष्ट हुए, उस समय नगर के लोग, जो उस अवसर पर तमाशा देख रहे थे, कई लाख अवश्य रहे होंगे और यदि वे चाहते तो लकड़ियों और पत्थरों से यूरोपियन लोगो की चटनी बना देते और शायद तब हिन्दुस्तान का इतिहास बदल जाता। क्लाइव ने मीर जाफर को हाथ पकड़ कर सिराजुद्दौला की गद्दी पर बिठा दिया।

× × × ×

"लेकिन यह सन्धि वह नही हो सकती जो मैंने देखी थी वह तो लाल कागज पर थी।" अमीचन्द ने निराश होते हुए कहा--"इसमें तो वह शर्त कही भी नही लिखी हुई है कि मुझे तीस लाख रुपया नकद और नवाब के तमाम खजाने का पाँच प्रतिशत दिया जायगा।"

'ठीक है सेठ अमीचन्द !' क्लाइव ने कहा—"लेकिन यह सुलहनामा सफेद कागज पर लिखा हुआ है।"

"यह सरासर जालसाजी है, धोखा है" इतना कह कर अमीचन्द हृदय पर हाथ रखकर धम से जमीन पर बैठ गया।

दूसरे ही क्षण क्लाइव के इशारे पर अंग्रेजी सेना का एक दस्ता अमीचन्द के मकान पर भेज दिया गया, जिसे हुक्म था कि अमीचन्द का मकान लूट लिया जाय और उसके तमाम रिश्तेदारो को कत्ल कर दिया जाय। अंग्रेज अफसरों ने और उनके मतवाले गोरे सैनिको ने अमीचन्द के जनानखाने की ओर बढ़ने का प्रयत्न किया तो अमीचन्द के जमादार ने जो एक ऊँची जाति का भारतीय (ब्राह्मण) था मकान को आग लगा दी और जनानखाने में घुस कर तेरह नारियों को तलवार के घाट उतार दिया ताकि अंग्रेज लोग उनके सतीत्व का अपहरण न कर सके और अन्त में स्वय भी खञ्जर मार कर मर गया।

इस घटना के पश्चात अमीचन्द तीर्थ यात्रा के लिए चला गया और कोई नही जानता कि उसके बाद अमीचन्द का क्या हुआ ?

कुछ ही दिनों के भीतर सिराजुद्दौला राजमहल नामक स्थान पर गिरफ्तार कर लिया गया। २ जौलाई को उसे मुर्शिदाबाद लाया गया। मीर जाफर सिराजुद्दौला को आदर के साथ नजरबन्द रखना चाहता था; लेकिन अँग्रेजों ने एक अन्य विश्वासघाती के साथ मिलकर, जिसका नाम मोहम्मद बेग था, रात्रि के अन्धकार मे सिराजुद्दौला को कत्ल करा दिया और अगले दिन उस उदार, दयालु और सत्य निष्ठ, देशप्रेमी सिराजुद्दौला के मुर्दा शरीर को नगे हाथी की पीठ पर रखकर मुर्शिदाबाद की गलियों में घुमाया और उसकी लाश के साथ भारत की स्वतन्त्रता को भी सदियों के लिये दफ़न कर दिया गया। इस समय उसकी आयु सिर्फ पच्चीस साल थी।

जालसाजी षड़यन्त्र जिसके लिए इँगिलस्तान में प्राणदण्ड दिया जाता था, उसी अपराध के अपराधी क्लाइव को अंग्रेजी सरकार ने "लार्ड" की उपाधि से विभूषित कर दिया।

और क्लाइव ने अपनी बेईमानी और उस दिन की लज्जास्पद स्मृति को मिटाने के लिए कुछ समय पश्चात् पलासी के एक-एक वृक्ष की जड़ें खोद कर उसे रेगिस्तान बना दिया।

(२) कॅर्नल क्लाइव का गधा

यह एक माना हुआ सिद्धान्त है कि विश्वासघात करने वालों में नैतिकता की कमी होती है और वे लोग अदूरदर्शी भी होते हैं। गद्दी पर बैठने के बाद मीरजाफर ऐसा ही व्यक्ति प्रमाणित हुआ। सिराजुद्दौला के नाना अलीवर्दी खाँ के शासन काल में लगभग सभी जिम्मेदारी के पदों पर हिन्दू शासक नियुक्त थे, क्योंकि अलीवर्दी खाँ का यह विश्वास था कि अच्छे भले और विश्वास के योग्य लोगों को नियुक्त करना राज्य की जड़ो को मजबूत बनाना है। लेकिन मीर जाफर ने क्लाइव के इशारे पर लगभग सभी हिन्दू अधिकारियों को हटा दिया और उनके स्थान पर मुसलमानो या अंग्रेजो को नियुक्त कर दिया। इसके साथ ही साथ विहार प्रान्त के शासक राजा रामनारायन को समाप्त करने के लिए कितने ही उपाय किए गए और अन्त में अंग्रेजों ने उसे अपनी ओर मोड लिया। यही बात उड़ीसा के राजा रामरमसिंह के

साथ हुई तथा राजा दुर्लभ राम पर भी आक्रमण किया गया और बीच में पड़ कर मीर जाफर से अंग्रेजों ने सन्धि करा दी। क्लाइव ने मीर जाफर से "उमरा" की उपाधि प्राप्त की और तीन लाख रुपये सालाना की जागीर भी।

क्लाइव के मन और मस्तिष्क मे अंग्रेजी-साम्राज्य-संस्थापन की जड़ें बराबर गहरी होती चली जा रही थीं। १७६६ ई० के अन्त में तत्कालीन दिल्ली-सम्राट आलमगीर द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् जब शहजादा अली गौहर ने शाह आलम द्वितीय के नाम मे भारत का शासन अपने हाथ में लिया; उस समय अंग्रेजों ने विभिन्न प्रकार के जाल फैला कर मीर जाफर को सम्राट की नजरो से बहुत कुछ गिरा दिया। अब अंग्रेजों की इच्छा यह थी कि मीर जाफर को किसी न किसी प्रकार मार्ग से हटा दिया जाय। इसी उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुए बार-बार अधिक से अधिक रुपया मागा जाने लगा, जिसके कारण मीर जाफर बहुत परेशान हो गया।

× × × ×

"लेकिन तुम नहीं जानते केलो!" कर्नल क्लाइव ने कहा—'मीर जाफर तो पूरी तरह हमारा गुलाम हो चुका है लेकिन उसका लडका मीरन बहुत ही होशियार है और चाल बाज भी है।"

"यह बात मैं आप से बहुत पहले कहना चाहता था।" लेफ्टिनेन्ट केलो ने कहा—" लेकिन इसलिए नहीं कह सका कि आप मीरन पर काफी भरोसा करते थे।"

"वह एक पक्का शतरंज की चाल खेलने वाला नौजवान है। जब हम लोग मीरजाफर को सम्राट शाह आलम के साथ भिड़ाने की तरकीबें सोच रहे थे उस समय मीरन अपने बाप के कान भर रहा था कि सम्राट के खिलाफ़ कोई जंग न छेडी जाय। मिस्टर केलो! कुछ करना होगा।"

"जी! मैं समझा। एक पखवाडे के बाद आपको कोई खुशी की बात सुनाई देगी।"

और जब पूर्नियाँ का नवाब खुद्दाम हुसैन, जिसे मीर जाफर ने दो साल पहले राजा युगलसिंह के स्थान पर नियुक्त किया था, अपनी सेना के सहित

मीर जाफर के विरुद्ध सम्राट की सहायता के लिए आगे बढ़ा तो केलो और मीरन उसका सामना करने के लिए आगे आए। केलो का कथन है कि मीरन ने अंग्रेजो की सहायता नही की और २ जौलाई तक केलो और मीरन की सेनाए नवाब पूर्निआँ की सेना को पराजित नहीं कर सके; परन्तु पीछा करते रहे।

× × × ×

"२ जुलाई की आधी रात"—सैनिको का पडाव पडा हुआ है, हजारों सिपाही अपने-अपने डेरो मे चैन की नींद सो रहे हैं। मीरन भी अपने विशाल तम्बू में सोया पडा है। दो सिपाही किसी दूर स्थान पर बैठे हुए बातें कर रहे हैं।

"भाई जान! आज की रात कैसी डरावनी मालूम होती है चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है।" पहले सिपाही ने कहा।

"कौन जाने क्या होने वाला है। आसमान पर बादल छाए हैं, चांद की रोशनी रात की सियाही में छिप गई है।" दूसरे सिपाही ने कहा।

"मुझे लगता है इन अंग्रेजो की नीयत खराब है। तभी कुदरत की तरफ से इस किस्म का खौफनाक मंज़र खड़ा किया गया है।"

और इसी समय चारों ओर से हो-हल्ले की आवाज़ आने लगी। आधी रात हो रही थी, तमाम बड़े-बडे फौजी लोग युवराज मीरन के तम्बू की ओर बढ़े चले जा रहे थे। सभी के हृदयो में चिन्ता की गहरी भावना उठ रही थी।

"बड़े अफसोस की बात है।" तम्बू से बाहर आकर लेफ्टिनेन्ट केलो ने कहा—"शहज़ादा मीरन इन्तकाल फरमा गए हैं। उन पर बिजली गिर पडी और वह मरकर खाक भी हो गए।"

लोगो के चेहरो पर निराशा की लहरें दौड गई। कुछ लोगों के हाथ तलवारो की मूठ तक गए और दूसरे ही क्षण वापस आ गए।

"बिजली गिरने की बात बिल्कुल झूठ मालूम होती है।" पहले सिपाही ने दूसरे से कहा।

"तुम ठीक कहते हो भाई जान ! आम तौर पर बिजली गिरने की आवाज बहुत तेज़ सुनाई देती है लेकिन यहाँ तो कोई शोर भी नही हुआ ।"

"अंग्रेजी किस्म की बिजली रही होगी कि शहजादा जिस खेमे में सो रहा था उसका कपड़ा तक नही जला और उसके नीचे सोया हुआ मीरन जलकर खाक भी हो गया । ताज्जुब है ।"

"तुम नही जानते भाई जान ! एक काँटा था वह निकल गया और अब अंग्रेज़ खुशी के साथ आगे बढने की राह देख रहे हैं ।"

सिपाहियो की, बड-बडाहट रात के सन्नाटे के साथ समाप्त हो गई और लेफ्टिनेन्ट केलो ने गवर्नर वंसी टार्ट को अपनी सफलता से सूचित कर दिया तथा १५ सितम्बर १७६० ई० की गुप्त सभा में मीर जाफर के नौजवान दामाद मीर कासिम से यह तय हुआ कि गद्दी मिलते ही वह कितने ही लाख रुपये देगा और इस प्रकार जिस मीर कासिम को मीर जाफर ने अपना प्रतिनिधि बनाकर अंग्रेजो के पास भेजा था वह स्वयं सत्ता के लाभ में और गद्दी के लोभ मे दूसरो के हाथो मे बिक गया ।

× × × ×

२० अक्तूबर का प्रभात एक नवीन प्रकाश लेकर आया । भीतर महल में चहल-पहल होने लगी, दास और दासियाँ इधर-उधर घूमने-फिरने लगे, मीर जाफर प्रात. काल की किरणों के साथ-साथ एक स्वप्न देखकर उठा । उसका मन आत्म-ग्लानि से भर गया । अपने कमरे की बन्द खिड़की उसने खोल दी और उसकी नज़रे सामने वाले मैदान में दूर तक दौड़ने लगी । उसे अपने बेटे मीरन की याद ने व्यथित कर दिया और पश्चाताप की आग उसके हृदय मे भडक उठी ।

"जिस सत्ता, को, जिस गद्दी को, मैंने इतने ज़लील और बुरे रास्तो से हासिल किया था उससे मुझे क्या फायदा हुआ !" मीर जाफर बड़-बड़ा रहा था—"मैंने सिराजुद्दौला से उसका महल छीन लिया ! उस महल में तीन साल तक नवाब बनकर रहा लेकिन इन तीन सालों में जो परेशानियां और जो मुश्किलात बर्दाश्त करनी पडी हैं उनके सामने गुजिश्ता जिन्दगी के ५८ साल की तमाम तकलीफें कुछ नहीं हैं ।"

मीर जाफर क्रोध के आवेश में कमरे में टहलने लगा और कुछ क्षणों के बाद उसने फिर कहा—"वे लोग जिनके हाथ मैंने अपना मुल्क बेचा था आज मुझे डरा रहे हैं धमका रहे है ! ओह ! अगर पलासी की लडाई मे, मै अपने उस रिश्तेदार के साथ वफादार बना रहता जिसने हसरत से भरे हुए अल्फाजों में अपनी पगड़ी की लाज रखने की दुआ माँगी थी तो आज मेरी हालत इतनी बदतर नही होती। यह गुस्ताख परदेसी लोग जो पलासी से लेकर आज तक मुझे अपना गुलाम समझ कर हुकुम चलाते रहे हैं और अब मसनद से उतारने की धमकी दे रहे हैं अगर मैंने उस जंगे अज़ीम में इनको खत्म करने मे इमदाद दी होती तो वाक़या यह है कि बंगाल की बागडोर मेरे हाथ में होती और मेरा नाम इज्जत के साथ लिया जाता, मेरा मुल्क बच गया होता ! लेकिन अब—"

और ज्यो ही मीर जाफर ने दुबारा खिडकी से बाहर नज़र डाली तो उसने देखा कि कर्नल केलो खडा हुआ है। दो कम्पनी गोरे सैनिकों की और छह कम्पनी काले सिपाहियो की उसके महल की ओर चली आ रही हैं।

"ओह ! लाल वर्दी वाले अंग्रेज सिपाही कितनी शान के साथ चले आ रहे है और मेरे ही बागी रिश्तेदार के झंडे के नीचे जमा हो रहे हैं। ठीक है, जो सुलूक मैंने खुद सिराजुद्दौला के साथ किया। क्या मै उससे ज्यादा महर-बानी की उम्मीद मीर कासिम से कर सकता हूँ ?"

इसी समय एक संदेश वाहक गवर्नर वंसी टाट का पत्र लेकर आया जिसे पढ कर मीरजाफर क्रोध से भर गया। उसने पत्र लाने वाले लाशिंगटन से कहा--'अंग्रेज लोगों ने ही मुझे मसनद पर बैठाया था और आप चाहें तो मुझे उतार भी सकते हैं। अंग्रेजो ने अपने वादों को तोडना मुनासिब समझा लेकिन मैंने वादा खिलाफी नही की है। अगर मै चाहता तो इसी तरह की चाले चल कर अंग्रेज़ों से अच्छी तरह लड़ सकता था। मेरे बेटे मीरन ने मुझे इन सब बातों के बारे मे पहले ही बता दिया था।'

बहुत समय तक विचार-विमर्श करने के पश्चात् मीरजाफर ने अपनी विवशता का अनुभव किया और मीर कासिम को बुलाकर बंगाल की मसनद उसे सौंप दी। इस तरह २० अक्टूबर के नवीन प्रभात में बंगाल

की धरापर मीर क़ासिम अलीखाँ के नाम की नौबत बजने लगी और मीरजाफर को कलकत्ते भेज दिया गया। इस समय उसकी आयु साठ वर्ष की थी और मीर क़ासिम चालीस वर्ष का था।

मीर क़ासिम ने उसी दिन ईस्ट इण्डिया कम्पनी को खुश करने के लिये एक फरमॉन जारी किया जिसके द्वारा कलकत्ते की टकसाल में अशर्फियाँ और रुपये ढालने की आज्ञा प्रदान की गई तथा बगाल भर में घोषणा कर दी गई कि जो व्यक्ति इस टकमाल की अवज्ञा करेगा उसे कडा दण्ड दिया जायगा। सिराजुद्दौला ने एक बार कम्पनी को टकसाल स्थापित करने से रोक दिया था। १९ अगस्त १७५७ ई० को पहले-पहल कम्पनी के नाम के रुपये ढाले गए, लेकिन चाँदी कम होने के कारण कोई व्यक्ति बिना बट्टे के उनको नहीं लेता था। अब कम्पनी के हाथ आमदनी का मार्ग आ गया और मीर क़ासिम के द्वारा वह प्रशस्त भी हुआ।

इस प्रकार क्लाइव के इशारों पर चलने वाला मीरजाफर कुछ समय के लिये राज्य का भार ढोकर कलकत्ते में आराम करने के लिये भेज दिया गया, इतिहास कारो ने और मुर्शिदाबाद के एक तबीयत दार तथा हाजिर जबाब दरबारी ने इन्हीं सब कारणो मे मीरजाफर का नाम "कर्नल क्लाइव का गधा" रखा था।

(३) मीर कासिम

मीर कासिम के मसनद पर बैठने के बाद मुर्शिदाबाद के दरबार और बङ्गाल की प्रजा, दोनों की हालत बराबर बिगडती चली गई। कम्पनी की टकसाल घटिया सिक्के ढाल रही थी और वर्धमान के इलाके में अंग्रेज लोग खूब लूटमार कर रहे थे। मीर कासिम ने इस बात की शिकायत अंग्रेजो से की; लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसी बीच में अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर चढाई कर दी; जिसका परिणाम पानीपत का युद्ध था; परन्तु भारत के दुर्भाग्य से मराठा सेनापति सदाशिव भाऊ एक दूरदर्शी और सच्चा नीतिज्ञ प्रमाणित नहीं हो सका और ६ जनवरी १७६१ ई० के दिन भारत की राष्ट्रीयता और दिल्ली साम्राज्य की शक्ति चूर-चूर हो गई और भारतीय इतिहास का युग समाप्त हो गया। इसी बीच में मीर कासिम ने देशी

व्यापारियों को जीवित रखने के लिए २२ मार्च १७६३ ई० को अपनी सूबेदारी भर में यह हुकुम देदिया कि आज से दो साल तक किसी तरह के तिजारती माल पर कोई महसूल नही लिया जायगा। बङ्गाल मे प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। लेकिन अग्रेजों ने इस आज्ञा को अपना अपमान समझा और मीर कासिम के विरुद्ध फिर मीर जाफर से सन्धि की गई तथा ऊदवानाला के ऐतिहासिक स्थान पर अग्रेजी सेना और मीर कासिम की फौज में डट कर युद्ध हुआ। लेकिन मशहूर ईसाई सौदागर ख्वोजा पेतरूस के भाई गिगरी ने मीर कासिम के साथ विश्वासघात किया और एक रात को अग्रेजो की सेना को गुप्त मार्ग से किले मे प्रवेश करा दिया। जब इस विश्वासघात का पता मीर कासिम को चला तो उसने कितने ही षडयन्त्रकारियों को उसी रात कत्ल करवा दिया और अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए वह अवध की ओर चल पड़ा।

७ जुलाई १७६३ को अंग्रेजो ने फिर मीर जाफर को मसनद पर बिठा दिया। लेकिन बंगाल की हालत बराबर बिगड़ती चली गई और दूसरी ओर अंग्रेज लोगों ने अवध के सम्राट शुजाउद्दौला के साथ प्यार प्रेम की और सन्धि की बातें चलाईं। इसके साथ ही साथ दिल्ली के सम्राट शाह आलम के दिल और दिमाग में यह बिठा दिया कि शुजाउद्दौला सम्राट का भक्त नही है। किसी प्रकार से शाह आलम को राजी करके अंग्रेजों ने शुजाउद्दौला पर चढाई कर दी और बक्सर होते हुए इलाहाबाद तक नबाब का पीछा किया तथा छोटी सी लडाई के पश्चात इलाहाबाद पर अधिकार कर लिया। अन्त में नवाब के साथ सन्धि करली गई और उसे एक प्रकार से पँगु बना दिया।

मीर जाफर अब अंग्रेजों के काम का नहीं रह गया था इसलिए उन्होने उसे भी दबाना आरंभ कर दिया।

एक दिन ६५ वर्ष की आयु मे जब मीर जाफर रोग शय्या पर पड़ा हुआ था, महाराज नन्द कुमार उसके पास बैठे हुए थे।

"नन्द कुमार ! ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान के बुरे दिन आ गए हैं वरना तुम्हारे जैसा दोस्त—"

"अब उस बात को मत दुहराइए, न जाने मुझे क्या हो गया था कि मै अंग्रेजो के साथ मिल गया। नही तो मुट्ठी भर अंग्रेज पलासी के मैदान मे समाप्त हो जाते और आज यह दिन देखने को न मिलता।" महाराज नन्द कुमार ने कहा।

"नन्द कुमार ! पता नहीं जिन्दगी का चिराग किस वक्त बुझ जाए लेकिन एक बात का अहद कराना चाहता हूं—"मीर जाफर कुछ रुका।

"आप कहिए। रुकिए नही, आज नन्द कुमार अपना खून देकर भी आप की बात को पूरा करेगा।"

"तो मेरे मीरन के कत्ल का बदला लेना और अपने दोस्त मीर जाफर की बेइज्जती का भी।"

"मैं कसम लेता हूँ।" और महाराज नन्द कुमार ने मीरजापुर के सामने अपनी तलवार को चूम कर कहा।

"मुझे बडी तसल्ली हुई। अब मैं आराम के साथ मौत के आगोश में सो सकूँगा। लेकिन एक काम और करना मेरे अजीज दोस्त ! मेरा कोई रिश्तेदार मेरे बदन को हाथ न लगाए। तुम खुद अपने हाथ से मेरे मुँह में गंगा जल डाल देना और अपने हाथ से ही मेरी लाश को नहला देना ! मेरे—"इतना कहते न कहते मीर जाफर की आँखे बन्द हो गई और फरवरी १७६५ ई० के आरम्भ में मुर्शिदाबाद के महल मे मीर जाफर हमेशा के लिए हिन्दुस्तान की आज़ादी के सपने देखता हुआ गहरी नीद मे सो गया।

इसके बाद १७७७ ई० मे मीर कासिम भी बरेली पहुँच कर एक निर्वासित के रूप में बारह साल तक अपना जीवन दरिद्रता के रूप में बिता कर भारत की स्वाधीनता के सपने देखता हुआ दिल्ली जाकर मृत्यु की गोद में सो गया।

(४) फांसी के तख्ते पर

अभी अँग्रेजो का सबसे बड़ा शत्रु शेष था। १७७२ ई० मे वारेन हेस्टिंग्स को कम्पनी की ओर से कलकत्ते के फोर्ट विलियम का गवर्नर नियुक्त किया गया और आगे चल कर वह समस्त भारतीय साम्राज्य का पहला गवर्नर जनरल बनाया गया। इस बीच में हेस्टिंग्स ने महाराजा नन्दकुमार से बगाल

की नायबी का झूठा वादा कर दिया था। दूसरी ओर नन्दकुमार मन ही मन अँग्रेजो से भुना जा रहा था। समय पाकर उसने वारेन हेस्टिंग्स के विरुद्ध कलकत्ते की कौसिल में एक प्रार्थना-पत्र उपस्थित किया जिसमें हेस्टिंग्स पर कितने ही अभियोग लगाए गए थे। बंगाल के रईसो और जमींदारो से रिश्वत लेने, बल पूर्वक धन वसूल करने, तत्कालीन मुर्शिदाबाद के नबाव की माता मुन्नी बेगम से रुपया ऐंठने और लोगों को धोखा देने की बातें कही गई थी। महाराज नन्दकुमार ने उन लोगो के नाम और पते भी दिए थे, जिनसे धन वसूल किया गया था। कौसिल के सामने महाराज नन्दकुमार ने साक्षियो और प्रमाणो के द्वारा सभी अभियोगो को सत्य सिद्ध कर दिया और कौसिल ने भी एक स्वर से तमाम अभियोगों को सच्चा स्वीकार किया लेकिन हेस्टिंग्स ने एक कानूनी आपत्ति उठाई कि कौसिल को गवर्नर के विरुद्ध मुकद्दमा सुनने का कोई अधिकार नही है और अपनी ओर से उत्तर देने के स्थान पर उसने यह पक्ष ग्रहण किया कि आज से पाच वर्ष पूर्व १७७० ई० में एक कागज पर नंदकुमार ने जाली हस्ताक्षर किए थे इसलिए वह सबसे बड़ा अपराधी है। कम्पनी की ओर से इस समय तक कलकत्ते मे एक नवीन अदालत स्थापित की जा चुकी थी, जिसका नाम था सुप्रीम कोर्ट। इसका चीफ जस्टिस हेस्टिंग्स का बचपन का एक मित्र था—सर एलाइ जाह इम्पे। अन्तत: महाराज नन्दकुमार पर जाल साजी का मुकद्दमा चलाया गया जो बिल्कुल बनावटी था, फिर भी झूठे गवाह खडे किए गए और महाराज नन्दकुमार की ओर से जो भी सफाई प्रस्तुत की गई उस पर ध्यान नही दिया गया।

भारत में उस समय देशी या अँग्रेजी कोई ऐसा कानून उपस्थित नही था जिसके द्वारा जाल साजी के अपराध में किसी को मृत्यु दण्ड दिया जा सकता था। इंगिलस्तान में अवश्य ऐसा एक कायदा था। फिर भी महाराज नन्द कुमार को इस अपराध में फासी की सजा सुनादी गई और जैसा कि इतिहास-कारो ने भी स्वीकार किया है, महाराज नन्दकुमार ५ अगस्त १७७६ ई० को फाँसी के तख्ते पर खडे कर दिए गए। हजारो भारतवासी अपने महाराज के चारो ओर खडे हुए फूट-फूट कर रो रहे थे, जिनकी आत्मा मर चुकी थी और जिन्होने अंग्रेजी जुए को स्वीकार कर लिया था। महाराज नन्द कुमार ने

मौत का सामना करते हुए उन लोगों से शान्त रहने का अनुरोध किया और भारत की स्वतन्त्रता के लिए हँसते-हँसते प्राणों का विसर्जन कर दिया।

यह था उस अंग्रेज जाति का न्याय जिसकी शेखी मारते हुए अंग्रेज ने कभी लज्जा का अनुभव नहीं किया। जाल साजी करने वाले क्लाइव को लॉर्ड की उपाधि से विभूषित किया गया और उसे ब्रिटिश साम्राज्य का पहला संस्थापक माना गया। जब कि एक भारतीय शासक को जाल साजी के झूठे अभियोग में फाँस कर फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया।

(५) अवध की बेग़मात

बनारस की समृद्ध रियासत उस समय अवध के नवाब के आधीन थी और उसके पास अपार धन था लेकिन हेस्टिंग्स ने उन्नीस वर्षीय चेतसिंह को बनारस का राजा नियुक्त कर दिया और उसके पश्चात् कुछ ही दिनों में उस रियासत को अपने आधीन कर लिया।

इस बीच में अवध के नवाब से बड़ी-बड़ी रकमे बिना कारण माँगी जा चुकी थी। फिर भी हेस्टिंग्स का मन और धन की पिपासा शान्त नहीं हो रही थी। अपनी निर्धनता का रोना रोते हुए चुनार के किले में आसफुद्दौला हेस्टिंग्स से मिला।

"मैं आपसे सही अर्ज कर रहा हूं कि मुझे अपने यहाँ जो फौज रखनी पड़ रही है उसके लिए कम्पनी को एक बड़ी रकम देनी पड़ती है।"

"यह ठीक है नवाब साहब! लेकिन कोई तदबीर निकालनी ही होगी जिससे कि कलकत्ते का खजाना भर जाय और लखनऊ का खजाना भी खाली न हो।"

"मुझे आप रास्ता बताइए! मैं तो खुद बहुत मजबूर हूँ।" नवाब ने कहा।

"खजाना कहाँ है। यह मैं जानता हूँ।" हेस्टिंग्स ने कहा—"लेकिन उसके लिए आपको अपना दिल सख्त बनाना होगा।"

"आप फरमाइए!"

"मैं यह जानता हूँ कि नवाब शुजाउद्दौला ने अपने मरने से पहले अपनी माँ और अपनी बेगम दोनो को बड़े-बड़े खजाने दिए हैं। फैज़ाबाद का महल

भी उन्ही बेग़मो के नाम किया गया है और यह दोनो बेगम अपने बहुत से रिश्तेदारों के साथ बड़ी खुशहाली के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं।"

"यह आपने क्या फरमाया ? क्या मुझे अपनी दादी और अपनी माँ को ही लूटना पड़ेगा ?" आसफउद्दौला ने शर्म से काँपते हुए कहा।

"मैंने आपसे पहले ही कहा था।" हँसते हुए हेस्टिंग्स ने कहा—"हिम्मत का काम है।"

"मैं नही जानता कि इस काम में मुझे किस दर्जे कामयाबी हॉसिल होगी ?" नवाब ने पूँछा।

"इस बात की आप फिक्र न करे। मैंने रास्ता निकाल रखा है, फैज़ाबाद में रहने वाली इन तमाम औरतो के सर यह इल्ज़ाम लगाया जायगा कि उन्होने छिपे चोरी बनारस के राजा चेतसिह को मदद दी है और अग्रेज़ों के खिलाफ एक साजिश की जा रही है।"

"लेकिन इसे साबित भी तो किया जायगा।"

"इसके लिए हमने पहले ही सोच लिया है। कलकत्ता मे कम्पनी की तरफ से एक सुप्रीम कोर्ट क़ायम किया जा चुका है। उसका चीफ सर एलाईजाह इम्पे मेरा दोस्त है और मै उसे कलकत्ते से लखनऊ बुलाकर यह सब कुछ साबित करा लूँगा।" हेस्टिंग्स ने कहा।

और एक माननीय वॉइसराय की आज्ञा पर डकैती मे सहायता करने के लिए ईसाई चीफ जस्टिस कलकत्ते से लखनऊ को चल पड़ा। उसकी पालकी गैरईसाई कहारो के कंधो पर रखी हुई थी और अंधकार में डूबी हुई आत्मा वाले भारतीय लोग अपनी मौत को अपने कधो पर रखकर अवध की राजधानी तक ले आए।

लखनऊ पहुंच कर चीफ जस्टिस ने बहुत से हलफ नामे लिए जिनके द्वारा बेग़मो पर यह दोष लगाया गया कि वे अंग्रेजो के विरुद्ध षडयन्त्र में चेतसिह से मिली हुई थी। सर एलाईजाह ने न तो इन हलफ नामो को स्वयं पढा और न किसी से पढवाया। क्योकि वे सब फारसी भाषा मे लिखे हुए थे। एशिया के अन्दर इंगिलस्तान के प्रधान न्यायाधीश के रूप मे

उसने हलफ नामे स्वीकार लिए और अपने उच्चाधिकार से उसने यह घोषित कर दिया कि बेगमात उस षडयन्त्र मे भागीदार थी ।

फैजाबाद के महलो को अग्रेजी सेना ने चारो ओर से घेर लिया। उनके इस अचानक आक्रमरण से तमाम बेगमे घबरा उठी और उस समय अंग्रेजो की ओर से यह पैगाम पहुँचा कि आप लोग हमारे कैदी हैं और साजिश साबित हो चुकी है इसलिए तमाम जेवर, सोना, चाँदी और जवाहरात दे दीजिए। बेगमों ने ऐसा करने से इन्कार किया तो अंग्रेजो ने महल के भीतर खाने-पीने का सामान जाना आना बन्द कर दिया और नौकरो तथा नौकरानियों को बैतो से पीटा गया और बडी-बडी यातनाएं दी गई। बेगमे जब अपने सेवकों के रोने और चीखने की आवाजों को सहन नही कर सकीं तो उन्होने जेवरों के पिटारे पर पिटारे देना आरम्भ कर दिया और इस प्रकार लगभग एक करोड बीस लाख रुपयों का सामान अंग्रेजो को दिया गया और जब एक प्रकार से अवध की बेगमात भिखारिने हो गईं तब हेस्टिंग्स का ध्यान आसफउद्दौला की ओर हुआ और भिन्न-भिन्न प्रकार से उसका शोषण किया जाने लगा।

इस प्रकार उत्तरी भारत की सम्पदा को लूट कर अंग्रेजों ने उसे धूल में मिला दिया।

(६) हैदरअली

सन्ध्या का समय है चारों ओर से हवा खोरी के लिए सज्जन लोग कोयम्बतुर की सडको पर घूमने निकल पड़े हैं। इन्ही लोगो में मैसूर का दैव हैदरअली भी चहल-कदमी के लिए निकला है।

सहसा एक वृद्धा हैदरअली के सामने आकर लेट गई और रोने लगी।

"इन्साफ! इन्साफ! मुझे इन्साफ चाहिए," बुढ़िया ने कातर स्वर में कहा।

जैसे ही सिपाही ने उस वृद्धा को हटाना चाहा तो हैदरअली ने उसे रोक दिया और कहा—"यह क्या बदतमीजी है! तुम उसको हमारे सामने हाज़िर होने से क्यों रोक रहे हो?"

"हुजूर—"

"हमारा हुकुम है कि फरियादी किसी भी मौके पर हमारे हुजूर में आ सकता है। क्या हुआ अगर हम हवा खोरी के लिए निकले हैं तो इसके मानी यह नहीं हैं कि यह बूढी औरत इन्साफ पाने के कासिर रहे" हैदरअली ने उस वृद्धा की ओर मुड़ कर पूछा—"मामला क्या है ?"

"जहाँ पनाह !" बुढिया ने कहा—"मेरे सिर्फ एक बेटी थी, आगा मोहम्मद उसे भगा ले गया।"

"लेकिन आगा मोहम्मद को यहाँ से गए हुए एक महीना हो चुका है। तुमने आज तक उसकी शिकायत क्यों नही की ?" हैदरअली ने पूछा।

"जहाँ पनाह ! मैने कितनी ही अर्जियाँ लिखवा कर हैदरशाह के हाथों में दीं लेकिन मुझे कोई जबाब नही मिला।

हैदरशा इस समय भी प्रधान जमादार होने के कारण हैदरअली के आगे-आगे चल रहा था और आगा मोहम्मद उससे पूर्व पच्चीस साल तक हैदरअली की सेवा में रह चुका था।

"क्यों हैदरशा ! यह बुढ़िया क्या कहती है ?" हैदरअली ने तनिक क्रोध के साथ पूछा।

'जहाँ पनाह ! यह बुढिया और इसकी बेटी दोनों बदचलन हैं।" हैदरशा ने उत्तर मे कहा।

"सवाल दीगर और जवाब दीगर ! पूछा ज़मीन की तो कही आसमान की। तुम्हारे पास इस इल्ज़ाम का क्या जवाब है कि तुमने इस बुढिया की अर्जियां हमारे हुजूर मे पेश नहीं कीं।"

इतना कहने के बाद हैदरअली तत्काल अपने महल की ओर लौट पड़ा और वहाँ पहुँच कर तमाम घटना की जाँच की तो बुढ़िया की शिकायत को सही पाया। लोगों ने प्रार्थना की कि इस बार हैदरशा को क्षमा कर दिया जाय तो हैदरअली ने कहा "मैं आप लोगो की इल्तिजा को मन्जूर नही कर सकता। किसी बादशाह और उसकी रियाया के बीच खत किताबत को रोकने से बढ कर कोई गुनाह नही हो सकता। ताकतवर लोगो का यह फ़र्ज़ है कि वह ग़रीबो की हिफ़ाज़त करे। खुदा ने बेकसों को बचाने के लिए ही बादशाह को बनाया है और जो बादशाह अपनी रियाया के ऊपर जुल्म

होने देता है और ज़ालिम को सजा नही देता उस पर रियाया की मुहब्बत और उसका एतबार हट जाता है और रियाया बगावत के लिए उठ खड़ी होती है।"

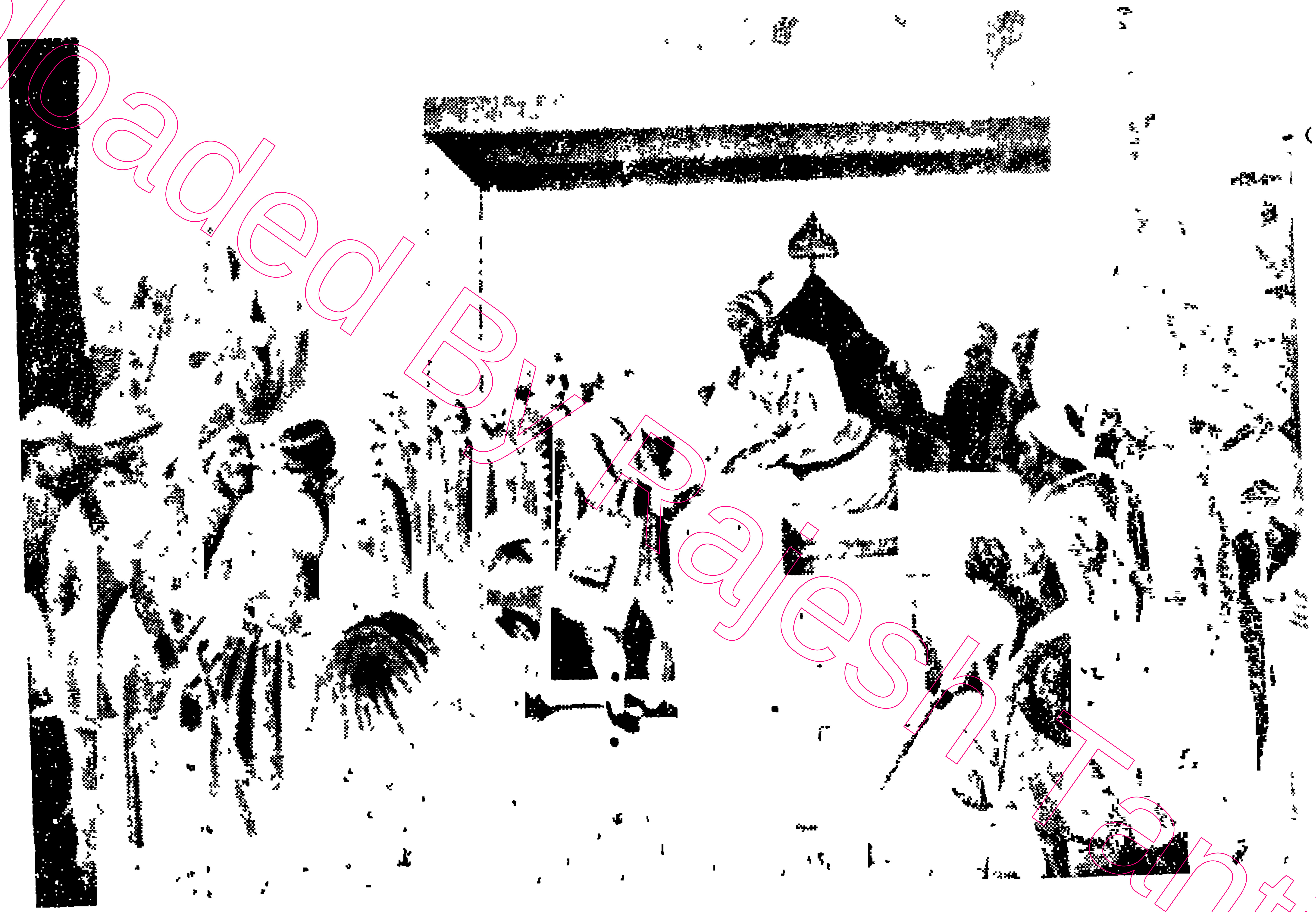
हैदरअली ने सबके सामने जमादार हैदरशा को दो सौ कोड़े लगवाए और एक सवार बुढ़िया के साथ आगा मोहम्मद के यहाँ भेजा और हुक्म दिया कि लड़की को उसकी माँ के हवाले कर दिया जाय और आगा मोहम्मद का सर काट कर हमारे हुज़ूर मे पेश किया जाय।

ऐसा ही हुआ और इस तरह हैदरअली अपने न्याय के लिए तथा अपनी कर्त्तव्य निष्ठा के लिए बहुत प्रसिद्ध हुआ। उसके राज्य में चोर तथा डाकू का नाम तक नही था। जिस पुलिस कर्मचारी के क्षेत्र मे चोरी हो जाती थी उसे मृत्यु दण्ड दिया जाता था। हैदरअली के हज़ारों जासूस तमाम राज्य में घूमते थे और प्रजा के सुख-दुःख का समाचार बताते थे। वह स्वयं भी वेश बदल कर घूमता था। प्रजा पर अत्याचार करने वाले सरकारी कर्मचारियों को कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाती थी। अपने तख्त पर वह सिर्फ ईद के दिन बैठता था और वह भी दूसरे लोगो की प्रार्थना पर। सादा जीवन और सादा भोजन और लाल कपड़ों का पहनावा उसकी विशेषता थी।

हैदर अली एक मामूली सिपाही के पद से मैसूर के सिंहासन तक जा पहुँचा। उसके पिता और बाबा आदि बहुत बड़े फकीर थे और वे नही चाहते थे कि भगवान की आराधना छोड़ कर हैदर अली सेना में भरती हो जाय। फिर भी भाग्य की देन को कौन रोक सकता है। अपना नाम तक भी न लिख सकने वाला हैदर अली मैसूर शासन में सेनापति से उठ कर प्रधान मन्त्री तक जा पहुँचा। परन्तु मद्रास में अड्डा जमाए हुए अंग्रेजो के लिए वह एक खतरा बन चला था और वे लोग किसी न किसी प्रकार उसे समाप्त करना चाहते थे।

हैदर अली ने नए प्रान्तो को जीत कर मैसूर राज्य की सीमा को बढाया और समय समय पर मराठों का भी डट कर मुकाबला किया।

कम्पनी सरकार को अवध की नबाबी का फरमान



टीपू अपने दोनों पुत्र धरोहर रख रहा है



१७६७ ई० में अंग्रेजो ने अकारण ही बारहमहल के क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया। लेकिन अंग्रेज जीत नही सके और जब उसके अट्ठारह वर्षीय पुत्र टीपू ने मद्रास पर चढाई की तो वहाँ का गवर्नर इस बुरी तरह से भागा कि उसकी टोपी और तलवार भी वही रह गई। इसके अतिरिक्त हैदर अली ने अंग्रेजो के कितने ही छोटे-बड़े किले अपने अधिकार में ले लिए यहाँ तक कि टीपू ने मगलोर का किला और नगर भी जीत लिया। नौजवान बेटे की इस विजय के एक ही दिन पश्चात जब हैदर अली अपनी सेना के सहित मगलोर पहुँचा तो उसने अपने बेटे को छाती से लगा लिया और हर्ष के कारण उसके नेत्रो में आँसू भर आए।

हैदर अली बढता हुआ मद्रास तक पहुँच गया और तब मद्रास की कौसिल ने कप्तान ब्रूक को सन्धि के लिए भेजा। इससे पूर्व एक बार जब हैदर का राजदूत अंग्रेजो के पास पहुँचा था उस समय उन्होने उसका भारी अपमान किया था। हैदर अली न इस समय ईंट का जवाब पत्थर से दिया और कहा—"मै मद्रास के फाटक पर आ रहा हूँ। गवर्नर और उसकी कौसिल को जो कुछ अर्ज करना होगा, वही आकर सुनूँगा।"

इसके पश्चात् साढे तीन दिन के अन्दर उसने एक सौ तीस मील का मार्ग तय किया और मद्रास के पास पहुँचते ही अंग्रेज उसके भय से काँप उठे। हैदर अली चाहता तो इसी समय तमाम अंग्रेजो को समाप्त करके सदैव के लिए मद्रास पर अधिकार कर सकता था, लेकिन उसने वादा किया था कि वह मद्रास के फाटक पर सुलह की बातें सुनेगा। इसलिए उसने अंग्रेजो की बात सुनी और १५ अप्रैल १७६९ ई० को अपनी शर्तो के अनुसार उसने अंग्रेजों से सन्धि कर ली। इसका परिणाम यह हुआ कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शेयरों का मूल्य गिरने लगा और अंग्रेज लोग हर प्रकार से हैदर अली के विरुद्ध षडयन्त्र रचने लगे—नाना फड़नवीस और हैदर अली में अंग्रेजों को बाहर निकालने के लिए सन्धि हो चुकी थी। यद्यपि गायकवाड, सिंधिया और भोंसले तीनों मराठा नरेश तथा हैदराबाद का निजाम अंग्रेजों की चाल में फँस चुके थे, फिर भी कुछ लोगों का विश्वास था कि हैदर अली दक्षिण भारत से अंग्रेजों को बाहर निकाल देगा। परन्तु अचानक ही ६ दिसम्बर

१७८२ ई० की रात को अरकाट के किले में हैदर अली की मृत्यु हो गई। उसकी कमर में एक फोड़ा निकला था। हैदर अली की मृत्यु अंग्रेजो के लिए वरदान सिद्ध हुई।

(७) टीपू सुल्तान

टीपू अपने समय का सबसे योग्य नौजवान था जिसके नाम से डराकर अंग्रेज़ माताए अपने बच्चों को चुप कराती थी। उसका जन्म १७४६ ई० में हुआ तथा उसका नाम फतहअली टीपू था। अंग्रेजों ने आस-पास के तमाम मित्र नरेशों से सन्धि करके त्रिवानकुर के राजा को भडका कर उसकी सहायता के नाम पर युद्ध छेड़ा और टीपू ने अपनी सेना के सहित अंग्रेज़ो को मद्रास तक खदेड दिया। लेकिन दूसरी बार अंग्रेज़, मराठे और निज़ाम तीन-तीन शक्तियो के द्वारा टीपू घिर गया और चौथी ओर से उसकी सेना में भी कितने ही विश्वासघातक पैदा हो गए। मैसूर की राजधानी श्रीरग पट्टन पर चढाई कर दी गई। परन्तु हैदरअली के मित्र नाना फडनवीस और निज़ाम के ज़ोर देने पर लार्ड कार्नवालिस ने २३ फरवरी १७६२ ई० के दिन टीपू का आधा राज्य लेकर सन्धि करली। यह आधा राज्य कम्पनी, निज़ाम और मराठो ने आपस में बॉट लिया नि.सहाय टीपू ने तीन सालाना किस्तों में तीन करोड तीस हज़ार रुपये दण्ड स्वरूप देने का वादा किया और इस रकम की ज़मानत में उसने अपने दो बेटे अंग्रेजो के हवाले कर दिए। बड़े शहज़ादे अब्दुल खालिक की आयु दस वर्ष की थी और छोटे शहज़ादे मुइज़ुद्दीन की आयु आठ वर्ष थी।

सन्धि के दिन से टीपू ने पलग और बिस्तर पर सोना छोड़ दिया और अपने जीवन के अन्तिम दिन तक हाथ के कते और बुने हुए खादी के टुकड़े ज़मीन पर बिछा कर सोता रहा।

धीरे-धीरे कार्नवालिस ने फ्रांसिसीयों के तमाम भारतीय क्षेत्र पर आक्रमण करके उसे कम्पनी के आधीन कर लिया। आगे चलकर इन लोगो ने बड़ी कुशलता से पंचायतो का विनाश कर दिया; क्योंकि भारतवासियों का सारा सामाजिक,औद्यौगिक तथा राजनैतिक जीवन इन्ही ग्राम पचायतों के आधार पर कायम था। अंग्रेज़ी अदालते कायम कर दी गई और वकालत

की नवीन प्रथा के द्वारा मुकदमे बाजी का शौक़ कौम के दिमाग में भर दिया गया।

आगे चलकर अंग्रेज़ों ने अहिल्या बाई की मृत्यु के उपरान्त तुकाजी को माधोजी सिंधिया के विरुद्ध भडकाना शुरू किया और उन्ही के इशारे पर उज्जैन को खूब लूटा।

फरवरी १८६४ ई० को पूना के पास बनौरी नामक स्थान पर मृत्यु से पहली शाम को एक हथियार बन्द गिरोह ने सिंधिया को रास्ते में घेर कर मार डाला। यद्यपि अंग्रेज़ इतिहासकारो का कहना है कि उनको जोर का बुख़ार आगया था।

कम्पनी का दूसरा जबरदस्त काँटा नाना फडनवीस अभी मौजूद था और अंग्रेजो ने किसी न किसी प्रकार उस काँटे को भी दूर कर दिया।

दोनो शक्तियों को समाप्त करने के पश्चात केवल निज़ाम शेष रह गया, जिसने कभी भी अंगेज़ो से लडने का साहस नही किया।

इस प्रकार दक्षिण भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य की जड़े अच्छी तरह जमा दी गई।

दूसरी ओर बंगाल से आगे बढ़कर, फर्रुखाबाद, लखनऊ, इलाहाबाद आदि पर अंग्रेज़ो ने अपना अधिकार कर लिया और सूरत की नवाबी को समाप्त कर दिया। मराठों के साथ कितने ही युद्ध किए गए और हमेशा धोखा दिया गया। जहाँ कही भी कोई शासक निस्सन्तान मर जाता था उस जगह अंग्रेज़ लोग तत्काल अपना अधिकार करके उस रियासत को साम्राज्य में मिला लेते थे। धीरे-धीरे आगरा और अलीगढ भी अंगेज़ों के अधिकार मे आगया। भरतपुर, मथुरा, जयपुर लगभग सभी उत्तर भारत और मध्य भारत में अंग्रेज़ो की विजय-वैजयन्ती फहराने लगी। राणा रणजीत सिंह जैसे व्यक्तियों को तोड़ लिया गया। विभिन्न प्रकार के नए टैक्स लगाए गए और मदमत्त अंग्रेजी साम्राज्य के महारथियो ने नैपाल पर भी चढ़ाई कर दी। परन्तु सफलता नही मिल सकी। समय-समय पर अंग्रेज़ों ने गंगाधर शास्त्री, खुरशेद जी, जमशेद जी मोदी और त्र्यम्बक जी आदि की हत्या कराई।

भारत के इतिहास में अन्त तक मराठा नरेशों ने उन लोगों को भारत से बाहर करने की प्रबल चेष्टा की परन्तु विश्वासघातकों के कारण और कुछ अंग्रेजो के सौभाग्य के कारण स्वतन्त्रता की योजना सफल नहीं हो सकी तथा भारत नैतिक पतन की ओर चलता चला गया।

मँगल पाण्डे

वर्षा के पश्चात् आकाश धुल चुका था। नीले और श्वेत आसमान में कहीं-कहीं छोटे-छोटे बादलों के टुकड़े दिखाई देरहे थे। हल्की-हल्की नीहारिका छाई हुई थी और इन सबके बीच में उदीयमान बाल-सूर्य की किरणें अपनी सुनहली किरणों से आकाश में विभिन्न रंगों की सृष्टि कर रही थी। पृथ्वी के वक्ष-स्थल पर चारों ओर हरियाली का नशा छाया हुआ था। छोटे-छोटे पौधे और तृणांकर भी ऊर्ध्वमुखी हो रहे थे—मानो, प्रकृति की सत्ता का निरादर करते हुए आकाश की ओर उठना ही चाहते थे। लघु अंकुरों के द्वारा मानव जीवन प्रकाशित हो रहा था। यही तो जीवन का दर्शन है—उठना, बढना और प्रगति के चरण से चरण मिला कर विश्व में चलना। प्रगति अर्थात् जीवन अगति अर्थात् मृत्यु।

भारी वर्षा के कारण खेतो की मेडे खिसक गई थी और किसी-किसी खेत में पानी भरा हुआ था। नदी, नाले, सरोवर और सरिताएँ सभी की प्यास बुझ चुकी थी और वायु भी सन्तोष की ठंडी साँस ले रहा था। किसानों के हल और बैल दोनों ही चल पड़े थे। कुछ लोग खेतों की सीमा को सीधा कर रहे थे तो कुछ पानी को बाहर निकालने की चेष्टा में थे। चिड़ियाँ चहचहाने लगी थी और चार मास घर के कोने में बैठ कर खाने वाले भी प्रियतमा के अंक से निकल कर पगडंडियों पर चल पड़े थे—परदेश में जीविका प्राप्त करने के लिए।

बच्चों के उत्साह का परिवार नही था। उनके खेलने के दिन आ गये थे। 'गोई' 'और' कबड्डी' इन दिनों के मनोरंजक खेल हैं। किसी खेत की कोमल मिट्टी में दूर पर एक मिट्टी का गडढा-सा बना कर कूदते हैं। कूदने वाला निश्चित स्थान तक दौडता हुआ आता है और वहाँ से उछाल मारता है। जिसकी जितनी लम्बी उछाल होती है वह उतनी ही प्रशंसा का पात्र होता है। इसी को गोई कूदना कहते हैं।

एक टोली इसी खेल में मस्त थी। लगभग एक दर्जन स्वस्थ बालक इस खेल मे लगे हुए थे। सहसा एक लड़का कूदते हुए बीच में ही रह गया—

"साँप-साँप।" वह बड़े जोर से चिल्लाया और एक दम पीछे की ओर लौट पडा।

सचमुच फन उठाए हुए एक साँप खडा हुआ था। सभी काँप उठे। एक हल्का-सा शोर मच गया। किसी ने कहा—डंडे से मार डालो। तो दूसरे ने कहा—चुप रहो वह अपने आप चला जायगा।

इसी समय गौर-वर्ण एक चौदह वर्षीय बालक ने झपट कर साँप के फन को मुट्ठी में कस कर पकड लिया। ज्योंही साँप ने तड़फडा कर अपनी पूंछ ऊपर उठाई तो बालक ने उसकी पतली पूंछ अपने पैर से दबाली और साँप को खीच कर सीधा कर दिया। इसके पश्चात् उसे छोड दिया।

"अब यह बेकाम होगया। इसकी बनावट छल्लेदार होती है—खीच देने से हड्डियाँ टूट जाती हैं और फिर यह मर जाता है।"

तमाम लड़कों ने फिर अपना खेल आरम्भ कर दिया। इसी बीच में दूर से बन्दूक चलने की आवाज हुई।

"वह साला फिरंगी आज फिर आया है—गाँव की बड़ी-बडी चिडियों में से एक भी नही छोडी है इसने।" एक लडके ने कहा।

"ऐसा ही मालूम होता है। जब वह रोज सबेरे निकला करेगा और चार-छह चिडिया मार कर ले जाया करेगा।" दूसरे ने कहा

"देखो तो सही।" जिस लड़के ने साँप पकडा था वह बोला—"मालूम होता है, वह किसी लडकी को मार रहा है।"

इतना कह कर वह उस ओर लपका जिधर वह अँग्रेज खड़ा हुआ था और शेष लडके डर के मारे गाँव की ओर भाग गये।

पास जाकर उसने देखा तो भारती उस अँग्रेज से उलझ रही थी—कीचड मार-मार कर उसने अँग्रेज के तमाम कपडे खराब कर दिये थे और वह अँग्रेज भी बराबर थप्पड़ो से उसकी पूजा कर रहा था।

"क्या हुआ भारती!" उस अँग्रेज से अलग करते हुए बालक ने उस बालिका से पूछा।

"मंगल ! इस फिरंगी ने हमारा अपमान किया है।" भारती का गोरा मुख क्रोध के कारण तमतमा उठा था और वह अत्याधिक लाल होगया था— "देखते हो ? यह क्या है ?" उसने पास वाले खेत में बने हुए मान चित्र की ओर इशारा किया।

"मैं देख रहा हूँ भारती ! तुमने भारत का नक्शा बनाया है। लेकिन इससे क्या ?" मंगल ने पूछा।

"यह फिरंगी बन्दूक हाथ मे लिए हुए इसी मार्ग से जारहा था और मेरे इस पेड पर बैठी हुई चिडिया को इसने गोली से मार डाला।"

"फिर"

"वह चिडिया मर गई और मेरे इस नक्शे के बीचो बीच आकर गिर पडी।"

"उसके बाद !"

"यह अँग्रेज का बच्चा यहाँ आया—और जूते पहने हुए मेरे नक्शे को रौंदता हुआ चिडिया उठाने लगा।"

"उसे मालूम नही होगा भारती ?"

"मैंने इसे रोका था मंगल ! मैंने कहा यह भारतमाता है—तुम इसका अपमान मत करो मै तुम्हे डिग्गी से उठा कर चिडिया दे दूंगी।"

"तो उसने क्या कहा।"

"न जाने क्या कहा अँग्रेजी में।"

"क्या बोला तुमने साहब बहादुर ?" उस अँग्रेज की ओर आकर्षित होकर मंगल ने पूछा।

"डैम इन्डिया ! एण्ड डैम इण्डियन्स ! तुम क्या माँगता है ?" अँग्रेज ने बड़े रौब से पूछा।

"हम तुम्हारा खून करना माँगता है। दुश्मन !"

मंगल ने झपट कर उसके हाथ से बन्दूक छीनली और नलियां पकड कर कुन्दे की ओर से दो तीन बार उस अँग्रेज की पीठ पर वार दिये। पिट कर अंग्रेज भागा तो मंगल ने उसे दौड़ कर पकड लिया।

"हम माफी चाहता हैं यंगमैन ! अब कभी इधर नहीं आयेगा।"

"यह तो ठीक है लाल बन्दर साहब! लेकिन आप अपनी इस तोप को अपने साथ ही लेते जाओ। नहीं तो कल ही थानेदार का बच्चा पकड़ कर हवालात में बन्द कर देगा।" मगल ने छोटी बन्दूक अँग्रेज के हाथों मे थमादी और कहा—"अब आप जा सकते हैं।"

"थैंक यू" कह कर वह जल्दी से चला गया।

"चलते समय भी गाली दे गया मगल! और तुम से कुछ भी नहीं बना?" भारती ने टेढ़ी नजरों से कहा।"

"गाली नहीं दी भारती! उसने कहा धन्यवाद! तुम अँग्रेजी नहीं जानती हो इसलिए हर बात को गाली ही समझती हो।"

"ओह! गाली दी—मगल को गाली दी! मैं यह बात सारे गाव में कह दूँगी।" और ताली बजा-बजा कर भारती नाच उठी।

"तू ऐसे नहीं मानेगी।" मगल ने उसकी चोटी पकड़ ली और तब भारती का नाचना बन्द होगया।

"यह क्या है मगल! हमें यह अच्छा नहीं लगता।"

"हमे तो अच्छा लगता है।" चोटी को सुहलाते हुए मगल बोला।

"ओफ! लगरही है मगल! चोटी छोड दो।" पीडा का बहाना करते हुए भारती बोली।

और तभी मगल ने उसकी चोटी छोड दी—भारती कुदकती-फुदकती खेतों की ओर दौड़ गई। उसके पीछे-पीछे मगल चलता चला गया। दोनों एक कूएँ के पास पहुँचे। पुर चल रहा था, लोगों के नहाने और पानी पीने के लिए।

"छुआ है उस फिरंगी को, भंगी को, चलो नहा डालो और जिन हाथों से उसे मारा है उन्हें मिट्टी से मल कर धो डालो।" भारती ने कहा

"लेकिन क्यों?"

"बामन की जात हो न? गाँव वालों को पता चल गया कि तुम फिरंगी को छूकर नहाये नहीं हो तो कोई एक लोटा पानी भी नहीं देगा—समझे?" भारती ने मुस्कराते हुए कहा।

"अरे क्या हुआ री भारती!" बूढ़े ने बैल रोक कर पूछा।

"आज तो मगल ने बडा पाप कर डाला है दादा !" भारती ने अपने पिता से कहा ।

"क्या हुआ रे मगल !"

"दादा ! बात यह है कि……… ।"

"यह क्या बतायेगा दादा ! यह तो निरा बुद्धू है । आज इसने सुबह ही सुबह एक फिरगी को छू लिया है ।" भारती ने मटकते हुए पहली सूचना प्रसारित की ।

"राम ! राम ! चल स्नान कर ! तू तो भ्रष्ट होता जा रहा है ।" बूढे ने भर्त्सना के शब्दो मे मगल से कहा ।

"लेकिन दादा ! मेरी बात भी तो सुनलो न !"

"बात पीछे सुनूगा पहले नहा—चल बैठ पुर के नीचे ।"

और खदेड कर बूढे ने मगल को पूरे एक पुर पानी से स्नान कराया और कहा— "यो ही भीगे-भीगे सौ बार और आठ बार राम का नाम भी ले डाल ।"

मंगल कुड मुडाता हुआ राम-राम जपने लगा । भारती मुस्कराती रही । मगल ने आधी धोती निचोड कर लपेट ली और आधी से शरीर ढक लिया ।

"अब बता क्या बात है ।" बूढे ने पूछा

"यह बेचारा क्या बतायेगा दादा ! मै बताती हूँ ।" भारती ने फिर भी मगल को नही बोलने दिया— "बात यह हुई दादा ! कि मै पास वाले खेत मे भारत माता बना रही थी । इतने में वह अग्रेज आया— वही जो कुछ महीने हुआ इस तरफ लगान वसूल करने आया है । उसने एक चिड़िया मारी । वह बेचारी मेरे नक्शे के बीचो बीच आ पडी । मैने उस भंगी से कहा कि मै उसे उठाकर देदूँगी तो वह जूते पहने हुए नक्शे को रौदता हुआ घुस पड़ा और गाली बकने लगा ।"

"दिया नही कसकर एक झापड मुँह पर । यह अग्रेज लोग अब हमें कदम-कदम पर अपमानित करने लगे हैं । भगवान् जाने इन से कब छुटकारा होगा—हाँ फिर क्या हुआ भारती ।"

"मैंने कीचड़ फेंक-फेंक कर उसके तमाम कपड़े खराब कर दिये और उसने मुझे कई थप्पड़ मारे।"

"थप्पड़ मारे उस कमीन ने !" बूढ़े ने जोश में भरकर कहा और क्रोध पर काबू न पासकने के कारण बैलों की पीठ पर डडी मार दी।

"लेकिन दादा ! यह तो बैल हैं।" मंगल बोला।

"गुस्से में आदमी पागल हो जाता है।" बूढा बोला—"हाँ ! तो फिर क्या हुआ।"

"न जाने कहाँ से दौड़ता हुआ मंगल चला आया और इसने बन्दूक छीन कर कुन्दों से जो उस अङ्गरेज की पिटाई की है तो बन्दर साहब सीधे हो गए।" ताली बजाकर भारती नाचने लगी।

"यह तुमने क्या किया मगल !" बूढे का सारा जोश ठंडा पड गया और उसका मुँह उदास हो गया—"अब इस गाँव की खैर नही है। देखो कल क्या होता है ?"

"क्या होगा दादा !" भारती ने पूछा।

"उस एक अङ्गरेज की पिटाई का बदला हम सब सब लोगो से लिया जायगा। दो चार दिन में ही तमाम गाँव परेशान हो उठेगा।"

"आप कोई फिक्र न करें दादा ! हमारे गाँव में इतने नौजवान लडके हैं कि दस-दस अङ्गरेज के लिए एक एक भारी पड़ेगा।"

"लेकिन वे लोग हाथ पैरो से कहाँ लड़ते है मगल ! ठाँय, धाँय और खेल खत्म ! उनकी बन्दूको के सामने निहत्थे लोग कर ही क्या सकते हैं ?" बूढ़े ने दीर्घ निश्वास लेकर कहा।

क्यों दादा ? क्या हम लोग इतने निर्बल हैं ?" मगल ने पूछा

"न कमज़ोर थे और न कमज़ोर हैं मंगल ! लेकिन हमारे भाइयो ने ही हमारे साथ विश्वासघात करके हमें कमजोर कर दिया। तुम नही जानते बच्चो ! अङ्गरेजो ने हमारे देश का सर्वनाश कैसे किया है ?"

"आज वही बताओ दादा।" दोनों बच्चों ने आग्रह किया।

"अच्छा तो दोपहर को चौपाल पर आजाना, खा-पी कर। वही बताऊँगा तुम्हें।"

: २ :

सायकाल के समय प्राय: अलावो पर या चौपालों पर गाँव के लोग एकत्रित हो जाते है। घर के चौका-चूल्हे से लेकर विदेशों की राजनीति तक पर बातें हो जाती हैं। आज दादा हरभजन से कुछ अ गरेजों के विषय में सुनने-समझने के लिए गाँव के सभी बालक चौपाल पर एकत्रित हो गए हैं। शायद रामपुर मे कोई ऐसा छोटा बालक ही शेष रह गया हो, जो या तो उन बातो को समझता नही या फिर उस दिन वह गाँव से बाहर चला गया था। भारती और मगल बडे उत्साह से दादा की बातें सुनने को बहुत पहले से बैठे हुए हैं।

"हाँ दादा! तो फिर बताइये आप क्या कहना चाहते हैं।" मगल ने गंभीरता से प्रश्न किया।

"सुनो बच्चो! अत्यन्त प्राचीन समय से भारत की ९९ प्रतिशत जनता गाँवो मे रहती-बसती आई है। हर गाँव का प्रबन्ध ठीक-ठीक चलाने के लिए एक "ग्राम-पचायत" बनी हुई थी। भारत के रहने वाले ग्रामीणो का सारा सामाजिक, औद्योगिक और राजनैतिक जीवन इन्ही ग्रामो और ग्राम-पंचायतो के आधार पर बना था।* इन ग्राम पंचायतो का संगठन भी बडा अच्छा था।"

"वह कैसे ?" भारती ने पूछा।

"उस प्राचीन समय से लेकर, जिसकी अब कोई याद बाकी नही रही, हर गाँव के बडे-बूढो की एक पंचायत गाँव पर शासन करती रही है, गाँव के पंचायती कामो को चलाती रही है और गाव भर के हितो की रक्षा करती रही है। पंचों की तादाद पहले पाँच हुआ करती थी, आगे चलकर पाँच

---

* ....the village community was, as it is still, the unit of social, industrial and political existence".—Torren's *Empire in Asia*, p. 100

से अधिक होगई, किन्तु पचों में सदा सब जातियो के चुने हुए लोग सम्मिलित रहे हैं। जब कभी कोई झगडा होता तो पंच ही प्राचीन मर्यादा के अनुसार उसका न्याय करते थे और जब कभी कोई नये ढग का प्रश्न सामने आ जाता था तो पच ही नये नियम बनाकर भविष्य के लिए मर्यादा बाँध देते थे।*

"यह तो बड़ा अच्छा काम था।" मगन ने कहा।

"इतना ही नही भारत की चुंगियो (नगरपालिकाओ) और ग्राम पचायतों को छोटे बडे तमाम लोगो ने मिल कर जो अधिकार दे रखे थे उनके बल पर यह पचायते अपनी-अपनी सीमा के अन्दर पूरी तरह शान्ति और व्यवस्था स्थापित रख सकती थी। मध्य भारत मे भी, अन्यायी शासकों तक ने भी, कभी इन पन्चायतों के स्वत्व और उनके अधिकारों पर आक्रमण नही किया, जबकि समस्त न्याय शील नरेशों की कीर्ति और लोक प्रियता का विशेष कारण यही होता था कि वे इन पन्चायतो का पूरा ध्यान रखते थे।"†

"यह तो बड़ी अजीबसी बात मालुम होती है। क्या पन्चायते इतनी सबल थी?" एक बालक ने पूछा।

"हाँ! हिंदुस्तान के हर गाँव मे एक बाकायदा पंचायत होती थी जो गाँव की माल गुजारी और पुलिस दोनो का प्रबन्ध करती थी और बडी

* "Time out of mind, the village and its common interests and affairs have been ruled over by a council of elders, anciently five in number, now frequently more numerous, but always representative in character, who, when any dispute arises, declare what is the customary law, and who, when any new or unprecedented case occurs, occassionally legislate". Ibid p. 101.

† 'The Municipal and village institutions of India were competent, from the power given them by the common assent of all ranks, to maintain order and peace within their respective circles. In Central India, their rights and privi- ledges never were contested even by tyrants, while all just princes founded their cheif reputation and claim to popularity on attention to them'' — Malcolm vol I., chap xii, Ibid p 101.

सीमा तक अपराधियों को दण्ड देने तथा अभियोगों का निर्णय करने का काम भी करती थी।"*

"तब तो ऐसी नगर पालिकाओं में यानी ग्राम पंचायतों में कुछ अधिकारी लोग भी होते होंगे ?" भारतीय ने पूछा।

"हाँ बेटी ! दो अधिकारी ग्राम पचायत के अन्तर्गत होते थे। पहला आदमी मालगुजारी वसूल करने वाला होता था, जिसे आजकल कलक्टर कहते हैं और दूसरा अधिकारी शान्ति और व्यवस्था को ठीक से देखभाल करने वाला, जिसे आज कल मैजिस्ट्रेट कहते है। यह दोनों अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में बिल्कुल स्वतन्त्र होते थे।"

'तब मान लीजिए कोई झगड़ा हो जाय तो उसे कैसे दबाया जाता था ?"

"ग्राम निवासियों के धन और प्राणों की रक्षा के लिए पचायतों के संरक्षण मे कहारों का एक दल होता था जिसे आज कल कॉन्स्टेबिल्स कहते हैं।"

"और क्या होता था दादा ?"

"इन ग्राम पचायतो की एक विशेषता थी। अस्थाई पचों का चुना जाना—जिनको आज कल जूरी करते हैं। माल और फौजदारी, सभी, प्रकार के मुकदमों के लिए अलग-अलग जूरी चुने जाते थे और इनका निर्णय सभी के लिए मान्य होता था।"

"लेकिन यह लोग चुने कैसे जाते थे।"

"इनको जनता चुनती थी। ऊँचे से ऊँचा चरित्र रखने वाले साहसिक और त्याग की भावना वाले मनुष्य इन लोगों के मुखिया चुने जाते थे। यह मुखिया लोग साधारण रूप से ऐसे व्यक्ति होते थे जो प्रत्येक न्यायशील नरेश की सहायता करते थे और प्रत्येक अन्यायी नरेश का साहस के साथ

---

* "In all India villages there was a regularly constituted municipality, by which its affairs, both of revenue and police were administered, and which exercised, to a very great extent, Majisterial and judicial autrhority"—Sir Thomas Munro, Ibid, p. 101.

विरोध करते थे और इस प्रकार अन्याय मे ग्रामीण जीवन की रक्षा करते थे ।"

"क्या सभी जातियो के लोग पच हो सकते थे ?"

"हाँ ! हर श्रेणी और हर जाति के लोगो मे मे इन पंचो का चुनाव किया जाता था ।"

"तब तो इन पचायतो का बड़ा प्रभाव रहा होगा ।"

"हाँ ! यदि कभी किसी विपदा के समय कोई मनुष्य अपना घर या खेत छोड़ कर कही बाहर चला जाता था तो वह अथवा उसकी सन्तान जब चाहे अपने झोपड़े या अपने खेत पर फिर से लौट कर अधिकार कर लेती थी। न किसी दीवार के लिए कोई झगड़ा होता था और न किसी खेत के लिए मुकदमे बाजी ।"*

"तब तो हर किसान अपनी धरती का पूरा मालिक समझा जाता होगा ?"

"बिल्कुल ठीक है ! उस समय के भारतवासी सरल, निष्पाप और ईमानदार होते थे और इतने सच्चे थे जितने ससार के किसी भी दूसरे देश के लोग हो सकते थे ।"†

'परन्तु आज कल तो इन ग्राम पचायतो का कही पता भी नही है ।"

"यही तो हमारा सबसे वडा दुर्भाग्य है कि अग्रेजों ने भारत में आकर ग्राम पचायतो का नाश कर दिया । इनके आने से पहले, जब कभी किसी राज कुल में अदल-बदल हुई; मुसलमान या मराठे जो भी रहे हो, सभी भारतीय नरेशों ने इन ग्राम पंचायतो को पूरा-पूरा सरक्षण दिया था और निस्संदेह उनको ज्यों का त्यों रहने दिया था । अब नए विदेशी शासको ने उन प्राचीन पचायतों का पूरी तरह निरादर किया और उन मे से अधिकाश को निर्ममता

---

* "Every wall of a house, every field, was taken possession of the owner or cultivator without dispute or litigation" Malcolm, Vol II. Chap I Ibid p. 100

† "Simple, harmless, honest and having as much truth in them as any people in the world'—Munro, Vol I, p. 280.

के साथ उखाड़ कर फेंक दिया। देशी पंचों की अदालत की जगह अब एक स्वेच्छाचारी विदेशी जज बैठा दिया गया।*

"इस प्रकार तो हजारों वर्षों की ग्राम पंचायतें अंग्रेजों ने जान बूझ कर समाप्त कर दी ?"

"और क्या ! बंगाल के अन्दर जब मीर जाफर और मीर कासिम के शासन काल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की भयकर व्यापारिक तथा कारबारी और अनेकों समय पर बे परदा तथा खुली लूट का आरम्भ हुआ तो इन पचायतों पर सबसे पहला प्रहार किया गया।"

"और दूसरा हमला कब हुआ ?"

"१७७३ ई० में जब कि वारेन हेस्टिंग्स के शासन काल में इंगिलस्तान में 'रेगूलेशन एक्ट' स्वीकार किया गया और जिसके द्वारा कलकत्ते में सबसे पहला अंग्रेजी 'हाई कोर्ट' स्थापित हुआ और उसका पहला जज हेस्टिंग्स का प्रख्यात मित्र सर एलाई जाह इम्पे बनाया गया।"

"यह तो ऐसी बात हुई दादा ! कि कोई भी समझदार और न्यायशील इतिहास लेखक इन कामो पर विना आश्चर्य प्रकट किए और उन्हें निन्दनीय ठहराए उनका उल्लेख नहीं कर सकता।†

"हाँ मंगल ! कितने ही इतिहास लेखकों ने इस बात को स्वीकार किया है। कॉर्न वालिस ने देश भर में अंग्रेजी अदालते बना कर हिन्दुस्तानी ग्राम पंचायतों के रहे सहे चिन्हों को भी मिटा दिया।"

"लेकिन इसे तो हमारी इतिहास की किताब में 'शासन सुधार' का नाम दिया गया है।" भारती ने कहा।

"तुम नही जानती बेटी। इस सुधार की आड़ में सारा देश बरबाद

---

* "Yet, these Municipal institutions, which confessedly had been scrupulously respected in all former changes of dynasty whether Mohammadan or Maratha, were henceforth to be disregarded, and many of them to be uprooted by the new system of forgien administration Instead of the native Panchayat, there was established an arbitrary judge". Ibid p 102, 103

† "No wise or just historian will note these things without expressions of wonder and condemnation".—Ibid p. 103.

हो गया। अंग्रेजी अदालतों की तमाम कार्यवाही जान-बूझ कर लम्बी और पेचीदा बना दी गई। साथ ही साथ वकीलों को भी जन्म दिया गया और इस तरह के नियम बनाए गए कि बिना वकील की सहायता के कोई मुकदमा नहीं चलाया जा सकता था। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकार के लिए एक प्रकार के नियम बने और साधारण प्रजा के लिए दूसरी प्रकार के। गरीब के •लिए न्याय प्राप्त करना आकाश के तारे तोड़कर लाने के समान हो गया। नए नियमों के अनुसार सरकार अपनी मालगुजारी बहुत आसानी से वसूल कर सकती थी और वकीलो तथा जजों आदि के रूप मे इँग्लिस्तान के हजारो बेकार युवकों की जीविका भारत में लगा दी गई और यहाँ के निवासियो में मुकदमे बाज़ी, षड़यन्त्र की प्रवृत्ति तथा झूठ बोलना, रिश्वत देना और फूट के साथ बरबादी फैलाने के लिए क्षेत्र बड़ा कर दिया गया।*

"इसका अर्थ यह हुआ दादा! कि हम लोग जाल में कस दिए गए?"

"हाँ! बात ठीक है। किसी किसी अंग्रेज़ ने स्वीकार किया है कि हमारी न्याय पद्धति कितनी निकृष्ट हैं! वकालत की जिस अंग्रेजी प्रथा को हम इस देश मे प्रचलित करने का बड़ा भारी प्रयास कर रहे हैं क्या उससे अधिक सदाचार से बिल्कुल गिरी हुई किसी दूसरी प्रथा का अनुमान भी किया जा सकता है! क्या हमारी अदालतें रिश्वत खोरी के केन्द्र नहीं हैं! और क्या मुकदमें बाजी का शौक जो भारतीय मस्तिष्क पर छूत की बीमारी की तरह प्रभाव डालकर उसके सदाचार को भ्रष्ट नहीं कर रहा है? जहाँ तक हो सके वहाँ तक लोगो को अपने मुकदमे सुलझा लेने का अवसर क्यो न दिया जाय।†

---

* Mill vol v, p 355.

† "Look at our miserable legal system can anything be conceived more thoroughly than the system of Western Advocacy which we are doing our best to introduce into this country ?... .. are not our law-courts hot-beds of corruption, and is not the lone of litigation contaminating and thoroughly perverting the national mind ? Why not let the people settle their own disputes as far as possible ?" S. Lobb, the famous English Positivist— 'भारत मे अंगरेजी राज—' लेखक कमवीर महात्मा सुन्दर लाल पृष्ठ ३६३।

'मैं समझा दादा ! इसके मानी यह हुए कि कॉर्नवालिस इस बात को अच्छी तरह जानता था कि परतन्त्र देश मे पराजित जाति का चरित्र भ्रष्ट कर देना चाहिए और उसे सदाचार-हीन बनाए रखने में ही विदेशी शासकों का सबसे अधिक लाभ है।" मंगल ने कहा।

'तू वैसे तो बहुत छोटा है रे ! लेकिन बात की गहराई तक खूब पहुँच जाता है।" दादा हर भजन ने मुस्कराते हुए कहा। भारती की नज़रें मंगल के चहरे पर जा टिकी और दादा ने उन दोनों को प्यार से भरे हुए अपने स्वप्न लोक में विचरण करते हुए देखा।

"थोडा बहुत लिखने-पढ़ने का ही यह असर है दादा ! और सबसे बड़ी बात तो आप जैसे बडो का आशीर्वाद है।' मगल ने श्रद्धा से भरी हुई वाणी में कहा।

"अब थोड़ा-सा देश की बरबादी का चित्र भी देख लो बच्चो ! जिस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने दिल्ली के सम्राट से बंगाल आदि की दीवानी प्राप्त की और धीरे-धीरे उन प्रान्तो पर अपना शासन जमाना आरम्भ किया तो उन्होंने एक नवीन प्रवन्ध किया जिसको "इस्तमरारी बन्दोबस्त" बताया गया, जिसके अन्तर्गत सरकारी लगान बहुत काफी बढ़ा दिया गया और परिणाम यह हुआ कि देश ऊजड़ दिखाई देने लगा और १७७० ई० मे ऐसा अकाल पड़ा कि लाखों गाँव वीरान हो गए।"

"बहुत ही बुरा हुआ।"

"और इसमें ज्यादा बुरा यह हुआ मंगल कि लार्ड कॉर्नवालिस ने यह कानून भी बना दिया कि जिन जमीदारों पर लगान शेष रह जाय; उनकी जमीदारियाँ तत्काल नीलाम करदी जॉय और भविष्य में भी जिस किसी के नाम बकाया निकले तत्काल उसकी धरती नीलाम करदी जाय और यदि जमींदारी बडी हो तो उसके टुकडे करके अलग-अलग नीलाम किया जाय।"

"तब तो बडी आफत आ गई होगी।"

"कॉर्नवालिस के इस्तमरारी-बन्दोबस्त के दस वर्ष के अन्दर ही बंगाल की सभी जमीदारियों के रूप स्वरूप बदल गए और उनके मालिक भी परिवर्तित हो गए। परिणाम यह हुआ कि बंगाल के हजारों पुराने घर नष्ट

हो गए और बड़ी-बड़ी जमींदारियाँ समाप्त हो गईं तथा स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे निर्बल जमींदार खड़े हो गए जो सरकार की खुशामद के बल पर अपना जीवन व्यतीत करने लगे।"

"तो इस प्रकार राष्ट्र को और जनसाधारण को निर्बल बना दिया गया। क्यों दादा ?" भारती ने पूछा।

"हाँ बेटी ! जमींदार और प्रजा के बाद इन लोगों का मुँह राजे-महाराजों की ओर हुआ। उस समय तक भारतीय नरेश अपने-अपने यहाँ स्वतन्त्र सेनाएँ रखते थे। कम्पनी ने रियासतों की रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया और उन सेनाओं को समाप्त करा दिया। पुरानी रियासती फौजों के स्थान पर अंगरेजों ने अपनी सेनाएं रखवाना आरम्भ कर दिया और वे सब फौजें अंगरेजी अफसरों के आधीन रहती थीं। लेकिन उन समस्त सेनाओं का खर्च रियासतों को उठाना पड़ता था और इस नवीन प्रथा का नाम 'सबसीडीयरी एलाइंस' रखा गया।"

"इसका अर्थ क्या हुआ दादा ?"

"मतलब यह है कि हर एक देशी नरेश ईस्टइण्डिया कम्पनी को एक निश्चित रकम "आर्थिक सहायता" के रूप में प्रदान करे और कम्पनी से 'सैनिक मित्रता' का लाभ उठाए।"

"बड़ा सुन्दर प्रबन्ध किया अंगरेजों ने कि देशी राजाओं को उन्हीं के खर्चे पर और उन्हीं की रियासत में नजर बन्द बना दिया गया।" मंगल ने कहा।

"हाँ बेटे ! यह आर्थिक सहायता और मित्रता का लाभ एक धोखे के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। इसका उद्देश्य इंगिलस्तान की जनता की आँखों में धूल डालना था। यह देशी रियासतें देखने के लिए विजय नहीं की जाती थीं, वहाँ के राजा लोगों को छत्र, चँवर आदि राजत्व के समस्त चिन्हों से युक्त सिंहासन पर बैठे रहने दिया जाता था परन्तु वास्तविक शक्ति उनके हाथों से छीन कर 'पॉलिटिकल एजेन्ट' के हाथों में दे दी गई।"

"बड़ा चालाक था अंगरेज दादा !"

"और नही तो क्या ! वेल्सली ने तो इस सबसीडीयरी के जाल में सभी नरेशो और नबावो को ऐसा फाँसा कि वे उलझ कर रह गए—"माजा खाय मीन जनु काँपी"—कर भी कुछ नही सकते थे। इसके वाद हमारा इतिहास बदला गया।"

"वह कैसे हुआ ?"

"मुसलमानों को हिन्दुओ के विरुद्ध भड़काया गया और हिन्दुओ को मुसलमान अत्याचारी बताये गये। निज़ाम और पेशवा को फाँस कर उन्हे कम्पनी ने बन्दी बना लिया। करनाटक के नबाव, तंजोर के राजा, अवध के नबाव और वज़ीर को शक्ति हीन करके सूरत से लेकर फर्रुखाबाद तक के इलाको का अपहरण किया गया। टीपू, सिन्धिया, होल्कर और भोसले को बरबाद कर डाला और इस प्रकार भारत मे अंग्रेजी राज स्थापित हो गया।"

"लेकिन हमारे गाँव में आने वाला वह ईसाई पादरी तो अंग्रेजी राज के बडे गुण गाया करता है ?"

"यह भी चाल चली जा रही है मगल ! वेल्सली सारे देश को ईसाई भी बनाना चाहता था और उसने अपने ही ज़माने से बहुत सारे पादरियों को इंगलिस्तान से बुलाना आरभ कर दिया था। यह लोग गाँवो मे जाकर मुफ्त अंगरेजी दवाइयाँ बाँटते हैं, बीमारो की सेवा करके उनका मन जीत लेते हैं, हिन्दू धर्म की बुराइयाँ बताकर उनके हृदयो मे विद्रोह की ज्वाला जगाते हैं और एक दिन चुपचाप ईसाई बना लेते हैं।"

"यह तो कूटनीति हो गई।"

"हाँ, भैय्या ! और लोक-दिखावे के लिए यह लोग ऊपर से बड़े शान्त, मधुर तथा सीधे दिखाई पड़ते हैं। तुम नही जानते बच्चो ! आज कल सभी अंग्रेजी क्षेत्रों मे रविवार की छुट्टी मनाई जाती है, लेकिन ऐसा क्यो ? शुक्रवार या सोमवार की छुट्टी क्यो नही रखी जाती ?"

"आप ही बताइए दादा !"

"इतवार का दिन अंग्रेजों और ईसाइयो में वैसा ही पवित्र माना जाता है जैसा मुसलमानों में शुक्रवार-जुमा का दिन या हिन्दुओ में सोमवार का—

बेल्सली ने 'मीठे जहर' की तरह इतवार की छुट्टी का प्रचलन करके दोनों भाइयो—हिन्दुओ और मुसलमानो को गुमराह कर दिया।"

"हाँ दादा ! आज कल तो समाचार पत्र भी इतवार को नही छपते हैं—... कानूनन उनको बन्द कर दिया गया है।"

"कलकत्ता मे जो फोर्ट विलियम कालिज की स्थापना की गई है, यह कह कर भारतीयो को शिक्षित बन बनाया जायगा—वहाँ क्या हुआ है तुम जानते हो ?"

"नही दादा ! "

"उस कालिज में रखे गये नौकरों के द्वारा भारत की सात विभिन्न भाषाओ मे बाइबिल का अनुवाद कराया गया और हजारो लाखो की तादाद मे मुफ्त बाँटा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि मदरास तथा उत्तर भारत में बहुत से लोग ईसाई हो गये।"

"क्या वे लोग अब हिन्दू धर्म ग्रहण नही कर सकते ?"

"नही कर सकते ! अभी हिन्दू जाति में इतनी सकीर्णता है कि वह अछूतो की परछाई पड़ने पर अपने आपको अपवित्र मानते हैं, मन्दिरो में अछूत नही जा सकते। भगवान जाने भारत का क्या होगा।" दादा ने दीर्घ निश्वास लेकर कहा।

"जिस भूमि पर राम-कृष्ण और बुद्ध भगवान ने अवतार लिया है, वह एक दिन स्वतन्त्र होकर रहेगी और हम उसे आजाद बनायेंगे।"

"भारत माता की जय।" भारती ने कहा।

"भारत माता की जय।" सभी बालक-बालिकाए एक साथ ही जोर से नारे लगा उठे।

"भारत के नन्हे-मुन्नों की जय।" दादा ने कहा—"तुम लोग कल की आशा हो। देश तुम्हारी ओर देख रहा है मेरे बच्चो ! उसे तुम्हारी आवश्यकता है। अच्छा, बहुत समय हो गया। अब तुम लोग अपने अपने घर जाओ और आराम करो।"

कोलाहल मचाता हुआ बालको का दल अपने-अपने घरो की ओर चला गया।

: ३ :

नए प्रभात की बेला में जब चारों ओर वासन्तिक हरिताभा फैल रही थी, दूर-दूर तक सरसों के खेत प्रफुल्ल दिखाई दे रहे थे, तब रामपुर गाँव के निवासी नित्य प्रति इस आशा में जीवित थे कि इस वर्ष उनकी खेती सोना उगल देगी और बहुत समय से छाए हुए विपदा के बादल दूर हो जाएँगे। ऐसे ही वातावरण के मध्य सभवतः मगलवार के दिन उषा की किरणों के साथ ही साथ पुलिस का एक दस्ता रामपुर में प्रवेश कर रहा था। आगे-आगे सफेद घोड़े पर इलाके का थानेदार था और उसके पीछे छह घुड सवार थे, जिनके पास ऊँची-ऊँची बल्लमें थी ; जिनके शिखर पर अंग्रेजी झंडे फहरा रहे थे। इस दल के प्रवेश करते ही समस्त ग्राम में हलचल मच गई। भावी विपदा की आशका से लोगो के मन सिहर उठे। कोमला नारियाँ घरो के भीतर छिप कर बैठ गईं, पुरुषो के मुँह पीले पड गए और बालकों के झुण्ड सकपका उठे। गाँव के पटेल ने तत्काल ही अपनी झोपड़ी से निकल कर थानेदार को सलाम किया और जब उसने अपनी तीखी नजर सिपाहियों पर डाली तो वह सन्न रह गया।

"आज सुबह ही सुबह ...."

"हाँ पटेल !" बात को काटते हुए थानेदार ने कहा—"तुम्हारे गांव में इतनी बडी वारदात हो गई और तुमने रपट भी नही लिखवाई !"

"कैसी वारदात सरकार !" पटेल ने आश्चर्य चकित होकर पूछा।

"आज से चार रोज पहले हमारे इलाके के एजन्ट साहब इस गाँव के किनारे-किनारे शिकार खेलने आए थे और उनके साथ यहाँ के किसी लड़के ने बहुत गुस्ताखी की है। क्या तुम्हें नहीं मालूम ?"

"बिल्कुल नही सरकार ! भला ऐसा कैसे हो सकता है ! बात कुछ समझ में नहीं आती।"

"अच्छा तो गाँव के पुरोहित हरभजन को बुलाओ।"

इसके बाद जब पटेल की झोंपड़ी के सामने थानेदार साहब एक मूढे पर आसीन हो गए तो छहों सिपाही उनके आस-पास खडे हो गए। पटेल ने

तत्काल ही अपने छोटे लड़के को हरभजन के पास भेजा।

"दादा ! आपको थानेदार साहब बुलाते है।" बालक ने कहा। और हरभजन चौंक पड़े।

"थानेदार ? थानेदार क्यों आया है बेटा ? बात कुछ समझ में नहीं आ रही है।"

"लेकिन आप चलिए तो।"

"अभी चलता हूँ।"

हरभजन ने कंधे पर एक कपड़ा डाला और नंगे पाँव तथा नंगे सिर पटेल के घर की ओर चला।

"कहाँ जा रहे हो दादा ?" सहसा मार्ग में जाते हुए हरभजन से मंगल ने पूछा।

"ऐसा लगता है मंगल ! कि तुमने जो कुछ उस अँग्रेज के साथ किया है उसकी जाँच-पड़ताल के लिए थानेदार आया है। भगवान जाने क्या होगा।"

"जो होगा उसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर है; मैं आपके साथ चलता हूँ।" मंगल ने उत्तर दिया।

"चल कर तू और मामला गड़बड़ करना चाहता है क्या ? मैं सब सुलझ लूँगा; तू घर जाकर बैठ।"

"लेकिन थानेदार ने अगर आपके साथ कोई बुरा व्यवहार किया तो ?"

"कुछ नहीं होगा। तू घर चला जा।"

इस ओर हरभजन लम्बे-लम्बे डग बढ़ाता हुआ पटेल की झोंपड़ी की ओर चला तो उस ओर मंगल भारती के घर की ओर मुड़ गया।

"भारती !" मंगल ने पुकारा।

"क्यों मंगल ! क्यों गला फाड़ रहे हो ?" भारती ने पूछा।

"घर में कोई मजबूत-सी लाठी या डंडा है ?"

"क्या करोगे ?"

"थानेदार आया है और उसने दादा को बुलाया है। मैं एक ओर छिप कर खड़ा रहूंगा और अगर उसने दादा के साथ कोई ऊँच-नीच बात की तो उसका सिर तोड़ दूंगा।"

"चट्टान से टकराने से क्या होगा मगल ? जो उगली पत्थर के नीचे दब जाती है उसे आसानी से निकालना पड़ता है। मौक़ा देख कर काम करना चाहिए।"

"लड़कियाँ वैसे ही कम हिम्मत होती है और उस पर भी गाँव की लड़की दब्बू, डरपोक और अबल होती है।"

"और इसीलिए गाँव के लड़के उद्दड होते हैं।"

"ज्यादा बाते मत करो भारती ! इस बीच मे न जाने क्या हो जायगा। मुझे तुम झट पट एक डडा या लाठी दे दो।"

और जब भारती ने उसे एक मजबूत लाठी दे दी तो मगल चक्कर काट कर पटेल की झोपड़ी के पास वाली सकडी-सी गली से आकर छिप गया और वहाँ से तमाम बाते सुनने लगा।

"आज से तीन-चार रोज़ पहले तुम्हारे गाँव मे जिस अँग्रेज साहब पर एक लडकी ने कीचड फेकी और एक लड़के ने बन्दूक के कुन्दे से वार किया, हम उन दोनो को देखना चाहते हैं।" थानेदार ने हरभजन से कहा।

"लेकिन वह लड़की और लड़का कौन थे ? क्या आप इस बात को बता सकते हैं ?" हरभजन ने पूछा।

"बता नही सकते पुरोहित जी ! लेकिन पुलिस वाले हर बात का पता लगा सकते हैं। हमने आपको गाँव का एक प्रतिष्ठित आदमी समझ कर बुलाया था। लेकिन ऐसा मालूम होता है कि सीधी उँगलियो से घी नही निकलेगा।"

"शायद टेढ़ी उँगलियाँ करने पर भी घी नही निकल सकेगा थानेदार साहब। यह गाँव का मामला है अगर आप जोर दिखाऐंगे तो उसका नतीजा कुछ और भी हो सकता है।" दादा ने कहा।

"इसके मानी यह हुए पुरोहित जी ! कि आप पुलिस को भी धौंस देना चाहते हैं। लेकिन आपको यह नही मालूम कि अँग्रेजों से लड़कर न तो मराठे जीते और न होलकर और न सिंधिया।"

"मैं जानता हूँ दरोगा जी ! लेकिन हम लोग राजा नहीं हैं, रियाया है और जो भी सरकार जनता से टकराती है वह नष्ट हो जाती है।"

"आपने कोई नई बात नही कही पण्डितजी ! ब्राह्मण तो हमेशा से दूसरों को उपदेश देते आए है। भला आप अपना पेशा कैसे भूल जाएंगे !"

"इस उपदेश मे बड़ी ताकत होती है, थानेदार साहब ! एक उपदेश महाभारत करा सकता है और एक ही उपदेश लोगो में शांति का प्रचार कर सकता है।"

"आप मेरे साथ थाने तक चलिए।"

"लेकिन मैंने तो अभी तक पूजा-पाठ भी नही किया है।"

"चलिए, आपके पूजा-पाठ का भी प्रबन्ध करा दिया जायगा।"

और हरभजन को आनाकानी करते हुए देख कर थानेदार ने सिपाहियों से कहा—"पुरोहित जी ! आप शायद इज्जत के साथ चलना चाहते हैं। इस लिए उनके हाथों में हथकडियाँ डाल दो और कमर रस्से मे बाँध दो। इनको सम्मान के साथ ले चलो।"

और जैसे ही सिपाही ने आगे बढ़ कर दादा हरभजन का हाथ पकड़ना चाहा वैसे ही पास की छोटी गली में से निकल कर मंगल ने एक नपा-तुला लाठी का हाथ सिपाही की खोपडी पर जड दिया। एक हलकी-सी घबराहट सब लोगो मे फैल गई और तत्काल ही थानेदार ने हवा मे अपने रिवाल्वर से एक फायर किया और उसकी नली मगल की ओर कर दी।

"खबरदार ! भागने की कोशिश मत करना नही तो गोली मार दूँगा। बड़ा शैतान लडका मालूम होता है।" थानेदार ने क्रोध मे भरी हुई वाणी में कहा।"

"मै भाग नही रहा हूँ और कायर भी नही हूँ।" मंगल ने कहा—"कहिए आप क्या कहते हैं ?

"हम तुमको भी थाने ले चलेगे।"

"लेकिन एक शर्त है।"

"वह क्या ?"

"आपको दादा को छोड़ देना होगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह निरपराध हैं। उनका कोई कुसूर नहीं है।'

"इसके मानी यह हैं कि कुसूर तुम्हारा है।"

"मैं इसे कुसूर की बात नही मानता। जो भी आदमी हमारी बेइज्जती करेगा हम उसका बदल जुरूर लेंगे।"

"अब पता चला कि तुम्हीं वह लड़के हो जिसने साहब पर वार किया है।"

"जुरूर ! और मैं तुम्हारे साथ जहाँ कहो वहां चलने को तय्यार हूँ।" मगल ने कहा।

"तुमको तो हम ले ही जायंगे। और अब तो तुम्हारे ऊपर दो जुर्म हैं। सिपाही ! इस लड़के को गिरफ्तार करलो।" थानेदार ने कहा।

और हरभजन के हाथो में पड़ने वाली हथकड़ियां मगल के मजबूत हाथो में भर दी गईं। उसकी कमर में रस्सा डाल दिया गया। सिपाही को अधिक चोट इसलिए नही आई कि उसके साफे ने मगल की लाठी से रक्षा करली थी।

"थानेदार साहब ?" हरभजन ने कहा—"क्या मंगल की जमानत नहीं हो सकती ? हम उसे तारीख पर अदालत में हाजिर कर देंगे। आप विश्वास रखे।"

"मुझे अफसोस है पुरोहित जी ! ऐसे मामलो मे जमानत का कोई कायदा नही है। फिर इस लड़के ने तो बहुत ही खतरनाक काम किया है। पहला वार सरकार पर और दूसरा वार पुलिस पर। यह तो फाँसी की सजा का मुस्तहक़ है।"

इसके बाद हाथ-पैर बँधे हुये मङ्गल को गॉव से कई मील दूरी पर स्थित थाने तक पैर-पैर जाना पड़ा। थाने पर जाने के पश्चात् सबसे पहला काम मङ्गल की पिटाई का था। थानेदार साहब ने अपने अपमान का सारा बदला चुका लिया। पिटा हुआ, भूखा और प्यासा मङ्गल कच्ची हवालात मे बन्द कर दिया गया।

थोड़ी देर बाद, छोटा थानेदार और दो सिपाही अंग्रेज मिस्टर डेनियल को लेकर थाने में आये। यह सारा जिला उनके आधीन था और वह एक प्रकार से इस अवध प्रान्त के पूर्वी भाग के नवाब ही थे।

"तशरीफ लाइये।" थानेदार ने झुक कर कहा।

"गुड ईवनिंग।" मिस्टर डेनियल ने मुस्कुराते हुए थानेदार दातासिंह से कहा—"तुमने अब तक क्या किया?"

"हुजूर! हम मुजरिम को गिरफ्तार करके ले आए हैं।" बड़े गर्व के साथ थानेदार ने तनिक अकड़ते हुए कहा—"शायद आप उस लड़के को पहचान लेंगे।"

'ओह! यस! हम उसको देखना माँगता है।"

"तशरीफ रखिये। आप इस कुर्सी पर बैठिए। मैं अभी उसको आपके सामने हाजिर करता हूँ।"

साहब बहादुर के कुर्सी पर बैठने के पश्चात् दो सिपाही मङ्गल को कच्ची हवालात से निकाल कर लाए। यह दोनो सिपाही उसकी एक-एक बाँह पकड़े हुए थे।

"ठीक है! यही वह लड़का हैं।" अंग्रेज ने कहा।

"थानेदार उठा और उसने अपनी शान दिखाने के लिए मङ्गल के मुँह पर कस एक तमाचा मार दिया। मिस्टर डेनियल मङ्गल को पिटते हुये देख कर खिलखिलाकर हँस पड़े और तब मङ्गल ने गुस्से में भरकर चोट खाये हुये साँप की तरह फुफकार कर मिस्टर डेनियल पर थूक दिया।

"रस्सी जल गई लेकिन उसका बल नहीं गया। इतना पिटने-कुटने के बाद भी कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं हुई।" थानेदार ने कहा।

इसके बाद फिर दूसरी बार मङ्गल की अच्छी तरह पिटाई हुई और जब वह करीब-करीब बेहोश होगया तो उसे फिर हवालात में बन्द कर दिया गया।

मिस्टर डेनियल बहुत खुश हुए और थानेदार को धन्यवाद देकर अपने निवास स्थान की ओर चले गये। थानेदार दातासिंह कल्पना के पङ्खो पर न जाने कहाँ-कहाँ तक उड़ गया। उसने सोचा कि डेनियल बहुत बड़ा साहब है और अगर वह खुश हो जाय तो दातासिंह क्या कुछ नही बन सकता। जिन्दगी में उसकी सबसे बड़ी कामना थी कि सुपरिन्टेण्डेन्ट पुलिस बन सके। आज का अवसर, जो बड़े सौभाग्य से हाथ लगा है, उसकी सफलता का पहला चरण है; उसके सौभाग्य का पहला उदय है। यह सब कुछ सोचता-सोचता दातासिंह

थाने ही में निर्मित अपने मकान मे सोने चला गया। आज उसे गहरी नींद आई और सपने मे वह सचमुच एक बहुत बड़े शहर मे पहुँचा। उसने देखा कि वह सुपरिन्टेन्डेन्ट हो गया है।

दूसरी ओर बहुत रात ढल जाने पर जब मङ्गल की आँख खुली तो उसे अपने शरीर मे पीडा का अनुभव हुआ; फिर भी किशोर का मन और मस्तिष्क स्वाभिमान से हर्ष-विभोर हो उठा। मङ्गल ने सोचा कि उसके साथ चाहे जैसा भी व्यवहार किया जाय, वह टूट कर दो टुकडे हो जायगा, लेकिन झुकेगा नही। उसके स्वाभिमान को जो भी ठोकर मारेगा वह उसके हाथ मरोड़ देने की शक्ति अपने आप में रखता है।

धीरे-धीरे वेदना बढी और उसके मस्तिष्क मे विचारों का उदय हुआ। कल क्या होगा? शायद आज से भी बहुत कुछ बुरा हो सकता है। तब फिर क्या करना चाहिए। सोचते-सोचते मङ्गल उठ खड़ा हुआ और आसपास चारो ओर घूम कर दीवारो की परीक्षा करने लगा। सहसा उसे सामने की ओर एक हलका सा छेद दिखाई दिया और तब मङ्गल ने अपनी उँगली और नाखून के सहारे खुरच-खुरच कर उस छेद को और भी बडा कर लिया, तनिक और बडा और फिर काफी बड़ा, यहाँ तक कि अन्त में मङ्गल ने जोर लगाकर पूरी एक ईट को दीवार में निकाल लिया और इसी प्रकार कितनी ही ईटे निकाल कर वह स्वयं भी थाने के पीछे की ओर निकल आया। उसने देखा कि थाने के मुख्य द्वार पर दो बन्दूक-धारी सन्तरी पहरा दे रहे हैं। यदि उनमे से किसी एक की भी नजर मङ्गल पर पड गई तो उसकी नन्ही-सी जान के लिये एक ही गोली काफी होगी।

बड़ी होशियारी के साथ दीवार के सहारे-सहारे रेगता हुआ और आगे बढ़ता हुआ मङ्गल थाने से कुछ दूर निकल आया तथा पास के खेत में छिप गया। खेतों ही खेतो में होकर वह उस पगडन्डी पर जा पहुंचा जो रामपुर की ओर जाती थी। काफी दूर निकल आने के बाद मङ्गल पूरी शक्ति से दौड़ने लगा। वह शीघ्र से शीघ्र अपने गांव पहुंच जाना चाहता था।

अभी लोग गहरी नीद में सो रहे थे। सारा संसार निशा की गोद में मूर्छित-सा, बेहोश-सा पडा हुआ था। कभी-कभी और कही-कही किसी पक्षी

की चहचहाट सुनाई दे जाती थी। ऐसे ही गाढ़े अन्धकार में मगल अपने गाँव मे पहुँचा और उसने धीरे से दादा हरभजन का द्वार खट खटाया। हरभजन चौपाल से लगे, हुए कमरे मे ही सोते थे, उन्होने द्वार की थप-थपाहट सुनी तो आँखे मलते हुए पूछा—"कौन है।"

"मै हूँ दादा ! मगल !" बहुत धीरे से मगल ने उत्तर दिया और तभी हरभजन ने द्वार खोलकर मंगल को भीतर ले लिया। इसके बाद किवाड बन्द कर दिये।

"तू कैसे छूट आया रे ?" दादा ने पूछा।

"छूटने की बात क्या पूछते हो दादा ! जो निकलना चाहता है उसके लिए बीस रास्ते हैं।"

"तो इसके मानी यह हुए कि तुझे पुलिस ने छोड़ा नही है। बल्कि तू खुद ही भाग आया है।"

"जो भी समझो दादा। लेकिन तुमको मेरी हिम्मत की प्रशसा करनी चाहिए कि एक चौदह वर्ष का बालक कितनी दिलेरी के साथ अंग्रेज की हवालात तोड़कर निकल आया है।" मगल ने कहा और इसके पश्चात् सक्षिप्त रूप से सारी घटना दादा से कह डाली।

"अब मैं चलना चाहता हू दादा। केवल आपके चरण छूकर आशीर्वाद लेने गाँव तक आया हू।" मगल ने कहा—"आज से मेरे जीवन का मार्ग बदल गया है।"

"कहाँ जायगा मगल ?"

"इतने बड़े विश्व मे कोई न कोई तो संरक्षण देने वाला मिल ही जायगा दादा ! मैं अपने लिए सारे गाँव को परेशान नही करना चाहता। मै जानता हूँ कि प्रातःकाल होते ही जब पुलिस को अपनी मूर्खता पर पश्चात्ताप होगा तो उनके क्रोध का लक्ष्य मेरा गाँव बन जायगा। इसलिए गांव की रक्षा के हेतु एक प्राणी को छोड देना ठीक ही रहेगा।"

"तुझे किसी की याद नही आयगी क्या मगल ?"

"जीवन में आप जैसे महान व्यक्ति को पाकर क्या मैं कभी अपने सौभाग्य को भूल सकता हू ? लेकिन आज परिस्थिति ऐसी ही है दादा ! कि सभी को

कुछ समय के लिए भूल जाना होगा। मेरे जैसा अभागा व्यक्ति कौन होगा जिसे जन्म से ही न माँ का प्यार मिला और न पिता का। फिर भी आपके वात्सल्य स्नेह से मैंने कभी इस अभाव का अनुभव नही किया। बचपन से लेकर आज तक मेरी जमीन, मेरी जायदाद सब चीजो की आपने रक्षा की, उनको देखा और बढाया; आपने मुझे क्या कुछ नही दिया। लेकिन मैं आप की कोई सेवा नही कर सका।" कहते-कहते मगल की आँखो से टपटप कर के आँसू गिरने लगे। दादा ने मंगल को हृदय से लगा लिया।

"तुम मेरे पास रहो मगल ! मैं तुम्हारे लिए अपने प्राण निछावर कर दूँगा।" हर भजन ने कहा।

"मै जानता हूँ दादा ! आपके मन में भारती के लिए जितना प्यार है उससे कम मेरे लिए नही है। फिर भी आज मैं नही रुक सकूँगा। लेकिन कभी-कभी आपके दर्शनो के लिए इस गाँव मे आता रहूँगा।"

इतना कह कर मगल बाहर निकल जाने के लिए उद्यत हुआ और तब दादा ने किवाड खोल दिए।

"मगल ! तुम को चाहते हुए भी मैं नही रोक सकता बेटा ! लेकिन क्या भारती से नही मिलोगे। वह कल रात भर रोती रही है।"

"इस समय नही दादा ! वह मेरे पैरो की जजीर बन जायगी और यदि किसी प्रकार मेरा जाना रुक गया तो सारे गाँव का सर्वनाश हो जायगा। लेकिन आप उसे मेरी ओर से विश्वास दिला दीजिए कि मै बहुत शीघ्र उसे देखने के लिए गाव में वापस आऊगा और भारती यह जानती है कि मंगल कभी झूठ नही बोलता।"

एक पैर चौखट से बाहर और दूसरा पैर चौखट के अन्दर रखे हुए मंगल ने कहा—"एक बात और कहता हूँ दादा; आज से मेरे तमाम खेत भारती के हैं। यही मेरी आखरी भेंट है।"

इतना कह कर मगल तीर की तरह गहरे अन्धकार में विलीन हो गया। नजर जमा कर जितनी दूर तक हर भजन उसे देख सकते थे उन्होंने देखा और जब वह उनकी नजरो से ओझल हो गया तो उनकी आँखो से दो बूद आँसू चौखट पर गिर पड़े।

प्रात: काल हो ही, जब रात के स्वप्न का अन्दाज़ा लगाते हुए थानेदार दाता सिंह हवालात के पास पहुंचा, तो आश्चर्यचकित हो कर रह गया। अन्धकार से भरी हुई हवालात में चारो ओर प्रकाश फैला हुआ था। उसने जोर से आवाज़ लगाई।

"मुन्ना सिंह !"

"आया सरकार।"

और तत्काल ही मुन्ना सिंह हाथ में पानी का लोटा पकड़े हुए दाता सिंह के सामने उपस्थित हो गया।

"यह सब क्या है ?" थानेदार ने पूछा—"वह लड़का कहाँ गया ? जिसे हम कल पकड़ कर लाए थे।"

"हवालात में होगा हुज़ूर।"

"हुज़ूर के बच्चे ! इधर देखो !" और दाता सिंह ने हेड कान्स्टेबिल मुन्ना सिंह का कान पकड़ कर हवालात के लोहे के सीखचो के सामने खड़ा कर दिया—"देख रहे हो सामने की दीवार ?"

"जी सरकार ! दीवार खुली हुई है; मालूम होता है लड़का भाग गया। बड़ा जालिम था।"

"लड़का नही भाग गया मुन्ना सिंह ! हमारी तकदीर हमारा साथ छोड़ गई है।"

इसके बाद उदास, मौन और चिन्ता ग्रस्त दाता सिंह थाने के ऑफिस में जाकर बैठ गया।

"अब क्या होगा ?" छोटे थानेदार रघुराज सिंह ने पूछा।

"कोई आफत आने वाली है रघुराज सिंह ! जब मिस्टर डेनियल की खुशी गहरी निराशा में बदल जायगी तब कौन जाने हमारा क्या होगा। अंग्रेज गुस्से मे आकर शायद हमारी जान भी ले ले।" दाता सिंह ने रोनी-सी सूरत बनाते हुए कहा।

"मेरा ख्याल है कि मंगल वहाँ से निकल कर सबसे पहले अपने गाँव पहुंचा होगा। हम लोग अभी गाँव के चारों तरफ घेरा डालते हैं और एक-एक घर की तलाशी ले डालते हैं।" रघुराज सिंह ने कहा।

इतना सुन कर दाता सिंह उठ कर खड़े हो गए और रघुराज सिंह की तरफ देखते हुए बोले—"रघुराज सिंह। मैंने तुमको हमेशा अपने छोटे भाई की तरह प्यार किया है। अगर तुम किसी भी तरह मगल को गिरफ्तार कर सकोगे तो मैं तुमको अपनी जेब से पांच सौ रुपया इनाम के रूप मे दूंगा।"

"आप इसकी चिन्ता मत कीजिए, मुझे रुपयो से ज्यादा आपकी इज्जत का ख्याल है।"

"जो मुनासिब समझो वह करना। थाने पर सिर्फ एक सिपाही को छोड़ दो और बाकी बीसों सिपाही तुम अपने साथ ले जा सकते हो, मुझे कोई एतराज नही है।" इतना कहने के पश्चात् दातासिंह अपने घर मे चले गए।

सिपाहियो में फौरन यह चर्चा फैल गई कि सभी लोगो को रामपुर जाना है और उनको तत्काल कमर कस कर तैयार हो जाना चाहिए। जल्दी से जल्दी सब लोग निवृत्त होकर रामपुर की ओर चल पड़े। थोड़ा दिन चढा था कि यह सब लोग गाँव की सीमा पर पहुँच गए। बाहर जाने-आने वाले सभी लोगो को इन सिपाहियों ने रोक कर गाँव के भीतर की ओर लौटने पर बाध्य कर दिया। गाँव के बाहर वाले हिस्से में पटेल की झोपड़ी थी। छोटा थानेदार रघुराजसिंह वहाँ रुका और उसके साथ के बीसो सिपाही गांव के चारों ओर फैल गए; एक प्रकार से उन्होने गाँव का घेरा डाल दिया। पटेल ने आकर सलाम किया और रघुराजसिंह के लिए एक खाट बिछा दी।

"आज सरकार कैसे आए और वह भी इतने सिपाहियों के साथ!" पटेल ने पूछा।

"बात यह है पटेल कि तुम्हारे गाँव से कल बड़े थानेदार साहब जिस लड़के को पकड कर ले गए थे वह हवालात से भाग आया है।"

"भाग आया है! अंग्रेज सरकार की हवालात से! आप भी कैसी बात करते हैं।" पटेल ने साश्चर्य कहा।

"मै झूठ नही कह रहा हूँ पटेल । मंगल दीवार तोड़ कर भाग निकला है और मुझे शक है कि वह कही इसी गॉव में छिप या है । हम उसे फिर पकड़ना चाहते हैं। तुम किसी को भेज कर पुरोहित हरभजन को बुला लो ।"

पटेल ने पुनः अपने छोटे लड़के को भेजकर हरभजन को बुलाया। उसका चेहरा उतरा हुआ था और पुरोहित के नेत्रो पर विषाद की गहरी छाया दिखाई दे रही थी ।

"आइए पुरोहित जी ! "रघुराजसिह ने कहा ।

"हाजिर हुआ । "हरभजन ने उत्तर दिया ।

"हम इसलिए आए हैं पुरोहित जी कि कल जिस लडके को इस गॉव से पकड़ा गया था, वह आज सुबह ही सुबह फरार हो गया है ।"

"मुझे मालूम है ।" हरभजन ने कहा ।

"आप को मालूम है कि मगल हवालात से भाग आया है। कैसे मालूम हुआ ?"

"वह पौ फटने से कुछ पहले मेरे पास आया था और उसी ने मुझे तमाम हालात बताए ।"

"आप बडे भोले आदमी मालूम होते हैं पुरोहित जी ! फिर बताइए न मगल कहाँ है ?"

"कोई नही जानता छोटे थानेदार साहब ! चन्दा भी नही, सूरज भी नही ! और शायद सितारे भी नहीं जानते कि मगल कहाँ है ? उसे ढूँढना बेकार है ।"

"क्या मतलब ? क्या वह मर गया ?"

"मरे उसके दुश्मन ! वह क्यो मरेगा ?"

"तो फिर हुआ क्या ? मेरी कुछ समझ में नहीं आता ।"

"वह कही चला गया ; न जाने कहाँ और कितनी दूर !"

"आप ब्राह्मण होकर भी झूठ बोलते हैं ।" जरा डपट कर रघुराजसिह ने कहा—"हम सारे गाँव की तलाशी लेगे और उसको कही न कही से खोज निकालेगे ।"

सबसे पहले पुलिस के द्वारा हरभजनसिह के घर की तलाशी ली गई। लकड़ी व कण्डे भी उठाकर देखे गए। भूसे का ढ़ेर इधर से उठाकर उधर कर दिया गया। लेकिन दादा के घर से मगल नही निकला। ठीक इसी प्रकार बारी-बारी से तमाम गाँव वालो की तलाशी ली गई। किसी को गाली, किसी को धौल धप्पड़ प्रदान किया गया और चार-छह नौजवान लड़कों को गिरफ्तारी का डर भी दिखाया गया। लेकिन हरभजन को छोडकर सभीं ने यह कहा कि वे मगल के बारे में कुछ नही जानते। अन्त में हार कर और लाचार होकर अपने सिपाहियो के सहित थाने में वापस आगया। जब दातासिंह ने इस असफलता की बात सुनी तो उनकी निराशा दूनी होगई और किसी भविष्य की आशंका से वे सिहर उठे।

इस घटना के तीसरे दिन जब मिस्टर डैनियल अपनी धर्मपत्नी के साथ थाने में पधारे—यह दिखाने के लिए कि वह लड़का पकड़ा गया है, जिसने उनका अपमान किया है, तो दातासिह उनके आगमन से अत्यन्त ही चिन्तित हो उठा। जैसे-तैसे साहस बटोर कर वह मिस्टर डैनियुल के सामने हाजिर हुआ।

"गुड मार्निग सर।"

'गुड मार्निग थानेदार!—यह हमारा वाइफ है—मिसेज डेनियल!" अपनी पत्नी की ओर देखते हुए डैनियल ने कहा।

"गुड मार्निग मेम साहब!" बड़े अदब से दातासिह ने सलाम किया लेकिन उसके हृदय की धडकन बढ़ गई थी।

"वैल! मिस्टर दाता सिंह! क्या तुमने उस लड़के को जेल भेज दिया है या वह अभी हवालात में है? हमारा मेम साहब उसको देखना माँगता है।"

"जी सरकार...... जी ......जी!"

'तुम क्या बोलना माँगता है दातासिंह।"

दातासिंह इशारे से दोनों पति-पत्नि को हवालात के द्वार तक ले गया। मिस्टर डेनियल अवाक् उस दीवार के छेद को देख रहे थे।

"तो वह लड़का भाग गया?" डैनियल ने पूछा।

"वह तो जादूगर मालूम होता था साहब ! रात ही रात मे अँगुलियों से दीवार खोद कर बाहर निकल गया ।"

"तुम किसी काम का आदमी नही है दातासिह !" डैनियल ने तनिक रोषपूर्ण स्वर में कहा ।

"जी हजूर ।" बडी विनम्रता से दातासिह बोला ।

हम सुपिरिन्टेन्डेन्ट को लिखेगा कि वह तुमको इसके लिए सजा दे और तुमको थानेदार से हटा कर हैडकान्स्टेबुल बना दिया जाय । तुम बिल्कुल 'डिजर्व नहीं करता मैन !"

गुस्से से भर कर डेनियल अपनी पत्नी के साथ थाने से बाहर निकल आया और अपनी टमटम में बैठ गया ।

"सरकार !" दातासिह ने डेनियल के पैर पकड लिए—"हमारा बाल-बच्चा...सरकार ! भूखो मर जायगा ।"

'हम कुछ नही सुनना माँगता । तुम हिन्दोस्तानी काला आदमी एक दूसरे की मदद करना माँगता है । तुमने खुद उसको भगाया है ।"

झटक कर डेनियल चला गया और दातासिह घर में आकर पड गया । बेचारी पत्नी के लाख धीरज बँधाने पर भी क्या होता था--दातासिह जानता था कि राज अंग्रेजी है । अंग्रेज की बात कौन टाल सकता है । बडे-बडे राजे-महाराजे और नवाब पस्त हो गये हैं ।

लेकिन "कलका छोकरा" सबकी आँखो मे धूल झोंक कर चला गया—दातासिह ने एक बार फिर तमाम थाने को सिर पर उठा लिया । लेकिन मगल का कुछ भी पता नही लगा ।

और अगले सप्ताह थानेदार दातासिह हैडकान्स्टेबुल बनाकर रामपुर से हजारों मील दूर मेरठ तहसील के एक गाँव के थाने में भेज दिया गया ।

: ४ :

नवाब वाजिदअली शाह के युग मे लखनऊ की जो रौनक थी वह तो शेष नही रही—फिर भी 'अवध की शाम' अपने सौन्दर्य्य के लिए युग-युग तक प्रख्यात रहेगी। सन्ध्या के सुनहले शरीर पर जब अस्तगत सूर्य अपनी आभा बिखेर देता है, तो वह लज्जा की व्रीडा मे लाल हो उठती है और क्षितिज के कोनों पर गहरी-सी काली रेखा किसी तरुणी के नेत्रो मे लगे हुए काजल का स्मरण कराने लगती है। विभिन्न रंगो से अपने अँचल को भरने वाली सन्ध्या के वक्षस्थल पर न जाने कहा से छोटे-छोटे सजल बादलो के टुकडे आकर छा जाते हैं और तब पद-विहार के लिए निकले हुए पर्यटक उसे एक टक निहार कर प्रसन्नता से मुदित हो जाते है।

भारत मे प्रकृति को जड़ नही सम्वेदनात्मक माना जाता है। व्यक्ति की उदासी और हर्ष मे प्रकृति नटी का पूरा-पूरा सहयोग चलता-पलता है। इसी आधार पर भारत मे चार लोकोक्तियाँ पनप रही हैं—सुबहे बनारस, दोपहरे काश्मीर, शामे अवध और शबे मालवा।

चेष्टा करके भी अँग्रेज इस प्राकृतिक-सुषुमा और सौन्दर्य मे सकरता नहीं ला सका—'लखनऊ हम पर फिदा है, हम फिदाए लखनऊ' की सस्कृति में पलने वाले कोमल-कान्त कलाविदो का नजाकत और नफासत अमीनाबाद के पास वाले मैदान की ओर मुडी जा रही है।

"आश्चर्य है पडित जी! जरा सा लड़का है और बातें बताता है पूर्वजन्म की।" एक ने कहा।

"भाई! भगवान के ससार में कुछ भी आश्चर्यजनक नही है। सच पूछो तो यहा आश्चर्य के सिवा है ही क्या—जिनकी खाल लटक गई है, दात टूट गये हैं, पेट के लिए एक टुकड़ा रोटी भीख में भी नही मिलती—वे जी रहे हैं, जिये जा रहे हैं, मौत भी उनको भूल गई है और हट्टे-कट्टे सुन्दर, स्वस्थ नौजवान दो दिन के बुखार में मर जाते हैं। जहां देखो वही विषमता है।" पण्डित जी ने गहरी नि:श्वास लेकर कहा।

"सो तो है ही पण्डित जी ! इन्हीं अंगरेजों को देखो न ! तराजू लेकर आये थे और अब तलवार सम्हाल कर बैठ गये हैं। क्या ज़माना है।"

"श्रीवास्तव साहब ! नबाब के जमाने मे आप लोगो ने जो ऐश कर लिए वह अब कहाँ। आप लोगो का उस समय सम्मान था—मेरा मतलब है 'मुंशी' से उठ कर 'मीर मुंशी' तक आपके बाप दादा पहुँच गये और हम लोगो को तो आप जैसे यजमानो के कारण भगवान भजन के अलावा कुछ करना ही नही पड़ता था।"

"और अब सब कुछ करना होगा पण्डित जी !" मीठी, मधुर और सरल-वाणी सुन कर पण्डित दीनदयाल जी चौंक पड़े। उनके सामने एक किशोर बैठा हुआ था। तमाम शरीर पर राख मले हुए। माथे पर त्रिपुण्ड, बगल में आश्रयी और मृगछाला पर तन कर बैठा हुआ।

"मैंने इसी विचित्र योगी के विषय मे आप से कहा था।" धीरे से जादो-राय श्रीवास्तव ने कहा।

"प्रणाम योगिराज !" दीनदयाल जी ने श्रद्धा से सिर झुकाते हुए कहा।

"ब्राह्मण का जो सिर किसी के सामने नहीं झुका–आज नौकरी ने उसे कितना निकम्मा बना दिया है। साहब को भी रोज सलाम करते हो—क्यों ?' बाल-योगी ने तीखी नजर डालते हुए कहा और तब दीनदयाल आश्चर्यचकित रह गये। आस-पास बैठे हुए बीसियों भक्त जन मधुर-ध्वनि से जयजयकार कर उठे।

"आपको कैसे ज्ञात हुआ कि मै नौकरी करता हूँ ?" दीनदयाल ने साश्चर्य प्रश्न किया।

"योगी के नेत्रो से कुछ भी दूर नही है पण्डित जी ! अपने राम तुम्हारे तीन जन्म का हाल जानते हैं।"

श्रद्धा से दीनदयाल और जादोराय दोनों ही बालक योगी के सामने बैठ गये। दोनों ने एक-एक रुपया निकाल कर चरणों मे चढ़ा दिया।

"योगी के पास माया की कमी नही है पण्डित जी ! धातुएं सोना, चांदी तो उसकी चेरी हैं। हमें इसका क्या करना है। उठाओ इसे, उठाओ !" तनिक स्वर उठा कर बालक योगी ने कहा।

दोनो ने कुछ श्रद्धा से और कुछ भय से अपने अपने रुपये उठा लिए।

"त्यागी है महात्मा" भीड मे से किसी ने कहा।

"ऐसे ही सन्तों के बल पर धरती टिकी हुई है।" दूसरा बोला।

"और अब यह धरती पाताल को जाने वाली है—समझे!" किशोर योगी ने चारो ओर नजर फिराकर कहा—"यह अवध की सर जमीन जो 'हिन्दोस्तान का बाग' कहलाती थी, उजड चुकी हैं। उसे बसाने और बचाने का इन्तज़ाम करो पागलो! नही तो ऐसा भूचाल आयेगा कि सब कुछ समाप्त हो जायगा।"

योगी एक दम उठा—"जयशंकर" कहता हुआ तेजी से दूसरी ओर चला गया। लोगोन के मन में, विद्रोह का छोटा सा बीज बोने वाला वह किशोर योगी कुछ दिनो के बाद लोगो के स्मृति पटल से वर्षा के बादलों की तरह धुल गया। गुलामी का विष पीकर मरी हुई जाति भला कैसे जीवित हो सकती थी।

× × ×

"तुम अछूत हो इसलिए मन्दिर के भीतर नही जा सकते।" पुजारी ने गरजते हुए कहा और लोटे में गगाजल भर कर लाने वाले तथा गगा स्नान से गीले कपड़ों में लिपटे हुए उस अछूत को काशी के अधिराज भगवान विश्वनाथ के मन्दिर में जाने से रोक दिया।

दशाश्वमेध घाट से विश्वनाथ जी का मन्दिर लगभग दो मील दूर पडता है और श्रद्धा समन्वित वह अछूत-व्यक्ति गंगा में डुबकी लगा कर गीले वस्त्रों से ही भगवान शंकर पर चढ़ाने के लिए अपने मँजे हुए लोटे में गगाजल भर कर लाया था और जैसे ही वह मन्दिर के द्वार पर पहुँचा तो पुजारी ने आँखें तरेरते हुए पूछा—कौन है रे तू?"

"महाराज मै तो चमार हूँ।"

और इतना सुनते ही पुजारी जी का पारा गरम हो गया। लाख अनुनय-विनय करने पर भी उस व्यक्ति को मन्दिर में प्रवेश नही करने दिया गया और इसी समय एक किशोर संन्यासी उस स्थान पर आकर खड़ा हो गया।

"पधारिये भगवन् !" पुजारी ने हाथ जोड कर कहा।

"और यदि हम भी अछूत हुए तो ?" किशोरयोगी ने पूछा। सुनकर पुजारी मुस्करा उठा।

"हँसी करना आपको शोभा नही देता। ऐसा विराट स्वरूप और ऐसा विशाल आकर्षण ! आप कभी भी अछूत नही हो सकते ! पधारिए !" पुजारी ने कहा।

"लेकिन हम पूछना चाहते हैं पुजारी जी ! कि जब ब्रह्म एक है और सारा विश्व उसी की रचना है तो यह भेद-भाव कैसा ? मानव के प्रति मानव की उपेक्षा ! किसी भी राष्ट्र मे जब इस प्रकार की दुर्भावनाएं घर कर जाती है तो उस राष्ट्र का पतन आरम्भ हो जाता है। देश की एकता के लिए छूत और अछूत की बात छोड़नी ही पडेगी ब्राह्मण।"

"लेकिन मनुस्मृति और धर्मशास्त्र जिसकी आज्ञा नही देते।...."

"व्यक्ति कभी-कभी वह भी करता है।" किशोर ने कहा और इसी समय मन्दिर के अधिकारी ने आकर बताया कि कलक्टर साहब भगवान विश्वनाथ के दर्शनार्थ पधार रहे हैं।

"कितनी श्रद्धा है इन अंग्रेजो के हृदयो मे !" पुजारी ने कहा— "भगवान विश्वनाथ के दर्शन करने आ रहे हैं कलक्टर साहब !"

"राष्ट्र के पतन का यह दूसरा चिन्ह है पुजारी जी, हमारा भाई, एक भारतीय, मन्दिर में प्रवेश नही पा सकता परन्तु एक विदेशी, एक म्लेच्छ इसी लिए नही रोका जा सकता कि आज वह सरकार का एक अंग है।" किशोर ने कहा।

"बड़ी तीखी वाणी बोलते हैं योगिराज ! लेकिन संभवत: आप यह नही जानते कि गीता मे भगवान ने कहा है—नराणा च नराधिप :—राजा को ईश्वर का अंश माना जाता है।"

"मूर्खता जब सीमा से पार हो जाती है और जब किसी व्यक्ति का मस्तिष्क दूषित हो जाता है तो निश्चय ही वह उसकी मृत्यु की सूचना होती है। जयशंकर !"

इसके पश्चात् वह किशोर सन्यासी शीघ्रता से मन्दिर के बाहर निकल गया। अंग्रेज कलक्टर के आने पर उसके जूते बाहर उतरवा दिए गए और केवल मोज़े पहन कर उसे मन्दिर में ले जाया गया। श्रद्धा से या दिखावे से, उस अंग्रेज ने शंकर की पिंडी के सामने सिर झुकाकर प्रणाम किया और फल-फूल के अतिरिक्त दस रुपया भेंट में चढ़ा दिया।

यह सब कुछ देखकर उस अछूत की आँखों से अविरल आँसुओं की धारा बहने लगी और वह मन्दिर से बाहर निकल कर सड़क पर खड़ा हुआ तो एक ईसाई पादरी ने उसके कंधे पर हाथ रखा।

"हिन्दू धर्म ने आज तक कभी-भी छोटी जाति के लोगों को आगे नहीं बढ़ने दिया है। तुम शायद जिंदगी भर इस मन्दिर के भीतर नहीं जा सकोगे।"

"तुम ठीक कहते हो पादरी साहब! लेकिन किया भी क्या जा सकता है? भगवान ने हमें अछूत बनाकर पैदा किया है न!"

"तुम कितने भोले हो मेरे भाई! भगवान किसी को छूत और अछूत नहीं बनाता। यह तो हमारा हिन्दू-धर्म है जो इस प्रकार की बात करता है। मेरे साथ चलो मैं तुमको दयालु ईसा की शरण में ले चलूंगा। मेरे साथ उस गिरजा में चलो जहाँ सभी लोग बराबर हैं। वही भगवान का सच्चा दरबार है।"

"चलना ही पड़ेगा ऐसे दरबार में जहाँ व्यक्ति को शान्ति मिले और जहाँ किसी तरह का भेदभाव नहीं हो।"

निरीह और भोला भाला अछूत उस पादरी के साथ चल पड़ा। गिरजे में जाकर जो उसने देखा उसके उससे आश्चर्य की सीमा न रही। हजारों हिन्दू और सैकड़ो मुसलमान ईसाइयत स्वीकार करके ईशू के चरणों में सिर झुका रहे थे। उसका भी मन श्रद्धा से भर उठा और उसने भी प्रसन्नता के साथ ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया।

× × ×

"इस झोंपड़ी को यहाँ से उखाड़ कर फेंकना ही होगा। हमारे बंगले के पास बिना हमारी आज्ञा इसको बना लिया है।" सेठ साहब ने अपने विकराल नेत्रों से उस गरीब को घूरते हुए कहा।

"सेठ साहब ! हम परदेसी हैं और हमारे घरबार का भी कोई ठिकाना नहीं है। बरसात के चार महीने काट कर हम किसी दूर देश को चले जाएँगे।" वृद्ध ने बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़ते हुए कहा।

"पहले-पहले सब लोग मीठी बातें करते हैं और पीछे आँखें दिखाते हैं। हम तुम्हारी झोंपड़ी आज ही उखड़वा कर रहेंगे।"

"कुछ तो दया कीजिए ! मेरे बेटे की बहू आज तीन रोज से बुखार में पड़ी हुई है। आसमान पर बादल घिर रहे हैं। भला बताइये तो सही ऐसे बुरे समय में हम लोग कहाँ जायगे।"

"मैंने जमाने भर का ठेका थोड़े ही ले रखा है ? कौन कहाँ से आया है और कौन कहाँ जायगा ? इस बात से मेरा कोई सरोकार नहीं है। मजदूरों को मैं अपने साथ लाया हूँ। मैंने उनको पैसे दिए हैं।"

"और जब तक मै अपने भाई और बहनों की लाश अपने सामने तड़पती हुई नहीं देख लूँगा तब तक मै लक्ष्मी का पुत्र कैसे कहा जाऊँगा ? क्यों सेठ साहब !" एक किशोर योगी ने घटना स्थल पर प्रवेश करते हुए कहा "— यमुना के किनारे बना हुआ तुम्हारा आलीशान मकान अंग्रेज सरकार ने सिर्फ दस रुपया माहवार पर जबर्दस्ती छीन लिया और तुम टुकुर-टुकुर देखा किए। वहाँ कोई ऐंठ की बात नहीं कर सके सेठ जी।"

आश्चर्य चकित सेठ करोड़ी मल उस किशोर संन्यासी को देख रहे थे जैसे किसी ने उनकी बोलती बन्द कर दी हो।

"तुम यह सोच कर चुप हो गए सेठ साहब कि शायद अंग्रेजी सरकार तुम्हारी इस सेवा के बदले में तुम्हे कोई खिताब दे देगी। लेकिन तुम्हे सम्भवतः यह नहीं मालूम कि लाखों रुपयों की सहायता देने वाला अमीचन्द बे मौत मारा गया और सब प्रकार से अंग्रेजी राज की जड़ें जमाने वाले महाराजा नन्द कुमार सिर्फ फाँसी का फन्दा ही पा सके।

"महाराज ! आप ·····"

'हाँ ! सेठ जी ! जिस देश के धनिक गरीबो के प्रति उदार नहीं रहते, हृदय की सहानुभूति खो बैठते हैं, वह देश रसातल को चला जाता है। माया चंचला है—

नौका में पानी बढे, घर में बाढ़ै दाम।
दोनो हाथ उलीचिए, यह सज्जन का काम ॥"

"तो तुम वादा करते हो कि बरसात के बाद इस झोंपडी को यहाँ से हटा दोगे।" सेठ करोड़ी मल ने उस वृद्ध बनजारे की ओर देखते हुए कहा।

"हाँ सरकार! हम लोग जाति के छोटे हैं परन्तु बात के बड़े हैं। आप नही जानते आज कितने ही युगों से हमारी सम्पूर्ण जाति भारत के कोने-कोने में भटक रही है।"

"क्यों?"

"हमारे महाराजा ने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब तक दिल्ली हमारी नही हो जायगी; हम झोपडी में रहेंगे, पत्तल में खायँगे, कुशा के आसन पर सोयँगे और दाढी ऊपर नही करेंगे। हम लोगों ने भी उसके बाद से चित्तौड और उदयपुर का परित्याग कर दिया है। अपने छोटे से कुटुम्ब को लेकर यहाँ—वहाँ घूमते हैं, लोहे की चीज़ें बना कर बेचते हैं और उस दिन की आशा में जीवित रहते हैं जिस दिन हमारा देश स्वतन्त्र हो सकेगा।"

"तुम जीवन भर यहाँ रहो मेरे भाई। तुम को जो कष्ट हुआ है मैं उसके लिए माफी चाहता हूँ।"

"आप कैसी बात कर रहे हैं सेठ साहब? हम आपकी इस कृपा को कभी नही भूलेंगे।"

"यह सब इन योगिराज की कृपा है, जिन्होंने मेरी सोई हुई आत्मा को जगा दिया है।"

और जब सेठ करोड़ी मल ने श्रद्धा से भर कर अपना मुख दूसरी ओर मोड़ा तो उनको ज्ञात हुआ कि बालक सन्यासी वहाँ नही था।

× × × ×

"यस, यस, तुम्हारा बात करने का स्टाइल अच्छा लगता है। लेकिन ओल्ड-टाइम्स की कथा कहानियां अपने को कन्विंस नही कर पाती।" उस नौजवान ने कहा जिसके शरीर पर अंग्रेजी वेश-भूषा सुसज्जित थी।

"चाहे जो भी कहो मिस्टर नरेश ! भारत में तो हमेशा लंगोटी की पूजा हुई है। भौतिक वाद के सामने अध्यात्म कभी पराजित नहीं हुआ।"

हो सकता है मिस्टर शर्मा। लेकिन आज तो मैंटर ही सब कुछ है। अगर बॉडी पर ठीक कपडे नही है तो किसी भी ऑफिस में—आई मीन इन एनी प्लेस—कोई भी बात नही पूछेगा। जमाना बहुत तेजी से आगे बढ रहा है।"

"और उसका उदाहरण हमारे देश के वे नवयुवक हैं जो अपनी भाषा को, अपने भावों को और अपनी संस्कृति को भूले जा रहे हैं। जब कोई देश अपने भावो को प्रकट करने के लिए देशी भाषा को छोड़कर विदेशी शब्दो का आश्रय ग्रहण करता है तब निश्चय ही उसके पतन की सूचना मिलने लगती है। कैसी विडम्बना है !"

चकित-विस्मित होकर दोनो विद्यार्थियों ने उस किशोर संन्यासी की ओर दृष्टि पात किया जो बिना बुलाए हुए मेहमान की तरह उन दोनो के बीच में आ धमका था।

"ही इज ए बैगर।" नरेश ने कहा—'क्यो बाबा ! पैसा दो पैसा चाहिए क्या ?"

'नौजवान ! भिखारी तुम हो, जिसके पास बोलने के लिए शब्द भी नही हैं और अपने भावों को जताने के लिए तुम प्रत्येक क्षण विदेशी भाषा से भीख माँगते हो।" किशोर संन्यासी ने कुछ जोश के साथ कहा।

"मुँह तोड़ उत्तर दिया आपने।" शर्मा ने कहा—"मिस्टर नरेश अपने आपको बहुत कुछ समझते हैं।"

"जो आदमी अपने आपको बहुत कुछ समझता है वह कुछ भी नहीं समझता।"

"चलो मिस्टर शर्मा ! ही इज गोइंग बैक टू वेदाज, हम अपना टाइम खराब नही करेंगे।" नरेश ने यह कह कर एक सिगरेट निकाल कर मुँह से लगाई, और उसे सुलगा कर धुआँ उड़ाता हुआ आगे बढ़ा—"चलो न ! अभी शाम को बॉल-डॉन्स का प्रोग्राम है, वह नई छोकरी मिस न्यूटन वन्डर-फुल डॉन्स करती है।"

"अपने को उसमें कुछ भी आनन्द नहीं आता नरेश ! कितना असभ्य नाच है ! अंगों का स्पर्श ! केवल वासना को जागृत करने का साधन है यह सब !"

"तुम भी निरे बुद्धू हो मिस्टर शर्मा। लाइफ इज टु एन्जॉय—जिन्दगी लुत्फ उठाने के लिए है—तुमको तो कत्थक डॉन्स अच्छा लगता है। पत्थर की तरह बैठे रहो। और उसे देखते रहो। भारतीय नाच और गायन आदमी को नौशिया पैदा कर देते हैं। तान और पलटे—आ, आ, करके घन्टों तक कौए की तरह चिल्लाना तबियत को बिलकुल अच्छा नहीं लगता।"

किशोर सन्यासी के नेत्रों मे दो बूंद आंसू छलक आए और अपनी तर्जनी से उनका निवारण करते हुए उसने कहा—"राष्ट्र की समस्त सम्पत्ति नष्ट होती चली जा रही है। सामाजिक धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों मे अंग्रेजों ने ऐसी आग लगा दी है कि जिसे बुझाने के लिए न जाने कितने प्राणियों को अपना खून बहाना होगा।"

"चलो मिस्टर शर्मा ! यह हॉफ मैड मालूम होता है।" नरेश ने बल पूर्वक शर्मा का हाथ घसीटते हुए अपने क़दम सडक की ओर बढा दिए।

"भगवन ! क्या होगा मेरे देश का ? शरीर का प्रत्येक अंग बिगड़ गया है। ब्राह्मण रूपी मस्तिष्क विकृत हो गया है, क्षत्रिय रूपी भुजाए बलहीन हो गई हैं, वैश्य रूपी उदर मन्दाग्नि का शिकार है और शूद्र रूपी चरण भी आज हमारे नहीं हैं। शरीर की इस विश्रृंखलता का परिणाम केवल मौत है। राष्ट्र के शरीर में विष फल गया है और इस विषाक्त प्रभाव को दूर करने के लिये राष्ट्र-गत विष का पान करने के हेतु, किसी महादेव को अवतार धारण करना पडेगा।"

और संन्यासी के उदास चरण मन्थर गति से पूर्व की ओर बढ गए।

× × × ×

"जय शङ्कर !"

"क्या चाहिए बाबा ?" वृद्ध ने श्रद्धा से पूछा।

"केवल दो रोटियाँ"—किशोर साधु ने कहा।

"अरे पूरन !" गृहस्थी ने अपने नौकर को पुकारा—"इस साधू को रोटियाँ लाकर दे दे।"

पूरन मकान के भीतर से दो रोटियाँ लेकर आया और किशोर साधू को दे दी। साधू खिलखिला कर हँस पड़ा।

"क्या हुआ बाबा !" गृहस्थ ने पूछा।

"यह रोटियाँ शायद कल की बनी हुई है।" साधू बोला।

"मालूम नहीं था कि आप पधार रहे हैं वरना महाराज को रोक लेते तो आपके लिए ताजी रोटियाँ बन जाती। जो कुछ मिल गया है उसे ही गनीमत समझिये।" कुछ घृणा मिश्रित भाव से गृहस्थी बोला।

"तुम्हारा इसमें कोई दोष नहीं है बन्धु, आज का वातावरण, आज की हवा, आज का सभ्यता. सभी कुछ बदल गई है। बैठ जाओ तुम्हे एक छोटी-सी कहानी सुनाना चाहता हूँ—लेकिन पहले एक कटोरे में पानी मँगा दो—अरे हाँ, रहने दो। सोचोगे कहीं साधू कटोरा लेकर न चल दे। पूरन ! एक लोटा पानी ले आओ भाई !"

पलक मारते पूरन पानी ले आया। सन्यासी ने अपने खप्पर में पानी भर लिया और उसमें दोनो रोटियाँ डाल दी।

"तो सुनो बन्धु ! बात बहुत पुरानी है। भारत-सम्राट की पदवी धारण करने के पश्चात् महाराज युधिष्ठर ने राजसूय-यज्ञ किया। देश विदेश के राजे-महाराजे भी आये तो ऋषि और महर्षि भी पधारे। बड़े धूमधाम से उत्सव सम्पन्न हुआ। अन्तिम दिन, जब सत्यवादी धर्मावतार युधिष्ठर भगवान् कृष्ण के साथ यज्ञ-मण्डप की परिक्रमा कर रहे थे तो उन्होने यहाँ एक न्यौला देखा, जो यहाँ-वहाँ लोट लगा रहा था। उसका आधा शरीर सोने का था और आधा साधारण। युधिष्ठर को बड़ा आश्चर्य हुआ।"

"यह क्या लीला है भगवन !" युधिष्ठिर ने पूछा—"यह न्यौला अत्यन्त व्याकुल जान पड़ता है।"

"इसी से पूछो धर्मराज !" श्री कृष्ण ने कहा।

"आपकी इस व्याकुलता का क्या कारण है साधु !" धर्मराज ने न्यौले की ओर दृष्टिपात करते हुये कहा।

"धर्मावतार !" अपना मुंह ऊपर उठाकर उसने मानवी-वाणी में कहा—"आपने इतना बडा राजसूयज्ञ किया है जिसमें देश-देशान्तर के राजे-महाराजे पधारे और ऋषि-महर्षि भी—यहा तक कि साक्षात् भगवान् के अवतार योगिराज श्रीकृष्ण ने अपने हाथो से सभी अतिथियो के चरण धोए। मैने सोचा शायद मेरे शरीर का आधा भाग यहा सोने का हो जायगा; परन्तु........"

"परन्तु आपका शेष आधा शरीर सोने का कैसे हुआ ?" युधिष्ठिर ने पूछा।

"महाराज ! मथुरा के पास महाबन में एक गृहस्थी रहता था। उसके एक पुत्र और एक पत्नी थी। भिक्षा-वृत्ति करना तथा प्रभु की वन्दना—यही उसके दो कार्य थे। एक बार देश मे दुर्भिक्ष पडा। गृहस्थियो ने भिक्षा देना बन्द कर दिया। लगातार एक मास तक केवल जल पीकर सारा घर भगवद्-भजन करता रहा। एक दिन उस वृद्ध को थोडे से चावल और आटा मिला तो भोजन तैयार हुआ—परन्तु जैसे ही उन्होंने पहला ग्रास उठाया—किसी ने पुकारा "नारायण ! नारायण !!"

"कोई अतिथि मालूम होता है।" गृहस्थी बोला।

"धन्य भाग ! जो बिना तिथि की सूचना दिये आता है उसी का नाम तो अतिथि है। स्वामी ! बुलाइये उन्हें।"

गृहस्थी ने बाहर आकर देखा, एक वृद्ध है, जीर्ण-शीर्ण।

"पधारिये भगवन् !" गृहस्थी बोला।

"गृहस्थी ! हम भोजन चाहते है।" वृद्ध बोला।

"बिल्कुल तैयार है—हम आपकी ही प्रतीक्षा कर रहे थे।"

और जब वृद्ध उस चौके मे जाकर बैठा तो सभा के मन में बडा सन्तोष था। पहले उसने गृहस्थी के हिस्से का भोजन पा लिया, तो पत्नी ने अपना भाग सन्मुख रख दिया और अन्त में बडे आग्रह और अनुनय के साथ किशोर बालक ने भी अपना भोजन उस वृद्ध अतिथि को समर्पित कर दिया।

"न जाने कितने युगो के पश्चात् ऐसी परितृप्ति हुई है।" पानी पीते हुये वृद्ध ने कहा।

"तो आप सन्तुष्ट होगए न ?" पत्नी ने पूछा !

"हाँ शुभे ! पूर्ण काम होगया।"

"आपने मेरी लज्जा रखली महाराज !" धड़कते हुए हृदय से पत्नी ने कहा। "भोजन सभी समाप्त होचुका था इस दुश्चिन्ता से उस गृहणी का मन चिन्ता-मुक्त होगया।"

"इसके पश्चात् जब तीनों प्राणियों ने प्रसन्न मुद्रा से उस वृद्ध अतिथि के हाथ धुलाए तो मैं भी उस ओर से निकल रहा था। चावल के कुछ दाने बिखर गये थे, उनको प्राप्त करने के लिए जैसे ही मैं उस स्थान पर पहुँचा तो कुछ गीली कीचड मेरे शरीर से लिपट गई। मैं उसे छुड़ाने के लिए सूखी मिट्टी से अपना शरीर रगडने लगा—तो आश्चर्य से देखा धर्मावतार ! मेरा आधा शरीर सोने का हो गया था। पुनः दौड़ कर मैं उसी स्थान तक पहुंचा परन्तु जल पृथ्वी में व्याप्त हो गया था और देखा कि गृहस्थी का भवन परिवर्तित होकर वैकुण्ठ बन गया था। वह स्वयं धीरज के रूप में दिखाई दे रहा था, उसकी पत्नी शान्तिरूपा हो गई थी और उसका पुत्र सहयोग का स्वरूप धारण कर चुका था। तब से लेकर आज तक मैं कितने ही स्थानों पर इस शरीर को लेकर घूमता रहा हूँ और इस महायज्ञ में चारों ओर लोटने पर भी·······।"

"निराशा ही हाथ लगी क्यों ?" श्रीकृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा।

"यह क्या लीला है भगवन् !" युधिष्ठिर ने बडे ही निराशापूर्ण स्वर में श्री कृष्ण से पूछा।

"धर्मराज ! जिस स्थान पर धीरज, शान्ति और सहयोग का निवास होता है वहाँ स्वयं भगवान् भिक्षुक का रूप धारण करके आते हैं। इसलिए उनको गरीबों से प्यार होता है, क्योंकि गरीब के पास ही प्यार की दौलत होती है। धनवान तो अभिमान में भगवान् का भी तिरस्कार करता है—" श्रीकृष्ण ने समाधान करते हुए कहा।

"इसलिए" किशोर संन्यासी ने कहा—"बन्धु ! गरीब से प्यार करना सीखो। यह रोटी गरीब का सहारा है। इसका अपमान नहीं होना चाहिए !"

इतना कहकर उसने पानी में भीगी हुई रोटियाँ खाना आरम्भ दिया। गृहस्थी ने बडी अनुनय-विनय की और कहा कि वह अभी ताजा भोजन बनवा देगा परन्तु किशोर ने हँसकर कहा—"बन्धु ! प्रेम से दी हुई बासी रोटी लाख गुना मीठी है, उस रोटी से जो तिरस्कार के साथ प्रदान की गई हो—परन्तु देश में आगे चलकर ऐसी ही विषम परिस्थिति आनेवाली है कि रोटी ही एक समस्या होगी। धनवान दूसरों के मुँह से उसे छीनेगे विलायत के कुत्तो को दूध पिला पिला कर पाला जायगा और अपने भाई को जूठन का टुकड़ा भी नही मिलेगा।"

"महाराज !" गद्‌गद् कण्ठ से गृहस्थी ने कहा।

"जयशंकर।"

अपना खप्पर और कमण्डल उठाकर किशोर साधु एक ओर को चला गया। गृहस्थी मौन होकर अपने कार्य में जुट गया।

× × × ×

"मात्र तुम्हारे आग्रह से पण्ढरपुर तक चला आया हूँ, नही तो मेरा विश्वास रूढ़ियो में कभी नही रहा।" साथ चलने वाले नवयुवक ने अपने मित्र से कहा।

"देशपाण्डे ! सभी जगह बुद्धिवादी बनने से काम नही चलता कुछ स्थान ऐसे भी हैं जो क्षितिज के पार हैं, जहाँ अनुमान ही गन्तव्य है।" मित्र ने समझाते हुए उत्तर दिया।

"अन्ततः यहाँ है ही क्या ? एक कच्ची ईंट पर पण्ढरीनाथ की मूर्ति बना कर खडी कर दी गई है। लोग मरे जारहे हैं दर्शन पाने के लिए। करामत मानो पराँजपे ! पाश्चात्य संस्कृति ने जागरण का नवीन अध्याय उद्‌घाटित किया है—क्षितिज के पश्चात् जो भी कुछ है वह दर्शनीय नही है तो हम उसे मानने को प्रस्तुत नही है।" देशपाण्डे ने कहा।

"बुद्धिवादी महोदय !" सहसा देशपाण्डे का ध्यान एक किशोर संन्यासी ने अपनी ओर आकर्षित करते हुई पूछा—"क्या आप प्रकृति को भी स्वीकार नही करते ?"

"मानता हूँ।"

"और यह भी मानते हैं कि प्रकृति में परिवर्तन करने की शक्ति मनुष्य में नहीं है !"

"यह नही मानता। पुरुष ने प्रकृति को पराजित किया है।"

"पराजित !" किशोर साधू की सात्विक हँसी से सारा वातावरण मुखरित हो गया—"यह मानव का दम्भ है, उसके ज्ञान की प्रवचना है, मिथ्या माया की महत्ता है।"

"तो भारत में चलने वाली रेलगाड़ियाँ, सैकड़ों मील पर बैठ हुए व्यक्ति से बातें करने का साधन यह टेलीफोन ?—यह सब क्या है ?"

"तुम्हारे ज्ञान की चिनगारी पर पड़ी हुई राख है देशपाण्डे ! तुम जिस सभ्यता की बात कह रहे हो, जिसे प्रकाश का पुंज बता रहे हो वह इसीलिए है कि आज तुम अपनी वास्तविकता को भूल चुके हो।"

"वह कैसे संन्यासी ?"

"सूर्य का उदय पूर्व से होता है या पश्चिम से ?"

"पूर्व से।"

"तो जिस वैज्ञानिक सभ्यता और जागरण की बात तुम करना चाहते हो नवयुवक ! उससे कहो कि वह सूर्योदय एक बार तो पश्चिम से करा दे।"

देशपाण्डे चुप था।

"तुम कहना चाहोगे कि यह तो प्राकृतिक नियम है—क्यों ?"

"जी हाँ।"

"और यह भी ध्रुव है सूर्य पश्चिम में अस्त होता है ?"

"जी हाँ।"

"तथा पश्चिम का सूर्य अपने पीछे अन्धकार ही छोड़ जाता है।"

"लेकिन, लेकिन उसके पश्चात् तारे भी उदय होते हैं।"

"हाँ, करोड़ों। परन्तु क्या फिर भी तिमिर का विनाश भुवनभास्कर के बिना हो पाता है ? इसी प्रकार हमारे शिक्षित युवकों का हाल है। उदाहरण से बताऊँ ?"

"बताइए" परांजपे ने कहा।

"एक अन्धा व्यक्ति अपने हाथ में लालटेन लेकर सड़क पर जा रहा था। सामने से जो व्यक्ति आ रहे थे उनमें से किसी ने पूछा—"भाई ! तुम स्वयं तो अन्धे तो फिर भी हाथ मे लालटेन लेकर चल रहे हो, इसका क्या कारण है ?" अन्धे व्यक्ति ने कहा—"यह लालटेन आँख वालों के लिए है, जो कभी मुझसे टकरा न जाएँ।" पश्चिमी सभ्यता एक अन्धकार है जिसमें चल कर आँखों वाले भी टकरा जाते हैं और हमारी संस्कृति एक लालटेन है। तुम पर्याप्त पढे-लिखे व्यक्ति जान पड़ते हो—एक बात और पूछना चाहता हूं।"

"आपकी पहली बात ने ही निरुत्तर कर दिया महाराज।" देश पाण्डे ने कुछ श्रद्धा-समन्वित स्वर मे कहा।

"फिलासफी यानी दर्शन की अन्तिम परिणति क्या है ?"

"शान्ति, असीम शान्ति।"

"पश्चिमी दार्शनिक यही तो मानते हैं न ?"

"जी हाँ।"

"उनकी पहुच जहाँ समाप्त होती है, भारतीय दर्शन वहाँ से आरंभ होता है। हमारे घर की चौखट दर्शन शास्त्र का पहला अध्याय है।"

"वह कैसे ?" परांजपे ने पूछा।

"तुम्हारे घर में बहिन है, मा है, बेटी है और पत्नी भी है—नारी के यही चार स्वरूप हैं न ?—कभी किसी विषय पर विवाद हो जाता है और तुम पराजित होते दिखाई देते हो तो नारी को मूर्खा कह कर उसका मुँह बन्द कर देना चाहते हो ? होता है न ?"

"होता तो है। कभी-कभी तो यों ही डाट-फटकार देते है। क्रोध किसी का और उतार देते हैं घर में।" देशपाण्डे ने सोत्साह कहा।

"परन्तु कभी किसी 'नारी' ने 'पुरुष' को ऐसा कह कर अपनी हार को जीत में बदलने की चेष्टा की है ? वह हार मान कर भी जीत जाती है। बडी शान्ति के साथ सहन-वहन करती है। वह दर्शन शास्त्र की पहली मंजिल है। फिलासफी हमारे आँगन में डोलती है और हम उसे प्राप्त करना चाहते हैं अन्धकार के देवता से ?"

"आप ठीक कहते है सन्यासी जी ! हमारी आखों पर काला ऐनक चढ़ा दिया है अ ग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने—कुछ और बताइए। हमारा मार्गदर्शन कीजिए।" देशपाण्डे ने बडे विनम्र शब्दो मे निवेदन किया और इसी समय गीत गाते हुए एक विशाल भक्त समुदाय ने मन्दिर के कक्ष मे प्रवेश किया। देशपाण्डे के अन्तिम शब्द वाद्य यन्त्रो के स्वरो मे डूब गये और किशोर संन्यासी इस भीड़ में कही विलीन होगया।

× × × ×

"न जाने क्या सिफ़्त है इस गोरी चमडी में भाई जान ! जो भी सामने जाता है सर निगू ं हो जाता है।" हुक्के में कश लगाते हुए मियाँ मुहम्मद अकबर अली ने फरमाया—"बला के गुस्ताख़ है ये लोग और कारसाज भी। वफादारी तो करीब से नही निकली। अवध को चौपट कर दिया। दिल्ली को तक़रीबन हज्म कर गये। हमारे इस निज़ाम को ही ले लीजिए ·।"

"हाँ दोस्त ! सितारा बुलन्दी पर है अंग्रेज का। निजाम, सिन्धिया, होल्कर सभी को परास्त कर दिया।" पानदान में से लेकर पान पर चूना लगाते हुए दूसरे शरीफ दोस्त सरदार यासीनखां ने कहा :—"न जाने अल्लाह ने इनको किस मिट्टी से बनाया है। अखलाक से मिल कर हलाक करना इन्ही को जेब देता है। न तहज़ीब से वास्ता न तमद्दुन से शनासाई। तज्जार बनकर आये थे क़ज्जाक़ बन कर जम गये हैं। खुदा खैर करे !",

"खाँ ! अल्लाह का हुक्म नही होता तो यह बदजात यहाँ एक लमहा भी नजर नही आते खिताबो के खलीतो से गुलाम खरीदते है और दुम-दराज़ होते चले जाते हैं।" अली ने कहा।

"और तुर्रा यह भी है कि न ईसा को मानते हैं न मूसा को। अपना मज़हब दुनियाँ के पर्दे पर सबसे आला बताते हैं। तन के गोरे मन के काले।" यासीन ने कहा।

"जय शंकर !" किशोर सन्यासी ने द्वार पर आवाज लगाई।

"अन्दर आजाइए', अली ने कहा—'शायद हिन्दू का घर समझ कर आरहे हैं बाबाजी" मुस्कराते हुए यासीन खाँ की ओर देखते हुए धीरे से अली बोले।

"गलतियां इन्सान करता है अली साहब ! फ़कीर नहीं—क्योंकि वह खुदा का बन्दा है।" संन्यासी ने कहा।

"और इन्सान ?" यासीन खाँ ने पूछा।

"वह तो नाखुदा है न ? अपने बाजुओं की ताकत पर भरोसा करने वाला बन्दापरवरी और बन्दगी वह क्या जाने।"

"आप तो शायद ......।" अली ने पूछना चाहा।

"पूछना चाहते हो मैं हिन्दू हूँ। वह भी हूं। लेकिन मुसलमान भी हूँ। मतलब जानते हो मुसलमान का ?—जो मुसल्लिम है ईमान पर। राहे हक़ में जान देने वाला है। मार कर नहीं, मर कर, फना होकर जिन्दगी को जीतने वाला है।" संन्यासी बोला।

"लेकिन फकीर साहब ! हिन्दू लोग तो हमें नाचीज समझते हैं। हमारे हाथ की छुई हुई चीजें भी नहीं लेते।" अली ने कहा।

"यह मुल्क की बदकिस्मती है अलीसाहब ! खानदान के ज़वाल का इशारा है, क़ौम की गिरावट का नमूना है—जहां दो भाई मिल-जुल कर नहीं रह सकते। हिन्दुओं की नजरों में मुसलमान अछूत हैं और मुसलमान हिन्दुओं को काफिर समझते हैं। इससे जियादह तकलीफदेह सियासत और क्या हो सकती है।"

इस बीच में खादिमा एक तश्तरी में कुछ मीठा और पूरियाँ लेकर सन्यासी के सामने हाजिर हुई। रूमाल उठा कर जब सामान संन्यासी के सामने उपस्थित किया गया तो वह हँस पड़ा।

"मेरी अच्छी बहन ! गुलामी के शिकंजे में सारा मुल्क पिसा जारहा है। लाखों लोगों को जो नसीब नहीं है मुझे वह रोटी चाहिए। सिर्फ़ दो रोटियाँ। इनको वापस लेजाओ।" सन्यासी बोला।

"लेकिन आप हमारे यहाँ की रोटी ......?" अली ने तनिक झिझकते हुए कहा।

"सरदार साहब ! पानी और रोटी हिन्दू या मुसलमान नहीं होती। अगर यही हाल रहा तो हिन्दू धूप और इस्लामी बरसात होने लगेगी। रात

और दिन में फर्क आ जायगा। हिन्दुस्तान के अवाम की रीढ़ की हड्डी टूट जायेगी। इसे रोकिये आप लोग।"

"आप ठीक कह रहे हैं बन्दा परवर! कुरान् और पुराण में क्या फर्क है? अल्लाह सबका अल्लाह है। वह सबको रोजी और रिज्क देता है। या अल्लाह! क्या होने वाला है?" अकबरअली ने गहरी सांस लेकर कहा!

'सबका अजाम अच्छा होता है।' सन्यासी बोला।

दासी रोटियाँ ले आई थी। संन्यासी उन्हें लेकर बाहर निकल गया।

: ५ :

जिस ओर भी निगाह डालिए अजीब सूना-पन सा दिखाई दे रहा है। खेतो मे धूल उड रही है। पशुओ के ढाचे निकल आये हैं। भूसे के अतिरिक्त खाने के लिए हरियाली का कहीं पता नही है। किसानों के पास केवल गप्पे लगाने के अतिरिक्त और कोई काम नही है। चौपाले दिन रात भरी रहती हैं। दोपहरी सो कर गुजार दी जाती है तो सायंकाल से बहुत रात तक इधर-उधर की बाते चलती रहती हैं। प्रात: काल का समय नहाने-धोने में निकल जाता है। मौसम भी कुछ परेशान-सा दिखाई पडता है। सन-सन करती हुई गरम हवा मानो समस्त ससार को अपने साथ ही उडा ले जाना चाहती है। वृक्षो के पत्ते नीचे गिरते चले जा रहे हैं और जो पृथ्वी पर पतित हो गए हैं वे जलती हुई धूल के ससर्ग से क्षरा भर में निष्प्राण और निष्प्रभ होकर यह बता रहे हैं कि जिस व्यक्ति का पतन हो जाता है, वह धूल में भी आश्रय नहीं पाता है।

रामपुर गाँव मे तीन ओर से तीन रास्ते आते हैं और तीनो ही कच्चे हैं। केवल एक मार्ग कुछ थोडा-सा पक्का है और बरसात के दिनों में उसी पथ से आना-जाना होता है। इस समय उस मार्ग पर भी धूल नाच रही है। कोसो तक छाया का पता नही है। ऐसा लगता है कि ठडक भी किसी शीतल स्थान में प्रविष्ट होकर कुछेक क्षरा के लिए विराम ले रही है।

ऐसी ही चिलचिलाती दोपहरी में एक किशोर वयस्क सन्यासी नंगे बदन, कोपीन पहने और तमाम शरीर पर भस्म रमाये हुए तीसरे पथ से चला आ रहा है। उसके माथे पर पसीने की बून्दें झलक रही हैं और बढ़े हुए बालों में से यदा-कदा पसीना चू पडता है। एक हाथ मे कमण्डल है और बगल में खप्पर लगा हुआ है। साधू बडी लगन के साथ आगे बढा चला जा रहा है— मानो यहीं उसकी मुक्ति की मजिल है और वह उसे वृद्धावस्था से पहले ही प्राप्त कर लेना चाहता है।

गाँव में वह निर्द्वन्द्व चला आया। भूँकने के लिए कुत्ते भी शेष नहीं थे। वे भी किसी पोखर के पास या किसी पशु की भुस की नांद में घुसे बैठे थे।

सन्यासी के मुख पर मुस्कराहट की एक लहर दौड़ गई और उसने सन्तोष की गहरी सास ली। लगा कि उसकी मजिल आगई है । नपे-तुले कदम रखते हुए वह गाव के मध्य मे जा पहुँचा और तभी एक द्वार पर पहुंच कर उसने जय घोष किया।

"जय शकर !"

"कौन है रे ? दोपहर मे भी भीख माँगने वाले चैन नही लेने देते।" घर के भीतर से बड़बडाने की अवाज सुनाई दी, परन्तु द्वार पर खड़े हुए व्यक्ति पर उसकी कोई प्रतिक्रिया नही हुई। थोडी देर बाद दरवाजा खुला और एक वृद्ध पुरुष दिखाई पड़ा।

"क्या चाहते हो ?" उसने आगन्तुक से पूछा।

"इस जलती हुई दोपहरी मे बचने के लिए, मै आपके मकान मे थोडी सी जगह चाहता हूँ और यदि हो सके तो सन्ध्या के समय दो रोटिया मागने की अभिलाषा है।"

"भीतर आजाओ।" किवाडे बन्द करते हुए वृद्ध ने कहा—"बाहर तो आग बरस रही है।"

किशोर सन्यासी और वृद्ध गृहस्थी दोनो ही घर के भीतरी भाग मे पहुँच गए। कोठरी में से बाहर निकलते हुए भारती ने पूछा—"किसे से पकड लाए हो दादा !"

"साधू का अपमान नही करते बच्ची ! साधू सब कुछ जानता है।"

"क्या-क्या जानता है ?"

"हम तुम्हारे तीन जन्म का हाल बतला सकते है।"

"और अपना सात जन्म का ? क्यो ? ज़रा-जरा से छोकरे साधू बनकर निकल पडते हैं, मागने-खाने के लिए।" इतना कह कर भारती चटकती-मटकती हुई घर के भीतर चली गई।

"बात तो बेटी ने कुछ ठीक ही कही है। तुमने इतनी छोटी सी उमर मे सन्यास ले लिया। बहुत कुछ अजीब सा लगता है।" गृहस्थी ने कहा और किशोर संन्यासी को एक चटाई पर बैठने का आग्रह किया—"आप यहाँ बैठिए मैं शर्बत बनवाता हूँ।"

जब गृहस्थी भीतर की ओर चला गया तो किशोर संन्यासी के मुख पर हल्की-सी मुस्कुराहट दौड गई। पैर पर पैर रख कर वह चटाई पर लेट गया और बाह्य रूप से दोनों नेत्र मूंद लिए परन्तु थोड़ी ही देर बाद उसने सुना कि दो व्यक्ति उस कोठरी के द्वार के पास धीरे-धीरे बातें कर रहे हैं।

"तनिक सा लड़का है, अट्ठारह-उन्नीस का होगा, बड़ा साधू बनता है!"

"कोई नही जानता बेटी किस वेष मे कौन मिल जाय।"

"आप एक दम सीधे हैं दादा! ऐसे ही लोग तो भोले भाले व्यक्तियों को ठग लेते हैं और अपना काम बनाते हैं।"

"तू देखती नही उसके मुँह पर कैसे तेज है! साक्षात् विष्णु का अवतार मालूम होता है।"

"ठीक है। आप उसे यही रोक लीजिए, मन्दिर बनाने की भी आवश्यकता नही रहेगी!"

इतना कह कर बालिका तनिक दर्प के साथ, उस कोठरी मे प्रविष्ठ हुई जिसमे किशोर सन्यासी लेटा हुआ था। उसे सोता हुआ जान कर बालिका ने अपना चरण तनिक जोर के साथ पृथ्वी पर पटका। सहसा किशोर की नींद खुल गई और उसने कहा—"शर्बत लेकर भेजा होगा दादा ने।"

"दादा ने! क्या मतलब है तुम्हारा? तुम उनको कैसे जानते हो?" बालिक ने पूछा।

"हम ससार के हर आदमी को जानते है और तुम को भी जानते हैं। पूछना चाहती हो तो पूछलो।"

"मुझे कुछ नही पूछना। यह शर्बत ले लीजिए।"

"सहसा किशोर सन्यासी ने शर्बत का गिलास हाथ में लेते हुए नजर जमा कर उस बालिका की ओर देखा।

"तुम्हारा नाम 'भा' से आरम्भ होता है। क्यो मै ठीक कहता हूँ न।"

"हाँ होता है। पूरा नाम बताओ न।"

"सन्यासी की परीक्षा लेना चाहती हो? तो सुनो तुम्हारा नाम भारती है—और आगे बताऊँ?"

भारती ने चकित और विस्मित होकर देखा। फिर भी धीरज के साथ उसने किशोर की चेतना को फिर एक ठोकर मारने की चेष्टा की। उसने एक प्रश्न किया।

"बताओ मेरे दादा का नाम क्या है ?"

"अभी परीक्षा पूरी नहीं हुई है, ऐसा मालूम होता है। सुनो तुम्हारे दादा के नाम का पहला और अन्तिम अक्षर है—'ह' क्यों है न।"

"पूरा नाम बताइए।"

"नही मानोगी, क्योंकि तुम तो बचपन से ही बड़ी हठी हो और जिद करने की आदत शायद तुमने दूध के साथ पीली है। सुनो, तुम्हारे दादा का नाम हर भजन सिंह है।"

"किसी से पूछ लिया मालूम होता है।"

"अच्छा तो कोई और प्रश्न पूछो।"

"हमारा एक साथी था मगल। बताइए वह आज कल कहाँ है ?"

"हाँ ! तुम्हारा एक साथी था और वह आज से तीन साल पहले इसी गाँव से सारे देश में घूमने के लिए निकल गया—लेकिन आज कल वह कहाँ है—वह कहा है—वह कहाँ है ?" उगँलियों पर कुछ हिसाब लगाते हुए किशोर संन्यासी ने विचार मग्न और ध्यान मग्न हो जाने की सी मुद्रा धारण करली।

"पकडे गए साधू जी ! बहुत बनते थे तीन जनम का हाल बताने वाले !"

"हँसी मत करो भारती। संन्यासी तीनों लोकों की और तीनों कालों की बात जानता है। तुम्हारा साथी मंगल इसी धराधाम पर जीवित है और बहुत जल्दी वह तुम से मिलने वाला है।"

"लेकिन कब ?"

"शायद आज ही।"

"लेकिन कहां ?"

"इसी स्थान पर।"

"इसी स्थान पर ! लेकिन कब ?"

"आँखें बन्द करो । हम उसको अभी यहा बुलाते हैं ।"

भारती ने आँखें बन्द करली और इस ओर किशोर साधू ने कुछ बड-बडाना प्रारम्भ कर दिया ; थोड़ी देर पश्चात् उसने भारती को सम्बोधित किया ।

"आंखे खोलो भारती ।"

भारती ने आखे खोल कर चारों ओर देखा, लेकिन उसे मंङ्गल कहीं नहीं दिखाई पडा ।

"कहा है मङ्गल ? झूठे कहीं के ?" तनिक रोष में भर कर भारती बोली ।

'विश्वास था भारती ! कि जन्मजन्मान्तर मे भी कही मङ्गल मिलेगा तो उसे तुम पहचान ही लोगी - लेकिन, सिर्फ तीन साल में तुम अपने मङ्गल को भूल गई ? क्या बिल्कुल नही पहचानती ?"

और जब भारती ने बडे गौर से किशोर सन्यासी को देखा तो सबसे पहले उसका ध्यान उसके माथे की ओर गया । चोट का निशान ज्यों का त्यों बना हुआ था । बचपन में खेलते समय भारती ने गुस्से में भर कर मगल को पेड के ऊपर से धकेल दिया था और तब नीचे पडे हुए ककड ने मंगल के माथे पर घाव बना दिया था। उसका चिन्ह कभी नही मिटा !

"मंगल !—तुम ?—लेकिन यह साधू का वेष ?" प्रसन्नता से भारती का मन नाच उठा और उसने मंगल की ठोडी ऊँची उठाते हुए कहा—"मगल ! भारती की आँखो में झाक कर देखो । उनकी रौनक शेष नहीं है । रोते-रोते मेरे नेत्र फीके पड़ गए हैं ।"

"मैं जानता हूँ भारती ! लेकिन मैंने तुम्हारे प्रेम को बहुत ज्यादा बडा कर लिया है ।"

"वह कैसे ?"

"फिर किसी समय बताऊँगा । शायद दादा आने वाले हैं ।"

मानो दादा की पद-चाप सुनकर ही मंगल ने ऐसा कहा था ।

"दादा ! दादा !!" भारती ने पुकारा ।

"क्या है री पगली ! क्यों चीख रही है ?" कोठरी में प्रवेश करते हुए हरभजन ने कहा ।

"आपने पहचाना इसे साधू को ?" भारती ने पूछा

"साधू की पहचान ही क्या होती है बेटी ! लेकिन इतने बचपन से सन्यासी हो जाना बहुत बडी बात है ।" दादा ने कहा ।

"मैंने आपसे पहले ही कहा था कि आजकल के साधू सन्तो का कोई ठिकाना नही होता ।"

"लेकिन हुआ क्या बेटी ।"

"यह साधू है ? धोखेबाज कही का ।" भारती बोली

"सन्तो का निरादर नही करते है भारती !" किशोर संन्यासी ने बाधा देते हुए कहा ।

"बडा आया सन्त की दुम ।" उसके बाल पकड़कर भारती ने खीच लिए—"यह मगल है दादा ! मगल ! हमारा मंगल ! सुना दादा ! आज मैं इसकी खूब पिटाई करूँगी । कैसा-कैसा रुलाया है इसने !"

"मंगल !" दादा ने जरा गौर से देखा—'तीन साल मे कितना लम्बा हो गया है तू ! पगले ! हम तो तेरी याद मे अधमरे हो गए ।"

'मुझे क्षमा कर दीजिए दादा !' मगल ने हरभजन के पैर पकड लिए —"मैं विवश था । यदि इस गॉव मे रहा आता तो सारा गॉव उजाड दिया जाता । दादा ! जन्म लेते ही माता का स्वर्गवास हुआ और पाँच वर्ष की अवस्था मे पिता का साया सिर से उठ गया । तब से आपने ही पाला पोसा । अपना खून देकर मेरे प्राणो को बचाया । मेरा रोम-रोम आपका अहसान मानता है ।"

बरबस अपने सीने से लगाते हुए दादा ने कहा—"मंगल ! मेरे बच्चे !" और झर-झर मोतियो की तरह दादा के नेत्रो से आँसू बह उठे । भारती करुणा से द्रवित होगई । दूसरी ओर मुँह फिरा कर उसने अपने आँसू पोछ डाले और बाहर निकल गई ।

"अच्छा अब चलो नहा धो डालो । कटवा डालो इन जटाओ को और फिर मगल बन जाओ ।"

"दादा ! उस थानेदार का क्या हुआ ?"

"हैड कान्स्टेबिल बना दिया गया था तब तो अब पता नही वह कहाँ है।"

"नाई आगया है दादा ! आँगन मे बैठा है।" भारती ने सूचना दी।

बड़े प्रेम के साथ दादा के सामने मगल का मुण्डन होगया।

: ६ :

क्षितिज के पास, सन्ध्या के समय, जब रगीन बादल घिरने लगे तो गाँव के लोगो ने समझा कि वर्षा के समीप आने के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। और दिनो की अपेक्षा आज कुछ गर्मी भी कम थी, इसलिए शाम को घूमने के उद्देश्य से मगल खेतो से होता हुआ उस तालाब के पास जा पहुंचा जहाँ अक्सर अपने बचपन के समय में गर्मी की शाम को ठढक का आनन्द लेने के लिए पहुँच जाया करता था। तीन वर्ष के पश्चात उसके हृदय में अनुकूल वातावरण पाकर यह इच्छा उत्पन्न हुई कि उन पुरानी स्मृतियो को फिर से ताजा कर लिया जाय। यो तो तालाब की दशा काफी असन्तोषजनक थी फिर भी सबसे बडा आश्चर्य यह था कि भीषण से भीषण गर्मी में भी उसका पानी कभी नही सूखता था। मंगल इस ओर आया और एक सुखद कल्पना अपने मन में छिपाए हुए अन्तिम सीढी पर बैठ गया। उसने अपने दोनों पैर पानी में डाल दिए और सामने की ओर डूबते हुए सूर्य को देखने लगा।

"हिन्दुस्थान के नक्शे का रग इसी तरह लाल है जैसे यह तमाम आसमान लाल हो रहा है। कहते हैं कि अग्र जों के राज मे सूरज कभी नही डूबता और सच बात भी यही है कि उनके राज के जिस कोने मे सूर्य अस्त होता हुआ दिखाई देता है तो किसी अन्य कोने से सूर्य उदय की आभा फूटने लगती है।" मगल बैठा हुआ बड़बड़ा रहा था, सहसा किसी ने उसे पीछे से बड़े जोर का धक्का मारा और वह तालाब के पानी में जा गिरा। थोडा संभलने पर उसने देखा कि अन्तिम सीढी पर भारती खड़ी हुई है और खिलखिला कर जोरो से हँस रही है।

क्षणमात्र में ही मंगल को एक शैतानी सूझ गई। पानी में डूबने का-सा भाव दिखाते हुए मंगल ने दो तीन डुबकियां ली और तभी उसे बचाने के लिए

घबराती हुई भारती भी पानी मे कूद पडी। इस बार मगल ठठाकर हँस पडा। भारती ने उसकी चालाकी ताड़ ली और जैसे ही वह सीढियो की ओर लौटने लगी मगल ने बड़े आग्रह के साथ उसे हाथ पकड़ कर रोक लिया।

"जीवन बहुत बड़ा है भारती! अगर इस तरह साथ छोड़ती चली जाओगी तो मगल को सहारा कौन देगा?"

"तुम यह कैसी बाते करने लगे हो मंगल? तुम्हारी बातों में कुछ दर्द-सा मालूम होता है।" भारती ने कहा।

"यह वही पीडा है भारती! जिसने तुम्हारे नेत्रो को गीला कर-कर दिया था और दादा को भी तीन वर्ष मे इतना बूढा कर दिया कि उनकी तेज नजरे अपने मगल को नही पहचान सकी। मेरी पीड़ा भी ऐसी ही है।" भारती को आगे की ओर तैराते हुए मगल ने कहा।

"जब तुम यहाँ नही थे तब न जाने क्यो सूना-सूना सा लगता था।" भारती बोली।

"और अब?" मगल ने प्रश्न किया।

"अब लगता है तालाब के पानी में शीतलता है, दूर-दूर तक नंगे खेतो मे किसी की आशा सोई हुई है और यह धूल के दिन उसका कुछ नही बिगाड़ सकेंगे, धरती की इच्छा पूरी होगी, भारती का आँगन निश्चय ही हरा-भरा होगा।"

"तुम ठीक कहती हो भारती। मगल का स्वप्न किसी न किसी दिन पूरा होकर ही रहेगा।"

"अपना सपना मुझे नही बताओगे?"

"अभी मत पूछो।"

"क्यों?"

"लोग कहते हैं जब प्रकृति के दोनो पक्ष मिल रहे हों, अन्धकार और उजाले का सम्मिलन हो रहा हो उस समय की जाने वाली कल्पना अधूरी रह जाती है।"

"कभी-कभी बूढों की सी बातें करने लगे हो मंगल! दुनियाँ हमेशा से

जवान लोगो की रही है, उन जवान लोगों की जो चाहे तो दोनो हथेलियों से मसल कर धरती को चपटी बनादे ।"

"जिद करती हो भारती, तो सुन लो । मैं चाहता हूँ मेरा देश स्वतन्त्र हो जाय; विदेशी जुए से हम लोग मुक्ति पा सकें और ऐसी स्वतन्त्र भूमि पर मेरा और तुम्हारा पाणिग्रहण हो ।"

"कल्पना अच्छी है, पहला हिस्सा कुछ कठिन दिखाई देता है

"और दूसरा ?"

इसके उत्तर में भारती ने पानी में एक लम्बी डुबकी लगाई और जब आश्चर्य से चकित होकर मंगल उसे चारो ओर खोजने लगा तो सहसा उसके कानों को भारती की मधुर खिलखिलाहट सुनाई पड़ी । मंगल ने देखा कि भारती सरोवर के किनारे वाली सीढ़ी पर खड़ी हुई है । वह तेजी से उसकी ओर दौड़ा लेकिन जब तक मगल उस सीढ़ी के पास तक पहुंचे-पहुँचे भारती कितने हो खेत पार करके गाँव की ओर दौड़ी चली जा रही थी । मगल उसके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ घर तक चला गया । पूर्ण सन्ध्या हो चुकी थी और संसार रजनी का स्वागत कर रहा था ।

घर में दादा बैठे हुए दोनों बच्चों की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब बालक और बालिका दोनों ही भीगे हुए कपडों मे घर पहुँचे तो उन्होने बड़े प्यार से डाटते हुए कहा—"अरे जब तुम को तालाब में नहाना ही था तो घर से कपडे क्यो नहीं ले गए ?"

"भीगे कपड़ों में बडा अच्छा सा लगता है दादा ! और वह भी खास कर गर्मी के दिनों में ।" मगल ने कहा ।

इस बीच मे भारती कपडे बदल कर आँगन में आगई थी और उसने एक धोती और एक कमीज मगल को थमा दी । इसके बाद वह चौके की ओर मुड़ी । मगल कपड़े बदलने के लिए भीतर चला गया ।

दादा हरभजन का परिवार बहुत ही छोटा था । आरम्भ में वे स्वयं, उनकी पत्नी और भारती ही उनका कुटुम्ब था । गाँव के अच्छे खाते-पीते घरों में उनका शुमार किया जाता था । जब भारती लगभग पाँच वर्ष की थी, तब प्लेग की बीमारी से आक्रान्त होकर उसकी माता का देहावसान हो

गया था; तब से दादा ही उसके लिए माता और पिता थे। इसी बीच मंगल भी इस परिवार में आगया था और एक साथी पाकर भारती को अपनी माँ का अभाव कुछ अधिक खटकता नहीं था।

भोजन तय्यार होने पर भारती ने दादा और मगल दोनों को आवाज देकर बुलाया और जब वे दोनों भोजन कर चुके तो भारती भी अपना भोजन करने लगी।

"हाँ रे, मंगल! तू ने यह तो बताया ही नहीं कि पिछले तीन वर्षों में तू कहाँ-कहाँ रहा?" दादा ने पूछा।

"नहीं, नहीं, अभी मत बताना मगल! मैं भी रोटी खाकर बैठक में आती हूँ। वहीं सब मिलकर सुनेंगे।" भारती ने कहा।

"अच्छा, अच्छा यों ही सही।" दादा ने उत्तर दिया।

और जब भारती, दादा तथा मंगल तीनों बाहर की बैठक में एकत्रित हुए तो मगल ने अपनी बात कहना आरम्भ किया।

"रामपुर से भाग कर मैं सबसे पहले लखनऊ पहुँचा और वहां जाकर मैंने देखा कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति की समाप्ति कितनी बुरी तरह से की जा रही है तो दुःख के कारण मेरी आखो में आँसू आगए। अवध के जिन नबावों ने अंग्रेजी सरकार की बराबर सहायता की, वे एक भिखारी से अधिक और कुछ नहीं रह गए थे। इसी प्रकार धर्म की नगरी काशी में अछूतों के प्रति जो घृणा का व्यवहार देखा उससे मैं दंग रह गया। जिस मन्दिर मे अंग्रेज जा सकता है उसी में हमारा एक भाई नहीं जा सकता, क्योंकि वह अछूत है।"

"यह सारी माया भी अंग्रेज़ों की ही फैलाई हुई है मंगल! यह लोग हमारे अछूत भाइयों को भुलावे में डालकर ईसाई बना लेना चाहते हैं।" दादा ने कहा।

"लेकिन हम लोग क्यों इतने मूर्ख बन जाते हैं कि उनकी बातें मान लेते हैं!" भारती ने पूछा।

"इसका कारण है—हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली! अंग्रेजी पढा-लिखा आदमी न सिर्फ अपने आप को बडा समझता है बल्कि दूसरों को बहुत छोटा और मूर्ख भी मानने लगता है।" दादा ने कहा।

"यह बात बहुत बड़ी सीमा तक ठीक है दादा ! चाल-ढाल में, बोल चाल में और भाषा के व्यवहार में इतनी अंग्रेजियत आगई है कि हम अपना पन भूल गए है। थोथी शान और व्यर्थ की विडम्बना ने अपने पन को नष्ट कर दिया है, आज का शिक्षित वेद और पुराणो पर तभी विश्वास कर सकता है जब उसका समर्थन कोई अंग्रेज कर दे।" मंगल ने उत्तर दिया।

"अंग्रेजो का यह कहना था कि भारतीयो को अच्छी प्रकार से गुलाम बनाकर रखना चाहते हो तो उनको भारतीय सभ्यता, भारतीय संस्कृति और भारतीय आचार-विचारो के शून्य कर दो।" दादा ने कहा।

"पुरुषो की अपेक्षा नारियो की दशा और भी शोचनीय है। शिक्षा के नाम पर अन्धकार ही अन्धकार है और पुत्रियो का पढाना एक भयंकर दोष माना जाता है, परन्तु ऐसे अज्ञान के क्षेत्र मे सैकड़ों अंग्रेज महिलाए हिन्दी पढाने के बहाने घरो मे प्रवेश पाती जा रही हैं, जिनको उस्तानी जी कहकर सम्मानित किया जाता है और वे महिलाए धीरे-धीरे भारतीय धर्म के प्रति विष-वमन करती हुई हमारे घरो में आग लगा रही हैं।" मंगल ने कहा।

"सचमुच बड़ी बुरी बात है।" भारती बोली।

"हां भारती ! लोगो के हृदयो में से धर्म के प्रति जो भी थोडी-बहुत आस्था शेष रह गई है वह उठती चली जा रही है। संस्कृति के नाम पर व्यभिचार को प्रोत्साहन दिया जा रहा है और प्रत्येक प्राणी के सामने आर्थिक समस्या मगर के समान मुँह फैलाए खड़ी है।" मंगल ने कहा।

"क्या पूरे देश की यही हालत है ?" दादा ने पूछा।

"हाँ दादा ! लखनऊ से लेकर महाराष्ट्र तक और वहाँ से चलकर मद्रास तक। एक प्रकार से कह सकता हूँ कि हिमालय कन्या कुमारी तक देश की हालत डाँवा डोल है।"

"क्या सभी अचेत हैं ?" भारती ने पूछा।

"जो लोग जाग्रत हैं वे अपने स्वार्थ के कारण मुँह पर पत्थर रखे हुए हैं। खिताब और उपाधियो के कारण बडे से बड़ा आदमी मोम की तरह गल चुका है। किसी में इतनी शक्ति शेष नही रह गई है जो जम कर इस मीठे

अनाचार का मुकाबला कर सके । लोगो मे राष्ट्रीयता नाम की कोई भावना नहीं है । कही-कही प्रान्तीयता अथवा जातीयता जोरो से मिल जाती है ।" मंगल ने तनिक विस्तार के साथ बतलाया ।

"इसका अर्थ यह हुआ कि हम स्वय इस जाल में फंस गए हैं। जैसे शहद की मक्खी अपने ही शहद मे अपने पख डुबो कर समाप्त हो लेती है।" भारती ने कहा ।

"हालत इससे भी अधिक बुरी है भारती ! हम लोग तो उस कुत्ते के समान हैं जो कही से एक हड्डी का टुकड़ा उठा लाता है और रक्त पाने की आशा से जब उसमे जोर से मुँह गडाता है तो अपने ही जबड़े फट जाने से खून की कुछ बूँदे पाकर यह समझने लगता है कि हड्डी उसे कुछ दे रही है । इसी प्रकार भारतीय जन अंग्रेज़ों को दादा समझ कर गले से लगा रहे हैं और वे लोग जौक की तरह चिपट कर हमारा शोषण कर रहे हैं ।" मगल ने कहा ।

"बात सुनने मे ही जब इतनी भयकर मालूम होती है तो सारे देश की हालत अपनी आँखो से देख कर तुम्हारा जी कैसा हो गया होगा मंगल ।" भारतो ने पूछा ।

"बताने से उसका अनुभव नही हो सकेगा । यो समझो जैसे कोई व्यक्ति किसी कोठरी में बन्द कर दिया जाय और उसके वातावरण को गहरे और काले धुँए से भर दिया जाय —वह आदमी मरेगा तो नही परन्तु उसका दम घुट जायगा और वह बेहोश हो जायगा । ठीक ऐसी ही दशा मेरी हो गई थी ।" मगल ने कहा ।

"इसके मानी यह हुए मगल ! कि सारा राष्ट्र अँधेरे और गहरे कुए में जा पड़ा है और जो लोग आपस में टकरा बैठते हैं वे एक दूसरे से भय खा कर समाप्त हो जाते हैं ।" दादा ने कहा ।

"आपने बिल्कुल ठीक समझा है ।" मगल ने कहा ।

"फिर इसके लिए कुछ किया ही जाना चाहिए । लेकिन क्या किया जाय ?" भारती ने पूछा ।

"अकेला चना भाड नही फोड़ सकता ।" दादा ने उत्तर दिया ।

"यह देश की निराशा है दादा। जो आपके मुँह से बोल रही है। प्राणी एक ही होता है परन्तु उसके आगे-पीछे चलने वाले सैकड़ो और हजारों हो जाते हैं।" भारती ने उत्तर दिया ।

"अभी तुमने अपना गाँव ही देखा है भारती ! शहरों की चकाचौंध, मोटरों की उडान और अंग्रेजी वेश-भूषा में सजे हुए कठ पुतलो को देख कर तुम्हारे कदम जहाँ के तहाँ थम जायँगे। आश्चर्य की बेड़ियो को तोड़ना कोई साधारण काम नही है भारती।" मगल ने कहा ।

ससार में कोई व्यक्ति शक्ति से नही टकरा सका है। दुर्गा, भवानी, चण्डी काली और भारती यह सब उसी के नाम हैं, जिसने महाभारत में कौरवो का संहार करा डाला था, जिसने रावण की सोने की लका जलवा कर समाप्त करा डाली।" भारती ने साभिमान कहा ।

"तुम्हारे जोश की सराहना करता हूं बेटी।" दादा बोल उठे—"लेकिन जोश में आकर कभी होश मत खो बैठना।"

"भारती अपने दादा की बेटी है।"

और सब लोग मुक्त कण्ठ से हँस पड़े; मानो इससे पूर्व कोई गभीर बात नहीं हो रही थी।

"मैं अभी तुम्हारे दोनों के लिए दूध लेकर आती हूं।" इतना कह कर भारती भीतर चली गई।

"दूध और घी का यह हाल हैं दादा, कि अच्छे से अच्छा दूध और बढिया से बढिया मक्खन अग्रेजी सेनाओ में चला जाता है। शहरों में तो मठा भी नही मिलता !" मंगल ने कहा।

"हिन्दुस्थानी आदमी बडा सन्तोषी होता है मगल ! थोड़ी सी छाछ पीकर या मुट्ठी भर चने और एक डली गुड़ की खाकर ऊपर से एक लोटा पानी पीकर वह दिन भर कड़ी मेहनत कर सकता है।" दादा ने कहा।

"आपने ठीक कहा दादा ! यह सन्तोषी और परम सुखी वाला सिद्धान्त ही राष्ट्र के जीवन को आलसी बना रहा है।" मंगल ने उत्तर दिया।

भारती ने दो गिलास दूध दोनों को दिया और इसके पश्चात् सब लोग सोने का उप क्रम करने लगे।

: ७ :

बरसात के दिनो में कीचड़ हो जाना बहुत ही स्वाभाविक है और गाँवो में तो प्राय: कच्ची सडके होने से धरती बहुत शीघ्रता से गीली हो जाती है। साथ ही साथ फिसलन भी पर्याप्त हो उठती है।

सडी हुई गर्मी के पश्चात् जब आकाश मे बादल घिरने लगे तो न जाने कितने विरहियो ने मेघ को अपना दूत बनाकर प्रेयसियो के पास भेजा होगा—कमी उनके पास यही रही कि कोई कालिदास के समान या उससे कुछ थोडा-बहुत छोटा-बडा कवि जन-साधारण के पास नहीं था जो उनके प्रणय-निवेदन को गाँव-गाँव या घर-घर मे ले जाता। इसलिए मौन होकर ही अपनी पीडा का परिचय मध्यम-जन-समाज देता रहा।

—"कृपा कान मधि नैन ज्यो त्यो पुकार मधि मौन।" वाली बात थी।

बादलों का गर्जन सुनकर किसानों के मन तो नाचते ही हैं, परन्तु प्रकृति के प्यार से मतवाले मयूरो के मन भी हर्षित और आकर्षित हो जाते हैं। अपने बहुरँगी पुच्छ को फैलाकर जब निज की मनोहरता से मतवाला मोर नाचने लगता है तो सुन्दरता की छटा चारो ओर छिटक जाती है। साधारण लोगो के हृदय भी मादकता से भर जाते हैं, तब असाधारण लोगो का क्या कहना।

सन्ध्या का समय होरहा है। गोचारण को जाने वाले बालक और बालिकाएँ घरो की ओर लौट रहे हैं। जनरव और विभिन्न कोलाहलो से मिश्रित होकर प्रकृति का समस्त वातावरण मुखरित हो उठा है। मिट्टी के एक ऊँचे से ढूहे पर भारती और मगल बैठे हुए हैं। मंगल का सिर भारती की गोद में रखा हुआ है और वह अत्यन्त कोमलता के साथ उसके बालों में अपनी उँगलियाँ फिरा रही है।

"मगल! ससार मे सबको सभी कुछ क्यो नही मिल जाता?" भारती ने पूछा।

"मैं तो ऐसा समझता हूँ भारती, कि यह सब पूर्व जन्म के संस्कारों का फल है।" मंगल ने कहा।

"और इस जन्म का कर्म यों ही जाता है ?"

"नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है। दादा उस दिन बता रहे थे कि 'अन्त मता सो गता'।"

"इसके मानी क्या हुए ? अपनी समझ में नहीं आया।"

"तात्पर्य यह है कि मानव अपने जीवन में जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करता है; हो सकता है उन प्रयासों में उसे इसी जीवन में आंशिक सफलता मिल जाय। परन्तु यदि उसका लक्ष्य सात्विक है और निजी स्वार्थ की धरा से ऊपर है तो निश्चय ही उसे दूसरे जन्म में सिद्धि प्राप्त होकर रहेगी।"

"यह तो काफी लम्बा रास्ता है; मैं तो इसी जीवन में सब कुछ पालेना चाहती हूँ।"

"क्या-क्या पाना चाहती हो, हम भी तो सुनें ?"

"हाथों पर भारत की स्वतन्त्रता और माथे पर मंगल अक्षत।"

"मंगल-अक्षत क्यों ? क्या तुम्हारा काम केवल मंगल से नहीं चल सकेगा ?"

"अच्छा ! तो आपने यह समझा कि मैं माधूजी को वरण करना चाहती हूं।"

"जी नहीं ! आप तो हरण करना चाहती हैं।"

"जैसे रावण सीता को उठा ले गया था वैसे ही या किसी और तरह !" मंगल के बालों को अपनी मुट्ठी में भरकर जोर से झकझोरते हुए भारती ने कहा और शारीरिक पीड़ा के कारण मंगल के मुँह से हल्का सा क्रन्दन निकल पड़ा। भारती ने बाल छोड़ दिए।

"बस ! तनिक सी पीड़ा के कारण चीख उठे ! बड़े बहादुर बनते हो। देश की आजादी के लिए जब सीने पर गोली खानी पड़ेगी तो शायद हाथ के हथियार फेंक कर प्राणों की भीख माँगने लगोगे।"

"भारती ! तुम मेरा अपमान कर रही हो !"

"जी हाँ ! यही दुनियाँ के तमाम पुरुषों का कहना है। नारी जब कभी पुरुष के मर्म को छू देती है उसकी कायरता पर प्रहार करती है तब वह अपने अपमान की दुहाई देने लगता है। तुमने कोई नई बात थोड़े ही की है।" भारती ने तनिक रोष भरे हुए स्वर मे कहा।

"तुम ठीक ही कहती हो भारती।" मगल बोला—"पुरुष ने सदैव ही नारी को अबला बना कर रखा है। शायद उस बेचारे को यह नही मालूम कि सृष्टि के आरम्भ में पिता के नाम से नही माता के नाम से परिवार का परिचय प्राप्त किया जाता था। नारी उस समय स्वामिनी थी और पुरुष के समान ही उसे सभी क्षेत्रो मे स्वतन्त्रता प्राप्त थी।"

"कुछ नई-सी बात मालूम होती है मगल ! क्या सचमुच आदिकाल में ऐसा होता था ?" भारती ने पूछा।

"मैं झूठ नही बोलता। तीन वर्ष तक सारे भारत मे घूमने के बाद मैने बहुत सी नई बातें मालूम की हैं।"

"उन बहुत सी बातों में से दो चार बात तो बतला ही दो।"

"अभी-अभी मैं तुमको जो बात बतला रहा था वह ऐतिहासिक आधार पर मालूम की हुई है। धीरे-धीरे जब आदमी को यह पता चला कि वह नारी पर शासन कर सकता है तो उसने स्त्री के सभी अधिकार छीन लिए और एक समय ऐसा आया जब वह हर बात में अपने आपको मालिक समझने लगा। इस प्रकार स्वतन्त्र नारी सदा-सर्वदा के लिए परतन्त्र बना दी गई। उसे बहुत प्रकार की कोमल उपाधियो से विभूषित कर दिया गया और अन्त में उसे अबला बनाकर चहार दीवारी में कैद कर दिया गया।"

"सुनने में बडी अजीब सो बात मालूम होती है।"

"हाँ ! और उससे भी अधिक आश्चर्य पैदा करने वाली बात है कि हिन्दू जाति में जहाँ पहले केवल चार ही वर्ण थे, वहाँ अब लाखों जातियाँ और उपजातियाँ बन गई हैं। लोहे का काम करने वाला लुहार, सोने का काम करने वाला सुनार, पीतल का काम करने वाला ठठेरा और चमड़े का काम करने वाला चमार, तात्पर्य यह है कि आदमी जो काम करता है, उससे उसक

जाति बन गई है और अंग्रेज इतिहासकारो ने इस भ्रम को काफी बढावा दिया है।"

"वह कैसे ?"

"उन्होने इतिहास की किताबो मे यह लिखा है कि भारत मे जो जातियाँ आदिकाल से रहती थी उनको हम लोगों ने, जिनको आर्य कहा गया है, पराजित किया और आर्य लोग कही बाहर से आकर इस देश मे बस गए हैं। इस प्रकार आर्य और अनार्य के बीच भेद की एक लम्बी लकीर खीचकर अग्रेजो ने हमारी संस्कृति का विनाश किया और इसके बाद हिन्दू और मुसलमानो के मध्य विभाजन की एक रेखा खीचकर हमारी राष्ट्रीय एकता को भी समाप्त कर दिया है।"

"इसके मानी तो यह हुए मगल ! कि तुमने पिछले तीन वर्षों में काफी देखा, सुना और समझा है।"

"हाँ भारती ! देश के लोग न केवल अपनी सभ्यता और संस्कृति को ही भूले हैं बल्कि अंग्रेजी भाषा के प्रभाव मे अपनी वेश-भूषा और भाषा को भी भूल गए हैं।"

"तो इसके लिए कुछ प्रयत्न करना ही होगा।"

"क्या करना चाहिए ? तुम्ही कुछ बात बताओ। सुनते हैं दुःख के समय में नारी पुरुष का मार्ग प्रदर्शन कर सकती है।"

"यह बात भी शायद तुमने तीन साल में सीख ली है कि खुशामद कैसे की जानी चाहिए। तुम तो इतना घूमे-फिरे हो और मै तो कभी इस गाँव से बाहर भी नही गई। भला मैं क्या सुझाव दे सकती हूँ।"

"कुछ सोचो और बताओ भारती ! छोटे भी कभी-कभी बड़ी बात बता देते हैं।"

"मैं तो ऐसा समझती हूँ कि हमको घर-घर में जाना होगा। गाँव-गाँव में लोगों को यह बात समझानी होगी कि राष्ट्रीयता किसे कहते हैं और देश की एकता से आजादी किस प्रकार हॉसिल की जा सकती है ?"

"तुमको मालूम नही है भारती ! पूरे भारत में सातलाख गाँव हैं। शायद हम लोग तीन जन्म में भी इतने स्थान नही देख सकते हैं।"

"इसके लिए हमें अपनी कल्पना से भी काम लेना पड़ेगा। जहाँ क्रियात्मक रूप से सफलता नहीं मिल सकती है वहाँ अनुमान और सम्भावना से रास्ता बनाया जाता है।"

"तुम इस बारे में यदि अपने विचार बता सको तो मैं आगे बढ़ने की बात सोच सकता हूँ।"

"ध्यान लगाकर देखूँगी हम लोग क्या कर सकते हैं।"

"मैंने कहा भारती ! हर एक अच्छा काम एक न एक दिन पूरा होकर ही रहता है। हमें उसका आरम्भ कर देना चाहिए; अन्त की चिन्ता स्वयं भगवान कर लेंगे।"

"तुम्हारी बात काफी अच्छी और भारी मालूम होती है; सच्चाई की आवाज़ को गुंजाने के लिए हिमालय पर खड़े होकर पुकारने की आवश्यकता नहीं होती। वह तो सूर्य का प्रकाश है जो सारे संसार को उज्वल बना देता है। हम भी ऐसा ही कुछ करना चाहते हैं।"

सहसा भारती की दृष्टि सामने की ओर नाचते हुए मोर पर पड़ी और उसने कहा—"देखो मंगल ! शायद हमारा काम अवश्य ही सफल होगा।"

"क्यों ? कैसे ?"

"वह सामने देखो ! मोर नाच रहा है। यह हमारे लिए शुभ सूचना है। कितना प्यारा मालूम होता है।"

"ठीक हमारे किसी हिन्दुस्थानी भाई की तरह, जिसके मन में रंग-बिरंगी आशाएँ छिपी हुई हैं। उसी प्रकार इस मोर के शरीर पर अनेकानेक रंगों के आकर्षण बिंधे हुए हैं, जब वह अपनी नीली गर्दन ऊँची उठा कर और अपने पर फैला कर नाचता है तो ऐसा लगता है मानो भारतीय दर्शन का उपदेश दे रहा हो। परन्तु......"

"परन्तु क्या मंगल ?"

"परन्तु जब वह अपने पैरों की ओर देखता है तो उसके नेत्रों से दो बड़े-बड़े आंसू निकल कर धरती की छाती पर टिक जाते हैं।"

"उसके पांव आकर्षक नहीं है, इसलिए क्या ?"

"बात कुछ ऐसी ही है। उसके चरणों में असौन्दर्य की बेड़ियाँ पड़ी हुई हैं जिनको वह तोड़ डालना चाहता है, ठीक उसी प्रकार जैसे अंग्रेजी दासता की कड़ियाँ हमारे पैरों को कसे हुए हैं।"

"तुम तो अच्छे खासे कवि भी हो गए हो।"

"और उसके साथ-कुछ पागल भी। मेरे मन में और मेरे मस्तिष्क में देश की आजादी का नक्शा बराबर घूमता रहता है और मैं विश्वास करता हूँ कि कभी न कभी मेरे उस नक्शे में रंग भर ही जायगे।"

"आशा और विश्वास बहुत बड़े होते हैं। भवानी और शंकर की तरह कभी न डिगने वाले।"

डूबते हुए सूर्य ने मानो किसी पंछी की तरह पर फड़फड़ा कर एक बार पुनः आकाश में उड़ने का विफल प्रयास किया। उसकी अन्तिम आभा से सारा व्योमण्डल प्रकाशित हो गया और तब लोगों ने हर्ष से विभोर होकर कहा, आज दिन फूल गया है। भारती और मंगल इस समस्त प्रकृतिक दृश्य को आँखों में भरकर जब घर की चौखट के भीतर पहुँचे, उस समय हलका-सा अन्धकार चारों ओर छा गया था, काले-काले बादलों के टुकड़े चारों ओर से एकत्रित होने लगे थे; प्रकृति सूचना दे रही थी कि आज की रात को वर्षा होना सुनिश्चित है।

और जब मंगल अपने दादा के साथ भोजन करने बैठा तब भारती चौके मे थी और आंगन में बूंदे गिरने लगी थी।

: ८ :

शरद-ऋतु के प्रारम्भ होते न होते किसानो ने अपने खेतो में बीज बोना आरम्भ कर दिया था। छोटे-बड़े सभी किसान अपने हल और बैलों के सहित चारो ओर दिखाई दे रहे थे। सुबह से लेकर शाम तक सब तरफ एक मेला सा दिखाई देता था, बीच-बीच मे थक जाने वाले किसान विश्राम करने के लिए ठहर जाया करते और एक चिलम तम्बाकू के सहारे अपनी शक्ति को फिर से ऊंचा उठाने का प्रयत्न करते थे; इतनी देर मे बैलो को भी थोड़ा-सा आराम मिल जाता था। कभी-कभी दोपहर के समय और कभी-कभी कुछ इससे इधर-उधर स्त्रियों के टोल के टोल आते हुए दिखाई देते थे; जिनके सिर पर प्राय: मठे के लोटे या पानी से भरी हुई छोटी सी गागर होती थी और कपड़े मे लिपटी हुई रोटियाँ। परिश्रम से थके हुए किसानों को रोटी खिला कर और पानी पिला कर इन आगता नारियों को बड़ी प्रसन्नता होती और कुछ पति-पत्नी इन थोड़े-से क्षणों में या तो गृहस्थी की कुछ उलझी हुई समस्याओ का निदान करते थे अथवा अपने सुन्दर भविष्य की कल्पना के सम्बन्ध में विचार करते थे और जो लोग तरुणाई के धरातल पर थे वे लोग कुछ हास-विनोद अथवा आमोद-प्रमोद की चेष्टा करते थे।

रामपुर के सारे ग्राम मे एक उत्साह-सा छाया हुआ था। प्रत्येक किसान, जिसके पास छोटा या बड़ा खेत था, वह सभी प्रकार से उसे गहरे से गहरा गोड़ने मे लगा हुआ था, ताकि उसके खेत में पिछले वर्ष की अपेक्षा अधिक अन्न उत्पन्न हो सके।

सूखे हुए वृक्षों की डालों में भी नवीन अंकुर निकल आए थे और जिन वृक्षों के पत्ते पतझर में उनसे दूर हो गए थे; उनकी गोदी मे नवीन पत्तो और कोपलों का उदय आरम्भ होगया था। ऐसा लगता था मानो दरिद्र का आगन सुख, सम्पदा और विभव-वैभव से परिपूर्ण हो गया हो। जिस ओर भी दृष्टि जाती थी; हरा ही हरा दिखाई देता था। वर्षा विगत होते न होते शरद का आगत-सौन्दर्य प्रस्फुटित होने लगा था। धूप में चढ़ती हुई मादकता मालूम

होने लगी थी और धीरे-धीरे आकाश का हृदय कलुष-विहीन होता जा रहा था। प्रकृति ने नवीन रूप से, पावन प्यार के क्षणों मे, जो परिधान पहना था उसके प्रति प्रत्येक प्राणी उन्मुख था।

बड़े-बड़े और छोटे-छोटे खेतों के बीच मे एक तिकोना खेत भी आगया था। उसके आस पास जो बड़े खेत वाले थे उनके लिए यह तनिक-सा टुकड़ा एक कष्टदायक समस्या बना हुआ था क्योंकि लाख चेष्टा करने पर भी वे उसे धनिया से खरीद नही सकते थे और आस-पास के छोटे खेत वाले बुढिया के झगड़ालू स्वभाव से भय खाते थे।

कर्मशील वृद्धा इस समय अपने खेत मे स्वयं अपने अबल हाथों मे हल की मुठिया थामे हुए उसे जोतने मे संलग्न थी। उसके पास दोनों ओर बैल नहीं थे, जुए मे एक ओर तो एक बैल लगा हुआ था परन्तु दूसरी ओर एक भैंसा जोता गया था। दूसरे लोगों की तरह उसके लिए न कोई रोटी लाने वाला था और न पानी लाने वाला।

सारे गाँव की परिक्रमा करता हुआ जब दोपहरी के लगभग मगल इन खेतो की ओर पहुँचा तो उसने बड़े आश्चर्य के साथ उस बुढ़िया को देखा और मगल के हृदय मे एक पीडा का अनुभव हुआ। वह धनिया के खेत की ओर बढ़ा और जब वह खेत की बाड़ तक पहुंचा, उसी समय वृद्धा ने अपना हल छोड़ दिया। पास के वृक्ष की डालों से लटकी हुई रोटियाँ उसने उतारली और उस वृक्ष के नीचे रखे हुए छोटे से घड़े में से पीतल की लुटिया मे पानी भर कर हाथ पैर धोए तथा रोटी खाना आरम्भ कर दिया।

"मा !" मगल ने पुकारा।

"कौन है ? भीखू ?" बुढिया के मुंह से सहसा निकल पड़ा। हाथ का ग्रास उसके हाथ में रह गया और उसने जब दृष्टि उठा कर देखा तो मंगल को सामने पाया।

"अरे ! तू है मगल ! मै समझी शायद मेरा भीखू लौट आया।" और बुढिया की दीर्घ-निश्वास वायु मे विलीन हो गई। मगल ने इसे अनुभव किया।

"मै भी तो लौट कर ही आया हूँ माँ।" उसके पास बैठते हुए मंगल ने कहा— 'लेकिन भीखू कहां गया है मा ?"

"क्या जाने बेटा कहाँ गया है वह ! एक दिन कई डीपू वाले गाँव में आए थे उनके हाथ में बड़े-बड़े बांस थे जिनमें लकड़ियों की गिट्टियां लगी हुई थीं। उनमें से एक ने बड़े प्रेम से भीखू को अपने पास बुलाया और पूछा—"नौकरी करोगे ?"

"नौकरी करने से क्या फायदा होगा ?" भीखू ने पूछा।

"तुमको साढ़े चौदह रुपया महीना मिलेगा और इसके अलावा लगर में खाना भी वैसे ही मिलेगा तथा पहनने के लिए गरम और ठण्डे कई प्रकार के कपड़े भी मुफ्त मिलेंगे······हाँ ! और साल भर में घर आने के लिए तीन महीनों की छुट्टी भी मिलेगी।"

"काम क्या करना होगा ?" भीखू ने पूछा।

"सुबह और शाम थोड़ी सी परेड करनी पड़ेगी और कभी यहाँ, कभी वहां, हिन्दुस्तान के तमाम शहर बिना पैसे देखने को मिल जाएँगे।"

"मैं चलने को तैय्यार हूँ; तनिक अपनी माँ से पूछ लूँ।" भीखू ने उत्तर दिया।

"चलो हमें भी तुम्हारी माँ के पास चलते हैं।"

और इसके बाद वे लोग मेरे पास आए। उन्होंने बात कहने से पहले सौ रुपए मेरे सामने रख दिए और फिर मुझे समझाया कि अंग्रेज बहादुर की फौज में नौकरी करने से क्या-क्या लाभ हो सकता है। उनमें से सबसे बड़ा और सब से पहला लाभ यह है कि मेरे खेत की लगान माफ हो जायगी और इस प्रकार तीन रुपया साल की बचत होगी। सौ रुपया मुझे मदद के रूप में दिया गया है जो कभी वापस नहीं लिया जायगा। भीखू चाहेगा तो अपनी तनखाह के पूरे साढ़े चौदह रुपए घर भेज सकेगा और हर साल उस को एक रुपए की तरक्की मिलती चली जायगी। भीखू ने भी मुझे दम-दिलासा दिया और भविष्य की सुखद कल्पना से मैंने उसे डीपू वालों के साथ चला जाने दिया। दो बरस तक बराबर रुपया मिलता रहा लेकिन पिछले साल सरकार की तरफ से मुझे यह लिखा गया कि तुम्हारा बेटा बरमा की लड़ाई में मारा गया है और चूँकि उसकी नौकरी इतनी नहीं थी कि उसे पेन्शन दी जा सके इसलिए सरकार को बहुत अफसोस है। फिर भी तुम्हारे

खेत की लगान तुम्हारे जीते जी माफ रहेगी। आज इस बात को दो साल हो गए हैं! मगल! कोई मुझको सहारा देने वाला नही है। सब अपने-अपने हाल मे मस्त हैं और मैं इस पापी पेट को भरने के लिए हल की मुठिया थाम कर मिट्टी से लड़ रही हूँ। थोडा बहुत जो मिल जाता है वह गुजारे के लिए काफी होता है।"

"इसके मानी तो यह हुए कि फौज में भरती करते समय जो वादे किए जाते हैं उनको पीछे पूरा नही किया जाता।" मंगल ने कहा।

"मुझे तो इतना भी भरोसा नहीं पड़ता मगल, कि मेरा भीखू मारा गया है। ऐसा लगता है कि सरकार ने पैसा बचाने के लिए झूठ-मूठ मेरे पास ऐसा लिखकर भेज दिया है।"

"हो सकता है ऐसी ही कुछ बात हो।"

"मेरी आँखे उसी की बाट देखती रहती हैं और मैं जानती हूँ कि मेरे मरने के पहले एक दिन मेरा भीखू जुरूर आयगा।"

"क्यो नही आयगा माँ? तुम्हारे विश्वास की कडी टूटने नही पायगी।"

"यही तो है। तेरी आवाज भीखू से कुछ-कुछ मिलती है और वह भी मुझे माँ कह कर पुकारा करता था। तभी तो मैं चौक पडी और मैने सोचा कि शायद मेरा भीखू वापस आगया है।" बुढ़िया ने कहा।

"तो ऐसा करो माँ! कि जब तक भीखू वापस नही आए तब तक मैं तुम्हारी सेवा करता रहूँगा।"

"अच्छे लड़के मालूम होते हो बेटा। भगवान करे तुम बहुत दिन जिओ।" धनिया ने हाथ धोते हुए कहा।

उसका भोजन समाप्त हो चुका था और उसने कपड़ा झाड़कर लुटिया में भर दिया तथा उस लुटिया को घड़े पर रख दिया। सन्तोष की एक साँस लेकर धनिया उठी और अपने हल के पास पहुंचने वाली ही थी कि मगल ने आगे बढकर हल की मुठिया को थाम लिया।

"यह क्या करता है मगल!" धनिया ने कहा।

"वही करता हूँ माँ! जो एक अच्छे लडके को करना चाहिए। तू नही समझती माँ! मुझे तेरे चरनों में उमड़ता हुआ सागर दिखाई देता है। तेरे

सूखे हुए वक्ष मे गगा और यमुना लहराती मालूम होरही है। तेरे माथे पर सफेद हिमालय का मुकुट दिखाई देरहा है। तू तो भारतमाता है और मैं तेरा मगल हूं। तेरे कल्याण के लिए ही तो मेरा जन्म हुआ है। जब तक तेरा दु.ख और तेरी दरिद्रता दूर नही कर लूँगा तब तक यदि मुझे इस बार भी जन्म लेना पड़ेगा तो भी मैं देह धारण करूँगा।"

"तेरी बात मेरी समझ में नही आई मंगल! यह सब तू क्या कह' रहा है?

"हाँ! बात कुछ ऐसी ही है।

बैल और भैंसे से सयुक्त उस हल को थामे हुए मगल खेत की जुताई में लग पडा। कभी इधर से उधर और कभी उधर मे इधर वह बराबर चल रहा था। ऐसा चल रहा था मानो कोई व्यक्ति बडी लगन के साथ अपनी मजिल की ओर बढा चला जारहा हो।

"क्यों माँ! भीखू को ले जाने के बाद क्या डीपू वाले फिर इस गाँव में नही आए।"

"नही बेटा! वे लोग नहीं आए जो भीखू को ले गए थे।"

"तो फिर?"

"कुछ और नए लोग आए जो बिल्कुल उनके जैसे ही थे और वे भी फौज में भरती करते थे।"

"तूने उनसे नही पूछा कि भीखू का क्या हुआ? वे तो जानते होगे।"

"पूछा मंगल! बहुत कुछ पूछा! खोद-खोद कर पूछा और बार-बार पूछा। लेकिन उन सबने एक ही बात कही कि सरकार की चिट्ठी झूठी नहीं हो सकती है। सबके पास से यही उत्तर मिलता रहा।"

"तुमने यह भी तो पूछा होता कि जिसके घर का चिराग़ ही बुझ गया हो, क्या सरकार उस गरीब माँ के लिए कुछ नहीं कर सकती?"

"मैंने सब कुछ कहा मगल! और जो भी लोग आते रहे वे यही दिलासा देते रहे कि वे लोग इसके बारे में लिखा-पढ़ी करेंगे।"

"लेकिन शायद वे लोग झूठ ही बोलते रहे। तुम नहीं जानती हो माँ! इस सरकार की जड में झूठ का पानी दिया गया है, उसमें से सच्चाई के फल और फूल कैसे पैदा हो सकते है ?"

"ला ! हल की मुठिया मुझे दे दे। तू थक गया होगा।"

"यह उमर थकने की नही है।" हँसते हुए मगल ने कहा।

और सूर्यास्त से कुछ ही पहले सारे खेत को जोतकर जब मंगल खेत की मेंड़ पर पहुंचा तो धनिया ने उसे सीने से लगा लिया और बुढ़िया के आँसुओ से मंगल का सिर भीग गया।

: ६ :

रामपुर गाँव से थोडी दूर एक छोटा सा परन्तु सुन्दर उद्यान बना हुआ है, जिसके विषय में यह कहा जाता है कि उसे रामपुर के चौधरी गंगानन्दसिंह ने लगाया था। इसके बीच में एक छोटा सा तालाब भी बना हुआ है जो प्रायः गाँव के लड़कों के तैरने के काम आता है। उसकी गहराई का अनुमान निश्चित रूप से नहीं किया जा सकता। फिर भी दो, चार, छह वर्ष में गाँव के लोग मिलजुल कर उसकी कीचड और काई को साफ कर देते हैं। कहा तो यह जाता है कि पानी सरोवर के अन्तस्तल से ऊपर निकलता है परन्तु देखा यह भी गया है कि जब कभी विशेष रूप से गर्मी पड़ती है तो उसका पानी सूख भी जाता है। फिर भी अपनी स्थिति के कारण उसमें पानी की कमी नहीं रहती। उस युग में भी जब, कहा जाता है, कि आज के जैसे कुशल इन्जीनियर नहीं होते थे, यह छोटा-सा सरोवर इस प्रकार से निर्मित किया गया कि बरसने वाले पानी की एक-एक बूंद चारों ओर से सिमट कर उस सरोवर मे आ जाती है।

पानी का चढाव और बढ़ाव सरोवर में पर्याप्त होने के कारण उसकी दो सीढ़ियाँ पानी से ऊपर तैरती हुई सी दिखाई दे रही हैं। दूसरी सीढ़ी पर भारती बैठी हुई है और उसके हाथ मे एक लम्बी डंडी के सहित कमल का फूल लगा हुआ है। बार-बार झाँक कर वह पानी में अपना प्रतिबिम्ब निहारती है और खिलखिला कर हँस पडती है। दूसरे ही क्षण प्रतिबिम्ब में दिखाई देने वाले मुख पर कमल की चोट मारती है और जब पानी में हलचल होने के कारण वह प्रतिबिम्ब छिप सा जाता है तो प्रसन्नता की मुद्रा में वह कुछ गुनगुनाती है—"मेरा कोई न रोकनहार, मगन भई मीरा चली।"

और वह इस गीत में इतनी तन्मय हो गई कि उसे यह भी पता नहीं चला कि उसके पीछे कितनी देर से मंगल खड़ा हुआ है। गीत की समाप्ति के समय जब पानी में पडने वाला प्रतिबिम्ब पूर्णरूप से उभर कर दिखाई देने लगा तो भारती ने उसे कमल की मार से पुनः बिखरा देना चाहा और इस

बार हाथ उठाते ही पीठ की ओर झुकी हुई कमल की डंडी को मगल ने पकड़ लिया तो भारती एकाएक चकित हो उठी।

'क्या करती हो भारती !" मगल ने कहा।

"मैं इसे मिटा कर ही छोड़ूगी।"

"लेकिन क्यो ?"

"क्योंकि विश्व में एक ही भारती रह सकती है।"

"बहुत जलती हो किसी दूसरे को देखकर। तुमको शायद यह नहीं मालूम कि तुम जिसे मिटाना चाहती हो वह किसी की धरोहर है किसी के हृदय की धड़कन है।"

"अच्छा जी ! कौन है वह ? ज़रा हम भी तो उसे देखें।"

"नजरे फिरा कर देखो भारती।"

"मुझे तो कही कुछ भी दिखाई नही देता।"

"तब तो निश्चय ही तुम्हें सूरदास के गीत गाने होगे।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि सूरदास अन्धे थे और मीरा को सभी ओर अपना घनश्याम दिखाई देता था।"

'अच्छा जी ! अपना यह मतलब नही था कि अपने नेत्रो में ज्योति नही है। तुम्हारी समझ की बलिहारी ! मै तो यह कह रही थी कि यह प्रतिविम्बित भारती किस की अमानत है ?"

"और उसी के उत्तर में मैंने कहा था कि नजरें फिरा कर देखो वह मंगल की भारती है।"

"आज तुमने बहुत बड़ी भूल का सुधार कर दिया मंगल !"

"वह कैसे ?"

"मै अभी तक यही समझती थी मंगल ! कि तुम मेरे हो।"

"हां भारती ! मगल सदैव ही भारती का रहेगा। इस जन्म में भी और दूसरे जन्म में भी।"

इतना कहते न कहते मंगल उस सीढी तक पहुँच चुका था, जहा भारती बैठी हुई थी और वह बिलकुल उसके पास ही बैठ गया। पानी मे पडने वाला प्रतिविम्ब मानो मुखर हो उठा।

"मै अपनी बात का प्रमाण दे रहा हूँ भारती! तुम अपनी आखो से देखलो कि मगल और भारती दो नही हैं।"

मगल ने पानी में पड़ने वाले प्रतिविम्ब की ओर इशारा किया और तब भारती ने देखा कि भारती और मगल दोनो एक दूसरे के इतने पास-पास हैं कि उनके बीच मे किसी भी प्रकार से हलके से हलके विभाजन की रेखा नही खीची जा सकती।

और लज्जा से भरकर भारती ने जैसे ही कमल की डडी मारकर उस प्रतिविम्ब को सरोवर के जल में तिरोहित करना चाहा, वैसे ही मगल ने उसे बीच में ही रोक लिया।

"कमल और कमल की डंडी इस काम के लिए उपयोग मे नही लाई जानी चाहिए।"

"क्या मतलब?"

"कमल हमारे देश की प्रतिष्ठा का प्रतीक है। वह सब फूलो का राजा है और विशेष रूप से भारत की भूमि मे ही कमल को सृजन करने की शक्ति है। कमल हमारे सुख और सौन्दर्य का चिन्ह है। कमल हमारी जवानी का जौहर है। इसीलिए मुक्त कण्ठ से तुलसी ने राम को कमल नयन, कमल वदन और कमल के समान उनके चरणो को माना है। विश्व मे केवल कमल ही एक ऐसा पुष्प है जिसकी उपमा शरीर के सभी अगो से दी जा सकती है।"

"और यह सब तुमने देखा और सुना है?"

"हाँ भारती! इस ससार में मनुष्य को केवल दो ही बाते आवश्यक प्रतीत होती हैं—कमल के समान मुकुलित और सुगन्धित भावनाएँ और दूसरी वस्तु है रोटी।"

"रोटी ही क्यो मगल? लड्डू क्यों नहीं?

"मिठाई और पूरी से मानव का मन भर जाता है। ठीक उसी प्रकार जैसे वासनामय प्राणी का अन्त हो जाता है। परन्तु रोटी सात्विक स्नेह के

समान है, जो प्रणय को बढ़ाता है और उसे सदैव जीवित रखता है। युग-युग से मानव रोटी पर निर्भर रहता आया है और उसके स्वाद में कभी भेद नही कर पाया ।'

"और तुम्हारी राय में हमारे जीवन का प्रतीक केवल यही दो वस्तुएँ हो सकती हैं—कमल और रोटी ?

"हाँ भारती ! रोटी हमारे पारिवारिक सुखी जीवन का प्रतीक है, जो नारी के समान मानव का मन मोहित कर लेती है और कमल पुरुष का प्रतीक है, जिसका आधार परुष अर्थात कठोरता है, जैसे इस कमल के फूल का आश्रय कठोर डण्डी है और कमल का फूल मानव के हृदय की कोमल और स्नेह-सिंचित भावनाओं का चिन्ह है, जिसे पाकर कोई भी नारी अपने आप को सौभाग्यशालिनी समझती है ।"

"बहुत मीठी-मीठी और अच्छी-अच्छी बाते करना तुमको कहाँ से आगया है मगल ?"

"तुम्हारे इस कहने से अब यह निश्चय होगया कि तुम मुझे बहुत प्यार करती हो ।"

"अच्छे रहे ! यह लै-पडने और दे-पडने वाली बात मेरे सामने नही चलेगी ।"

"चलेगी नही तो चलाई जायगी ।' मगल ने कहा ।"

"सो कैसे ?" भारती ने पूछा ।

"देखो भारती, जिसे हम प्यार करते हैं उसकी हर बात हमें प्रिय मालूम होती है । उदाहरण के लिए यदि हमारा प्रिय हमारी ओर न भी देखे तो हम उसका बुरा नही मानते, बल्कि यह कहकर टाल देते हैं कि उसका ध्यान नही रहा होगा और जिसे हम पसन्द नहीं करते उसके द्वारा सम्मान सहित नमस्कार पाने पर भी हम अपने अपमान का अनुभव करते हैं और यही एक कसौटी है कि तुमको मेरी हर बात प्रिय लगती है इसलिए तुम मुझे निश्चय ही प्यार करती हो ।

"यह खुशामद की बाते भारती के साथ नही चलेगी । आज शाम को घर चल कर मैं दादा से तुम्हारी शिकायत करूँगी ।"

"नहीं, ऐसा मत करना भारती।"

"ऐसा तो होगा ही इसमें बचत का कोई उपाय नहीं है।"

"इसके मानी यह हैं कि तुम दादा से डाँट लगवाओगी।"

"इसकी बचत का उपाय भी हो सकता है।"

"वह क्या ?"

"तुम अपना अपराध स्वीकार करलो।"

"क्या कहना होगा ?

"यही कि दादा ! मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ और यह भी स्वीकार करता हूँ कि मैं भारती को अपने जीवन से भी अधिक स्नेह करता हूँ।" भारती ने अपनी वाणी को तनिक गभीर करते हुए कहा और तभी मगल हँस पडा।

"शैतान कहीं की ! यह भी कोई अपराध है जिसके लिए मुझे क्षमा माँगनी होगी।"

"अच्छा तो चलो तुम्हारी शिकायत की ही जायगी।"

"जरूर कहना। तुम्हारे मुँह से यह सब बातें सुन कर दादा चुटिया पकड़ कर जब दो तमाचे लगाएँगे तो भारती की धुम्र-पूजा से आरती हो जायगी।"

"होने दो। तुम्हें क्या ?"

"मुझे क्यों नहीं है। इतिहास मे पहली बार ऐसा अवसर दिखाई देगा।"

"कैसा ?"

"आज के जैसा। जब कोई लड़की अपने पिता के सामने यह कहेगी कि वह किसी लडके को प्रेम करती है।"

"तो क्या आजतक किसी ने भी ऐसा नहीं किया है ?"

"हाँ ! त्रेता युग से लेकर आज कलियुग के प्रथम चरण तक किसी लड़की ने अपने प्रणय का प्रकाश नहीं किया। सीता और राम की देखादेखी बढ़कर स्नेह के स्तर तक पहुँच गई। राधा और श्याम जीवन भर एक दूसरे

पर न्यौछावर होते रहे परन्तु दोनों नारियों में से किसी ने भी अपने जीवन के रहस्य का उद्घाटन नहीं किया। बड़ा मजा रहेगा आज।"

"हाय राम ! फिर तो मुझसे कुछ भी नहीं कहा जायगा।" भारती ने चकित-विस्मित होकर कहा।

"तो फिर मुझे ही कहना पड़ेगा।"

"नहीं ! नहीं ! तुम कुछ मत कहना। नहीं तो दादा बहुत नाराज हो जायेंगे।"

"अच्छी बात है। तो मैं नहीं कहूंगा।"

"क्या कहा ? नहीं कहोगे।"

"हाँ, हाँ ! तुमने ही तो कहा है कि मत कहना।"

"तो इसके मानी यह हैं कि.... ।"

"कहो न क्या कहना चाहती हो ?"

"यही कि फिर हम लोग... ।"

"हाँ ! हम लोग एक नहीं हो सकेंगे।"

"नहीं ! नहीं ! तो तुम जरूर कहना।"

"अजीब लड़की हो तुम भारती ! कभी कहती हो मत कहना और फिर कहती हो जरूर कहना ! आखिर तुम चाहती क्या हो ?"

"मैं क्या चाहती हूँ बताऊँ ?"

"बताओ।"

और तब भारती ने कमल की डण्डी को मोड़ कर फूल के सहित मगल के गले मे डाल दिया और मुस्करा कर भाग खड़ी हुई—"मगल ! कह देना—जरूर—कह....दे...ना।" उसका स्वर गूँज कर विलीन हो गया।

: १० :

"भरती है जा रे सांवरिया तेरे द्वार खड़े रंगरूट।
द्वार खड़े रंगरूट—तेरे द्वार खड़े रंगरूट ॥"
तेरे घर-बाहर की चिन्ता सब जायेगी छूट।
हाथ राइफल अरु पॉयन में लै डासन कौ बूट ॥"
भरती है जा रे सावरिया—

एक शामियाने के नीचे दस बारह नर्तकियाँ नाच रही हैं और उनमें से एक ने शस्त्रधारी सैनिक का वेष धारण कर रखा है। नवयुवकों को किसी न किसी प्रकार अपने रूप की ओर आकर्षित करना और फिर उनको अंग्रेजों की सेना में भरती करा देना, यही इस मण्डली का मुख्य उद्देश्य है।

इस प्रकार के आयोजन होली के आसपास किए जाते और कितने ही नवयुवक इस षडयन्त्र में फँस कर सदा के लिए अपने घरबार से बिछुड़ जाते। इस प्रकार के आयोजनों को होली या धमार के नाम से लोग जानते थे और जिस गाव में भी यह उत्सव मनाया जाता था उस गाव में आसपास के गांवों से सैंकड़ों वृद्ध, युवक और बालक होली सुनने के लिए अथवा रसियो का आनन्द लूटने के लिए सम्मलित होते थे। लोगों की ऐसी मान्यता थी कि इन मंगलामुखियों के गायन-वादन से स्वर्गिक लाभ की प्राप्ति होती है।

अभी होली के त्यौहार का दिन लगभग एक माह दूर है। फिर भी लोगों में उत्साह की लहरें दौड़ने लगी हैं। खेतों में नई बालों को लहराते देखकर किसान का मन खुशी से नाच-नाच उठता है और इसी प्रसन्नता का प्रदर्शन करने के हेतु वह भिन्न-भिन्न छन्दों मे और नाना प्रकार के गीतों के द्वारा अपने इस हर्ष को स्पष्ट करता हुआ दिखाई देता है। अबीर-गुलाल से समस्त वातावरण को रंग देने वाली उसकी अभिलाषा उसके सौजन्य का प्रतीक है और इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि भारत का किसान अपने राष्ट्र को गुलाल के जैसा स्वर्णिम देखना चाहता है।

नर्तकियो का यह आयोजन विलासपुर में समवेत किया गया है और अपने गाव के अन्य युवकों के सहित मंगल भी इस नाच को देखने के लिए आया हुआ है। उसकी नजरो में केवल वही एक नर्तकी फिर रही है जो खाकी बरदी पहने हुए, सिपाही के वेष में नाच रही है और शेष मण्डली का नेतृत्व कर रही है।

"उसकी आखे तो देखो धीरसिह।" मगल ने अपने एक साथी से कहा—"कैसी बडी-बडी है कमल जैसी।"

'और उसका रूप तो देखो! गदराए हुए आम के समान फटा पड़ रहा है।" धीरसिंह ने कहा।

"मुझे तो केवल उसके नेत्र ही भले मालूम होते हैं। उनमे जो एक अछूता सौन्दर्य है वह न जाने क्यो अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।" मंगल बोला।

"अच्छा, एक बात और नही देखी मगल?"

"क्या?"

"उसकी थिरकन। और वह सिपाही के बाने में बड़ी सुहावनी लग रही है।"

"क्या तुम्हारी पसन्द बढ़ती जा रही है?"

"हा, मगल! मैंने आज तक अपने जीवन में ऐसी नाचने वाली नहीं देखी। जब नाच खत्म हो जायगा तो मैं उससे जरूर मिलूँगा।"

"निरे पागल मत बनो धीरसिह! यह वेश्या है, जिसका काम लोगों को ठगना है और उनको मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करना है।"

"यहा भी किसी से कम नही हैं। अगर इसी को बुद्धू न बनाया तो अपना नाम बुद्धू ही रख लूँगा।"

"देखेंगे भाई, तुम्हारा जौहर भी देखेंगे।"

इस ओर धीरे-धीरे दोनों मित्रों की बातें चलती रही और उस ओर नाच-गाने का कार्यक्रम बराबर चलता हुआ चला गया। कुछ लोगों ने इनाम इकराम के रूप में नर्तकियों पर रुपये भी निछावर किए और कुछ लोगों ने केवल वाह-वाह के द्वारा अपनी ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। शाबासी

देने वालो में उन नौजवानों की सख्या अधिक थी जो किसी न किसी नर्तकी को अपने प्रणय का निवेदन पहुँचाना चाहते थे। धीरसिंह भी उनमें से एक था। केवल मगल ही ऐसा व्यक्ति था जिसके मस्तिष्क मे नर्तकी के चचल चरणो की भांति कुछ विचार थिरक रहे थे। सहसा उसने प्रसन्न मुद्रा में चुटकी बजाई और कहा—"मिल गया ! मिल गया !"

"क्या मिल गया मगल ?" धीरे से धीरसिह ने पूछा।

"मेरे विचारो को मूर्त रूप मिल गया धीरसिह।"

"वह कैसे ?"

"क्रान्ति के गीतो पर भारतीय जनता इसी प्रकार थिरक उठेगी, जैसे यह नर्तकी नाच रही है। लेकिन·······"

"लेकिन क्या मंगल ?"

"लेकिन कोई ऐसा ही नाचने वाला होना चाहिए जो अपनी कला से क्रान्ति की पूजा कर सके और वह नाच साधारण नाच नही होगा धीरसिह ! तलवारो की ताल पर, प्राणों केसगीत पर थिरकने वाला कोई शहीद ही हो सकता है।"

"तुम्हारी राय में ऐसा कौन हो सकता है, जो तुम्हारे स्वप्न को साकार बना सके।"

"जो स्वप्न देखता है केवल वही उसे मूर्तिमान कर सकता है। दूसरो का आधार लेने वाले हमेशा मार्ग में रह जाते हैं, वे कभी अपने लक्ष्य तक नही पहुँच पाते।"

"फिर तुम क्या करना चाहते हो ?"

"मैं स्वय रुद्र के जैसा ताण्डव करूँगा धीरसिह। मुझे नटराज बनना ही पड़ेगा; जिसके दाहिने हाथ में क्रान्ति की गगन चुम्बिनी ज्वाला होगी-देश के शत्रुओ को भस्म करने के लिए। दूसरे हाथ में कमल होगा, प्रणत जनो को अभय प्रदान करने के हेतु और शेष दो हाथ मुझे अन्तरिक्ष से प्राप्त होगे; जिनमें से एक हाथ में डमरू होगा प्रसुप्त और निद्रित जाति को जाग्रत करने के लिए और दूसरे हाथ में त्रिशूल होगा—भूत, भविष्यत् और वर्तमान को

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का स्वरूप प्रदान करने के लिए। मेरा ताडण्व देखोगे धीरसिंह ?"

"तुम्हारी बात अपनी समझ मे बिल्कुल नही आ सकी है। आखिर तुम क्या करना चाहते हो ?"

"यही तो मेरे देश का दुर्भाग्य है कि खौलता हुआ खून भी अपनी गति को नही पहचानता, प्रगति को नही समझता।"

"मैं इतना जानता हूँ मंगल ! कि तुम जो भी करना चाहोगे, मैं उसमे तुम्हारा साथ देने को सदा तय्यार रहूँगा।"

नाच समाप्त हो चुका था। अन्तरिक्ष से ऊषा झाक रही थी। नाच और गायन सुनने वालों के मन शायद भर चुके थे और धीरे-धीरे वे लोग उस स्थान से हटने लगे थे। ऐसा लगता था मानो नर्तकियाँ भी काफी थक चुकी थी और विश्राम की बेला का इन्तजार कर रही थी। समय पाकर धीरसिंह उस नर्तकी के पास पहुचा जो इन सब की प्रधान थी।

"मै आप से मिलना चाहता हू।" धीरसिंह ने कहा।

"आप कहाँ के रहने वाले हैं ?" एक अर्थ से भरी हुई दृष्टि डालते हुए नर्तकी ने पूछा।

"मेरा गांव रामपुर है जो यहां से दो कोस दूर है।" धीरसिह ने कहा।

"इस वक़्त तो हम लोग बहुत थक गए हैं अगर आप शाम को या दोपहर के बाद किसी भी समय इधर आने की तकलीफ करें तो जरूर आप से मुलाकात हो सकेगी।"

"ठीक तो है धीरसिंह ! आखिर इतनी कडी महनत करने के बाद तुम किसी को आराम करने भी दोगे या नही।" मगल ने कहा और उसका हाथ पकड़ कर खीचते हुए बोला —"चलो हम लोग शाम को फिर किसी समय आ सकते हैं।"

उतावला धीरसिंह चाहता था कि वह उसी समय अपने मन की बात कह डाले। लेकिन मगल के कारण उसे चुप रह जाना पडा। खाकी वर्दी में नाचने वाली प्रधान नर्तकी से मिलने के लिए बीसियों युवक उतावले थे। लेकिन उसने बडी चतुराई के साथ सबका समाधान करते हुए किसी को शाम को

बुलाया, तो किसी को रात को और किसी को दूसरे दिन। क्योंकि इस मण्डली को लगभग दो-तीन दिन यहां ठहरना था।

इस ओर धीरसिंह और मंगल अपने गाँव लौटे तो दूसरी ओर नर्तकियों की मण्डली ने विश्राम की योजना बनाई। तहसीलदार की आज्ञा के अनुसार गाँव के मुखिया को इन लोगों के खाने-पीने और ठहरने का प्रबन्ध करना पड़ा। नहा-धोकर सब लोगों ने खाना खाया और इसके बाद सब लोग पड़कर सो गए।

आस-पास के गाँवों से आए हुए बूढ़े और नौजवान अपने-अपने घरों को वापस चले गए। दो चार मनचले जो अपनी अंटी में चार-छह रुपए लेकर आए थे उसी गाँव में ठहर गए।

: ११ :

"इस बात से मुझे बिल्कुल भी इन्कार नहीं है दादा, कि ,आप जो आज्ञा देंगे मैं उसे अपना जीवन बलिदान करके भी अवश्य पालन करूँगा"

'यह तो मैं भी जानता हू मगल कि तुम हठ के पक्के हो और बात के धनी हो। इसीलिए मैंने सोचा कि आज तुम से खुल कर सब बात कह दूँ।'

'मै आपके स्वभाव से पूरी-पूरी तरह परिचित हूँ और यह भी जानता हूँ कि गाँव भर में खरी बात कहने वाला आपके जैसा कोई व्यक्ति नही है।"

"मगल! तुम्हारा पिता मेरा पडौसी था; यह बात तो तम भली प्रकार से जानते हो। बहुत ही सीधा ब्राह्मण था वह! जो कुछ मिल जाता उसी में गुजर बसर कर लेता था। लेकिन उसने कभी किसी के सामने हाथ नही फैलाया और एक दिन, जब तुम्हारा जन्म हुआ, वह यहाँ से कोसो दूर पर था, गरीबी की मार ने उसे इतना परेशान कर दिया कि वह शहर में जाकर नौकरी करने लगा; केवल आठ रुपये माहवार पाता था जिसमें से मकान का किराया और अपने खाने-पीने के लिए सिर्फ तीन रुपये रखकर बाकी पाँच रुपया घर भेज दिया करता था। और जिस दिन वह घर लौटा तो उसने अपने हृदय के टुकडे, मगल को छोटे से झूले में झूलते हुए पाया।"

"क्या घर में झूला भी था दादा?"

"हाँ! बेटा! एक बड़ी सी डलिया में चार रस्सियाँ बाँध दी गई थीं और डलिया मे एक गद्दी रखकर उस पर तुमको लिटा दिया गया था।"

"कैसी विडम्बना है दादा! क्या यह गरीबी भारत मे पैर तोडकर बैठ गई है?"

"तो उसके बाद तुम्हारी माँ को हलका-सा ज्वर आने लगा लेकिन वह सब कुछ भूलकर अपने बच्चे की आँखो में आँखे डाल कर जीती रही। अपना हृदय पिलाकर उसने तुम्हारे शरीर को बढाया और जब तुम केवल दो साल के थे तब उसने बसन्त के दिन मुझे अपने पास बुलाया और कहने लगी।

"देवरजी ! मैं जब से इस घर में बहू बनकर आई हूं तब से आज तक मैंने कभी आपको कोई तकलीफ नहीं दी है और शायद जीवन मे पहली बार आप मेरी बानी सुन रहे हैं।"

"जी छोटा मत करो भाभी ! तुम्हे कुछ कहना हो बे खटके कह डालो।" मैने कहा।

"दिया जल रहा है और ऐसा लगता है कि अब तेल निबट चुका है। कौन जाने ! किस समय बुझ जाय। मैं मगल को तुम्हारी गोद मे डालती हूं। इसे अपना बना कर रखना।" उसने कहा

"जब तक सांस तब तक आस रहती है भाभी ! तुम ऐसी हारी-हारी बातें क्यो करती हो।" मैने समझाते हुए कहा—"तुम विश्वास रखो। मैं मगल को कभी पीठ नही दूँगा। और तुम अगर नही रहोगी तो भी दुनियाँ यह नही समझ पाएगी कि मगल मेरा बेटा नही है—इसके बाद तुम्हारा पिता फिर शहर लौट गया। लेकिन तुम्हारी मां अगला बसन्त नही देख सकी और पतझड़ के पत्ते के समान उसका जीवन इस गाँव से लाखों मील दूर चला गया।"

मंगल की दृष्टि पृथ्वी की ओर लगी हुई थी और उसकी आँखो मे अनजाने में न जाने कितने आँसू पृथ्वी पर बिखर गए। दादा ने उसकी ठोड़ी को ऊपर उठाते हुए सान्त्वना दी।

आगे की बात यह रही मगल ! कि जब तुम्हारे पिता को गाँव लौटने पर इस दुःखद घटना का पता चला तो वह शोक से अभिभूत होकर न जाने कहाँ चला गया और उस दिन से यह घर तुम्हारा है। दो वर्ष से कुछ पूर्व मेरे घर में भी भारती का जन्म हुआ और इस प्रकार मेरे मन मे एक अभिलाषा पल्लवित हो उठी ! मैने सोचा यह लडका भाग्यवान् है जिसके कारण बारह वर्षों के पश्चात् मेरा घर जगमगा उठा है।"

"यह मेरा सौभाग्य था दादा ! कि मुझे आप जैसा पिता मिला और दाई जैसी माँ मिली ! आप दोनो ने मिलकर मेरे लिए जो कुछ किया है मै उसका बदला अपने खून से भी नही दे सकता और आपने तो मेरे तथा भारती के

लिए अपने जीवन की अन्तिम बूँद तक दे डाली है। जिस दिन से दाई का इन्तकाल हुआ है, आपने दूसरी शादी ही नही की।"

"हाँ मगल ! मै इसी आशा को लिए आज तक बैठा हूँ कि तुम दोनों मिलकर मेरे घर को उजाले से भर दो।"

"लेकिन दादा...."

"लेकिन-वेकिन कुछ नही मगल ! यह मेरी कल्पना रही है कि मैं भारती और मगल को अपने घर मे सुख और शान्ति के साथ बैठा कर तुम्हारे पिता की तरह काशी चला जाऊँ।"

"काशी ? तो क्या वे काशी मे हैं ?"

"हां बेटा कभी-कभी मेरे पास उनके पत्र आते हैं और तुमको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि उन्होंने तुम्हारी शादी के अवसर पर उपस्थित होकर आशीर्वाद देने का वचन दिया है।

"और उससे पहले ?" मगल ने पूछा

"भेट की कोई आशा नही है।"

"तो इसके मानी यह है कि मुझे पिता के दर्शन प्राप्त करने के लिए विवाह करना आवश्यक हो गया—एक समस्या है, कुछ सोचने और समझने का समय मिल जाता तो ठीक रहता।"

"इसमें सोचने और समझने की क्या बात है ? प्रत्येक व्यक्ति को शादी करनी ही होती है और जब तुम और भारती एक दूसरे को भली प्रकार से समझ चुके हो तो मुझे कोई आपत्ति की बात नही दिखाई देती।"

"अपने छोटे से जीवन में न जाने कितनी बडी-बडी कल्पनाएँ लपेट कर सपने देखता रहा हूँ। लगता है या तो सपने टूट जाएँगे या फिर नया रास्ता खोजना पडेगा।"

"तुम काफी समझदार हो मगल ! तुमने छोटी सी उम्र में बहुत कुछ सीखा-समझा है। इस समस्या पर भी गहरेपन से विचार करके देखलो और इसके बाद मुझे अपने निर्णय की सूचना देना।"

"आपने धर्म सकट मे फँसा दिया है।

"वह कैसे ?" दादा ने पूछा।

"जब कभी किसी बूढी स्त्री को अपने सामने से निकलता हुआ देखता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि उसके नेत्रों में न जाने कितना अगाध वात्सल्य भरा हुआ है और वह भी शायद किसी मंगल को खोज रही है। भारत की प्रत्येक माँ इतनी दरिद्र है कि वह अपने बच्चे का पालन पोषण भी नहीं कर सकती। चारों ओर राजनैतिक पराधीनता और आर्थिक दासता फैली हुई है; क्या ऐसे समय राष्ट्र के युवकों को गृहस्थ बनने की आवश्यकता है या सैनिक बनने की ?"

"गृहस्थ के पास तलवार से भी ज्यादा तेज हथियार होता है—जिसका नाम है सहानुभूति, दया, करुणा, स्नेह और क्षमा। तुम गृहस्थी बनो मंगल !"

"एक प्रकार से तो मैं पूरा गृहस्थी हूँ—यह सारा देश ही मेरा घर है और यहाँ के निवासी ही मेरे भाई-बन्धु हैं।"

"तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन मैं तुम्हें उस थोड़े से संकुचित दायरे में रखकर यह कहना चाहता हूँ कि तुम भारती को पत्नी के रूप में स्वीकार करो।"

"आपकी आज्ञा मैंने कभी नहीं टाली है और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं सदा-सर्वदा आपकी कल्पना को जीवित रखूँगा। लेकिन शादी के सम्बन्ध में मेरा यह विचार है कि जिस दिन मेरा देश स्वतन्त्र होगा उस दिन मैं अपने आपको सामाजिक बन्धनों में बाँध लूँगा।"

"मंगल ! मैं चाहता था कि तुम्हारा परिणय मेरे सामने ही हो जाता। खैर ! मैं तुम्हारी भावना को कुचलना नहीं चाहता, जब तुम्हारी इच्छा हो मुझसे कह देना।"

"इसमें कहने और सुनने की कोई बात नहीं है दादा ! आपकी आज्ञा का पालन अवश्य किया जायगा। लेकिन कब, कहाँ और कैसे, यह मैं स्वयं भी नहीं जानता।"

"मुझे विश्वास है इस बात का कि तुम जो वादा करोगे उसे तोड़ोगे नहीं और अपना नाम सार्थक करोगे।"

"जन्म-जन्मान्तर तक मैं अपने वादे को निभाता रहूँगा।"

भारती ने दोनों को आकर बताया कि भोजन तैय्यार है।

: १२ :

"ऐसा मालूम होता है कि आस-पास के इन गाँवो मे हमें काफी तादाद मे सिपाही मिल जायँगे।" उस व्यक्ति ने कहा जो वेष-भूषा से फौजी-अफसर जान पड़ता था।

"जी हाँ! मेरा भी ख्याल ऐसा ही है।" नर्तकी बोली जिसका नाम चम्पा था—दोपहर से अभी तक हमे बाईस सिपाही मिल चुके हैं और अभी आज की शाम और कल का दिन बाकी है।"

इसी समय धीरसिंह ने उस तम्बू मे प्रवेश किया जिसमें यह दोनों परस्पर वार्तालाप में संलग्न थे। चम्पा ने हंस कर उसकी ओर देखा और उसे बड़े स्नेह के साथ अपने पास बिठा लिया। धीरसिंह मानो स्वर्ग पा गया। कई प्रकार के फल और एक लोटे में दही लेकर आया था—उसने वह सब मुस्कराते हुए चम्पा के सामने रख दिया।

"आपने इतनी तकलीफ क्यो उठाई?" चम्पा ने बहुत ही कोमल शब्दों मे धीरसिंह से कहा।

"इसमें तकलीफ की क्या बात है। अपने घर आए मेहमान की खातिर करना तो हमारा सबसे बड़ा काम है और वह भी तुम्हारे जैसा मेहमान हो!"

"शुक्रिया आपका!"

और इसी बीच मे एक अन्य नर्तकी ने पानो की तश्तरी उपस्थित करते हुए धीरसिंह से पान लेने का अनुरोध किया। लेकिन उसने लिया नहीं।

"तेरे हाथ से नहीं लेगे ठाकुर साहब। इनको तो चम्पा ही पसन्द है।"

और हसते हुए चम्पा ने तश्तरी अपने हाथ में लेकर जब धीरसिंह के सामने उपस्थित की तो वह मना नही कर सका।

"मै तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ।" धीरसिंह ने आँखों के इशारे से फौजी अफसर का वहाँ होना एक बाधा बताई। आफीसर बहुत घिसा-पिटा

मालूम होता था। वह स्वयं ही चम्पा की ओर देखते हुए तम्बू से बाहर निकल गया और आफीसर के पीछे-पीछे वह नर्तकी भी तम्बू से बाहर चली आई। धीरसिंह के कानों में बाहर से हंसी की खिलखिलाहट गूंज गई।

"बात यह है चम्पारानी, कि मैंने जब से तुम्हे देखा है तब से न जाने क्यों मुझे तुम्हारे लिए प्रेम हो गया है।"

"यह कोई बडी बात थोडे ही है। किसी भी नौजवान के मन में प्रेम का फलना और फूलना जरूरी है।"

"मै तुम्हारे साथ हमेशा के लिए रहना चाहता हूँ।" धीरसिंह ने चम्पा का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा।

"लेकिन आप जानते हैं कि मेरे रहने-सहने का खर्चा बहुत है और शायद वह आपकी खेती बाडी से पूरा नही हो सकेगा।"

"लेकिन मै तुम्हे अपनी पत्नी की तरह रख लूंगा।"

"हीरे का मोल देना पड़ता है कुंवर जी!" चम्पा ने उसकी आँखों मे आँखे डालते हुए कहा—"तुम मुझे नही रख सकते तो मै ही तुम्हें अपने पास रख लूंगी और मेजर साहब से कह कर एक अच्छी सी नौकरी दिलवा दूंगी। बस! फिर मजे से कटती रहेगी। बोलिए क्या मरजी है?"

"मुझे मन्जूर है। मै तो सिर्फ यही चाहता हूँ कि तुम सदा मेरे पास बनी रहो।" धीरसिंह बोला।

बड़े प्यार से चम्पा उसे अपने साथ तम्बू से बाहर लिवा लाई और मेजर रामसिह से उसका परिचय कराते हुए चम्पा ने कोई अच्छी सी नौकरी देने की प्रार्थना की।

"यह नम्बर तेईस है मेजर साहब! और कुंवरजी को देखकर न जाने मेरा मन क्यों इनकी ओर दौड़ पडा है। आप मेरी खातिर ही इन्हें नौकरी दिला दीजिए।"

"तुम्हारा कहना मैं नही टाल सकता हूँ चम्पा! नही तो इस समय नौकरी मिलना बड़ा कठिन है। कहिए कुंवर जी! मेहनत का काम कर सकेंगे आप?" मेजर ने धीरसिंह से पूछा।

"इन हाथों ने जमीन को खोदकर ढेले बनाए हैं और ढेलों को फोड़कर उनमें बीज उगाए हैं।"

"लेकिन हल की मुठिया थामने वाले हाथ बन्दूक उठा सकेंगे ?"

"साहब ! तोप चलवा कर देख लीजिए। मेरा नाम धीरसिंह है—मैंने पीछे हटना नहीं सीखा।"

"तो, बस ! यह ठीक है। आप अपने घर वालों से पूछ लीजिए और कल शाम तक हमारे पास आजाइए। परसों सुबह हम लोग यहाँ से चल देंगे।"

आदर के साथ मेजर को राम-राम करके धीरसिंह बहुत देर तक चम्पा के साथ बैठ कर गप लगाता रहा और सन्ध्या के झुटपुटे में वह अपने गाँव वापस लौट पड़ा।

शाम को जब धीरसिंह मंगल से मिला तो उसने बताया कि किस प्रकार चम्पा से उसकी भेंट हुई और उसने फौज में भरती होने के बहाने चम्पा का मन मोहित कर लिया है।

"तुम बहुत सीधे मालूम होते हो धीरसिंह !" मंगल ने कहा—"संसार में दो ही चीजें ऐसी हैं, जिन्होंने कभी किसी का साथ नहीं दिया।"

"कौन-कौन मंगल ?"

"वेश्याएँ और अँग्रेज। ये दोनों पैसे के और समय के साथी रहे हैं। मकड़ी की तरह जाला फैला कर मक्खी को फँसा लेना—यह लोग खूब जानते हैं और मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि तुम एक वेश्या के लिए फौज में भरती होने जारहे हो।"

"तुम इस बात को क्या समझते हो मंगल ? मैं तो भौंरे की तरह चम्पा से रस लेकर उड़ता हुआ वापस चला आऊँगा।" धीरसिंह ने कहा।

"भोलापन जब अज्ञान की सीमा तक पहुँच जाता है तो मूर्खता बन जाता है। तुम जिस चम्पा के पास भौंरे बन कर गए हो, उसके अन्तर में

मौत का नुकीला काँटा छिपा हुआ है। वह चुभेगा ज़रूर और तब तुम बेबस होकर जहाँ के तहाँ पड़े रह जाओगे।"

"जो होगा वह देखा जायगा। अब तो चल पड़े हैं, रास्ते से डरना क्या है।"

और दोनों दोस्त हँसते हुए बिदा होगए।

: १३ :

फागुन अपनी मस्ती बिखेर कर चला गया और धीरे धीरे जाड़ों का समय आगया। प्रकृति के गुलाबी गाल सफेद पड गए। बाहर उन्मुक्त आकाश के नीचे घूमने वाले प्राणियों ने अपने द्वार बन्द करके रजाई और कम्बलों की शरण लेना आरम्भ कर दिया। दिन चढे नहाना और गर्म-गर्म खाना दोनो ही बातो ने किसान को कुछ काम-चोर बनाने की चेष्टा की। परन्तु सदियो से किसानी के धरातल पर सिर उठाकर चलने वाला आदमी झुका नही, रुका नही। उत्तर भारत मे उन दिनों भी 'बाजरा' नामक अन्न अधिकता से खाया जाता था। लोगो के घरों मे बाजरे की रोटियाँ, उर्द की दाल, आम का अचार तथा घी और तेल का व्यवहार काफी बढ गया था। इसके साथ ही साथ गुड़ का खान-पान भी कम नही था।

ऐसे ही एक दिन जब दादा हरभजनसिंह शहर की ओर गए हुए थे, भारती और मंगल घर पर रह गए थे। रात्रि के समय भोजन करते हुए मंगल ने भारती से कहा—

"भारती! मैने यह निश्चय किया है कि मै अंग्रेज़ों की सेना मे भरती हो जाऊँगा।"

"लेकिन ऐसा करने से क्या हो सकेगा?"

मेरा मतलब यह है भारती, कि मै सेना में जाकर गोली और बन्दूक चलाना अच्छी तरह से सीख सकता हूँ और तब शायद मंगल के हाथ की एक गोली देश की आजादी के लिए काफी होगी।"

"अनुभव का दायरा उम्र के साथ ही बढ़ा करता है मंगल!" भारती ने थाली में रोटी रखते हुए कहा।

"तो तुम्हारी राय यह है कि मेरा यह विचार ठीक नहीं है। क्यों बोलो।"

"मैं ऐसा ही मानती हूँ मंगल! बीस-इक्कीस साल का नौजवान अपने जोश से काम ले सकता है क्योकि उसमें होश की कमी होती है।"

'नहीं, नहीं ! यह बात नहीं है भारती ! मैं निश्चित रूप से सेना मे जाकर एक दल बना लेना चाहता हूँ जिसके द्वारा अपने स्वप्न को मूर्तिमान करने की अभिलाषा रखता हूँ। अब बताओ तुम्हारी राय क्या है ?''

"दादा का कहना है कि भोजन और भजन के समय कोई ऐसी बात नहीं कहनी या सुननी चाहिए जिसके कारण मन में उत्तेजना उत्पन्न हो। इसलिए इस विषय पर फिर किसी दूसरे समय चर्चा करेंगे।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा। लेकिन मैं इस बारे में तुम्हारी राय जानना बहुत आवश्यक समझता हूँ। आज रात्रि को हम लोगों को बैठ कर इस बात का निर्णय कर लेना चाहिए कि हमें अन्ततः करना क्या है।"

"अच्छी बात है तुम तब तक चौपाल की तरफ घूम आओ और मैं भी तब तक इस ओर से छुटकारा पा लेती हूँ। "भारती ने कहा।

भोजन करके मगल बाहर की ओर निकल गया और चौपाल पर जाकर बैठ गया। बहुत से लोग जमा थे, जो इधर-उधर की बातें कर रहे थे। मंगल को यह सब कुछ अच्छा नहीं लगा फिर भी समय निकालने के लिए वह बड़ी देर तक उन लोगों के साथ बैठा रहा। जब रात कुछ गहरी हो गई तो वह घर की ओर चला आया। लेकिन मार्ग में शीत की सरसराहट के कारण उसने ठण्ड का अनुभव किया और वह घर आकर सबसे पहले अपनी रज़ाई में छिप गया।

"बस ! इतनी सी ठण्ड के कारण ही रजाई मे जाकर छिप गए मगल। भला तुम से कड़कड़ाते हुए जाडो मे और चिलचिलाती हुई दोपहरी मे परेड कैसे हो सकेगी ?" भारती ने ताना मारते हुए कहा।

"ऐसी बात नही हे भारती ! आदमी जब तक आराम को आराम समझता है, तभी तक वह उसके पीछे दौड़ता है और जब आराम को हराम समझने लगता है तो दुनिया की बड़ी-बड़ी ताकतें उसके सामने झुक जाती हैं। आँधी और तूफान रुक जाते हैं और दृढ़ निश्चय वाला व्यक्ति निरतर आगे बढ़ता हुआ चला जाता है। उस समय नर ही नरायण बन जाता है।"

"बात तो ठीक कहते हो मंगल ! यदि मनुष्य चाहे तो क्या कुछ नहीं कर सकता है। कोई वस्तु मानव के लिए असम्भव नहीं है। अच्छा ! अब तुम यह बताओ कि हमारा आगामी कार्यक्रम क्या होगा ?"

"यही तो मैं तुम से कहना चाहता हूँ।"

"और मैं भी कान खोलकर सुनने को बैठी हूँ।"

"भारती ! यह बात सही है कि जोश और उफान को जितना दबाया जाता है वह उतना ही उभरता है। इसी तरह आज का भारत ठंडे पानी के समान बेहोश पड़ा हुआ है, क्रान्ति की चन्द चिनगारियां उसी शीतल जल में ऐसा तूफान उठा सकती है कि सारा ब्रिटिश साम्राज्य डूब जाएगा।"

"जहाँ तक कल्पना का प्रश्न है, बड़ी सुन्दर है और जहाँ तक सफलता का सवाल है, बात कुछ अटपटी सी लगती है। मंगल ! तुम जानते हो अंगरेजी राज में कभी सूरज नहीं डूबता।"

"मैं जानता हूँ भारती ! लेकिन उससे क्या ?"

"चट्टान से टकराने के बाद जो हो सकता है, वही होगा।"

"यह तुम्हारी नारी-बुद्धि बोल रही है। नारी की कोमलता का प्रतिबिम्ब है तुम्हारा यह कथन। पानी की हल्की-हल्की और छोटी-छोटी लहरें बड़ी-बड़ी चट्टानों को धीरे-धीरे गला कर समाप्त कर देती हैं। छोटी-सी रेती चट्टान को रेत बनाने समर्थ हो जाती है।"

"लेकिन उसके लिए कितना समय लग जाता है ?"

"लक्ष्य तक पहुँचने के लिए समय की चिन्ता क्यों ? जीवन और मरण दोनों ही ध्रुव हैं। "आया है सो जायगा राजा, रंक फकीर" और तब हमें निराशा की गोद में क्यों आराम करना चाहिए। पूर्व जन्म के संस्कारों से हमें यह जन्म मिला है, अपने देश की मुक्ति के लिए—तो क्या इस जन्म के संस्कारों से हमें आगामी जन्म नहीं मिलेगा ?—यदि हम आज सफल नहीं हुए तो कल हमारे सामने है—आगामी जन्म तक हम संघर्ष करते ही रहेंगे।"

"कौन जानता है आगामी जीवन में हम लोग कहाँ होंगे।"

"जहाँ आज है भारती ! पुराने जीर्ण-वस्त्रों का परित्याग करके जैसे हम नवीन वस्त्र धारण कर लेते हैं, वैसे ही हमारी आत्मा जर्जर शरीर को छोड़ कर नया चोला प्राप्त कर लेती है। पहचान रखने वाले कभी नहीं भूलते। भारती और मगल सदा-सर्वदा से साथ रहते चले आए हैं और साथ ही रहेंगे। प्रकृति सदैव पुरुष के साथ रही हैं, उसे कौन पृथक कर सकता है। भारतीय जन तो प्राणों से प्राणों का बन्धन मानते हैं जो अटूट हैं, शाश्वत है। जो जातियाँ शरीर का जोड-तोड लगाती हैं वही नष्ट हो जाती हैं।"

"तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं मगल ! फिर भी न जाने क्यों मुझे उनमें मिठास लगती है। मुझे बताओ मगल ! तुम्हे पाने के लिए मुझे क्या करना होगा।"

"देश की मुक्ति के लिए आगे बढना होगा भारती ! मैं यहाँ से दूर, बहुत दूर, फौज के दफ्तर में जाकर भरती हो जाऊँगा। वहाँ सैनिक जीवन प्राप्त करके बन्दूक चलाना सीखूंगा और भगवान चाहेंगे तो एक ही गोली से भारत को स्वतन्त्रता प्रदान कर दूंगा।"

"और मुझे क्या करना होगा ?"

"घर रहो। दादा की सेवा करो। मेरे जाने से वे दुखी होगे। तुम उन्हें सान्त्वना देना। बेटी का धर्म यही है। एक दिन मै तुम्हे लिवाने आऊँगा, धूम धाम से, देश का नेता बन कर और विवाह के पश्चात् हम लोग समाज सेवा में लग जाएँगे। हमारे देश मे लाखों गरीब हैं, अछूत हैं—गरीबी जिनके जीवन का अभिशाप है। तब हमारा देश सभी ओर से 'मंगल भारती के रूप में नाच उठेगा।"

"और यदि तुम्हारी कल्पना का महल कहीं डग मगा गया तो ?"

"तो भी कुछ नही है शुभे ! उसमें भी मंगल का मगल होगा। भारती की सेवा में अमंगल की आशंका नही करनी चाहिए।"

"ठीक है, तो कल तुम चले ही जाओगे ?"

"हाँ भारती ! एक बार जो निश्चय और निर्णय ले लिया है, उसे पूरा करना ही होगा।"

"ठीक है—अब सो जाओ।"

और जब भारती दीपक की बत्ती को पीछे हटाने लगी तो उसके प्रकाश में मगल ने देखा उसके मुख पर आँसुओं की धारा बह रही थी।

"भारती! तुम रो रही हो? भारत की वीर-कन्या, वीर पत्नी और वीर-भगिनी की कहानियाँ भूल गईं?" मंगल ने रजाई एक ओर फेंक दी और अपने हाथ से भारती के आंसू पोंछ दिए।

"हां मगल! छोटी सी उम्र में इतने बड़े घाव। बचपन में ही मा ने छोड दिया और जब यौवन की देहली पर पैर रखे तो मंगल ने साथ नहीं दिया।"

"नही, नही ऐसा कभी नहीं हो सकता भारती! तुम सदा से मेरी हो और मेरी ही रहोगी—अच्छा! देखो तो यह क्या है?"

मंगल ने अपने तकिये के नीचे से कुछ निकाल कर भारती को दिखाया। सोने का एक आभूषण था।

"यह क्या है मगल।"

"इसे गले में पहनाते हैं भारती। शहर के लोग इसे सूत्र कहते हैं।" मगल ने बड़े स्नेह के साथ उसे भारती के गले में पहना दिया।

"क्या नाम बताया था।"

"सूत्र"

'बस? क्या इसका नाम कुछ और नहीं हो सकता है?"

"नामो के बारे में व्यक्ति की रुचि ही प्रधान होती है। आंख के अन्धे नाम नैन सुख। शकल चमारो जैसी और नाम राज कुमार। वही नाम अच्छा जो अपने आप को सुन्दर लगे।"

"तो इसका भी नाम रख दो। खाली सूत्र अच्छा नहीं लगता।"

"अच्छा! तो क्या रखना चाहिए!" थोड़ा सोचते हुए मंगल बोला—"देखो भारती! तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम सात्विक है और सदा बढ़ता ही रहेगा। पति और पत्नी दोनों मिलकर दम्पति बनते हैं। दोनों एक दूसरे की कल्याण-कामना से अपना-अपना जीवन उत्सर्ग करते रहते हैं और यही कारण है कि 'जो बिंध गया सो मोती"—हमारे यहाँ विच्छेद या तलाक की

बात नहीं चल पाती है। पत्नी अर्द्धांगिनी है। इसलिए तुम मेरी भारती हो और मैं तुम्हारा मंगल—अतएव इस सूत्र का नाम "मंगल-सूत्र" अच्छा लगता है।'

"ठीक है ! इसमें यह भावना रहेगी कि नारियाँ पति की कल्याण-कामना के हेतु, अखण्ड सौभाग्य की आकांक्षा से 'मगल सूत्र' धारण किया करेगी।"

"और इस सूत्र के साथ ही साथ तुम्हारे मगल का नाम भी अमर हो जायगा। इसके अन्तर में जो भारतीयता की भावना छिपी हुई है, वह सारे देश का कल्याण कर सकेगी।"

मुस्कराते हुए भारती ने मगल के चरण-स्पर्श किये तो मंगल अचकचा उठा—"हाँ, हाँ, यह क्या कर रही हो भारती !"

"मुझे मत रोको मेरे देवता ! तुम्हारे पावन चरणो की मेवा मुझे जन्मजन्मान्तर मे मिले—यही कामना है !" इतना कहते हुए भारती ने श्रद्धा से अपना सिर मंगल के पैरों में रख दिया। मगल ने उसे भुजाएँ पकड कर ऊपर उठाया और अपने वक्षस्थल में छिपा लिया।

"भारती ! सीता राम की आदि शक्ति थी, राधा श्रीकृष्ण की आल्हादिनी शक्ति थी—इसी प्रकार प्रत्येक नारी अपने पुरुष की प्रेरणा है—तुम तो मेरे प्राणो की साधना हो भारती !" सहसा मंगल के नेत्रो से आंसू टपक कर भारती के सिर पर गिर पडे। भारती ने चौक कर देखा—

"तुम ! तुम रो रहे हो मगल ! हिमालय की आंखों में आँसू ! यह क्या है मगल !" भारती ने कहा।

"हिमालय भी कभी-कभी रोता है भारती ! उसकी गंगा उसे छोड़ कर चल पड़ती है बिश्व-कल्याण की कामना से अभिप्रेरित होकर तो हिमालय पुलक से रो उठता है, यह निर्भर ही तो उसके नेत्रों से निकले हुए आँसू हैं। संसार ने, तभी तो उनका नाम रखा है झरना।"

"तो आज तुम्हारे हृदय में भी पुलक भर गई है मंगल !"

"हाँ भारती ! आज ही तो प्राणों से प्राणों का अभिसार हुआ है। जिसे मैंने बहुत दूर रखा था, वह मेरा जीवन मेरे अत्यन्त समीप आ गया है। क्या आज की र त्र मंगल की रात्रि नहीं है !"

"नहीं है मंगल ! आज तो शनिवार है, मगल बहुत पीछे छूट गया।" आलिंगन पाश को ढीला करती हुई भारती ने कहा :—"देश आज भी पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। धरती आज भी गेहूँ के दानों के स्थान पर खून की बूंदे उगल रही है। आकाश आज भी पानी की जगह ओले बरसा रहा है मंगल ! चारों ओर अमगल का दानव नाच रहा है, तुम्हें उसका वध करना है, रावण की तरह, कस की तरह।"

"यही होगा भारती ! ऐसा ही होगा। तुम्हारा मगल देश के माथे पर "मंगल सूत्र" स्थापित करेगा। उसे आशीर्वाद दो भारती !"

"ठहरो ! मैं अभी आती हूँ।"

मगल ने मन्द ज्योति वाले दीपक की बाती को उकसा कर प्रकाश की गभीरता को अत्याधिक किया तो देखा भारती एक छोटी-सी थाली में हल्दी, चावल दही और नारियल लेकर आचुकी है। उसने मुस्कराते हुए मंगल के माथे पर हल्दी और दही का तिलक लगाया और उसके माथे में सफेद चावल, लगा दिए। नारियल मंगल के हाथ में दे दिया। घी का दीपक प्रकाशित करके उसने मंगल की आरती उतारी।

"और आज से, पत्नियाँ, जब अपने पतियों को विदा देंगी, बहिने अपने भाइयों को तथा माताएँ अपने पुत्रों को किसी शुभ कीर्ति के हेतु अनुज्ञा प्रदान करेंगी तब यह आरती "मंगल-आरती" के नाम से पुकारी जाएगी।"

"तथास्तु !"

और तब मंगल ने भी प्रसन्नता से भारती के माथे पर हल्दी और दही का तिलक काढ़कर चावल चढ़ा दिए।

"मेरी भारती ! शून्य ब्रह्म की साक्षी मे आज हम-तुम दोनों एक हो रहे है। मैं जिस उद्देश्य के लिए जा रहा हूँ मेरी अर्द्धांगिनी होने के नाते तुम भी उसे बल प्रदान करना।"

"यही होगा मेरे जीवन !"

इसी समय दादा शहर से वापस लौट कर आए। भारती ने साँकर खोलकर उन्हें भीतर लेलिया। दोनों की ओर देख कर दादा मुस्करा उठे। वे समझ गए कि बालकों ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करली है।

"चलो अच्छा हुआ।" इतना कह कर दादा भी सोने को चले आए

: १४ :

"सीम्स टु बी ए गुड यंग मैन।" (अच्छा जवान दिखाई देता है) फौजी अंगरेज आफीसर ने अपने साथी से कहा।

"आइ थिन्क सो" (मैं भी ऐसा ही खयाल करता हूँ) उसके साथ खड़े हुए भारतीय मेजर ने उत्तर मे स्वीकृति सूचक सिर भी हिलाया।

"देखो मैन ! हम तुमको मिलिट्री में रखना माँगता है।" गोरे आफीसर ने उम्मीदवार की ओर मुड़ते हुए कहा—"तुम खूब मेहनत से काम करेगा, बोलो ?"

"यस सर !" नौजवान ने उत्तर दिया।

"गुड ! तुम अंगरेजी भी जानता है ?"

"ए लिटिल—थोड़ा जानता है सर !"

"किधर पढ़ा है ?"

"अपने गाँव में—उधर एक अंग्रेज लेडी आती थी उसी ने बहुत दिनों तक पढ़ाया है।"

अंग्रेज आफीसर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने तत्काल हिन्दुस्तानी मेजर को आज्ञा प्रदान की कि वह आगत नौजवान को सेना में भरती करले और इतना कहने के पश्चात् आफीसर-कमाण्डिंग सामने की ओर अपने बँगले में चला गया।

"देखो सिपाही ! मन लगा कर काम करना, यहाँ बहुत से लोग आते हैं और परेड की मेहनत से घबराकर भाग जाते हैं। तुम ऐसा मत करना।"

"नहीं साहब ! आपको शिकायत का कोई मौका नहीं मिलेगा।"

"तुम्हारी कम्पनी का नम्बर उन्नीस है। मेरे साथ आओ, मैं तुम्हे वहाँ तक ले चलूँगा। अभी-अभी तुमको पहनने के लिए खाकी बरदी भी मिल जायगी।"

"और साहब बन्दूक ?"

"इतनी जल्दी बन्दूक मागते हो ? अभी तो शायद तुम्हें उसका पकड़ना भी नही आता होगा। थोड़ा सब्र करो, जब तुम बन्दूक चलाने लगोगे तो तुम को वह भी मिल जायगी। चलो।"

"जो आपकी आज्ञा। चलिए मैं आपके साथ चलता हूँ।"

भारतीय मेजर जब इस नौजवान सिपाही को लेकर आगे बढ गया तो परेड ग्राउण्ड के पास से किसी ने उसका नाम लेकर पीछे से पुकारा—'मंगल ए-मंगल !"

दूसरे ही क्षण पलट कर मंगल ने देखा तो वह प्रसन्नता से भर गया और सहसा उसके मुँह से निकल—"धीरसिह ! तुम यहाँ ?"

"हाँ मगल ! मै भी यही हूँ।" उसने पास आते हुए कहा और मेजर को सलाम देकर धीरसिंह ने कहा—"साहब ! बड़ी हिम्मत वाला आदमी है।"

"तुम्हारे गाव का है ?" मेजर ने पूछा

"जी हाँ ! इसे आप मेरी सिफारिश पर भरती कर लीजिए।" धीरसिह ने कुछ अनुनयपूर्ण स्वर में कहा।

"इस नौजवान को किसी की सिफारिश की जरूरत नहीं है सिपाही ! यह किसी तवाइफ के चक्कर मे पड़कर मिलिट्री में नही आया हैं। लगता है यह अपने देश और अपने राजा की सेवा करना चाहता है।"

"आप ठीक कहते हैं।" कुछ झेपते हुए धीरसिह ने कहा।

"इस नौजवान मगल को १९ नम्बर वाली पल्टन मे रखा गया है। तुम कभी-कभी मिल लिया करो। इस वक्त मै इसे "लगर" और "स्टोररूम" लिए जारहा हूं।

"अगर आप हुकुम दे तो....।" धीरसिह ने कुछ अचकचाते हुए कहा।

"चल सकते हो मंगल के साथ" मेजर ने कहा।

स्टोररूम से नये कपडे पहनकर और पैरों में भारी-भारी जूतों का बोझा उठाए हुए जब मगल अपनी बैरक की ओर चलने लगा तो उसके नेत्रों में

चमक आगई थी। उसने धीरसिंह की भाँति ही मेजर को 'जूता-ठोक' सलाम किया।

"वैलडन ब्वाय !" इतना कहकर अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में मेजर आगे बढ़ गया।

"कहो कैसी गुजरी धीरसिंह ! तुम्हारी चम्पा का क्या हाल है ?" मंगल ने चुटकी लेते हुए पूछा—"आज कल तो खूब मजे से कट रही होगी—?"

"हँसी मत करो मंगल ! तुम्हारी बात मान लेता तो अच्छा ही रहता। यहाँ तो दोनों दीन से गए पाण्डे—न हलुआ रहे, न माण्डे।"

"क्यों, क्या हुआ क्या ?"

"बस चम्पा का काँटा लग गया। मेरे साथ कुल मिलाकर सत्ताईस-अट्ठाईस नौजवान लखनऊ आगए और यहाँ हम लोगों की बड़ी खातिर की गई। कई सप्ताह तो कुछ भी काम नहीं, बस खाना-पीना और नाच-गाना। धीरे-धीरे परेड आरम्भ हुई और अब तो कई घण्टों तक ऐसी ऐसी मेहनत करनी पड़ती है कि बन्दूक को भी पसीना आ जाता है।"

"क्या मतलब ?"

"इसका नाम है मिलिट्री। आर्डर तो आर्डर है। जरा-सी आना-कानी की तो सामने वाली पहाड़ी के दो चक्कर लगाओ भागते हुए—हाँ, भाई ! पूरे चौदह मील की दौड़ है। हाँफते-हाँफते दम निकल जाती है।"

"फिर तुम्हारी चम्पा ?"

"वही तो बता रहा हूँ। दो सप्ताह तक तो उसके पास आना-जाना होता रहा, उसके बाद वह भी तोते की तरह बदल गई। प्यार की बातें टॉय-टॉय में बदल गई। उसने अपने रुपए सीधे कर लिए।"

"रुपये कैसे ?"

"हरेक रंगरूट की भरती का इनाम एक-सौ रुपया मिलता है। तनखा ऊपर से—आने-जाने का भत्ता अलग।

"चलो कोई बात नहीं है। आदमी ठोकर खाकर ही ठाकुर बनता है।"

"लेकिन हम तो ठोकर खाकर गिर पड़े मंगल !"

"अब उठ बैठो धीरसिह ! झूठा प्रेम, नकली आकर्षण तुम्हे मिलिट्री तक खीच लाया है। ऐसे ही सैकड़ों नौजवान इस फौज में भरती किये गये हैं। अगरेज बहादुर की नजरो में एक हिन्दुस्तानी प्राणी का मूल्य केवल १४-१५ रुपया है। गाय भी २०-२५ से कम में नही आती। एक बकरी के बराबर भी आदमी का मोल नही है।"

"तुम्हारा खयाल ठीक है मंगल !"

"अच्छा तो मिलते रहना। तुम कौनसी नम्बर मे हो।"

"१८ में ?"

"यह भी ठीक है। हम लोग पास-पास ही है। धीरसिंह ! कुछ न कुछ करना ही होगा।"

"मै तुम्हारे साथ हू मगल !"

"जल्दबाजी में हामी भर देना ठीक नही है धीरसिंह !"

"आदमी एक बार परखा जाता है मंगल ! मैंने तुम्हें अच्छी तरह पहचान लिया है। जो कहोगे वही करूंगा---चाहे जान चली जाय।"

"मुझे तुमसे यही आशा थी धीरसिंह ! आज मेरा मन प्रसन्नता से भर गया है। पहला कदम ही सफलता का चरण है। मैं अपने देश का नक्शा बदल कर ही रहूँगा।"

मगल अपने बैरक मे जाकर 'नायक' से मिला। उसके रहने का प्रबन्ध हो गया और दूसरे दिन उसने दफतर मे लिखा दिया कि उसका समस्त वेतन उसकी पत्नी 'श्रीमती भारती पाण्डे' को प्रतिमास दादा के पते पर भेज दिया जाया करे।

: १५ :

"तुम सुनना चाहते हो मेरे अजीज भाइयो ! सौ साल से हिन्दुस्तान को तबाहो गारत किया जा रहा है। मुल्क, मज़हब, मन्दिर और मसज़िद कोई भी खतरे से खाली नहीं है। आज हम अपने घरों में होते हुए भी अपने घरों के मालिक नहीं हैं। क्लाइव के वक्त से लेकर डलहौजी के समय तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नुमाइन्दो ने किस तरह वादा खिलाफी की है और अपने दस्तखत किए हुए सुलहनामों की परवाह न करते हुए राजे और नवाबो को खत्म किया है। हिन्दुस्तान की रियासतों को यके बाद दीगर अग्रेजी राज में शामिल किया है। वह हमारे लिए एक खतरे की बात है। मुल्क के काम धन्धों को जिस तरह से बर्बाद किया गया है और जिस तरह बेगमो और रानियों को लूटा है, उनकी बेइज्जती की है, उनका अपमान किया है, बडे-बड़े जमीदारो की ज़मींदारियाँ खत्म करके पुराने घरों को मिट्टी में मिला दिया है वह चीज़ भुलाई नहीं जा सकती। बनारस और गोरखपुर के लाखों किसानो को भिखारी बना दिया, उनके बाप दादो की जायदाद और ज़मीन छीन कर बेहाल बना दिया। यह बात किसी भी हिन्दुस्तानी के दिलो दिमाग़ में इन्कलाब की आग भडका देने के लिए बहुत काफी है। मेरे अज़ीज़ दोस्तो ! हमें पलासी के खून का बदला लेना है। मीर कासिम और मीर जाफर के कत्ल का बदला लेना है। हिन्दुस्तान के लाल नक्शे का रंग बदल कर अपना केसरिया बाना उसे पहनाना है। ग़ुलाम हिन्दुस्तान में न कोई हिन्दू है, न कोई मुसलमान है; गुलाम का सबसे बड़ा मज़हब, उसका सबसे बड़ा ईमान मुल्क की आज़ादी है।"

लखनऊ से कुछ दूर एक बड़े मैदान में, जहाँ बरगद के पेड के चारों ओर हज़ारों आदमी बैठे हुए थे, क्रान्ति के मुख्य प्रचारक फैजाबाद के एक ज़मींदार, मौलवो अहमद शाह का जोशीला भाषण हो रहा था। श्रोताओं के दिमाग़ में अंग्रेज़ों के विरुद्ध घृणा का वातावरण बनता चला जा रहा था।

और उसको अंग्रेज़ अपने मूर्खतापूर्ण कृत्यों से और भी भड़का रहे थे। प्रभाव-पूर्ण भाषण के मध्य में लोगों ने मौलवी अहमद शाह का जय-जयकार किया तो कुछ प्रसन्नता का अनुभव करते हुए उन्होंने अपने भाषण को आगे बढ़ाया—"तुम लोग नही जानते कि जब डलहौजी हिन्दुस्तान में वाइसराय बनकर आया तो कम्पनी और इंलिस्तान के लोगों की खूनी प्यास हद से ज्यादा बढ़ गई। डलहौज़ी ने पजाब के महाराणा रणजीत सिंह के साथ जो सुलहनामा किया था उसे फाड़कर बालाए-ताक रख दिया। पंजाब पर हमला किया गया, लाहौर दरबार के अन्दर फूट डलवाई गई, दलीप सिह और उसकी विधवा माता महारानी झिंदाँ को न सिर्फ पजाब से बाहर किया गया बल्कि हिन्दुस्तान से भी निकाल दिया गया। पंजाब का तमाम इलाका कम्पनी ने अपने हाथो में ले लिया। दूसरी तरफ बेगुनाह बर्मा के साथ लड़ाई शुरू करदी और पेगू के सूबे को जबरदस्ती छीन लिया। अभी हाल में, १८५६ में अवध के तमाम सूबे को कम्पनी ने जिस बेईमानी से ले लिया हैं और नवाब वाजिद अली शाह को कलकत्ते मे कैद कर रखा है—यह सभी बाते हमारे लिए शर्मनाक हैं। इसलिए मैं कहता हूँ मेरे दोस्तो! उठो और इस अंग्रेज़ी सल्तनत को पलट डालो।"

"हम पलासी का बदला लेगे।" हजारों कण्ठों से यही नारा गूँज उठा और सभा की समाप्ति के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति के मन में क्रान्ति की भावना जाग उठी।

× × × ×

"इसी आगरा के पास झाँसी है और पास में ग्वालियर है, धौलपुर है—इन तमाम राजा लोगों के साथ इस बेईमान अंग्रेज ने क्या कुछ नहीं किया है? झाँसी की रानी जिस राजकुमार को गोद लेना चाहती थी, अंग्रेजों ने उसे मंजूर नहीं किया—क्यों? हमारा राज, हमारा ताज और आज हमको इतना भी अधिकार नही है कि हम अपनी गोद में एक मासूम बच्चे को पनाह भी दे सकें?—यह सब क्या है? फरेब है, जाल है, धोखेबाजी है। सचाई के नाम को जमीन्दोज कर दिया गया है। हमारा मजहब, हमारा धर्म, हमारा ईमान सब कुछ खतरे में है। अंग्रेजी राज की बुनियाद एक ऐसे

पतले छिलके के ऊपर कायम है जो किसी भी समय टुकड़े-टुकड़े किया जा सकता है। इसलिए उठो मेरे दोस्तो ! मेरे भाइयो ! तुम चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, तुम्हारा धर्म बगावत है। फाँसी का फन्दा तुम्हारी निजात है, तुम्हारी मुक्ति है। आज तुम्हे उस तरफ चलना है, जहाँ भारतमाता बैठी हुई तुम्हारा रास्ता देख रही है। गुलाम की सबसे बड़ी पूजा, सबसे बड़ा सिजदा सबसे बड़ी नमाज और सबसे बड़ा धर्म सिर्फ आजादी लेना है !"

आगरा के विशाल मैदान मे मौलवी अहमद शाह ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा—"हिन्दुस्तानी फौज में वहुत से कर्नल और दूसरे आफीसर बराबर ईसाइयत का प्रचार कर रहे हैं। ऐसे अफसरों का एक गुट है जो किसी न किसी तरह हिन्दुस्तानी लोगो को ईसाई बनाने में लगे हुए हैं। ऐसे लोग फौज में इसलिए भरती नही हुए हैं कि फौजी काम उनकी कुदरत या फितरत के मुताबिक है और न इस ख्याल से भरती होते हैं कि उनको फौज से अपनी रोजी पैदा करनी है। ऐसे लोगों का सिर्फ एक ही मकसद है कि इस जरिए से लोगो को ईसाई बनाया जाय। फौज को उन्होंने खास तौर पर इसलिए चुना क्योंकि अम्नो-अमान के दिनो मे फौज के भीतर सिपाहियो और अफसरो दोनो को हद दर्जे की फुर्सत रहती है। ईसाई मिशनरियों की तरह गाँव-गांव भटकना नहीं पड़ता और बिना किसी मेहनत के या बिना किसी खर्चे के बहुत से गैर ईसाई मिल सकते हैं। इन लोगों ने हिन्दू और मुसलमान अफसरो और सिपाहियो मे ईसाई किताबो के उर्दू और हिन्दी तर्जुमात मुफ्त बांटने शुरू कर दिए हैं। शुरु-शुरू में दिली नफरत रखते हुए भी हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने इसे बर्दाश्त कर लिया। लेकिन आज हालत यह है कि हिन्दुस्तानी सिपाही का धीरज डोल गया है। चारों तरफ से हिन्दू और मुसलमान दोनों के देवी-देवताओ और पैगम्बरों को बुरा-भला कहा जा रहा है। मेरे दोस्तो ! सन् १८४६ मे कम्पनी ने पंजाब पर अपना कब्जा जमा लिया और इस बात की भारी कोशिश की गई कि पंजाब को एक ऐसा ईसाई सूबा बनाया जाय जो बेमिसाल हो। सर हेनरी लारेन्स, सर जोन लारेन्स, सर राबर्ट मान्ट गुमरी, डानेल्ड मेक्लिआल्ड और कॅर्नल एडवर्ड्स वगैरा-वगैरा पंजाब के तमाम हुकमराँ की यही राय थी कि पंजाब में तालीमात का दफ्तर और

तमाम प्रचार का काम ईसाई पादरियों के हाथो मे दे दिया जाय। सरकार की तरफ से मदरसो और कालिजो को इमदाद की जाय और तमाम सरकारी तालीमी इदारों को खत्म कर दिया जाय। सब जगह बाइबिल का पढाना लाजमी कर दिया जाय। मीलाद शरीफ और भजन-कीर्तन जबरन बन्द कर दिए जाँय। हिन्दू-धर्म या इस्लाम को किसी भी तरह की मदद नहीं दी जाय। यह सब कुछ मजहबी जोश है और इसका मतलब सिर्फ यह है कि तमाम हिन्दुस्तानी लोग ईसाई बन जाय। सन् १८०६ में बेलोर के सिपाहियों ने जो बगावत की, उसकी वजह यही थी कि वे अपने धर्म को नहीं छोड़ सकते थे। जो लोग ईसाई बन चुके हैं, उनकी हिफाज़त के लिए लार्ड विलियम बैंन्टिन्क ने सन् १८३२ मे यह क़ानून पास कर दिया है कि "जो लोग ईसाई हो जांयगे अपने बाप दादों की जायदाद में उनका हिस्सा और कब्जा बराबर मिलेगा और रहेगा।" पुराने जमाने के मन्दिरो और मस्जिदों की जागीरे छीन ली गई है और आज भी भारत के खज़ाने से करोडो रुपया पादरी लोगों को तनख़ाहो और पेन्शनो की तरह बाँटा जा रहा है। इसलिए हमें इन तमाम चीजो का मुक़ाबला करना है और अपने मजहब की और धर्म की हिफाज़त के लिए हाथ में तलवार उठानी है।"

"भारत की आजादी जिन्दाबाद ! हम पलासी का बदला लेगे !"

× × × ×

"जब-जब धर्म की हानि होती है और अधर्म का उत्थान होता हैं। तब-तब भगवान अवतार लेते हैं। पृथ्वी व्याकुल होकर गाय का रूप धारण करके भगवान विष्णु की सेवा में निवेदन करती है कि "हे ! प्रभु ! दुष्टों का दमन करो और म्लेच्छों से भारत की रक्षा करो।" श्रोता लोगो ! आज देश में धार्मिक अत्याचार और अनाचारो का बोल बाला है। रावण-राज्य में, हिन्दू-धर्म के पवित्र तम सिद्धान्तो की अवहेलना की जा रही है। ससार के सबसे प्राचीन उच्च कुलों को निर्मूल कर दिया गया है। आज हम लोग जाति-भ्रष्ट हो चुके हैं।" काशी के दशाश्वमेध घाट पर रामायण की कथा कहते हुए पण्डित रामदीन ने कहा—"भाइयो और बहिनों ! क्रान्ति का समय आ चुका है। आप लोग अपने धर्म के नाम पर अपनी कौम के नाम पर और अपने देश

के नाम पर निर्दोष व्यक्तियों की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए और अपनी आशाओं को पूर्ण करने के लिए उठकर खड़े हो जाइये। आज तमाम राष्ट्र को शपथ लेनी है कि विदेशी जुआ उतार कर फेंक दिया जायगा और भारतीय धर्मों का पूर्ण अधिकार फिर से स्थापित कर दिया जायगा। राम का नाम तुम्हारे साथ है। भगवान की कृपा से तुम्हारा मंगल होगा।"

भगवान राम और रावण के संघर्ष की कथा सुनकर उठने वाले सभी नर-नारियों के हृदयों में क्रान्ति की चिनगारियों का सूत्रपात् हो उठा। राम-राज्य की मधुर कल्पना से लोगो की आत्मा प्रसन्न हो उठी और बलिदान की बेला में सब कुछ न्यौछावर कर के भारतीय लोगो ने रण-चण्डी की अर्चना आरम्भ कर दी।

× × × ×

"केवल तीस दिनों के अन्तर्गत लार्ड डलहौजी ने दो विशाल राज्यो को समाप्त कर दिया। नागपुर के अन्तिम राजा राघव जी भौसले की मृत्यु ११ दिसम्बर १८५३ को हुई। आप लोग जानते है कि महाराज भौसले कितने बुद्धिमान और भले राजा थे। आज डलहौजी और उसके उत्तराधिकारी स्वर्गीय महाराज के विरुद्ध विष-वमन कर रहे हैं। २८ जनवरी १८५४ को यह घोषणा की गई कि नागपुर के सिंहासन का कोई व्यक्ति अधिकारी नहीं है और विधवा महारानी के दत्तक-पुत्र यशवन्त राव जी को यह बताया गया कि महारानी उनको नही चाहती हैं। इस घोषणा के बाद नागपुर का राज्य अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया गया। नागपुर के राज महल का सारा सामान नीलाम कर दिया गया। घर का सामान, पहनने के कपड़े, रानियों के जेवर कलकत्ते ले जाकर नीलाम किए गए। सीता-बल्डी के बाजार में हाथी घोड़े ऊंट और बैलों का नीलाम किया गया। और मेरे भाइयों! यह सब कुछ हिन्दू कुल सूर्य छत्र-पति शिवाजी के वशजों के साथ किया गया है। हमें इसका भयंकर प्रतिशोध लेना है। इसी प्रकार २७ फरवरी १८५४ को झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई को दत्तक पुत्र को लेने के अधिकारों से वंचित किया गया है और उस राज्य को भी कम्पनी ने अपने पेट में पचा

लिया है। आज प्रत्येक महाराष्ट्र निवासी का यह धर्म है कि वह अपने नरेशों के अपमान का बदला ले। नागपुर हमारा है, झाँसी हमारी है।"

"नागपुर हमारा है ! झाँसी हमारी है !!" गगन भेदी हुंकारों से समस्त वातावरण गुंजित हो गया। जातीयता और देश प्रेम की प्रबल भावना से समस्त सामाजिकों के हृदय विभोर हो गए। रामचन्द्र राव ने अपने प्रचार के प्रथम अभिमान मे सफलता के साकार स्वरूप को देखा।

× × × ×

'मदरास और उसके आस-पास का समस्त प्रान्त कर्नाटक की मुसलिम सल्तनत के पास था। इस्ट इण्डिया कम्पनी ने सबसे पहले मद्रास और कड़लोर, करनाटक के नवाब से प्राप्त कर लिए और नवाब मुहम्मद अली वालाजाह ने पून-माली का तालुका और उसके साथ अन्य तालुके भी अंग्रेजी साम्राज्य मे मिला दिए। कम्पनी इसके बदले में भेंट दिया करती थी। धीरे-धीरे इन सब बातों को तोड़ दिया गया। मदरास के गवर्नर लॉर्ड हैरिस ने लार्ड डलहौजी को लिखा—" करनाटक के नवाब की शक्ति और सत्ता केवल दिखावा मात्र है, लेकिन किसी भी समय वह हमारे विरुद्ध विद्रोह और आन्दोलन का केन्द्र बन सकती है। इसलिए इस तमाशे को अधिक चलने देना बुद्धिमानी का काम नहीं है।'—भाइयों और बहनो ! इसके बाद जो भाग शेष रह गया था वह भी कम्पनी सरकार ने ले लिया। इन अंगरेजो ने आसाम से मद्रास तक अपना जाल फैला रखा है। हमें उसको छिन्न-भिन्न करना होगा। उत्तर में अवध का राज समाप्त हो चुका है और दक्षिण में निजाम का शासन भी अन्तिम सासे ले रहा है। हम इन सबका प्रतिशोध लेगे।" नृसिंहाचार्य की गम्भीर-वाणी ने मानो सोते हुए मदरासियो को जगा दिया।

'हम प्रतिशोध लेगे—अवश्य लेगे।" समस्त वातावरण में प्रतिध्वनि के रूप में यही आवाज परि व्यप्त हो गई।

× × × ×

"आप लोगों को शायद यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि कानपुर के तमाम अंगरेज नर-नारी नाना साहब के यहाँ विराम लेते रहे हैं। नाना

धुन्धुपन्त ने उनकी आवभगत में अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। लेकिन मेरे साथियो! पेशवा बाजीराव के साथ अंग्रेजों ने जो सन्धि-पत्र स्वीकार किया था, उसे डलहौजी ने फाड कर फेंक दिया। बिठूर में नाना साहब के साथ आठ हजार स्त्री-पुरुष, बूढे और बालक निवास करते थे। सन् १८२७ में, जब नाना साहब केवल तीन वर्ष के थे, अंग्रेजों ने आठ लाख रुपया वार्षिक पेन्शन देना स्वीकार किया था। लेकिन डलहौजी ने उसे भी बन्द कर दिया।" आँखो पर काली पट्टी बाँधे हुए एक नौजवान ने अपने भाषण को आगे चलाते हुए कहा—"नाना ने फिर भी न्याय का साथ नहीं छोड़ा। उसने अज़ीमुल्लाखाँ को इंगलिस्तान भेजा—प्रार्थना की, लेकिन मदमस्त अंगरेजों ने उसकी कोई बात नहीं सुनी। सतारा के राजा ने भी एक मराठा राजनीतिज्ञ रंगो बापूजी को अपील करने को भेजा। लेकिन अंगरेजो ने उसकी एक भी बात नहीं सुनी। इसलिए पलासी के युद्ध का बदला लेना है। अगर तुम अपने नाना को प्यार करते हो, अपने देश का सम्मान करते हो, तो आओ! खाली हाथों मे तलवारें और भाले सम्हाल लो! आज नाना तुम्हारे सामने खड़ा हुआ है" इतना कह कर उस नौजवान ने अपनी आँखों पर बँधी पट्टी खोल दी।

हजारों कंठों से 'नाना साहब की जय' गूँज उठी। वह युवक प्रसन्नता भरे शब्दों मे बोला—"अज़ी मुल्ला और रंगोजी दोनो तमाम योरप का दौरा करके आए हैं। रूस हमारी मदद करना चाहता है, इटली का देश भक्त गेरीबाल्डी हमारी सहायता के लिए तैयार है—लेकिन मेरे भाइयो। शक्ति हमारे भीतर छिपी हुई है। अपनी चिनगारी को ज्वाला का रूप देना होगा। एक भीषण आग जलानी होगी, जिसमें इंगलेण्ड का साम्राज्य जल कर भस्म हो जायगा।"

"भारत माता की जय—हिन्दुस्तान हमारा है।" के गगन भेदी नारों से बिठूर का कोना-कोना भर गया।

× × × ×

बैरकपुर से पेशावर तक और लखनऊ से सतारा तक हजारों राष्ट्रीय फकीर और संन्यासी घूम घूम कर जगह-जगह भाषणों के द्वारा, व्यक्तिगत

चर्चा चला कर, क्रान्ति का प्रचार करने लगे। हजारो रईसो और साहूकारो ने अपनी थैलियाँ इन राष्ट्रीय नेताओ के चरणो मे डालदी । मसजिदो और मन्दिरों मे प्रार्थनाएँ होने लगीं।

इस क्रान्ति के लिए पाँच केन्द्र बनाए गए थे—दिल्ली बिठूर, लखनऊ, कलकत्ता और सतारा। कार्यकर्ताओ और नेताओ के लिए हाथी, घोड़े, ऊंट, बैलगाड़ियो सब सवारियो का प्रबन्ध किया जाता था। तमाशे, पौवाड़े (मराठी मे वीरगान) लावनी, आल्हा, कठपुतलियो तथा नाटको आदि के द्वारा भी व्यापक सगठन को मूर्त रूप दिया गया। कवियो और शायरो ने ऐसी जोशीली काव्य रचनाएँ प्रस्तुत कर दी कि लोग झूम-झूम उठे।

: १६ :

"क्या पद्मिनी का जौहर तुम्हें याद नही है ? सीता की अग्नि परीक्षा की बात इतनी जल्दी भूल गईं मेरी बहनो ! आज अपने बच्चों को पिलाने के लिए तुम्हारे वक्ष में दूध नहीं है, पति को खिलाने के लिए घी नहीं है और बच्चियो के मुँह में डालने के लिए मठे की चार बून्दें भी नहीं हैं ? इस सबकी जिम्मेदारी किस पर है ? हमारी हालत किसने इतनी बुरी बना दी है ? अगरेज ने, सिर्फ अगरेज ने । ताजा दूध और मक्खन गोरी फौजों के लिए चला जाता है । बढ़िया गेंहू अगरेज सिपाही खाते हैं ; हमारे बच्चे कैसे पनपेगे ? इसलिए क्रान्ति में साथ देना है तुम्हे । थोड़ी-थोड़ी बून्दों से भी घड़ा भर जाता है । इसलिए क्रान्ति का सन्देश लेकर 'एक रोटी' तुम्हारे गाँव में आए तो उसकी हजारो बना कर आस-पास बटवा देना । वह इस बात की सूचना होगी कि सारा देश हमारे साथ है ?" सन्यासिनी नवयुवती ने महिलाओं के मध्य में अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा जोश का सचार करते हुए कहा ।

"हम आपके साथ हैं बहिन जी !—जब आपने छोटी-सी उम्र मे अपनी जान हथेली पर रखली है तो क्या हम लोग मौत से डरने वाली है ? भारतीय नारियो ने सदा ही मौत का स्वागत किया है ?" एक नारी ने कहा ।

'मुझे बडी प्रसन्नता हुई मेरी बहनो ! लेकिन माताओ ने कुछ नहीं कहा ।"

"बेटी !" एक वृद्धा ने उठते हुए कहा—"बूढा व्यक्ति तो नौजवान से भी खतरनाक होता है, इसलिए वह बोलता कम है ।"

"खतरनाक ! और वह भी नौजवान से अधिक ? यह क्या बात कही अपने माता जी ।"

"हाँ बेटी ! नौजवान कभी पीछे की ओर मुड़ कर सोचता है कि उसके सामने जीवन का लम्बा रास्ता है । उसके दिल में उमग है पत्नी या पति पाने की—बच्चों ने उसको हँसाया नही है । इसलिए उसके मन में कायरता आ

सकती है। लेकिन हम लोगों ने सब कुछ भर पाया है। अब तो केवल मौत को ही पाना शेष है और जो लोग मौत से नहीं डरते हैं मौत उनसे ही डरती है। सौ वर्ष की इस बुढिया को देख ले बेटी। दो अंगरेजों को मार कर तो मरूँगी ही।" पोपले मुँह को खोल कर जब वृद्धा हँस पडी तो संन्यासिनी के आँखों में आँसू छलक आए।

"माता जी! यही तो भारत माता है। जिसके दर्शन मैं करना चाहती थी। आपकी जय हो।"

ज्योंही सन्यासिनी चलने को तत्पर हुई, उस वृद्धा ने उसका हाथ थाम लिया और कहा—"अपना परिचय दिये बिना नहीं जाने पाओगी बेटी!—फिर आज भोजन भी यहीं करना होगा।"

"मेरा परिचय यही है मेरी मा! क मैं बिना मा बाप की बेटी हूं। बचपन में मा चली गई और पिछले महीने अंग्रेजों ने मेरे बाप को छीन लिया।"

"वह कैसे बेटी!"

"मेरा एक साथी था मंगल—बचपन में उसने मेरे पीछे एक अंग्रेज को पीट डाला था। वह पकड़ा गया लेकिन थाने से निकल भागा। कई वर्ष तक उसका पता नहीं चला—एक दिन वह लौटा और फौज में भरती हो गया। वही थानेदार जो मंगल के भाग जाने के कारण हैड कान्स्टेबिल बना दिया गया था, कई साल बाद उसी थाने में आया और उसने अंग्रेज सरकार के विरुद्ध षडयन्त्र का आरोप लगाकर मेरे पिता जी को पकड़ लिया। कहने-सुनने को मुकदमा चला और उनको फांसी की सजा दे दी गई। मैं उसी बाप की बेटी हूं—मेरा नाम भारती है।"

"भोजन तैयार है अम्मा!" एक बालिका ने सूचना दी।

"अब संसार में मेरा कौन था, जो मैं घर पर रहती। उसी दिन से प्रतिशोध की भावना मेरे अन्तर में सुलग रही है। भारत के लाख-लाख गाँवों में क्रान्ति का सन्देश पहुँचाना चाहती हूँ और ऐसी आग जलाना चाहती हूँ कि जिस में सारा अंग्रेजी साम्राज्य जल कर राख हो जाए।"

"चलो बेटी ! कुछ भोजन करलो। हम सब लोग तुम्हारे सन्देश को पूरा करेंगे—विश्वास रखो।"

और जब भारती भोजन करके उठी तो एक बालिका ने उसे चार रोटियाँ बनाकर देते हुए कहा—"बहिन जी ! ऐसी ही रोटियाँ बनानी होंगी न ?"

"हाँ मुन्नी ! ऐसी ही बनेंगी। तुम तो बड़ी चतुर मालूम होती हो।" उसके गाल को थपथपाते हुए भारती ने कहा।

"हाँ इस देश की कन्याएँ भी वीर होती —कल ही तो पिताजी ने मुझे बताया है कि बालिकाएँ तो शेर का शिकार भी करती थी और वह भी हाथ में तलवार लेकर।"

"शाबास ! जब तक तुम्हारी जैसी बेटियाँ मौजूद हैं तब तक हमारा देश कभी गुलाम नहीं रह सकता है ?"

अपना कमण्डल उठाकर भारती गाँव से बाहर निकल पड़ी। कभी पैदल, कभी किसी सवारी पर, भारती ने लाखों गाँवों का दौरा किया और नारियों तथा बालिकाओं में क्रान्ति के बीज बो दिए। क्रान्ति का वृक्ष पनपने लगा था और राष्ट्रीय-जन उसके फलों तथा फूलों की आशा में दिन गिन रहे थे।

× × × ×

"और आज का अग्रेज कल हमारे देश में तलवार नहीं, तराजू लेकर आया था। मुगल बादशाहों की कोरनिश बजाने वाला अग्रेज आज अपने आपको हिन्दुस्तान का फातेह करार दे रहा है और हम लोग चौदह पन्द्रह रुपयों के लिए अपने प्राणों को न्योछावर कर रहे हैं।"

"लेकिन किया भी क्या जा सकता है मंगल ! कितना बड़ा राज है अग्रेजों का कितनी बड़ी ताकत है उनके हाथों में ! चट्टान से टकराने वाला अपना सिर फोड़ लेने के सिवा और क्या कर सकता है।" एक सिपाही ने कहा।

"यह तुम्हारी निराशा नहीं है मेरे भाई। यह तो मेरे देश की निराशा है। तमाम मुल्क ना उम्मीद हो चुका है। इटली और रूस हमारी मदद करने को तय्यार हैं। लेकिन हम लोग तकदीर के सहारे को पकड़े हुए बैठे हुए हैं। सिर्फ तक़दीर से किसी को रोटी नहीं मिलती। मंजिल तक पहुँचने के लिए तदबीर करनी पड़ती है, मेहनत करनी पड़ती है।"

"तुम क्या कहना चाहते हो, तुम्हारी योजना क्या है ?" एक दूसरे सिपाही ने पूछा।

"मेरी योजना वही है जो मैं बरसों से कहता चला आ रहा हूँ। एक बार हिम्मत से काम लो। देश में क्रान्ति की लहर लहरा दो और एक बार हुंकार करके उठो तो श्रीकृष्ण के समान हम लोग काली नाग को नाथ कर रख देंगे।"

"लेकिन बाहर क्या हो रहा है—तुम्हें मालूम है ?"

"यों कहो लैन्स नायक कि बाहर क्या नहीं हो रहा है। नाना साहब, तात्या टोपे और झाँसी की रानी से लगाकर मदरास के इलाके तक विद्रोह की चिनगारी फैल गई है। सब लोगों ने यह निश्चय किया है कि ३१ मई सन् १८५७ का दिन विद्रोह के लिए नियत किया जाय। इसलिए हम लोगों को प्रयत्न करना होगा कि हम भारत की पहली स्वतन्त्रता की लड़ाई को सफल बनाएँ।"

"उसकी योजना क्या है ?"

"भारतीय क्रान्ति का चिन्ह रोटी और कमल है। प्रत्येक गांव के चौकीदार के पास एक रोटी और एक कमल पहुँचाया जायगा। क्रान्ति में भाग लेने की इच्छा रखने वाले सभी लोग उस एक रोटी में से एक-एक टुकड़ा ग्रहण करेंगे और उसके बदले में दस-दस रोटियाँ तय्यार करके आसपास के गाँवों में बाँटने के लिए भेज देंगे। इस प्रकार हमको यह भी पता लग जायगा कि देश में हमारा साथ देने वाले कितने ऐसे लोग हैं जो हथेली पर सिर रखकर मुल्क के लिए लडना चाहते हैं।।"

"हम तुम्हारा साथ देने के लिए तय्यार हैं मगल !" लैन्स नायक ने कहा।

"क्या पूरी पल्टन मेरा साथ देगी ?" मंगल ने पूछा।

"पूरी पल्टन ही नहीं, पूरी छावनी तुम्हारा साथ देगी। तुम्हारी एक गोली के साथ बैरकपुर का सारा वातावरण गोलियों और तोपों की आवाज़ों से गूँज उठेगा।"

"मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। आप लैंस-नायक हैं। आपके मुँह से मैं ऐसी ही बातें सुनना चाहता था। जिस देश में आपके जैसे देश भक्त लैंस नायक मौजूद हों और—"थोड़ी देर के लिए रुक कर मंगल ने वहाँ उपस्थित सभी

जवानों की ओर उँगली का इशारा करते हुए कहा—"और जहाँ, मेरे हजारों भाई सिपाहियों के रूप में देश के लिए बलिदान होने को तय्यार हों, वहाँ निश्चय ही हमारी क्रान्ति सफल होगी।"

मगल के इस भाषण के पश्चात छावनी में उपस्थित लगभग ५०० सिपाहियो ने अपनी बन्दूकें ऊपर उठाकर मौन स्वीकृति के द्वारा यह प्रकट किया कि वे सब लोग मगल के साथ क्रान्ति में जूझने के लिए तय्यार हैं। यह सब लोग उठने ही वाले थे कि दो सन्यासी आते हुए दिखाई दिए।

मगल आगे बढकर आगत दोनों व्यक्तियों से मिला।

"धीरे से मुझे बता दीजिए कि आप लोग कौन हैं? मैं मंगल हूं।"

भली प्रकार से विश्वास करने के पश्चात दोनों फकीरों ने यह बताया कि उनमें से एक नाना साहब हैं और दूसरे अजीम उल्लाखाँ। मंगल के लिए यह सफलता की पहली सूचना थी। तीन दिन तक रामधुन के परदे में सारी छावनी को क्रान्ति के लिए तय्यार कर लिया गया और मंगल पाण्डे को क्रान्ति का पहला नेता घोषित किया गया।

: १७ :

"मैं जानती हूँ महारानीजी ? आपके हृदय में जो आग भड़क रही है वह तब तक शान्त नहीं हो सकती जब तक देश को स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो जाय ।"

"मेरी बहिन ! इस झाँसी के आँगन में एक दिन मैं बहू बनकर आई थी और आज विधवा बनकर बैठी हुई हूँ। अंग्रेज को यह भी सहन नहीं हुआ कि वह किसी गोद के बालक से ही मेरी गोद को हरी-भरी रहनेदेता ।"

"उसने तो भरी-पूरी गोदों के लाल छीन लिए हैं महारानी जी ! आप अपनी झाँसी को लक्ष्य मानकर सारे देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कीजिए आप वीरागना हैं ।"

"मैं स्व-राज्य के लिए ही लडूँगी बहिन ! निश्चय रूप से विश्वास रखो, जब तक तुम्हारी जैसी त्यागमयी पुत्रियाँ भारतमाता की गोद में हैं, देश को गुलाम बनाकर नहीं रखा जा सकेगा। तुम्हे रुपये-पैसो की आवश्यकता हो तो.... ।"

'धन्यवाद ! भूख लगने पर कही न कही दो रोटिया मिल जाती हैं और तन पर एक धोती चाहिए सो वह भी कोई न कोई दे ही देता है ।

इसी बीच में एक थाल में भगवा-रंग की एक धोती और एक अंग-रक्षक वस्त्र लेकर एक दासी उपस्थित हुई ।

"मेरी बहिन ! मेरी छोटी-सी भेट स्वीकार करना । आजादी के लिए शहीद होने वालो को केशरिया बाना ही अच्छा लगता है ।"

"जैसी आपकी इच्छा । मा का प्रसाद समझ कर ही मैं इसे ग्रहण करती हूँ ।"

भारती ने साड़ी को सिर से लगाकर स्वीकार किया । महारानी लक्ष्मी-बाई बहुत ही प्रसन्न हुईं ।

"भारती ! मैने अपने इन दोनों हाथों से लाखों रुपया उन सैनिकों मे बाटा है जो आजादी के लिए लड रहे हैं और लडने को तैयार है। बीसियो नेताओं की सहायता करते समय मुझे वह प्रसन्नता नही हुई जो आज तुम्हे यह तुच्छ साडी प्रदान करते हुए हर्ष होरहा है, ऐसा लगता है मानों मैं तुम्हारे शरीर को भारतीय-स्वतन्त्रता के युद्ध में विजयी झण्डे में लिपटा हुआ देख रही हूं।"

"महारानी जी ! यह आप क्या कह रही है ? मेरी आशाएं ?" उतावलेपन के साथ भारती ने कहा।

'मैं देख रही हूं भारती ! तुम एक अतीन्द्रियलोक में विचरण कर रही हो, ज्योत्स्ना के समान धवल तुम्हारा शरीर अपनी चन्द्रिका से समस्त विश्व को स्नात कर रहा है। तुम्हारे मस्तक पर लगा हुआ मंगल बिन्दु अपनी आभा से कोटि-कोटि प्राणियों को प्रेरणा प्रदान कर रहा है। उसका मोहन-मन्त्र चारों ओर परिव्याप्त हो रहा है और तुम्हारा सुयश कस्तूरी के समान प्रसारित हो रहा है। स्वतन्त्र-देश की धवलधरा तुमको अपने हृदय में, सीता के समान छिपाए हुए है और तुम्हारा साथी हिमालय के समान मौन है—मेरा स्वप्न तुमने सुना भारती !"

"सुन लिया महारानी जी ! और उसका परिणाम भी समझ मे आ गया है—क्या आप सुनना चाहती हैं ?"

"यदि तुम चाहो तो सुनादो।"

"क्रान्ति के बादल बरसकर रहेगे महारानी जी ! भारत के सभी मैदानों में रक्त की धारा से एक नया इतिहास लिखा जायगा। शहीदों की टोलियाँ सिर से कफन बाँध कर निकल पड़ेंगी। लक्ष्मीबाई की तलवार का जौहर, ताँत्याटोपे और नाना का स्वाभिमान, मंगल का आरंभ होगा—परन्तु........।"

"परन्तु क्या भारती ! कहो, तुम क्या कहना चाहती हो !"

"अभी समय नहीं है महारानी ! भारती का मंगल शायद इस जन्म में नहीं हो सकेगा।"

"तुम क्या कह रही हो भारती !"

"महारानी जी ! देश बहुत बडा है, काम भी बहुत बड़ा है और मै एक छोटी-सी बालिका हूँ। लगभग सारे भारत मे घूमने के बाद मै इस निष्कर्ष तक पहुंच सकी हूँ कि अभी हमारे देश को एक नेता की आवश्यकता है—ऐसा नेता जो राजनैतिक क्रान्ति के साथ ही साथ सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति भी कर सके।"

"सब होगा भारती ! इस समय तो हमें आजादी लेनी है। जिस प्रकार से भी हो सके—उसके बाद देखा जायगा।"

"देखने वाले देखेगे महारानी जी ! आँखे खोलकर देखेंगे और जिन लोगों को देखना चाहेगे वे ही नही दिखाई देगे। दीन बन्धु ! हमारे देश की रक्षा करे।"

सेवक ने प्रवेश करके महारानी को 'जुहार' किया।

"क्यो लक्ष्मण सिह !"

"महारानी जी ! दो सन्यासी पधारे हैं—कहते हैं महारानी से भेंट करना ही हमारा उद्देश है।"

"उनको विश्रामालय मे बिठाओ लक्ष्मण ! हम अभी आते हैं।"

थोडी देर में रानी और भारती जिन दो संन्यासियो के सामने खड़ी हुईं उनको देख कर महारानी हँस पड़ी।

"यह क्या स्वाँग बनाया है नाना ! मै तो समझी थी कि अंग्रेजों ने फिर कोई नई चाल सोची है, किसी साधु को भेजा है।"

"केश, वेष, नरेश सभी कुछ देश के लिए बदलना होगा मनू ! यह मेरे दोस्त हैं अजीमुल्ला।"

अजीमुल्ला ने दोनो हाथ जोड़ कर महारानी का अभिवादन किया "यह मेरी छोटी वहिन है भारती ! सारे देश मे घूम-घूम कर नारियों में क्रान्ति की भावना जगाने वाली बालिका—जिसने जीवन मे सब कुछ पाकर खो दिया है और आज अपने प्रिय को पाने के हेतु अगारो के पथ पर चल रही है—" महारानी ने भारती का परिचय कराया।

"निश्चय ही ऐसी बालिकाएँ हमारे देश का सौभाग्य है।" नाना साहब ने भारती को आशीर्वाद देते हुए कहा।

"महारानी जी !" अजीमुल्ला ने बड़ी संयत वाणी में कहा— "हम लोगो ने निश्चय किया है कि ३१ मई १८५७ ई० को, रविवार के दिन, तमाम भारत में एक साथ बगावत करदी जाय। फौज के सैनिक, पुलिस के सिपाही लोग, अपने हथियारों से काम लें और दफ्तरों में काम करने वाले लोग आग के शोलो को स्तैमाल करें। एक-दो दिन में तमाम मुल्क को अंगरेजो से खाली कराना होगा।

"योजना अच्छी है। जो काम पहले से निश्चिन्त होकर किया जाता है, उसमे सफलता अवश्य मिलती है।" भारती ने कहा।

"आपकी आगामी योजना क्या है ?" नाना ने पूछा।

"क्या बता सकती हूँ। देश मे क्रान्ति की आग जलाना ही इस समय मेरा सबसे बड़ा उद्देश्य है। समय आयेगा तो दोनो हाथो में तलवार उठाने का साहस भी रखती हूँ।" भारती ने उत्तर दिया।

"आप धन्य हैं बहिन ! अब हमे विश्वास हुआ कि हमारी क्रान्ति निश्चय ही सफल होगी।" नाना ने कहा।

"क्रान्ति तो निश्चय ही सफल होगी—इसमें किसी की दो राय नही हो सकती हैं। क्यो कि धरती में बीज डालने से वह अवश्य ही फलता है। चाहे बीज उल्टा डालो या सीधा। भारत की भूमि आज क्रान्ति का बीज ग्रहण करने को तैयार है परन्तु यह नही कहा जा सकता कि सौभाग्य की वर्षा कब होगी, क्यों कि बिना जल के बीज का फलना सभव नही है।" भारती ने तनिक गभीरता से कहा।

"कदम उठ गया है बहिन !" अजीमुल्ला ने कहा—"और बढा हुआ कदम पीछे हटना नही जानता।"

"आपके कदम मजबूत जमीन पर टिकें—मेरी यही दुआ है। बहिन के पास दुआ के सिवा और हो भी क्या सकता है ?" भारती बोली।

"दुआ में बड़ी ताकत है—दवा जहाँ नही चलती वहाँ दुआ चलती है।"

"अच्छा तो हम चले !" नाना ने महारानी से पूछा

"जैसी आपकी इच्छा।"

और इसके पश्चात दोनों व्यक्ति साधारणरूप से महल से निकले तथा

जन-पथ पर आकर बाजार की ओर मुड़ गए। दो-एक जगह से भिक्षा माँगने का अभिनय भी किया—क्योंकि उनके पीछे अंग्रेजी जासूस लगा हुआ था। लेकिन वह इनको नही पहचान सका और साधारण भिखमँगा समझकर एक ओर चला गया।

महारानी से विदा लेकर भारती आगे की ओर चल पड़ी। वह रात में चलती थी और दिन में अपना प्रचार करती थी। नारी होने के कारण हिन्दू-मुसलिम घरानो में उसका प्रवेश सरलता से हो जाता था और तब वह 'घर के चूल्हों' में 'क्रान्ति की चिनगारी' रख आती थी। परिणाम यह हुआ कि महिलाओ ने पुरुषो को उत्साहित किया। उनको राजनीति के अर्थ समझाए और अंग्रेजो के विरुद्ध खड़े होने के लिए आवाहन किया।

इस बीच में, भारती ने लखनऊ में निर्वासित नवाब वाजिदअलीशाह और उसके बुद्धिमान मन्त्री अलीनकीखाँ से भी भेंट की—उसकी यह भेंट वाजिद-अलीशाह की बेगम हजरत महल के द्वारा हुई। हजरतमहल बेगम ने भारती की प्रशंसा करते हुए नवाब वाजिदअली से कहा कि इस समय इन्कलाब और बगावत दोनों ही आसानी से किये जा सकते हैं।

अलीनकीखाँ ने अपनी बुद्धिमत्ता से क्रान्ति के नेताओ में पहला स्थान प्राप्त किया। उसने तमाम क्रान्तिकारियों से सम्पर्क साधन किया और अपने साथी प्रचारको के द्वारा देश के कोने-कोने में गुप्त आन्दोलन का सूत्रपात कर दिया।

"जिस आश्चर्यजनक ढंग से, गुप्तरीति से यह समस्त षडयन्त्र चलाया गया, जितनी दूरदर्शिता के साथ योजनाएँ की गईं, जिस सावधानी के साथ इस सगठन के विविध समूह एक दूसरे के साथ काम करते थे, एक समूह दूसरे समूह के साथ सम्बन्ध रखने वाले लोगों का पता किसी को नही चलता था, और इन लोगो को केवल इतनी ही सूचना दी जाती थी जितनी उनके काम के लिए आवश्यक होती थी, इन सब बातो का वर्णन कठिन है और ये लोग एक दूसरे के साथ आश्चर्यजनक वफादारा का व्यवहार करते थे।"*

इस प्रकार क्रान्ति की पृष्ठभूमि तैयार हो चली।

---

*Western India, by Sir George Le Grand Jacob;

: १८ :

प्राय: लोगों की ऐसी मान्यता है कि शायरी और बादशाहत का अथवा काव्य और शासन का कोई सुन्दर सम्बन्ध नहीं है। शासन के हेतु मस्तिष्क की प्रधानता आवश्यक है, तो कविता के लिए भावुक-हृदय अपेक्षित है। परन्तु अपवाद तो सभी स्थानों में होते हैं और इसी का एक उदाहरण उपस्थित हुआ भारतीय इतिहास में दिल्ली का सम्राट बहादुरशाह, जो शासक भी था और शायर भी—'जफर' उसका उपनाम अर्थात् तखल्लुस था। दिल्ली की अनेकानेक भावनाओं से भरित भूमि पर बैठकर वह अतीन्द्रिय स्वर्ग मे भी विहार करता था और सिंहासन की कठोर पीठ पर बैठकर राजनैतिक विचार भी करता था। मलिका जीनत महल ने भी प्राचीन परम्परा को कायम रखा था। वह भी बादशाह सलामत के साथ विचार-विमर्श में भाग लेती थी और कभी-कभी तो ऐसे सुझाव-प्रस्ताव उपस्थित करती थी कि स्वयं बादशाह भी चकित-थकित रह जाते थे। भारतीय-प्रजा समृद्धिशाली और सुखी थी। शायर से लगाकर सायर का खर्च तक सिलसिलेवार चला जारहा था।

प्रत्येक ईद को, नौरोज के दिन और सम्राट की सालगिरह के दिन दरबार होता था। अंग्रेजी-कम्पनी सरकार का गवर्नर जनरल और कमाण्डर-इन-चीफ दरबारों में हाजिर होकर सम्राट को नजरें पेश करते थे और आदाब बजाया करते थे। १८३७ ई० में जब बहादुरशाह सिंहासन पर आसीन हुए तो उस समय भी नजरें पेश की गई परन्तु कुछ वर्षों के बाद, जब लार्ड एलेन ब्रु गवर्नर जनरल होकर आया तो उसने नजरें देना बन्द कर दिया। कवि-हृदय सम्राट को इस बात से जो दुख हुआ सो तो हुआ ही, दिल्ली की तमाम जनता के हृदय इस अपमान से धधक उठे और धीरे-धीरे उन लोगों का झुकाव विद्रोह को जन्म देने वाले नेता लोगों से हो गया।

+ + + +

"सम्राट के ऊपरी वैभव और ऐश्वर्य के अनेकों आभूषण उतर चुके हैं। उसके वैभव की पहली जैसी चमक-दमक शेष नहीं रही है और दिल्ली सम्राट

के वे अधिकार भी लगभग एक-एक करके सभी छीने जा चुके हैं, जिन पर तैमूर के वंशजों को बड़ा अभिमान था। इसलिए बहादुरशाह की मृत्यु के पश्चात् कलम तनिक से इशारे से 'बादशाह' की उपाधि का अन्त कर डालना कोई मुश्किल नहीं है। बादशाह की नज़र जो गवर्नर-जनरल और कमाण्डर इनचीफ देते थे, बन्द हुई। कम्पनी का सिक्का जो बादशाह के नाम से ढाला जाता था वह भी बन्द कर दिया गया। गवर्नर जनरल की मोहर में जो पहले "बादशाह का फ़िदवी ख़ास" (विशेष नौकर) खुदा रहता था, वह भी निकाल दिया। हिन्दोस्तानी रईसों को मना कर दिया गया कि वे भी अपनी मोहरों में बादशाह के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग न करें। इन सब बातों के बाद अब गवनमेण्ट ने फैसला कर लिया है कि दिखावे की भी अब कोई ऐसी बात शेष नहीं रखी जाय जिससे हमारी गवर्नमेण्ट बादशाह के अधीन मालूम हो। इसलिए दिल्ली के 'बादशाह' की उपाधि एक ऐसी उपाधि है जिसका रहने देना या न रहने देना गवर्नमेण्ट की इच्छा पर निर्भर है।" तत्कालीन रेजीडेण्ट के व्यक्तिगत सेक्रेटरी ने वह पत्र पढ़कर सुनाया जो गवर्नर जनरल की ओर से प्राप्त हुआ था।*

"ठीक है। इसके सिवा हमारे पास इलाज ही क्या है।" रेजीडेण्ट ने कहा।

"मिरजा कोयाश तशरीफ़ लाए हैं।" सन्तरी ने सूचना दी।

"भीतर आने दो।" सेक्रेटरी बोला।

कुछ ही देर में जब मिर्जा कोयाश भीतर आया तो रेजीडेण्ट ने उठकर उससे हाथ मिलाया और बड़े आदरपूर्वक उसे अपने पास बिठा लिया।

"कहिए—आपने क्या तय किया ?" रेजीडेण्ट ने पूछा

"मैं तैयार हूं।" कोयाश बोला।

'हम जानते थे मिर्जा साहब ! आप हमारी शर्तें मान लेंगे, क्योंकि आप बहुत अच्छे और भले नौजवान हैं। आपको बादशाह सलामत की गद्दी पर देखकर हम लोगों को बड़ी खुशी होगी।" रेजीडेण्ट ने तनिक खुशामद करते हुए कहा।

---

*ख्वाजा हसन निजामी कृत "देहली की जांकनी" से।

"आपका शुक्रिया साहब ! हम तो शुरू से ही आपके अहसानमन्द हैं। अब्बा हुजूर सबसे पहले भाईजान दाराबख्त को अपना जाँनशीन बनाना चाहते थे लेकिन १८३९ ई० में मलिकुलमौत के मेहमान होगए। खुदा उनकी रूह को मग्फरत करे। अच्छे आदमी थे।"

"और उसके बाद बादशाह सलामत जवाँबख्त को युवराज बनाना चाहते थे लेकिन मिरजाफखरू ने मौके से फायदा उठाया और कम्पनी सरकार की सहायता से युवराज बन गए। आप उस वक्त काफी छोटे थे।" रेजीडेण्ट ने कहा।

"जी हाँ, लेकिन कजाइलाही वह भी १८५४ ई० मे अल्लाह को प्यारे होगए और मातमपुरसी के लिए जब आप तशरीफ ले गए थे तब बादशाह सलामत ने खुद जवाँबख्त का नाम पेश किया था।" मिरजा कोयाश ने कुछ भारी लहजे में कहा—"और उन्होंने शायद इसी अम्र का एक खत भी गवर्नर-जनरल बहादुर के नाम दिया था।"

"जी हाँ, उस पर बाकी आठों शहजादो ने दस्तखत करके अपनी मन्जूरी भी दे दी थी—आपने भी तो अपनी सही उस पर दी थी ?"

"चारा ही क्या था ? कोई मददगार नही था अपना।"

"लेकिन हमारी नजरें मिरजा कोयाश पर बहुत पहले से ही पड़ चुकी थी। मिरजा साहब ! इ गलिस्तान से आकर हिन्दोस्तान में सल्तनत कायम करना कोई मजाक नही है। अंग्रेज की आँख फौरन ही दोस्त और दुश्मन की पहचान कर लेती है। बादशाह सलामत के नौ बेटों में मुझे सिर्फ आपही काबिल इत्मीनान दिखाई दिए।" रेजीडेण्ट ने नहले पर दहला मारते हुए कहा—

"यह तो आपकी बन्दानवाजी है रेजीडेण्ट साहब ! वक्त आने दीजिए—मैं अपनी खिदमात से आपको खुश कर दूंगा।" मिरजा कोयाश ने विनम्रता प्रदर्शित करते हुए कहा।

"लीजिए यह फरमान है। कम्पनी सरकार की तरफ से गवर्नर जनरल ने आपको हिन्दुस्तान का वलीअहद तसलीम किया है।"

"इस इनायत और मुहब्बत का शुक्रिया।" फरमान हाथ में लेकर कुर्सी से आधे उठकर और झुककर बहादुरशाह सम्राट के पुत्र मिरजा कोयाश ने बड़ी अदा से रेजीडेण्ट को सलाम पेश किया

"तशरीफ रखिए।" रेजीडेण्ट ने कहा—"वह हमारा काम था, और अब आपका काम बाकी है। यह कागज आपके दस्तखतों के लिए हाजिर है। आप इन शर्तों को पढ़ लीजिए।"

"पढना क्या है—मैं दस्तखत किये देता हूँ। यह लीजिए बस।" और इतना कहते हुए मिरजा कोयाश ने उस कागज पर कोमल हाथों से मुगल-साम्राज्य के भाल पर कठोर-लिपि में अपना नाम लिख दिया—"आप ही पढ़कर सुना दीजिए—क्या-क्या शर्तें रखी गई हैं।"

"पहली शर्त यह है कि आपको 'बादशाह' की जगह सिर्फ "शहजादा" कहा जाया करेगा। दूसरी शर्त यह है कि आपको दिल्ली का किला खाली करना होगा और तीसरी शर्त यह है कि आपको जो एक लाख रुपया मासिक जेब-खर्च मिलता है, उसके स्थान पर १५ हजार रुपया माहवार दिया जायगा।"

मिरजा कोयाश की हालत 'बूर के लड्डू' खाने वाले की जैसी थी—'साँप-छछून्दर की गति'—न निगलते बने, न उगलते। वह रेजीडेण्ट को सलाम करके वापस आगया।

× × × ×

"अगर आप अपने बाकी तमाम हुकूक हमारे सुपुर्द करदें और यह भी लिख कर बाकायदा कम्पनी सरकार को दे दें कि आप या आपके जाँ-नशीन या आपके रिश्तेदार लोग कभी भी, कम्पनी सरकार से किसी किस्म का मुआवजा नहीं माँगेंगे, तो कम्पनी सरकार आपकी पेन्शन का रुपया बढ़ा सकती है।" वजीरे आजम ने बहादुरशाह को कम्पनी सरकार का वह खत पढ़कर सुनाया, जिसके द्वारा बादशाह सलामत की उस प्रार्थना को अस्वीकृत कर दिया गया था, जिसके अनुसार उन्होने अपने खर्च की रकम को बढवाना चाहा था।

"वक्त जो कुछ न दिखाए वही गनीमत है वजीरेआजम! दिल्ली का बादशाह जो हिन्दुस्तान के तमाम खजानों का मालिक समझा जाता था।

आज उसको एक गैर कौम की सरकार के सामने दो-जानू होना पड़ रहा है।'' बादशाह बहादुरशाह जफर ने बड़ी गम्भीर वाणी में अपने दु:ख को रोकते हुए कहा।

' तबियत को इतना नाउम्मीद मत बनाइये, शहन्शाहे-दो-आलम ! खुदा के फजल से यह वक्त भी नही रहेगा।'' वजीरे आजम ने सान्त्वना देते हुए कहा।

''वजीरे आजम ! यह सही है कि फकीर को फिक्र अल्लाह करता है। लेकिन दुनियाँ की फिक्र फकीर को होती है। मुझे अपने बारे में किसी तरह का कोई ख्याल नही है। लेकिन मै सोचता हू उन हजारो लोगो की बात जिनकी गुजर-बसर दिल्ली के खजाने से हो रही है। जो लोग मेरे पनाह-गुजीर है या मेरे खानदान के वह लोग, जो मेहनत या मशक्कत नही कर सकते, जो मजबूर है, लाचार हैं, बेकस हैं—उनका क्या होगा ? तुम जानते हो अंग्रेजों ने हमारी सालाना नजरें भी बन्द करदी हैं।'' बादशाह ने कहा।

''उँगली पकड़ कर पहुंचा पकड़ना इसी को कहते हैं सरकार ! न जाने हमारी क्या बदकिस्मती है कि हमारे जिन दो-दो शहजादो के डर से अंग्रेज लोग काँप उठते थे, वह दोनो ही हमारा साथ छोड़कर अल्लाह पाक की खिदमत में चले गये।'' वजीरे आजम ने भरे हुए गले से अपना दु:ख प्रकट करते हुए कहा।

''दारा बख्त, जवाँबख्त और फखरू तीनों ही शहजादे होनहार और होशियार रहे हैं। जवाँबख्त तो आज भी अपने सलाह मशवरे से हमारे दिलों में मसर्रत पैदा करता है। काश ! वह दोनों भी इस वक्त जिन्दा होते तो यकीनन कम्पनी सरकार की हिम्मत नही होती कि वह इस तरह बेहूदा जवाब भेज कर हमारी बेइज्जती करती।''

आज कल मिर्जा कोयाश रेजीडेन्ट साहब से बराबर मिलते रहते हैं। खुदा जाने यह अंग्रेज लोग क्या करना चाहते हैं ! लार्ड डलहौजी ने 'इनाम कमीशन' मुकर्रर करके इक्कीस हजार पुरानी जमीदारियाँ और जागीरें जब्त कर ली है इसके अलावा सितारा, पंजाब, झाँसी, नगपुर, पेगू, सिक्किम

ओर सम्बलपुर वगैरह कितनी ही रियासतों को कम्पनी के राज में मिला लिया।"

"सोचना होगा वजीरे आजम ! कल जीनत महल बेगम कह रही थी कि एक ऐसा इन्कलाब आयेगा कि अंग्रेजी राज और ताज दरहम-बरहम हो जायगा। धर्म के नाम पर, कौम के नाम पर, बदला लेने के लिए और अपनी उम्मीदों के सपनो को पूरा करने के लिए हिन्दुस्तान का अवाम उठ कर रहेगा। एक जंग होगी-खौफनाक किस्म की, जिसमें जो कुछ भी न हो जाय वही थोडा होगा।" बहादुरशाह ने कहा।

"आपका फरमाना बजा है। मलिका ने जो कुछ भी बात कही है वह दूरन्देशी का नमूना है। वह हर बात को बहुत नाप-तौल कर कहती हैं। अंग्रेज सरकार ने अवध के नवाब जैसे अपने वफादार दोस्त और मददगार का राज छीन लिया; जिसने कि जरूरत पडने पर अंग्रेजों को मदद दी थी। अवाम सोचता है कि अंग्रेज के साथ वफादारी करने से कोई फायदा नहीं है। आज लखनऊ का नवाब वाजिद अली शाह कलकत्ते में पड़ा हुआ है।"

"अल्लाह पाक की मरजी कुछ अच्छी ही मालूम होती है और ऐसा दिखाई देता है कि हिन्दुस्तान का मुस्तकबिल यकीनन उजागर है।"

"आसार तो अच्छे ही नजर आ रहे हैं। क्रान्ति का बीज बो दिया गया है फिर चाहे उसे बिठूर में बोया गया हो या इँगलिस्तान में।"

"इँगलिस्तान मे ?—यह आप क्या फरमा रहे हैं हुजूरे आला !"

"हाँ वजीरे आजम ! यह भी एक राज है। अपनी सालाना पेन्शन को बराबर कायम रखने के लिए नाना सहाब ने अपने वकील अजीमुल्ला खाँ को इँगलिस्तान भेजा था। बोलने में तो वह चतुर था ही, उसकी सूरत में भी एक अजीब किस्म का खिचाव था। ऊँचे-ऊँचे अंगरेज अफसरो की बीवियाँ उसे देख कर अपने आपको भूल जाती थी—फिर भी अजीमुल्ला अपने फर्ज से पीछे नहीं हटा। लेकिन उसे कामयाबी नसीब नहीं हुई। इसी मौके पर सतारा के राजा की तरफ से पैरवी करने वाले रंगो जी बापू से अजीमुल्ला की मुलाकात हुई और दोनों की नाकामयाबी हिन्दुस्तान में बगावत का

जज्बा उभारने की तरफ झुक गई। रूस में उनकी मुलाकात मिस्टर रसल के साथ हुई है, जो लन्दन के अखबार 'टाइम्स' का नुमाइन्दा है। रूस ने हाल ही में से बास्टोपोल की लडाई में अंग्रेजो को हराया है। यह दोनो लोग तमाम योरप का दौरा करके वापस आ चुके है और अब हिन्दुस्तान मे बगावत को तरगीब दे रहे हैं।" बहादुर शाह ने इतना कह कर सन्तोष की एक ठन्डी साँस ली।

"आप सही फरमा रहे हैं। तमाम हिन्दुस्तान के राजा लोगो, व्यापारियों और फौजियो को होशियारी के साथ तैयार कर लिया गया है।" वजीरे आजम ने कहा।

"हाँ! बिठूर से यह रोशनी जगमगाई है। नाना साहब ने अपने खास-खास सफीरों के जरिए, दिल्ली से लेकर मैसूर तक, इन्कलाब और बगावत की बात पहुँचा दी है। ३१ मई को सब कुछ तै हो जायगा। एक दरबार से दूसरे दरबार तक, भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक, खतो-किताबत के जरिए सबको दावते जंग दी जा चुकी है।"

"अल्लाह इन कौम के फकीरो को कामयाबी दे। सुना है कि फौजे भी हमारा साथ देने को तैयार है?"

"हाँ वजीरे आजम! आज तो, क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, सभी लोग बगावत का झण्डा हाथ मे लिए बैठे है। लाखो चमकते हुए सितारों को जैसे बादलों के टुकडे हज्म कर जाते है, उसी तरह अंगरेजी सितारे नेस्तानाबूँद हो जाएँगे।"

दासी ने दस्तबस्ता अर्ज किया, कि मलिकाए मोअज्जमा बदशाह सलामत के इन्तजार में हैं। दस्तरखान सजाया जा चुका है।

तब बादशाह भोजन के हेतु दासी के साथ चले गए और प्रधान मन्त्री अपने निवास-स्थान को वापस लौट पडे।

: १६ :

"पंडित जी ! पालागन ।"

"जीते रहो मेहतर जी ! आज सुबह ही सुबह कहाँ ?"

"कुछ नही महाराज ! भगवान ने ऐसे कुल में जनम दिया है कि सुबह ही सुबह निकलना पड़ता है ।" बेचारे भंगी ने बड़े ही दुःख पूर्ण स्वर मे अपना कष्ट अभिव्यक्त किया ।

"पूर्व जन्म के संस्कारों से सब कुछ मिलता है छोटू ! जन्म, जाति, समाज और देश सभी कुछ भाग्य से मिलता है ।"

"सुना है पाण्डे जी, कुछ रिसी लोग ऐसे भी हुए कि इसी जनम मे छत्री से बिराहमन होगए ।"

"अरे भाई उन लोगो की बात छोड़ो । वे लोग तो तपस्वी थे । हम लोगों में इतनी शक्ति कहाँ है ।"

"फिर भी बिराहमन तो घमण्ड से मरे जा रहे है । कोई बनिया है तो कोई छत्री—सबको अपनी-अपनी पड़ी है । हमे तो कोई पूछता ही नहीं है ।" भंगी ने एक बार फिर अपने कष्ट का निवेदन किया ।

"बात सचमुच बहुत बुरी है । शरीर में भी तो चार स्थान हैं । सिर का काम सिर करे, हाथ का काम हाथ करे और पेट का काम पेट करे तथा पैरों का काम पैर करे—तभी शरीर का ढाँचा चल सकता है ।"

"लेकिन समाज में ऐसा कहाँ हो रहा है महाराज ! अछूतों को तो बहुत ही बुरी नजर से देखते हैं और अगरेजों के साथ बैठ कर शराब तक पी जाते है । बड़ी प्यास लगी है, जरा अपना लोटा दे दीजिए ।"

"तो क्या लोटे से पानी पिओगे तुम ? नही जानते यह एक ब्राह्मण का लोटा है ।"

"बिराहमान और सूद्र अब किसी का भेद नही चलेगा ।"

"क्यों ?"

"अंगरेज राज की बलिहारी है। कल तक आप लोग अपनी जात बिरादरी पर बड़ा घमण्ड करते थे और दो चार ही दिन में गाय की और सूअर की चर्बी से बने हुए कारतूस जब दान्तों से काट कर चलाने पड़ेंगे तब पता चलेगा कि धरम छोड़ते हो या नौकरी छोड़ते हो।"

"यह तुम क्या कह रहे हो छोट्ट !"

"माफ करना पाण्डे जी ! छोट्ट अनपढ है लेकिन अपने धरम के पीछे अपनी जान तक दे देगा।"

"लेकिन तुझे यह बात कहाँ से मालूम हुई कि नए कारतूसों में सूअर और गाय की चरबी लगाई जा रही है।"

"तीन-चार दिन हुए कमाण्डन्ट साहब के बंगले पर एक दावत थी। आप जानते हैं कि अगरेजो ने मुलुक मे आकर सबसे पहले अछूतों को प्यार से गले लगाया और भगियो को तो 'बैरा' तक बना लिया। सो, मैं जूठन उठाने को गया था। वहाँ बात हो रही थी।"

"लेकिन तू तो अंग्रेज नहीं जानता।" मगल ने कहा।

"अपने लैन्स नायक भी वहाँ थे पाण्डे जी। सो उनको समझाने के लिए वे लोग हिन्दुस्तानी में बात चीत करते रहे।"

"तो क्या कहा ?"

"कहते रहे कि लैन्स नाइक, तुम सब सिपाहियो को ठीक तौर से समझा देना कि नए कारतूस दान्तों से काट कर खोलने पड़ेंगे। सुना जाता है, कुछ लोगों ने भड़का रखा है कि कारतूसों में सूअर और गाय की चरबी है। यह सब झूठ बात है।"

"फिर ?"

"दावत के बाद लैन्स नाइक चल दिये तो उनको फिर समझाया और जब वे निकल गए तो दोनों तीनों साहब खूब जोरों से हँसे।"

"क्यों इसमें हँसने की क्या बात थी ?"

"बुरी-सी गाली देकर कमान्डेट बोला—साले को खूब उल्लू बनाया।" तब, मैंने सोचा कि दोनों अंगरेज झूठे हैं।

'ऐसा ही कुछ लगता है छोट्ट ! हमारा धरम, हमारा ईमान सभी कुछ खतरे में है।"

"एही तो बात है पाण्डे जी ! बात पता चली सो आपको बता दी-आगे आप जानें।"

"तुम फिक्र मत करो छोट्ट ? तुमने बहुत ही पते की बात बताई है। काफी दिनों से अंगरेज लोग ईसाइयत का प्रचार कर रहे थे और अब अन्त में उन्होने सोचा कि···।"

"क्या सोची पाण्डे जी।"

"अंगरेज बड़ा चालाक है। उसने सोचा कि हिन्दू गाय को अत्यन्त पवित्र मानते हैं, इसलिए गाय की चर्बी से बने हुए कारतूस दान्त से खोलने वाले सिपाही समाज की नजरो में गिर जाएँगे और हम तब उनको ईसाई बना लेंगे। यही बात मुसलमानो के बारे में भी सोची है। मुसलमान धर्म में सूअर का माँस बड़ा ही निषिद्ध माना गया है। सो, इस तरह उनको भी धर्म—भ्रष्ट करके अपने जाल में फाँस लेगे। तुमने बहुत उपकार किया है छोट्ट ! हिन्दुस्तान के संघर्ष का जब कभी कोई इतिहास लिखा जायगा तो उसमें तुम्हारा नाम बड़े आदर से लिया जायगा। तुमने इस खबर के द्वारा बारूद के ढेर पर चिनगारी रखदी है।"

'अपनी का हैसियत मालिक ! आपके चरनन की धूर है छोट्ट।" हाथ जोडकर अपनी विनम्रता प्रकट करते हुए छोट्ट ने कहा।

"अच्छा छोट्ट चलूँ ! शौच इत्यादि से निपट कर इस बात पर भी विचार करना होगा।"

"पालागन।"

"जीते रहो।"

और क्रोध में भरा हुआ मंगल पाण्डे न जाने कितनी दूर निकल गया। शौच से वापस आकर उसने अपने कई साथियो से प्रातः की घटना का वर्णन किया। जिसने भी सुना वही जल उठा। अंगारों की तरह सिपाहियों के हृदय प्रदीप्त हो गए।

लैन्स-नायक से पूछने पर उसने समस्त घटना मंगल को सुना दी और उसने कहा—"मुझे लगता है मगल ! अंग्रेज लोग हमे धोखा दे रहे हैं। यह देखो, यह वही कारतूस है जिसे हमे दान्त से काट कर खोलना होगा। इस पर जो चिकना मसाला लगाया गया है निस्सन्देह उसमें गाय और सूअर की चरबी का इस्तेमाल किया गया है।"*

"मै भी ऐसा ही समझता हूं सिंह साहब ! यह बात दूसरी है कि कुछ कारतूसो में केवल गाय अथवा सूअर की चरबी का ही प्रयोग किया गया हो और कुछ कारतूसो में दोनो लगाए गए हों। लेकिन यह तो निश्चित है कि गाय की चरबी और सूअर की चरबी मिलाकर इन नए कारतूसो का निर्माण किया गया है और इनके बनाने मे भारतीय सिपाहियो के धार्मिक भावों की ओर बहुत बड़ी लापरवाही खाई गई है।"† मगल ने कहा।

"जो भी कुछ हो, बहरहाल यह हमारे लिए एक खतरा है। समय से पहले तैयार नही हुए तो ·· ····।"

"हमारी मौत है।" मंगल ने बड़े जोश के साथ कहा—"और हमारी मौत के मानी आजादी की मौत है। हमारा जजबा, हमारी भावना, सदा-सदा के लिए समाप्त हो जायगी।"

"और यह एक लज्जाजनक तथा भयंकर सचाई है कि जिस बात का सिपाहियों को विश्वास है, वह बिलकुल सच है।" लैन्स नायक ने कहा—

---

* "There is no question that beef fat was used in the composition of this tallow." Kaye's Indian Mutiny, Vol 1, p 381.

† "The recent researches of Mr. Forrest in the records of the Government of India prove that the lubricating mixture used in preparing the cartridges was actually composed of the objectionable ingredients, cow's fat and lard and that incredible disregard of soldiers' religious prejudices was displayed in the manufacture of these cartridgee." Forty years in India by Lord Roberts, p. 431.

"अंग्रेज चाहते हैं कि बेधर्म और बे-ईमान करके हम हिन्दुस्तान को सदा के लिए गुलाम बना ले।"*

"पहले-पहले तो मैने भी विश्वास नही किया था लेकिन धीरे-धीरे पता लगा कि साढ़े बाईस हजार कारतूस अम्बाला डिपो से और चौदह हजार कारतूस सियालकोट डिपो से भारतीय सैनिको मे भेजे गए हैं तो मुझे यकीन हो गया कि अंग्रेज हमारे धर्म को नष्ट करने पर तुले हुए हैं।" मगल ने कहा।

"इतना ही नही है पाण्डे! अंग्रेज अफसरों ने भारतीय सिपाहियों को डराना-धमकाना भी शुरू कर दिया है कि उनको नए कारतूसों का उपयोग करना ही पडेगा।"

"और हम लोगो मे से किसी ने इसका विरोध नहीं किया?"

'किया और जमकर किया। लेकिन तुम जानते हो पाण्डे, देश का नैतिक पतन हो चुका है। यहा दूसरो के कन्धो पर रखकर बन्दूक चलाने की प्रवृत्ति काम कर रही है। किसी को उत्साहित करके आगे बढा देना और जब उसके सिर पर विपत्ति के बादल नाचने लगे तो दूर हट जाना। यही हुआ। कुछ सिपाहियो ने जिद की—वे लोग तैयार नही हुए तो सारी की सारी रेजीमेंट को सजा दी गई और बहुत कडी सजा दी गई।"

"देश मे जो चिनगारी सुलगाई जा चुकी है सिह साहब! वह बुझने वाली नही है। पश्चिमी प्रान्तों के सभी हिस्सो में देशी कौमें अग्रेजी सत्ता के विरुद्ध खड़ी हो चुकी हैं और चरबी के कारतूसो का झगड़ा एक चिनगारी बन गया है जो अचानक बारूद के ढेर मे आ पड़ी है।" मगल ने बडे जोश के साथ

---

* It is a shameful and terrible truth that as far as the fact was concerned, the sepoys were perfectly right in their belief ......but in looking back upon it, English writers must acknowledge with humilation that, if mutiny is ever justifiable, no stronger justification could be given than that of the sepoy troops"—The Map of Life, by W. E H. Lecky, pp. 103, 104.

कहा अब तो विस्फोट होकर ही रहेगा। कोई इसे रोक नही सकेगा।"*

"हम लोग हर प्रकार की कुरबानी देने को तैयार हैं।"

इतनी बातचीत के पश्चात दोनो व्यक्ति दोनो ओर चले गये।

× × × ×

"यह नए कारतूस हैं—सरकार ने बहुत-सा रुपया खर्च करके इनको नए ढंग से बनवाया है; आप लोग आइन्दा से इन्ही कारतूसों को काम में लाया करेगे।" अग्रेज कप्तान ने कारतूसो के ढेर की ओर इशारा करते हुए कहा।

"लेकिन हमसे कहा गया है कि इन कारतूसों मे गाय और सूअर की चरबी लगाई गई है। हम लोग इनको दाँतो से नही खोलेगे।" मगल ने १९ नम्बर की पलटन में से आगे बढ कर कहा।

"क्या सुबूत है इस बात का—तुम किस माफिक कह सकते हो कि इनमें चरबी लगाया गया है?" अफसर ने पूछा।

"अगर आपका कहना सच है तो आप इन कारतूसो को वापस ले लीजिए—हम मान लेगे कि आपकी नीयत साफ है।" मगल ने पुनः कहा।

"सरकार का इतना बड़ा नुकसान होगा, उसको पूरा कौन करेगा।"

"हमारे दीनो-ईमान का नुकसान होने दिया जाय—सिर्फ इसलिए कि कम्पनी सरकार को कुछ हजार की बचत हो जाए। यह सरासर बेइन्साफी है। हमने अपनी जान बेची है, अपना ईमान नही बेचा है।" मंगल ने अपनी वाणी को ऊँचा उठाते हुए कहा।

"तुम नहीं जानता है सिपाही! तुम क्या बोल रहा है और किससे बोल रहा है।" जरा क्रोध दिखाते हुए कप्तान बोला।

---

* The fact was that throughout the greater part of the northern and north western provinces of the Indian peninsula there was a rebellion of the native races against the English power......The quarrel about the greased cartridges was put the chance spark flung in among all the combustible material ......a national and religions war!"—History of our own times, by Justin McCarthy, Vol iii.

"मै अच्छी तरह जानता हूँ कप्तान साहब ! लेकिन जिसके मुँह में जबान होती है, वह बोलता है और अवश्य बोलता है। अपमान की ठोकर खाकर तो आपका कुत्ता भी चीखता है—हम लोग तो इन्सान हैं।"

"तुम पीछे हट जाओ, सिपाही।" कप्तान ने आज्ञा दी।

"यस सर" इतना कह कर मगल अपनी पंक्ति में जा मिला।

कप्तान ने आगे बढकर प्रत्येक सिपाही को पाँच-पाँच के हिसाब से कारतूस बटवा दिए। सभी लोगो ने उन कारतूसों को ले लिया। मंगल ने भी मुस्कराते हुए पाँचों कारतूस हाथ में ले लिए।

"अटैन्शन" जोर से कप्तान ने आवाज लगाई और दूसरे ही क्षण तमाम सिपाही तन कर खड़े हो गए।

"वन, टू, थ्री" अदा के साथ जोर से बोलते हुए कप्तान ने आदेश दिया।

परिणाम में उसे बड़ी निराशा हुई। न तो किसी सिपाही ने अपनी बन्दूक को हाथ में उठाया और न उसमे कारतूस ही रखा। कप्तान आश्चर्य से विस्फारित नेत्रो से देखता का देखता ही रह गया।

"तुम लोग हमारा हुक्म नहीं मानेगा ?"

"नहीं" सैकड़ो कण्ठो से एक बार गूँज उठी।

"नया कारतूस नही चलायेगा।"

"नही-नहीं" मानो सारा वायुमण्डल प्रतिध्वनित हो उठा।

"लैन्सनायक !" कप्तान ने पुकारा

"यस सर" उसने फौजी सलाम देते हुए कहा।

"यह लोग क्या बोलते हैं ?"

"सर ! इनका कहना है कि जब तक हमको यह विश्वास नही दिला दिया जायगा कि इन कारतूसो में सूअर और गाय की चरबी नही लगाई गई है तब तक हम इनको काम में नही लायेगे।"

"अच्छा ! इसके लिए भी इन्तजाम करेगा। हम सरकार को लिख कर फरमान मॉगेगा कि इसमे गाय का या सूअर का चरबी नही हैं।"

"जब तक ऐसा कुछ नहीं होगा तब तक कोई सिपाही परेड के लिए मैदान में नहीं आयेगा।" लैन्सनायक बोला

"ठीक है ऐसा ही होगा। तुम तमाम पल्टन को वापस ले जा सकता है—आज का परेड खत्म।" कप्तान ने कहा।

"राइट एबाउट टर्न" लैन्स नायक के आवाज देते ही तमाम पल्टन का मुँह दूसरी ओर हो गया और इसके बाद उसने कहा—"मार्च"

सब लोग बैरकों की ओर चल पड़े। चिन्ता से अभिभूत कप्तान अपने शिविर में लौट आया।

११ फरवरी १८५७ ई० को यह घटना बैरकपुर की छावनी मे १९ नम्बर वाली पलटन के साथ हुई।

: २० :

चाँदनी राती की ज्योत्स्ना से समस्त सरिता आलोकमय हो रही है। किरणों से अठखेलियाँ करती हुई लहरे बड़ी सौन्दर्य्य-शालिनी प्रतीत हो रही हैं। जब कभी चन्द्र-किरणों की टकराहट से लहरे निखर उठती हैं तो ऐसा लगता है मानो चाँदी के साँप रलमल-रलमल करके तैर रहे हैं। शुभ्र-ज्योत्स्ना के संयोग से पानी का प्रवाह कुछ गतिवान-सा जान पड़ता है। कही-कही उसमें वैसी ही निश्चलता भी दिखाई देती है, जैसी तत्कालीन भारतवासियो के हृदयो में विद्यमान थी। राजनैतिक प्रसुप्ति का प्रदर्शन देखकर चन्द्रमा भी कभी-कभी 'तिर्यक्-मुख' कर लिया करता था। कही से छोटा-सा बादल का टुकड़ा आकर चन्द्र पर छा जाता था और उसे इस प्रकार घेर लेता था कि वह द्वितीया का-सा चन्द्रमा बन कर रह जाता। सरिता का वैभव उतार पर था और इसलिए जहाँ-तहाँ रेत के टीले से दिखाई पड़ जाते थे। बिखरी हुई रेती के कण ज्योत्स्ना में चाँदी के चूर के समान चमक-दमक दिखा रहे थे।

एक बड़ी-सी नाव मन्थर गति से इस नदी के मध्य में चली जा रही है। कितने ही माझी चुपचाप उसे खे रहे हैं। नाव के ऊपर या भीतर किसी भी प्रकार की हलचल नही दिखाई पड रही है। नाव के भीतरी भाग में जो कमरा बना हुआ है, उसमें से क्षीण प्रकाश की रेखा यदा-कदा बाहर की ओर झाँकती हुई दिखाई पड़ जाती है। इसी से यह अनुमान होता है कि नाव पर कुछ सवारियाँ भी हैं। वैसे नौका को देखकर यही अन्दाजा होता है कि वह माल ढोने वाली नाव होनी चाहिए। परन्तु उसके बीच में कमरा जैसे बना हुआ है, जिसके ऊपर वाले गुम्बज में बैठने का स्थान भी है। इससे यह पता लगता है कि वह किसी रईस का बजरा होगा।

यद्यपि रेलगाड़ियाँ चल पडी थी, फिर भी यातायात की इतनी सुविधा नही थी, इसलिए अधिकाँश व्यापारी लोग नदियों के द्वारा अपना माल एक भाग से दूसरे भाग में पहुँचाया करते थे। इसके अतिरिक्त गाडियों के

द्वारा भी माल इधर से उधर ले जाया जाता था। रेलगाड़ियों का भाड़ा तो अधिक था ही—कभी कभी माल पहुँचने में अनायास पर्याप्त विलम्ब भी हो जाता था और ऐसा भी होता था कि माल पहुँचता ही नहीं था। कम से कम कीमती माल तो ठीक तौर से प्राप्त ही नहीं होता था। खो जाने या टूट-फूट होने पर कम्पनी सरकार से हरजाना माँगना कोई हँसी-खेल नहीं था। दावा करो, प्रमाणित करो और फिर भी फैसला अंगरेज सरकार के पक्ष में—दस हजार के माल का एक हजार मिल गया तो यही गनीमत था।

मार्च का महीना था। हल्की हवा और साफ बादलों के मध्य मौसम भी सुहाना लग रहा था। मांझियों के मन में रह-रह कर गाने की हिलोर उठती थी और दब जाती थी। गाने की आज्ञा नहीं थी।

आधी रात जा चुकी थी और मांझियों के पहले दस्ते को मुक्त करने के लिए दूसरा समूह पहुँच गया। इसी समय हाथ में लालटेन लिए हुए एक स्त्री मूर्ति ने ऊपर वाले भाग में पदार्पण किया।

"होशियारी से काम लेना भाइयो। तुम लोगों के कन्धों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।" रमणी ने कहा।

"आप बिल्कुल भी चिन्ता न करें मा! आपका हाथ जब तक हमारे माथे पर है, कोई हमारा रास्ता नहीं रोक सकता।"

बड़ी शान्ति और खामोशी के साथ एक-दूसरे ने अपने अपने डाँड सम्हाल लिए। नौका फिर आगे बढ़ने लगी। कई मील निकल जाने के पश्चात् उस स्त्री मूर्ति ने पूछा।

"सामने जो दीप-शिखा दिखाई दे रही है, वह घाट है न?"

"हाँ मा!" माझी ने कहा।

"वहीं रुकना है न? दिलीपसिंह ने इसी स्थान पर मिलने का संकेत दिया था?"

"जी हां—अब हम बहुत पास आते जा रहे हैं। कुछ ही देर में घाट के पास नाव जा लग जायगी।"

"देख भाल कर मुड़ना। वह देखो हमारी रौशनी को देखकर ही शायद घाट पर से तीन वार लालटेन हिलाकर हमें इशारा किया गया है। ठीक है, दिलीप ही होगा—चलो नाव को किनारे से लगाओ।"

नौका किनार से लगी और दूसरे ही क्षण लगभग बीस-पचीस व्यक्ति उस नाव पर आगए। उनमें से एक ने आगे बढ़ कर उस रमणी के चरण छुए।

"वन्दे बहिन ! हम तुम्हारा इन्तजार कर रहे थे।"

"भीतर चले जाओ दिलीप ! अपने हिस्से की पचीस बन्दूकें, पचास तलवारे और पाँच सौ कारतूस ले लेना। इसके अलावा जो जरूरत पड़े उसका प्रबन्ध पास के डिपो या फौजी बैरकों से करना।"

"जैसी आपकी आज्ञा !"

दिलीप नामक युवक कमरे के भीतर पहुँचा—उसके साथी भी पीछे-पीछे गए और तमाम शस्त्रास्त्र लेकर बाहर आगए।

"आप हमे आशीर्वाद दे बहिन ! हम देश की स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सफल हों।"

"मेरा रोम-रोम तुम्हे आशीर्वाद दे रहा है दिलीप ! न जाने तुम्हारे जैसे कितने भाई चुपचाप अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं। कौन जानता है उनका नाम ? कोई इस बात की चेष्टा भी नहीं करेगा कि भारत की आजादी के संग्राम में मरने-खपने वाले कौन थे ? लेकिन हम नाम की लालसा क्यों करें। दिलीप ! भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि कर्म करना मानवीय शक्ति है परन्तु फलासक्ति रखना ही दानवता है। कर्म का फल तो मिलता ही है। यो [illegible] । स्वतन्त्रता की प्राप्ति ही हमारा वर्तमान योग है और जब हम उसे प्राप्त कर लेंगे तो भोग का आरंभ होगा। भोग मे शक्ति है कि वह भोगने वाले को भोगलेता है—"भोगा न भुक्ताः वयमेव भुक्ताः" इसलिए जो व्यक्ति निर्लिप्त होकर शासन-सूत्र का सचालन करेगे वे बचे रहेंगे अन्यथा भोग के बाद रोग को कोई नही रोक सकेगा।"

"आप साक्षात् देवी हैं। धन्य है हमारा देश जहाँ आप जैसी पुत्रियाँ अवतरित होती हैं।" दिलीप ने श्रद्धा-समन्वित स्वर में कहा।

"यह तो इस धरती का प्रसाद है दिलीप ! यहाँ देवियाँ ही पैदा होती है, दानवियाँ नही। हम तो बडे भाग्यवान् हैं भैय्या। हमारे पाप-कर्म भी एक मानवीय देन हैं।"

"वह कैसे बहिन !"

"इसलिए कि हमारे उन्ही पाप-कर्मों के संहार के लिए भगवान अवतार धारण करते हैं।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि हम सभी पाप करें-तभी भगवान बार-बार धराधाम पर पधारें।"

"हर बात का उल्टा अर्थ भी लगाया जा सकता है। इसका यह तात्पर्य नहीं है। कहना यह है कि हम पापी होकर भी धन्य है कि हमारे लिए क्षीरशायी सुखद शैय्या छोडकर "कठिन भूमिगामी" बन जाते हैं।"

"ओह ! बात का रंग ही बदल गया ..." दिलीप बोला

"लेकिन बहिन ! क्या सचमुच भगवान अवतार लेते हैं ? वे तो जन्म-मरण से मुक्त हैं और जिसका जन्म होगा उसका मरण भी, फिर ?" दिलीप ने एक नया प्रश्न किया।

"दिलीप ! बात बहुत साधारण सी है। यह तो तुम मानते ही हो कि प्रत्येक प्राणी उसी प्रभु का अंश है—"ईश्वर अश जीव अविनाशी" और जो अमर का अंश है वह कभी मर ही नहीं सकता। इसी प्रकार यह आत्मा भी अमर है। वस्त्रपरिवर्तन के समान ही आत्मा का रूप-परिवर्तन हो जाता है।"

"संभवतः इसी को ज्ञानियों ने पुनर्जन्म माना है।"

"और चोला बदलना भी यही है। परमात्मा में सोलह कलाओं का ऐश्वर्य मानते हैं। दो कला का प्रभाव जड़ पदार्थों में होता है, चार तक पशु-पक्षियों में और चार से आठ तक मानवों में दिखाई देता है। अब किसी आत्मा का उत्थान करना हुआ तो प्रभु उसे नौ, दस, ग्यारह अथवा बारह कला-समन्वित कर देते हैं। वही व्यक्ति दूसरों का मार्ग प्रदर्शक हो जाता है। चाहे वह साधू हो या नेता हो। जनता उसके पीछे चलती है। उसे अवतार मानती है और भगवान का रूप समझ कर उसकी पूजा करती है। राम,

कृष्ण, बुद्ध—यह सब उसी के चमत्कार हैं। प्रभु इसी प्रकार से अवतरित हो जाते हैं।"

"आज का उप ; काल धन्य है बहिन आपका। उपदेश सुन कर अपना जीवन अमर हो गया ..।" गदगद कण्ठ से दिलीप ने कहा। वह चेष्टा में था कि जय जयकार का नारा बुलन्द करे। परन्तु उसकी मुद्रा पर भावों को अंकित देख कर उस रमणी ने तत्काल तर्जनी अगुली होठों पर रख कर वर्जित कर दिया।

"बिल्कुल नहीं दिलीप! जिस खामोशी के साथ आए हो वैसे ही वापस लौटना है। बहिन की जयजयकार गुँजाने में केवल खतरा ही खतरा है। हमें अभी काफी दूर पहुंचना है ?"

दिलीप अपने साथियों के सहित तमाम शस्त्रादिक लेकर चला गया और तब नौका पुनः धारा की ओर मुड़ी।

एक स्थान पर पहुँच कर प्रातः काल हुआ, जहां बिल्कुल ही सून सान था। नाव को किनारे से लगा कर सभी लोगों स्नान ध्यान किया, भोजन बनाया-खाया और सन्ध्या के पश्चात् फिर अपने निश्चित मार्ग की ओर चल पड़े।

बिना किसी प्रकार की हलचल किए हुए नाव चली जा रही थी। चान्दनी फैल रही थी। सहसा एक माझी ने दूर पर एक बडा सा प्रकाश देखा और वह चौंक पडा।

"यह क्या है रामा !" उसने अपने साथी से कहा—"पता नहीं इतनी तेज रोशनी वाली नाव कौन की है।

"इसी तरफ चल रही है। तुम जाओ न, बहिन को बतादो।"

अपने डाँड छोड़ कर जिस समय वह भीतर पहुँचा तो महिला शस्त्रों के पास खड़ी हुई थी और पचास व्यक्ति उसके आस पास थे।

"आप लोग शहीद हैं, कौम के, वतन के। आप में हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी, बूढे भी और जवान भी परन्तु देश की आजादी का सपना सभी की आँखों में नाच रहा है। भगवान उसे सफल बनायें।"

और जैसे ही उसने जरा नजर उठाई तो देखा माझी सामने खड़ा हुआ था। उसके होंठ हिल रहे थे, वह कुछ कहना चाहता था।

"क्या है माझी !"

"मा ! सामने की तरफ से एक नाव इसी ओर आ रही मालूम होती है बड़ी तेज रोशनी है उस पर।"

"आप लोग यही रहें और अपने हाथों में हथियार ले लें। न जाने कब क्या हो ? चलो मैं ऊपर चलती हूँ।"

"थोड़ी देर में आने वाली नाव भी इस नाव के पास पहुंच गई। आगन्तुक नौका के माझियो ने अपनी नाव को दूसरी नौका से सटा दिया और कई अंगरेज तथा भारतीय सिपाही दूसरी नौका में कूद पडे।

"इस नाव में तुम लोग क्या ले जारहे हो ?" सार्जेन्ट ने पूछा।

"कुछ भी नही है—हमारी रानी जी की तबियत खराब रहती है। हकीमो ने कहा है कि उनको पानी पर रहना चाहिए।" एक माझी ने कहा।

"कहाँ है तुम्हारी रानी !"

"देखते नही हो—तुम्हारे सामने ही तो खडी हैं।" इतना कह कर उसने नारी की ओर इशारा किया।

"हम इस नाव की तलाशी लेंगे—आप क्या कहना चाहती हे ?" सार्जेन्ट ने महिला की ओर देखते हुए कहा।

"तलाशी क्यों ली जायगी—।"

"अंगरेज सरकार की तरफ से हमारा हुकुम चलेगा।"सार्जेन्ट ने अपने गोरे पन का अभिमान और दर्प प्रदर्शित करते हुए कहा।

"यहाँ हमारा हुकुम चलेगा—-किसी और का नही।"

हेकडी बाज अंगरेज सार्जेन्ट ने जैसे ही बल पूर्वक भीतर घुसने की चेष्टा की—त्यों ही सनसनाती हुई गोली उसके सीने से पार हो गई। वह चारों कोण चित्त लेट गया। इसी बीच में, पास वाली नौका से गोलावारी आरम्भ हो गई। इस ओर से भी डट कर गोलियों का उत्तर दिया गया। सहसा एक छोटी-सी तोप का गोला पहली नाव के मध्य में गिरा और उसके विस्फोट

के साथ ही सारी नाव मे आग लगा गई। प्राण बचाने की नजाह पाकर लोग पानी में कूद पड़े और तब अगरेजों ने चमकते हुए काले सिरों को निशाना बनाया। लगभग एक घण्टे के युद्ध के पश्चात् शेष लोग बन्दी बना लिए गए-जिनमें वह नारी भी थी जो इसका संचालन कर रही थी।

अगरेजों को शस्त्र के नाम पर कुछ भी हाथ नही लगा।

: २१ :

बहादुरशाह 'जफर' मुगलिया सल्तनत के अन्तिम बादशाह थे। कहने को बादशाह, जिसकी शक्ति शतरज के बादशाह के कुछ भी अधिक नही थी। उनका हिन्दोस्तान सिर्फ लाल किले की चहारदीवारी था। गरीब शायर एक पेन्शनयाफ्ता रईस था।

यो तो मुगल-साम्राज्य का पतन औरंगजेब के युग से ही आरम्भ होगया था और १८३७ ई० तक उसके चारो पाए डगमगाने लगे थे। दिन-रात के घरेलू झगड़े, भाई के विरुद्ध भाई का षडयंत्र, मुगल बादशाहो की भोगलिप्सा और अकर्मण्यता ने आग मे घी का काम किया।

जफर का जन्म १७७५ ई० को हुआ। उनके पिता अकबरशाह सदैव अप्रसन्न रहे। अग्रेजो ने बहादुरशाह को युवराज घोषित कर दिया था फिर भी उनका जीवन प्रसन्नता मे व्यतीत नही हो सका। जब ६२ वर्ष के हुए तब सिहासन नसीब हुआ। १८३७ ई० मे शतरंजी बिसात के मोहरो में बहादुर-शाह को बादशाह की सम्मानोपाधि प्राप्त हुई। जवानी के दिनो में भी केवल ५००) मासिक मिलता था। उसी मे से चार रुपया मासिक अपने उस्ताद जौक साहब को देते थे।

जहाँ तक शिक्षा-दीक्षा का प्रश्न है लाल किले की "उर्दू ए मोअल्ला" उनको विरासत मे मिली—टकसाली, प्रामाणिक तथा लालित्यपूर्ण उर्दू। लेकिन हृदय का आकर्षण प्राकृतिक काव्य की—कुदरती शायरी की ओर था। जीवन के आरम्भ में उन्हे शाह 'नसीर' जैसे उस्ताद मिले, जो कठिन-काव्य में विश्वास रखते थे, मुश्किल जमीन, अटपटे काफिये, रदीफो मे गजल कहना ही वह कमाले शायरी कहते थे—काव्य में चमत्कार ही चाहते थे। बुढ़ापे में उनको 'ज़ौक़' मिले। लेकिन पत्थर पर पड़ी हुई लकीरों की तरह बहादुरशाह अपना रास्ता नही बदल सके। जौक शाह नसीर के शिष्य रह चुके थे इस लिए जफर के लिए वे उपयुक्त भी थे। मोमिन दरबार मे जाते

नही थे और ग़ालिब की शायरी की तरफ जफर का आकर्षण नही था। बहादुरशाह ने अपने जीवन में कुल मिलाकर ३६७८० शेर लिखे।

× × × ×

चाँदनी रात में लाल किला दूध में धुला हुआ, बिल्कुल हल्का लाल-गुलाबी-सा लग रहा है। बारादरी मे बहादुरशाह जफर की तरफ से कितने ही कवियो को आमन्त्रित किया गया है। इनमें मोमिन, ग़ालिब, दाग़, ज़ौक, निज़ाम, ममनून और नसीम की शिरकत कर रहे हैं। यह मुशाअरा १८५६-५७ के लगभग दिल्ली में हुआ। कहा जाता है कि तिल रखने को जगह नहीं थी और इसमे अंगरेज अधिकारी लोग भी आए थे। पुरानी परम्परा के अनुसार शमआ सामने पहुँचने पर शायर अपने काव्य-रस से उपस्थित समुदाय को विभोर कर रहे थे। उपस्थित शोरा मे से, जिन लोगों ने पर्याप्त यशोपार्जन किया उनमें सबसे युवक मिर्जा दाग थे (१८३१-१९०५ ई०) आपके पिता नवाब शम्शउद्दीनखाँ, लुहारू रियासत के राजा जियाउद्दीन खाँ "नैयर" के बडे भाई थे। छह वर्ष की आयु में ही दाग़ के सिर से पिता का साया जाता रहा और तब इनकी माता ने सम्राट बहादुरशाह के सुपुत्र मिर्ज़ा मुहम्मद सुलतान 'फखरू' से पुनर्विवाह कर लिया और 'शौकत महल' का खिताब पाया। तकरीबन दस साल के ही थे कि आपने मुस्कराते हुए बज्मे अदब की चौखट पर पैर रख दिया था। आपने फ़रमाया :—

"बेकार मुफ्त खाक उड़ाती फिरी सबा।
गोशा उलट दिया न किसी की नकाब का॥
साकी तो मुझको चाट लगा कर अलग हुआ।
धो-धो के पी रहा हूँ पियाला शराब का॥
रोजा रखें नमाज पढ़ें, हज अदा करें।
अल्लाह यह सवाब भी है कि अज़ाब का?
जब मैं करूँ सवाल तो कहते हैं "चुप रहो"।
क्या बात है! जवाब नही इस जवाब का॥
खुशबू वही, वही है नज़ाकत, वही है रंग।
माशूक़ क्या है फूल है तू भी गुलाब का॥"

वाह-वाह की धुन बँध गई। सम्राट अपने छोटे से नाती की कामयाबी पर बड़े प्रसन्न हुए और तत्काल ही मोतियों की माला इनाम में दे डाली। इसके बाद रामपुरी मियाँ निज़ामशाह (१८१९-१८६९ ई०) तशरीफ लाए। जनाब अदाबन्दी के बड़े मश्शाक़ थे। आपने कहा :—

"अँगड़ाई भी वोह लेने न पाये उठाके हाथ।
देखा जो मुझको, छोड़ दिये मुस्कुरा के हाथ।।
वे साख़्ता निगाहें जो आपस में मिल गईं।
क्या मुँह पर उसने रखलिए आँखें चुराके हाथ।।
वोह जानुओं में सीना छुपाना सिमट के हाय!
और फिर सम्भालना वोह दुपट्टा छुड़ाके हाथ।।
देना वो उसका सागरेमय याद है 'निजाम'।
मुंह फेर कर इधर को उधर को बढ़ाके हाथ।।"

शृङ्गारिक-काव्य ने श्रोताओं को रस-विभोर कर दिया और वाह-वाह की ध्वनि से सारा वातावरण प्रतिध्वनित होगया।

इसके बाद पं० दयाशंकर 'नसीम' (१८११-१८४३ ई०) तशरीफ लाए। आप काश्मीरी ब्राह्मण थे, लखनऊ निवासी और महाकवि 'आतिश' के शिष्य गजलें भी कहीं और मसनवी भी—'गुलजारेनसीम' केवल २५ वर्ष की आयु में समाप्त कर लिया। आपने फ़रमाया—

"जब न जीते जी मेरे काम आयगी।
क्या यह दुनिया आक़बत बख़्शायगी।।
जब मिले दो दिल मुखिल फिर कौन है।
बैठ जाओ खुद हया उठ जायगी।।
गर यही है इस गुलिस्ताँ की हवा।
शाखे गुल इक रोज झोंका खायगी।।
जब करेगा गर्मियां वोह शोला रू।
शमये महफ़िल देखकर जल जायगी।।
जाँ निकल जायेगी जब तन से 'नसीम'।
गुल को बूए गुल हवा बतलायगी।"

कुछ दार्शनिक और कुछ वास्तविक काव्य की धारा ने लोगो को बड़ा प्रभावित किया और सभी ने साधुवाद दिया। अब बादशाह सलामत के उस्ताद 'ज़ौक' तशरीफ लाए। वह शायर जो आस्माने शायरी पर सितारे की तरह नहीं चाँद की तरह चमकता रहा। पहलवान शायरों को चारो शाने चित्त करने वाला, फ़िलबदी गजल कहने वाले अर्थात आशुकवि।

"तेरे कूचे को वह बीमारे गम दारुश्शफा समझे।
अजल को जो तबीब और मर्ग को अपनी दवा समझे॥
सितम को हम करम समझे जफ़ा को हम वफ़ा समझे।
और इसपर भी न समझे वोह,तो उस बुतको खुदा समझे॥
समझ ही में नही आती है कोई बात "ज़ौक" उनकी।
कोई जाने तो क्या जाने, कोई समझे तो क्या समझे॥"

वाह वाह और मुकर्रर इरशाद (पुनः पुनः) की पुकार के मध्य उस्ताद ज़ौक ने एक-एक मिसरे को कई बार पढ़ा। इसके बाद तशरीफ लाए हज़रत 'मोमिन'—हकीम मुहम्मद मोमिन खाँ (जन्म १८०० ई०)। ख़ारजी अर्थात बनावटी शायरी के चक्कर से बाहर निकलकर आप ग़ज़ल के उस्ताद सिद्ध हुए—खालिस कलाकार। आपने फ़रमाया :—

"वोह जो हममें तुम में करार था, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
वोही वादा यानी निबाह का, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
वोह जो लुत्फ मुझ पे थे पेश्तर, वोह करम कि था मेरे हाल पर।
मुझे सब है याद ज़रा ज़रा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
वोह नए गिले, वोह शिकायतें, वोह मज़े-मज़े की हिकायतें।
वोह हरेक बात पै रूठना, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
कभी हम में तुम में भी चाह थी, कभी हमसे तुमसे भी राह थी।
कभी हमभी तुमभी थे आश्ना, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
वोह बिगड़ना वस्ल की रात का, वोह न मानना किसी बात का।
वोह नहीं-नहीं की हर आँ अदा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥"

साधुवाद की ध्वनि से मण्डप मुखरित होने के पश्चात स्वयं बादशाह बहादुरशाह 'ज़फ़र' ने अपना कलाम सुनाया—(१७७५-१८६२ ई०)

"की सहर हमने तड़प कर हिज्र की शब मह्जबी
रात भर सोया किये तुम माहताबी में पड़े ।।
गर न खाये साथ अपने वोह, नही खाने का लुत्फ।
है मजा जब हाथ दोनों का रकाबी में पड़े ।।
ऐ 'जफ़र !' जाने वोह कैफीयत निगाहे मस्त की ।
आँख उस मयकश की जिस पर बे हिजाबी में पड़े ।।"

शायर की हैसियत से अधिक वाहवाही प्राप्त करने के पश्चात महफिल में हजरत ममनून—मीर निजामुद्दीन सोनीपती ने फरमाया :—

यह न जाने थे कि उस महफिल मे दिल रह जायगा ।
हम यह समझे थे चले आयेगे दम भर देख कर ।।
"बुलबुल ही इस चमन से न कुछ नौहागर गई ।
बादे सहर भी आके दमे सर्द भर गई ।।

चन्द अशआर पर ही काफी दाद लेकर जब सोनीपती शायर ने खुशी महसूस की तब मिर्जा असदुल्लाखां 'गालिब' (१७९७-१८६९ ई०) तशरीफ लाये—उच्चकोटि के शायर । आपने फरमाया :—

"हजारों ख्वाहिशे ऐसी कि हर ख्वाहिश पै दम निकले ।
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले ।।
मगर लिखवाये कोई उसको खत तो हमसे लिखवाये ।
हुई सुबह और घर से कान पर रख कर कलम निकले ।।
हुई जिनको तवक्कोह खस्तगी की दाद पाने की ।
वोह हमसे भी जियादा खस्तये तेगे सितम निकले ।।
मुहब्बत में नहीं है फर्क जीने और मरने का ।
उसी को देखकर जीते हैं जिस काफ़िर पै दम निकले ।।
कहाँ मयखाने का दरवाजा 'गालिब' और कहाँ वाइज ।
पर, इतना जानते हैं, कल वोह जाता था कि हम निकले ।।

बड़ी रात तक विभिन्न शायरों ने अपने कलाम से, काव्यधारा से, लाल किले के पाषाणों तक को पिघलाये रखा ।

देश में जब भुखमरी और अनाचार का बोलबाला था, उस समय भी शोरा और कवि लोग दिल-बहलाव की शायरी में लगे हुए थे ।

: २२ :

बैंरकपुर में ६ फरवरी १६५७ ई० को १६ नम्बर की पल्टन ने नए कारतूसों का उपभोग करने से इन्कार कर दिया था। बंगाल भर में उस समय कोई गोरी पलटन नही थी। क्योकि अंग्रेजो का विश्वास था कि बंगाल सभी प्रकार से सुरक्षित है। अन्यथा जहाँ-जहाँ भारतीय फौजे रहती थी, वहाँ सभी स्थानो पर एक-दो अंग्रेजी पलटनें अवश्य ही रखी जाती थी। इससे यह लाभ था। कि विजित-पराजित हिन्दुस्तानी सैनिक अंग्रेजो से भयभीत रहते थे और एक तथ्य यह भी था कि यदि कोई अंग्रेज सैनिक किसी भारतीय अधिकारी का अपमान भी करदे तो उसके लिए उसे स्वयमेव क्षमा किया हुआ समझा जाता है। यहाँ तक कि यदि कोई गोरा सैनिक किसी की हत्या भी करदे तो उसे दण्ड स्वरूप इंगलिस्तान वापस भेज दिया जाता। उसे प्राण दण्ड अथवा कारावास का दण्ड नही दिया जाता था। इसके अतिरिक्त जन-साधारण तो निहत्था ही था। कुछेक राजे-महाराजो अथवा रईस उमरावों को छोड़कर दूसरे लोगो को बन्दूको आदि का भी लयसेन्स नही दिया जाता था।

फौजो मे विभेद करने के विचार से "काली पलटन" मे भारतीय सिपाही रखे जाते थे और गोरी फौज का निवास स्थान "लाल पलटन" के नाम से पुकारा जाता था। इस ईर्ष्या और श्रेष्ठ-भावना का प्रभाव यहाँ तक था कि "काली परेड ग्राउण्ड" और "लाल परेड ग्राउण्ड" के नाम से मैदानो को पुकारा जाता था।

बैरकपुर के अंग्रेज अधिकारियो ने बड़ी बुद्धिमत्ता से काम लिया। उनके मन मे कुछ खटका उसी दिन से हो गया जिस दिन मगल पाण्डे के साथ ही साथ १६ नम्बर क तमाम पलटन ने नए कारतूस खोलने मे मना कर दिया सैनिको की जिद से चिन्तित होकर एक गोरी पलटन बैरकपुर में बुलाली गई थी। यह फौज बरमा से बुलाई गई थी। इसके आने में काफी समय लगा

क्योंकि उस समय स्थल मार्ग से भारत पहुँचने का कोई साधन नही था और जल-मार्ग से कई सप्ताह लग जाते थे।

अंग्रेज अधिकारियों की यह योजना थी कि अंग्रेजी पलटन मँगाकर उसकी उपस्थिति में ही १६ नम्बर की पलटन से हथियार रखवा कर उन लोगो को बरखास्त कर देंगे और जो लोग मुखिया हैं, उनको भारी-भारी सजा दे डालेंगे ताकि दूसरी फौजो में कोई उपद्रव न खड़ा हो सके।

गोरी-फौज बैरकपुर पहुंच गई और उसने कई दिन तक जब पूरा-पूरा आराम कर लिया तब २६ मार्च १८५७ ई० को हिन्दुस्तानी १६ नम्बर की पलटन को परेड ग्राउण्ड पर बुलाया गया।

एकाएक इस प्रकार से पलटन को परेड-ग्राउण्ड पर बुलाया गया तो सिपाहियों के मन में स्वाभाविक रूप से शंका उत्पन्न हो गई।

"ऐसा लगता है मिस्टर सिह ! कि अंग्रेज लोगो का विश्वास हम पर से उठ गया है और आज हमको जान-बूझ कर परेड-ग्राउण्ड में बुलाया जा रहा है।" एक सैनिक ने लैंन्स-नायक मिस्टर सिंह से अपनी शका प्रदर्शित करते हुए उसका समाधान चाहा।

"तुम ठीक कहते हो। मेरा भी ख्याल ऐसा ही है। आज शायद हम लोगों से हथियार रखवा लिए जाएँगे।"

"और अगर हमने चुपचाप अपने हथियार अंग्रेजी फौज के चरणों में रख दिए तो निश्चित रूप से बिना कुछ करे-धरे हमारे कुछ नेताओं को फाँसी पर चढ़ा दिया जायगा या फिर तोप के मुँह से बाँध कर उड़ा दिया जायगा।" मंगल ने कहा।

"मेरी राय यह है पाण्डे, कि हम लोगों को ३१ मई तक चुप रहना चाहिए और हथियार रख देना चाहिए।"

"मैं समझता हूं नायक जी ! इसके मानी हमारी राजनैतिक मौत होगी। अगर अंग्रेजी सरकार हमारी पलटन को दबा सकने में समर्थ सिद्ध हुई तो निश्चित रूप से देश के सभी सैनिकों को दमन की चक्की में पीस डाला जायगा और भारतीय क्रान्ति का आरम्भ ही गर्भपात से होगा।" मंगल ने कहा।

"मैं तुम्हारी राय की कद्र करता हूँ मंगल पाण्डे ! लेकिन कहीं ऐसा न हो कि समय से पूर्व क्रान्ति की आग भड़क जाय और हम अपने उद्देश्य में सफल न हो सकें।"

"आग तो जब भी जलेगी, उसमें पड़ने वाली प्रत्येक वस्तु जल कर भस्म हो जायगी; प्रचण्ड तूफान का सामना करने वाली नौका डूबने से बचेगी नहीं। इसी प्रकार अंग्रेजी साम्राज्य की रक्षा सम्भव नहीं है। क्रान्ति चाहे ३१ मई को आरम्भ हो या २९ मार्च को—बलिदान की घड़ियाँ समय की प्रतीक्षा नही किया करती।"

"तो तुम्हारी राय क्या है ?"

"मै समझता हूँ कि अंग्रेज लोग यदि हमारे साथ सीधा और भला व्यवहार करे तो हम लोगों को परेड करके खामोशी के साथ वापस आ जाना चाहिये।"

"और यदि वे लोग हमें हुकुम दे कि हम लोग अपने हथियार रखकर बैरकों में वापस लौट आए तो ?"

"ऐसा करना एक खतरा मोल लेना होगा और एक बड़ी भारी बेइज्जती का सामना भी करना पडेगा।"

"फिर तुम क्या कहते हो ?" नायक ने पूछा।

"हमें डट कर मुकाबला करना चाहिए। फिर जो कुछ भी हो उसका परिणाम, हम उसके लिए तैय्यार है।" मंगल ने उत्तर दिया।

"ऐसा न हो मंगल कि इतिहास के पृष्ठों पर तुम्हारी यह वीरता तुम्हारी भूल लिखी जाय।"

"लेकिन वह मेरे खून की लाली से सदा चमकती रहेगी। लोग चाहे उसे भूल कहे या क्रान्ति का मूल कहे। मै अपने जीवन के फूल को स्वतन्त्रता की देवी के चरणों में उत्सर्ग कर चुका हूँ। नायक साहब ! भूल की चिन्ता बड़े लोगों को होती है और छोटों की तो भूल भी छोटी होती है। देश के लिए शहीद होने वाले लोग नीव के पत्थर होते हैं। राष्ट्र का भवन निर्माण होने के पश्चात् देखने वाले भवन के विभव और वैभव की ओर आकर्षित होते है।

नींव के पत्थर उस समय भी चुप रहते है। क्योंकि आत्म-विज्ञापन के प्रति उनका कोई मोह नही होता।"

"किसी हद तक तुम्हारी बात सही मालूम होती है।"

"और यह भी समझ लीजिए कि शायद इतिहासकार इस घटना का वर्णन भले ही करदे, एक सैनिक के विषय मे उनके मन में जिज्ञासा उत्पन्न नही होगी।"

"दुनियाँ का यही नियम है मगल ! सैनिक लड़ते हैं और श्रेय मिलता है सेनापति को। फिर लोग इसी आशा में वृक्षारोपण करते हैं कि उनकी आगामी सन्तान उसके फल प्राप्त कर सकेगी।"

"मेरा विश्वास है कि यदि इस जन्म मे अपनी मजिल तक नहीं पहुंच सका तो दूसरे जन्म मे अवश्य ही अपने देश की स्वतन्त्र भूमि पर मेरी अन्तिम स्वाँस बलिदान होगी। मेरा और भारती का यही विश्वास है।" मंगल ने कहा।

"अरे हाँ, यह बात तो मेरे ध्यान से ही उतर गई थी। आज कल भारती का कुछ समाचार नहीं मिल रहा है।"

"इस क्रान्ति के संघर्ष में भारती मंगल से दो कदम आगे दौड़ रही है। देश के कोने-कोने में, जन-साधारण की टोलियों के बीच हथियार पहुंचाने का काम भारती कर रही है। भगवान उसे सफलता प्रदान करे !"

"बहुत बड़ा त्याग है उस लडकी का ! प्रणय की वेदी पर प्राणो का बलिदान चढा कर, देश की आजादी के लिए लड रही है भारती !" नायक ने कहा।

"आप ठीक ही कहते हैं। बिना बलिदान के ससार में कभी कुछ नही मिलता।"

पलटन का प्रत्येक सिपाही मंगल के विचार से सहमत हुआ और सब लोग इस निश्चय पर पहुंचे कि हथियार रखने के स्थान पर उनका प्रयोग करना अधिक उपयोगी होगा। इसी भावना से परिपूर्ण तमाम पलटन परेड के मैदान में जाकर खड़ी हो गई। मेजर ह्य सन ने परेड करा कर सिपाहियों को हथियार रख देने की आज्ञा दी।

सारजेन्ट मेजर की यह आज्ञा सूखी घास में आग लगा देने के समान प्रमाणित हुई। तमाम सैनिक अपने हाथों में बन्दूक लेकर जहाँ के तहाँ खड़े रह गए और मंगल पाण्डे ने आगे बढ कर सारजेन्ट मेजर से कहा—

"हम लोग अपने हाथ से हथियार नहीं छोडेगे।"

"तुम लोगों ने फरवरी के महीने में भी नए कारतूस खोलने से इनकार कर दिया था और आज फिर उसी बात को दोहरा रहे हो" सारजेन्ट मेजर ने कहा।

"हम अपना धर्म और ईमान नहीं बेच सकते।"

"मैं हुकुम देता हूं इस जवान को गिरफ्तार कर लिया जाय!" मेजर सारजेन्ट ने ज़ोर से आज्ञा दी।

एक अजीब सन्नाटा था, एक निराली खामोशी थी। मेजर सारजेन्ट की आज्ञा पालन करने के लिए कोई भी सिपाही आगे बढ़कर नहीं आया।

मगल ने तमाम स्थिति को तत्काल समझ लिया और उसने अपनी बन्दूक की एक गोली से सारजेन्ट मेजर ह्यूसन को ढेर कर दिया।

"भारत की क्रान्ति चिर जीवी हो। हिन्दुस्तान हमारा है!!" मंगल ने जोरो से नारा लगाया और १९ नम्बर की पलटन के तमाम सिपाहियों ने अपने गम्भीर और तेज कण्ठों से समस्त परेड ग्राउण्ड को प्रतिध्वनित कर दिया। समय और हालत की नजाकत को पहचानते हुए लेफ्टिनेन्ट बाघ अपने घोड़े को बढ़ा कर आगे लपका।

"अटैन्शन!" बाघ ने जोर से कहा। असर के नाम से, यह प्रभाव हुआ कि मगल पाण्डे की दूसरी गोली सनसनाती हुई लेफ्टिनेन्ट की छाती को तोड़ कर दूसरी ओर निकल गई। वह धरती पर गिर पडा और जैसे ही मगल पाण्डे ने अपनी बन्दूक को तीसरी बार भरने का प्रयत्न किया, लेफ्टिनेन्ट बाघ ने अपनी पिस्तौल से पाँच-छ: गोलियाँ मंगल की ओर चलाईं लेकिन कोई भी गोली सफल नहीं हो सकी। मगल ने तत्काल अपनी तलवार निकाल कर इस दूसरे अंग्रेज अफसर को भी सदैव के लिए मृत्यु की गोद में सुला दिया।

इसी समय नारों की आवाज सुन कर दौडता हुआ कर्नल व्हीलर वहाँ आया।

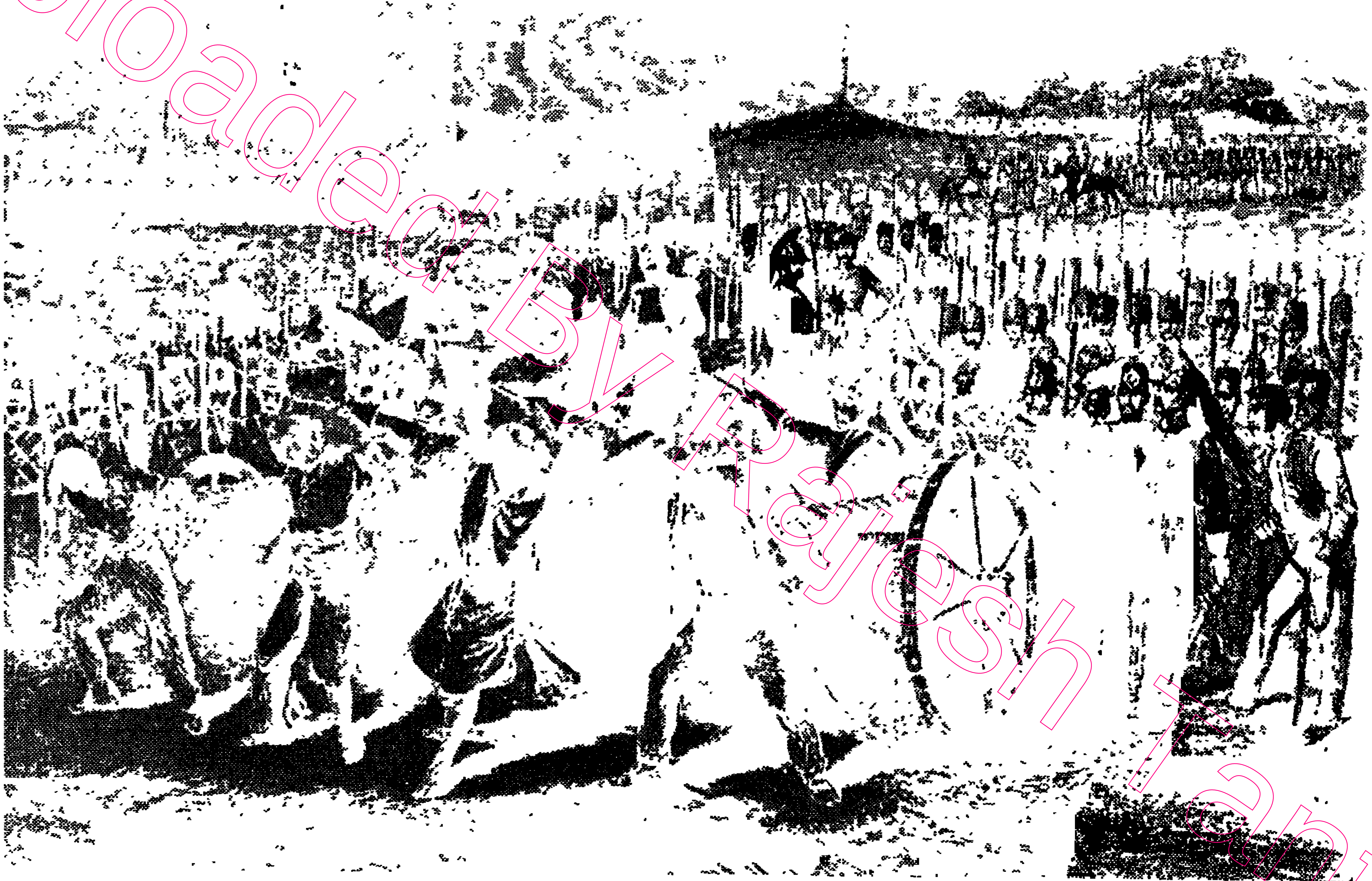
"मंगल पाण्डे को फौरन गिरफ्तार कर लो !"

एक भी सिपाही आगे नहीं बढा और मंगल अपनी सफलता पर मुस्कराने लगा।

पलक मारते ही बरमा से बुलाई हुई गोरी-पलटन परेड ग्राउन्ड में दाखिल हुई और कर्नल व्हीलर के इशारे पर गोरी फौज ने अंधा-धुन्ध गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया। तब भारतीय सैनिकों की ओर से भी गोली का उत्तर गोली से दिया जाने लगा। जिन कारतूसों को दान्तों से खोलने के लिए भारतीय सैनिकों ने इन्कार कर दिया था उन्ही कारतूसों को दान्तों से काट कर प्रसन्नता के साथ अंगरेजों के विरुद्ध प्रयोग होने लगा।

मंगल की गोली खाली नहीं जाती थी और वह ताक कर जिसे अपना लक्ष्य बनाता था उसके प्राण गोली के साथ दूसरी ओर निकल जाते थे। सैकड़ों सिपाहियों के मध्य में, कभी बन्दूक से और कभी तलवार से संघर्ष में अड़ा हुआ मंगल साक्षात शंकर के समान प्रलयंकर दिखाई दे रहा था। लगभग डेढ़ घन्टे की गोला बारी के पश्चात् मौका पाकर व्हीलर ने एक गोली मंगल के दाहिने कन्धे में मारी जो उसके कन्धे को तोड़ कर दूसरी ओर निकल गई। घायल मगल धरती पर गिर पड़ा। सैनिको में से जो लोग बच रहे थे उनके सहित, गोरी फौज ने मगल को भी बन्दी बना लिया।

गदर में भारतीय सिपाहियों को तोपों से उड़ाया जाना



सम्राट बहादुरशाह ज़फ़र



बेग़म ज़ीनतमहल



: २३ :

"तुमने अंगरेज सरकार के खिलाफ लोगो में बगावत पैदा की है, उनको हथियार बाँटे हैं—तुमने बडा भारी अपराध किया है। इसके बारे में तुम्हारा क्या कहना है ?" गोरे अधिकारी ने पूछा।

"किसकी सरकार और कैसी सरकार ? कोई विदेशी आदमी हमारी धरती का मालिक कैसे हो सकता है। भारत में केवल भारतीयों की ही सरकार हो सकती है। इसलिए हर ऐसे डाकू के खिलाफ हमें हथियार उठाने का हक हासिल है जो हमारे घर में घुस आया है।" इतना कहते-कहते युवती का मुख जोश के कारण लाल हो गया।

"तुम्हारा नाम ?" दूसरे अधिकारी ने दरयाफ्त किया।

"भारती।"

"कहाँ की रहने वाली हो।"

"तमाम देश की—मैं भारत की भावना हूँ। तुम मुझे कहाँ-कहाँ खोजने का प्रयत्न करोगे।" भारती ने उत्तर दिया और उस अगरेज अधिकारी की समझ में कुछ भी नही आ सका।

"तुम अपनी सफाई में क्या कहना चाहती हो ?" तीसरे आफीसर ने पूछा।

"सफाई किस बात की ! मेरा जो फर्ज था मैंने वही किया है। जो लोग अपने कर्त्तव्य से पीछे फिरते हैं, बचाव का रास्ता वे ही ढूँढते हैं। मैंने जो मार्ग अपनाया था उसका परिणाम पहले ही सोच लिया था।"

'अगर तुम माफी माँगलो और हमें यह बता दो कि तुमने कहाँ-कहाँ हथियार दिये हैं तो हम तुम्हारी जान बख्श देंगे।" प्रलोभन देते हुए एक अंगरेज अधिकारी ने कहा।

"जो चीज किसी न किसी दिन जायेगी ही, उसे बचाकर रखने की चेष्टा व्यर्थ है फिरंगी ! बहादुर लोग मौत को खुशी से गले लगाते हैं, कायर रोते हैं, गिडगिड़ाते हैं फिर भी मौत उन पर दया नही करती। फिर मौत से

डरना क्या ?" भारती ने संयत वाणी में कहा।

"हम तुमको फाँसी की सजा देंगे।"

"वह तो पिछले बीसियो वर्षों से तुमने सारे भारत को दे रखी है। परन्तु अब तुम्हारी फाँसी का फन्दा तुम्हारा इन्तजार कर रहा है फिरंगी! तुम्हे उसके लिए तैयार रहना चाहिए।"

फौजी ट्रिब्यूनल के सामने बन्दी वेष मे खडी हुई भारती—शरीर पर केशरिया साड़ी, रण-चण्डी के समान बाल बिखरे हुए, धूल से भरे हुए चरण—साक्षात भारत माता जैसी, वह मानो देश की साकार भावना थी।

तीनो अंगरेजों ने बड़ी देर तक कागजों को लौट-पलट कर देखा और अन्त में वे सभी एक निर्णय पर पहुँचे। बीच वाले अधिकारी ने एक कागज पर कुछ लिखा और शेष दोनों व्यक्तियों ने उस पर हस्ताक्षर कर दिए। इसके बाद बीच वाले अधिकारी ने उसे पढकर सुनाया।

"फौजी ट्रिब्यूनल की राय में भारती ने अंग्रेजी सरकार को उखाड फेकने का जुर्म किया है। उसने बागी लोगों को हथियार दिये है। हमारी राय मे यह बड़ा सगीन जुर्म है और इसके लिए हम उसको मौत की सजा देते हैं। परसो सुबह छह बजे फाँसी दे दी जाय।"

भारती के निश्चल मुख पर प्रसन्नता की लहर दौड गई।

"आपने मुझे अमर बना दिया। इसके लिए धन्यवाद।" भारती ने तीनो अंग्रेजों को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। सभ्यता और शिष्टाचार से प्रेरित अंग्रेजों ने अपना-अपना हैट उतार कर भारती को सलाम किया।

"अजीब हिन्दुस्तान है। मौत की सजा देने वालो को भी धन्यवाद देते हैं।" चेयरमेन ने कहा।

"यह हमारी सस्कृति है साहब बहादुर! यदि भारतीय इतने विनम्र और सभ्य नहीं होते तो अंग्रेजी सरकार के कदम यहाँ नही पडते। फिर भी अपनी सामान्य घृणा यानी नफरत को जाहिर करने के लिये हम लोगों ने तुम्हारा नाम 'फिरंगी' रख दिया है।" भारती ने कहा।

"फिरंगी? फिरंगी का मतलब क्या होता है?"

"कोढ नाम का एक रोग होता है अंग्रेज बहादुर! जिसे आप लोग

अपनी भाषा मे "लौप्रासी" कहते है। हमारी वैद्यक में १८ प्रकार का कोढ़ माना गया है। इसमे से एक कोढ ऐसा भी होता है कि आदमी का तमाम बदन सफेद हो जाता है—उसी को फिरग कहते हैं। जिसको यह कोढ हो जाता है उसे फिरगी पुकारते है। तुम लोग हमे काला आदमी कहकर पुकारते हो न ? तो हम लोग भी तुम्हें फिरगी के नाम से बुलाते हैं।"

"ओह !"

इसके पश्चात् भारती को अग्रेज सिपाहियों के पहरे में उसी बैरक में बन्द कर दिया गया जहाँ वह पिछले कई दिनों से वन्दिनी बनी हुई थी।

भारती की बैरक मे एक गीता, एक रामायण मौजूद थे। उसका नित्य का काम था स्नान करने के पश्चात् गीता और रामायण का पाठ करना। भोजन के पश्चात् कुछ आराम करना और उसके पश्चात् पुनः भगवत्-भजन मे लग जाना। सायकाल को वह अपनी कोठरी के द्वार पर आकर बैठ जाती थी और कभी-कभी बड़बड़ाने लगती थी—

"मगल ! देश के मंगल के लिए भारती ने अपना सब कुछ दे डाला है। हे प्रभु ! तुमसे यही वरदान माँगती हूँ कि मरने से पहले एक बार उनके दर्शन पा सकूँ।"

लेकिन आज की शाम भारती के लिए निराशा से डूबी हुई थी। अभीतक उसे आशा थी कि एक न एक दिन मंगल से भेंट हो सकेगी परन्तु चौबीस घण्टों का जीवन ही शेष देखकर आज उसका मन रो उठा। संध्या के डूबते हुए सूर्य को देखकर उसके नेत्रों में आँसू छलक आए और भारती ने चुपचाप अपनी केशरिया साड़ी के कोनो मे उनको ले लिया। करुणामयी का हृदय टूट रहा था।

तीसरे दिन बड़ी धूमधाम से भारती को फांसी देने की तैयारी की गई। भारत में यह पहले ढंग की फाँसी थी जो एक स्त्री को दी जा रही थी। चारों ओर फौज-पलटन लगादी गई थी और बीच में फाँसी का तख्ता था। निर्द्वन्द्व भारती आठ अंग्रेज सिपाहियों के मध्य फाँसी के फन्दे की ओर बढ़ी चली आ रही थी। उसके मुख पर असीम तेज था और आज उसका गौर-वर्ण शरीर ज्योतिर्मान हो रहा था।

"मिस्टर अग !" ट्रिब्यूनल वाले तीनों अधिकारियों में से एक ने कहा—"यह लड़की जान आफ आर्क जैसी मालूम हो रही है।"

"हाँ उसका चमकता हुआ चेहरा श्रद्धा के भाव जगा देता है।" उसने उत्तर में कहा—"क्या करें राजनीति का मामला ही ऐसा है। एक दिन अंग्रेज कौम ने उस नौजवान लडकी को भी जलाकर खाक कर दिया था और आज........।"

इसी समय भारती फाँसी के फन्दे के सामने जाकर खड़ी हो गई। धीरे-धीरे सूर्य आसमान में चढ रहा था। चारों ओर लालिमा छा रही थी। भारती ने दोनों हाथ जोड़ कर कहा—"जहाँ भी हो मेरा प्रणाम स्वीकार करना प्रियतम ! काश तुम्हे अन्तिम समय एक क्षण के लिए भी देख पाती।"

पास ही खड़े हुए अंग्रेज अधिकारी का रूमाल हिला। भारती के गले में फंदा डालकर खीच लेने की आज्ञा हुई परन्तु फाँसी देने वाला भगी आगे नही बढा।

"फाँसी लगाओ।" उस अंग्रेज ने चिल्लाकर कहा।

लेकिन उत्तर मे मौन ही मिला।

"तुम सुनता है मैन ?" भंगी की ओर देखते हुए अंग्रेज बोला।

"यह काम हमसे नहीं होगा। आदमी के गले में फंदा डालने वाले मजबूत हाथ किसी बहिन-बेटी के गले तक नही पहुंच सकेंगे साहब ! आखिर हम भी हिन्दुस्तानी हैं।" इतना कहकर वह हरिजन पीछे हट गया।

ट्रिब्यूनल के तीनों अधिकारियों ने समय की गति को पहचाना और हँसकर उस मेहतर को शाबाशी भी दी। राजनैतिक चाल का सहारा लेकर उन्होने भारती को नीचे उतार लिया और एक बन्द मोटरगाड़ी मे बैठाकर चार अंग्रेज फौजियों के साथ, एक परवाना देकर, सामने की ओर भेज दिया।

: २४ :

यथा समय मगल पाण्डे और उसके साथियो का कोर्ट-मार्शल किया गया। फौजी अदालत ने इन विद्रोहियो के, जो उचित समझे, वह बयानात लिख लिए—शेष जो मन मे आया वह लिखा गया। शिष्टाचार को पूरा करने के लिए कोर्ट ने मगलपाण्डे से प्रश्न किया कि वह अपनी सफाई मे क्या कहना चाहता है। मगल ने नकारात्मक उत्तर दिया।

"जिस सम्पूर्ण जाति का जीवन आदि से अन्त तक बदमाशी, डकैती और लुटेरेपन से भरा हुआ है, उससे कभी भी न्याय की आशा रखना, पहले दरजे की मूर्खता है। झूठ तुम्हारा जीवन है, मक्कारी तुम्हारा पेशा है, समय पड़ने पर गधे को बाप बना लेना तुम्हारी राजनीति है—तमाम ससार मे तुम अपनी चौधराहट का सिक्का बिठाना चाहते हो। बन्दर न्याय की तरह, जहाँ कही दो बिल्लियाँ लडते देखते हो, तत्काल पहुँच जाते हो। चोर के सामने साहूकार क्या सफाई दे सकता है ? तलवार की धार के नीचे खडा हुआ व्यक्ति कब तक अपनी गर्दन बचा सकता है। आप जो कुछ करना चाहते हैं कर डालिए।"

थोडी देर बाद कोर्ट के अधिपति ने घोषित किया—"अगरेज सरकार के विरुद्ध हथियार उठाने, अफसरों की हुक्म अदूली करने और बगावत करने के जुर्म में मगलपाण्डे को फाँसी की सजा दी जाती है।

"सिर बाँधे कफनवा हो राम, शहीदो की टोली निकली" एक मीठी ध्वनि से मगल गा उठा। अंग्रेज लोग चकित-थकित थे कि इस जवान पर फाँसी की सजा का कोई प्रभाव नही पडा।

मगल के साथियों में से किसी को दस वर्ष की सजा, किसी को पाँच की, तो किसी को दो वर्ष की सजाएँ दी गईं। इन सजायाफ्ता आदमियो को भारत के विभिन्न भागों में भेज दिया गया।

कोर्ट ने यह भी घोषणा करदी कि ८ एप्रिल को प्रातःकाल मंगलपाण्डे को फाँसी दी जायगी।

× × × ×

किसी प्रकार अगरेजो को यह पता चल गया कि २४ नम्बर की पलटन भी बगावत करना चाहती है, इसलिए समय से पूर्व ही, अंगरेज पलटन इनकी बैरकों मे घुस गई और जबरन इन लोगो के हथियार छीन लिए गए।

८ एप्रिल का प्रभात अपने साथ नए जागरण का युग लेकर आया। उदय होने के साथ ही साथ सूर्य देवता ने जो प्रचण्ड रूप का प्रदर्शन किया उससे पता चलता था कि आज दिन भर काफी तेज धूप रहेगी।

अगरेजी पलटन का पूरा और पक्का प्रबन्ध कर दिया गया। सैकड़ो अगरेज सैनिक, आफीसर और भारतीय सिपाहियो से मैदान भर गया। रस्सियो से जकड़ा हुआ मंगल फाँसी देने के लिए जब मैदान मे लाया गया तो भारतीय सैनिकों के हाथ अपनी बन्दूको और तलवारो पर चले गये। मगल ने परिस्थिति को पहचान कर आँख के इशारे से मना किया।

"इकत्तीस की जय हो।" मंगल ने गभीर वाणी मे निनाद किया। अंगरेजो ने समझा वह अपने किसी देवता की जय-जयकार बोल रहा है और भारतीय सिपाहियो ने मानो सकेत पा लिया कि ३१ मई तक ठहरना है।

फाँसी के तख्ते पर मंगल उछल कर चढ गया।

"मेरे हाथ खोल दो सार्जेण्ट ! मै स्वय अपने हाथो से फाँसी का फन्दा अपने गले मे डालना चाहता हूँ। मेरी मौत बहादुर की मौत होनी चाहिए।"

लेकिन उसे बन्धन मुक्त नहीं किया गया। सार्जेण्ट ने पास ही खडे हुए मेहतरो को आज्ञा प्रदान की—"गले में फाँसी का फन्दा डालकर तख्ता नीचे से हटादो।"

उत्तर में, मौन के सिवा कुछ भी नही मिला। दोनो में से कोई भी मेहतर आगे नही बढा। मेजर जनरल तत्काल आगे बढ़ा।

"फाँसी तो होगी ही। मगल को छोडा नही जा सकता। सार्जेण्ट !"

"यस सर !"

"फौरन एक दस्ता ले जाओ और तोपखाना लाकर लगादो।"

गुस्से मे भरा हुआ मेजर जनरल जिस समय अपने घोडे को इधर से उधर फिरा रहा था—एक अंग्रेज दौडा हुआ आया !

"सर ! कैप्टिन हैण्डरसन ने यह खत आपके नाम दिया है।"

मेजर जनरल ने उसे पढा और पूछा—"वह कहाँ है ?"

"बन्द मोटर मे है।"

"उसे भी ले आओ। दोनो को साथ ही साथ खतम कर देंगे।"

इस ओर से तोपखाने का दस्ता आया, उस ओर से मंगल को नीचे उतार कर लाया गया। मेजर जनरल की आज्ञा से मंगलपाण्डे को तोप के मुँह से बाँध दिया गया। इसी समय एक बन्द मोटर ने प्रवेश किया। सार्जेंट ने दरवाजा खोलकर भारती को बाहर निकाला। भारती ने स्वतन्त्र वायु में गहरी सास लेकर देखा कि हजारो सिपाही खड़े हुए हैं। उसने सोचा, यही मुझे फाँसी दी जायगी।

"भारती ! भारती !!" उसके कानो मे चिर-परिचित स्वर पड़े, और जैसे ही उसने दृष्टि उठाकर देखा तो उसका प्राणधन मंगलपांड़े तोप से बंधा हुआ खडा था।

"मगल ! मगल !" अगरेजो के घेरे में से भागकर भारती मंगल के पास जा पहुँची और बेतहाशा उससे लिपट गई।

"भारती ! आलिङ्गन में लेकर मैं तुम्हे अपने प्यार की गहराई नही जता सकता—फिर भी रस्सियों से कसा हुआ रोम-रोम भारती के स्नेह में डूबा हुआ है।"

"मेरी अन्तिम इच्छा यही थी मंगल ! तुम्हारे दर्शन मिल गए।"

"तो क्या तुम भी ?"

"हाँ ? मै बन्दी करली गई और मुझे आज फाँसी दी जायगी।"

"हम लोग अपनी मंजिल तक पहुँच गए भारती ! आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"तुम यहाँ भी मुझसे जीत गए मगल ! मैं सोचती थी कि शहादत का सौभाग्य मुझे ही मिलेगा।"

"लेकिन तुमने मुझे यहाँ पहुँच कर भी हरा दिया। कौन जाने पहले कौन स्वर्ग पहुंचेगा।"

मेजर जनरल ने मंगल के पास जाकर पूछा—"यह औरत तुम्हारा कौन है ?"

"मेरी पत्नी है साहब !"

"गुड गॉड। दोनों हस्बैन्ड एण्ड वाइफ एकदम खतरनाक हैं। चलो इस लड़की को दूसरी तोप से बाँध दो।"

और भारती को पास वाली दूसरी तोप मे कस दिया गया। भारती और मंगल के चेहरो पर मुस्कुराहट दौड़ गई। इसी समय शोर मचाता हुआ एक साधू उस - दान मे घुस आया। लाख रोकने पर भी वह नही रुका।

"तुम क्या माँगता हैं मैंन।" मेजर जनरल ने पूछा।

"साधू देता है, माँगता नही है। हमें कुछ नहीं चाहिए। दो मिनिट की मोहलत दीजिए—फांसी पाने वालो को आशीर्वाद देना है।" कमण्डल उठाकर उसमें से थोडा-सा जल पृथ्वी पर डालते हुए सँन्यासी ने कहा।

"अच्छा ! तुम जा सकते हो ?"

"मगल ! बेटा !" साधू ने भरे हुए गले से पुकारा।

"आप ? आप कौन है महाराज !"

"नही पहचाना पगले ! अपने पिता को भी भूल गया। मैने वादा किया था, जिस दिन तेरा विवाह होगा तुम दोनो को आशीर्वाद देने आऊँगा। आज मैं आया हूँ।"

"पिताजी !" मंगल ने कहा—"आप अपने बेटे की मौत....।"

"पगले ! यह तो मेरे बेटे की अमरता है, शहादत कैसे मिलती है यही देखने आया हूँ। मुझे अभिमान है कि मै मगल का बाप हूं।"

जैसे ही संन्यासी भारती की ओर मुड़ा उसने कहा—"पिताजी ! आपके चरणो में पुत्रवधू का प्रणाम स्वीकृत हो।"

"बेटी भारती ! मेरी बच्ची !" आँखो में आँसू भरे हुए सन्यासी ने कहा—"पुत्री को इसीलिए दुहिता कहा जाता है कि वह बापके और ससुर के, दोनों कुलों को उजागर करती है। तेरी जैसी पुत्रवधू पाकर मै धन्य होगया। आज तुम्हारे विवाह का दिन है, तोपो की गड़गड़ाहट में मैं मन्त्र पढ़ूँगा—हजारों

बाराती खड़े हैं।"

इतना कह कर संन्यासी ने दोनो रस्सियो के सिरे उठा लिए और एक मजबूत गाँठ बाँध दी।

"भगवान करे तुम्हारा यह बन्धन जन्म जन्मान्तर तक चलता रहे।"

"पिताजी!" भारती ने कहा—"आपका आशीर्वाद भी मिला और विवाह का बन्धन भी—लेकिन मेरी मॉग तो अभी तक सूनी है। तनिक उनके चरणों की धूलि से मेरी माँग भर दीजिए।"

"भारती! यदि हमारा प्रेम सात्विक है तो अपने देश के लिए हम पुनः अगले जन्म में पति-पत्नी के रूप मे अवश्य मिलेगे।" मंगल ने कहा

सन्यासी ने मंगल के पैर के नीचे से धूल लेकर भारती की मॉग को भर दिया—

"लेकिन भारत में माँग तो लालरग से भरी जाती है बेटी! धूल से भरी हुई श्वेत मॉग सुन्दर नही लगती" इतना कहते न कहते साधु ने पास खड़े सिपाही की तलवार छीन कर उसकी धार पर अपनी हथेली को धर कर खीच दिया। रक्त की एक धारा बह निकली और तब संन्यासी ने उस रक्त से भारती की मॉग को लाल-वर्ण कर दिया। वह चार कदम पीछे हट गया।

मेजर जनरल ने आगे बढ़कर भारती से पूछा—"तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है?"

"मै चाहती हूँ कि इनसे पहले मुझे तोप से उडाया जाय।" भारती ने कहा।

"ऐसा ही होगा—और तुम क्या चाहते हो मंगल?"

"मेरे देशवासियों के चरणों में निवेदन करना कि मरना हो तो शेर की तरह मार कर मरो। जिन अंगरेजो ने भारत को उजाड़ा है, उनसे अपने अपमान का बदला लेना। मीर क़ासिम, मीर जाफर, वाजिद अलीशाह और नाना साहब की कसम है तुम्हें—मेरे खून की एक बूँद से दस दस मंगल

उत्पन्न करना । मैं दूसरे जन्म में भी आऊंगा और जब तक मेरा देश आजाद नही हो जायगा मेरी रूह को शान्ति नही मिलेगी ।"

'मगल कुछ और कहना चाहता था कि सहसा तोप का धड़ाका हुआ और भारती का शरीर टुकड़े-टुकडे होकर वायु मे बिखर गया । मंगल के नेत्र गीले होगए ।

दूसरे ही क्षण मंगल वाली तोप का धडाका हुआ और लोगो ने देखा कि मगल की तोप चलने के साथ ही साथ पलक मारते हुए संन्यासी भी मगल से लिपट गया ! दोनो पिता-पुत्र शहीद होगए ।

गदर के बादल

मेरठ—६ मई १८५७ ई० को, परीक्षा के तौर पर ९० भारतीय सवारो की एक कम्पनी को चरबी लगे हुए कारतूस दिये गए। ८५ सवारो ने दान्तो से कारतूस खोलना स्वीकार नही किया। इन सिपाहियों का कोर्टमार्शल हुआ और उन सबको आठ-आठ, दस-दस साल की सजाएँ दे दी गईं। उनकी बर्दियाँ वहीं परेडग्राउन्ड पर उतरवाली और इस दृश्य को दिखाने के लिए शेष भारतीय सैनिको को भी बुला लिया था।

मेरठ के भारतीय सिपाही जब शाम को बाजार में निकले तो चारो ओर से नारियो के द्वारा धिक्कार की बौछार मिली—"तुम्हे लज्जा नही आती? तुम्हारे भाई जेल मे हैं और तुम बाजारो मे घूम रहे हो? तुम्हारे जीवन को धिक्कार है।"[1]

और तब ३१ मई तक ठहरना असम्भव होगया। ९ मई की रात को सिपाहियो ने दिल्ली में, नेताओ के पास समाचार भेज दिया कि हम कल या परसों दिल्ली पहुँच जाएँगे।[2]

१० मई, रविवार के दिन, सिपाहियों और जनता ने मिलकर उस जेल की दीवारें ढहा डाली, जिसमे ८५ सवार कैदी थे। इसके बाद अँगरेजो के बंगले, दफ्तर और होटलो मे भी आग लगादी गई। टेलीफून के तार काट डाले तथा रेल्वे पर अधिकार कर लिया गया। यह लोग ११ मई को आठ बजे सुबह दिल्ली पहुँच गए।

× × × ×

"अंगरेजी राज का नाश हो—बहादुरशाह की जय हो" इन नारो से समस्त भारत गूँज गया। करनल रियले ने समाचार पाते ही ५४ नम्बर की

---

[1] Kaye's History of the Sepoy, War, Book iv, Chap ii,

[2] J. C. Wilson official Narrative

देशी पलटन के साथ मेरठ के बागियों का मुकाबला किया तो नजारा ही अजीब होगया। वे सभी सिपाही जो करनल के साथ आए थे, मेरठ के सिपाहियों से गले मिलने लगे और रिपले वहीं समाप्त कर दिया गया। इन लोगों ने काश्मीरी दरवाजे से प्रवेश किया और दिल्ली के किले पर तुरन्त अधिकार करके बादशाह को २१ तोपों की सलामी दी।

"लेकिन मेरे पास कोई खजाना नहीं हैं। मै आप लोगों को तनखाह कहां से दूँगा।" वृद्ध बादशाह ने अपने सामने खड़े सैनिकों से कहा।

"हम लोग तमाम हिन्दोस्तान के खजाने लाकर आपके कदमों मे डाल देंगे।" सेनापति ने कहा—"आप हमारी आजादी की लड़ाई मे भी हमारे बादशाह बनकर चलिए।"

सम्राट ने स्वीकार कर लिया और मानो एक ज्वालामुखी फट पडा। दिल्ली-मैगजीन उडादी गई, जिसके धमाकों से सारा दिल्ली शहर हिल गया। १६ मई को दिल्ली पुन स्वाधीन थी।

अलीगढ़—६ नम्बर पैदल पलटन ने बगावत करदी और २० मई को स्वाधीनता का हरा-झण्डा अलीगढ पर फहराने लगा।

मैनपुरी—२२ तारीख को मैनपुरी भी स्वतन्त्र हो गया। यू० पी० में इटावा, अजमेर मे नसीराबाद, रुहेलखण्ड का नेता खानबहादुर आदि सभी जन और नेतागण इस गदर मे सम्मिलित होगए। शाहजहाँपुर, बरेली, बदायूँ, आजमगढ, गोरखपुर, जौनपुर, इलाहाबाद, कानपुर, झाँसी, लखनऊ, पंजाब, अवध और बिहार, सभी ओर क्रान्ति की ज्वाला जल उठी।

लगभग समस्त भारत मे विद्रोह की ज्वाला फूट पडी।

× × × ×

रुहेलखण्ड के बहादुर नेता खान बहादुरखां ने छपवाकर एलान बटवाया, इसमें लिखा था—

हिन्दोस्तान के रहने वालो! स्वराज्य का पाक दिन, जिसका बहुत अरसे से इन्तजार था, आ पहुँचा है। आप इसे मंजूर करेंगे या इससे इनकार करेंगे?

आप इस जबरदस्त मौके से फायदा उठाएँगे या इसे हाथ से जाने देंगे ? हिन्दू और मुसलमान भाइयो ? आप सबको मालूम होना चाहिए कि अगर ये अंगरेज हिन्दोस्तान मे रह गए तो हम सबको कत्ल कर देंगे और आप लोगो के मजहब को मिटा देंगे। हिन्दोस्तान के बाशिन्दे इतने दिनो तक अंगरेजो के धोखे मे आते रहे, और अपनी ही तलवारो से अपने गले काटते रहे हैं। इसलिए अब हमे मुल्क फ़रोशी के अपने इस गुनाह का प्रायश्चित करना चाहिए ! अंगरेज अब भी अपनी पुरानी दगाबाजी से काम लेंगे। वे हिन्दुओं को मुसलमानो के खिलाफ और मुसलमानों को हिन्दुओं के खिलाफ उभारने की कोशिश करेंगे। लेकिन हिन्दू भाइयो ! उनके फरेब मे न पड़ना। हमें अपने होशियार हिन्दू भाइयो को यह बताने की जरूरत नहीं है कि अंगरेज कभी अपने वादे पूरे नही करते। ये लोग चाल और दगाबाजी की ताक में हैं। ये हमेशा से सिवाय अपने मजहब के और सब मजहबों को दुनियाँ से मिटाने की कोशिश करते रहे हैं। क्या उन्होने गोद लिए हुए बच्चो के हक नही छीन लिए हैं ? क्या उन्होने हमारे राजाओ के राज और मुल्क नहीं हड़प लिए हैं ? नागपुर का राज किसने ले लिया ? लखनऊ की बादशाहत किसने छीनली ? हिन्दू और मुसलमान दोनो को पैरों तले किसने रौंदा ? मुसलमानो ! अगर तुम कुरान की इज्जत करते हो तो, और हिन्दुओ ! अगर तुम गौ माता की इज्जत करते हो तो, अब अपने छोटे-छोटे तफर्कों को भूल जाओ और इस पाक जंग मे शामिल हो जाओ ! लड़ाई के मैदान में कूद कर एक झण्डे के नीचे लड़ो और खून की नदियों से अंगरेजो का नाम हिन्दोस्तान से धो डालो × × × गाय का मारा जाना बन्द कर दिया जाय। इस पाक जंग में जो आदमी खुद लडेगा या जो धन से लडने वालो की मदद करेगा, दोनो को इस लोक में और परलोक में दोनो जगह निजात मिलेगी ! लेकिन अगर कोई इस मुल्की जंग की मुखालफत करेगा तो वह अपने सर पर कुल्हाड़ी मारेगा और खुदकशी के गुनाह का जिम्मेवार होगा।'

निश्चित रूप से, दिल्ली की समानता में, अवध के नागरिको ने विद्रोह की ज्वाला को बराबर प्रज्वलित रखा—दिल्ली पतन के पश्चात् भी छह महीने तक अवध और लखनऊ में स्वाधीनता का झण्डा फहराता रहा।

अवध मे बेगम हजरतमहल का शासन चला—उसमें बड़ी पराक्रमशीलता और योग्यता थी—बेगम ने अगरेजो के साथ अनवरत युद्ध का एलान किया। इन रानियों और बेगमो की पराक्रमशीलता को देखकर मालूम होता है कि जनानखानो के अन्दर रह कर भी ये काफी अधिक क्रियात्मक मानसिक शक्ति अपने अन्दर पैदा कर लेती थी।*

बेगम ने राजा बालकृष्णसिंह को प्रधानमन्त्री नियुक्त किया और राजकीय व्यवस्था में सुधार करके शान्ति तथा सुशासन स्थापित कर दिया। तमाम रेजीडेन्सी पर कब्जा कर लिया गया। जनरल हैवलाक को भी रेजीडेन्सी में कैद कर लिया गया।

× × × ×

दूसरी ओर मौलवी अहमदशाह गिरफ्तार हुए तो क्रान्तिकारियो ने जेल की दीवारे तोड़ कर उनको छुडा लिया।

और गदर का प्राण नाना साहब जिस तत्परता से इन सभी विद्रोहियों की सहायता करता रहा—वह उसकी क्रियाशीलता और अदम्य साहस तथा सूझ-बूझ का अप्रतिम उदाहरण है। वह यहाँ वहाँ, सभी जगह था।

× × ×

नाना साहब अपने भाई बालासाहब, भतीजे रावसाहब, सेनापति तात्या-टोपे, घर की महिलाओं और खजाने सहित १७ जुलाई को सबेरे बिठूर से निकलकर फतहपुर चले गए थे। जनरल हैवलाक पर आक्रमण करने के लिए नाना और तात्या सेना एकत्र कर रहे थे। शिवराजपुर पहुंचकर तात्या ने ४२ नम्बर पल्टन को साथ लिया और बिठूर पर कब्जा कर लिया। हैवलाक पीछे हटा और लखनऊ तक खदेड़ा गया। दूसरी बार तात्या पराजित हुआ और

* "The Begum exhibits great energy and ability the declares undying war against us. It appears from the energetic characters of these Ranees and Begums that they acquire in their zenanas and. Harems a considerable amount of actual mental power"—Russell's Diary p. 275.

ग्वालियर पहुँचकर मुरार की छावनी में स्थित सेना को अपनी ओर कर लिया। उसने आगे बढ़कर कालपी का किला जीत लिया। कानपुर से चलकर जनरल विनढम ने तात्या और नाना पर आक्रमण किया। लेकिन तात्या के कुशल सैन्य सचालन के कारण विनढम हार गया।

इतिहास लेखक मॉलेसन ने लिखा है :—"विद्रोही सेना का नेता मूर्ख न था। विनढम ने उसे जो हानि पहुँचाई उससे डर जाने के स्थान पर वह अंगरेज सेनापति की कमजोरी को अच्छी तरह समझ गया + + + + तात्या-टोपे ने उस समय विनढम की स्थिति और उसकी आवश्यकताओं को इतनी अच्छी तरह पढ लिया जिस प्रकार कोई खुली हुई किताब पढता है। तात्या में एक सच्चे सेनापति के स्वाभाविक गुण मौजूद थे। उसने विनढम की इन कमजोरियों से फायदा उठाने का इरादा कर लिया।"

× × ×

स्वतन्त्रता के युद्ध में ८१ वर्षीय कुँवरसिंह ने जिस वीरता का परिचय दिया वह चिरस्मरणीय रहेगा। दाहिने हाथ में गोली लगी और जब कुँवर-सिंह को विष फैलने की आशका हुई तो उसने बाएँ हाथ से दाहिने हाथ को काट डाला और घाव पर कपडा बाँधकर पुन. सग्राम में जुट गया। २३ एप्रिल १८५८ को जब उसकी मृत्यु हुई तो स्वाधीनता का हरा झण्डा उसकी राजधानी पर लहरा रहा था।

× × ×

२० मार्च १८५८ ई० को सर ह्यू रोज झाँसी पहुँचा। २४ मार्च को महारानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में गहरा सग्राम आरम्भ होगया। कई दिनों तक भीषण सघर्ष के पश्चात् रानी मरदाने वेष में झाँसी से बाहर चली गई और ग्वालियर के निकट उसने शरीर त्याग कर दिया। रानी के साथ युद्ध में नाना साहब, रावसाहब और सेनापति तात्याटोपे भी पूर्ण सहयोगी थे।

× × ×

१८५७ ई० के विद्रोह में हजारों सैनिकों, स्त्री-पुरुषों और अबोध बालकों ने जो बलिदान किया, उसका वर्णन असम्भव नहीं तो कम से कम कठिन

अवश्य है। फिर भी इतना अवश्य है कि उन लोगों के रक्त-दान की एक-एक बूँद से स्वतन्त्रता के सैकड़ों वीर उत्पन्न हुए। मंगल की भावना भारत के कण-कण मे परिव्याप्त होगई।

जंगल की आग की तरह सारे भारत मे विद्रोह की ज्वाला जल उठी। जलने वाले अंगरेज भी जले और जलाने वाले भारतीय भी। लेकिन उसे बुझाया गया भारतीय नर-नारियो के रक्त से—खून की वर्षा से समस्त भारत लाल होगया। संसार ने तबसे भारतवर्ष को 'ब्रिटिश इण्डिया' कहकर पुकारना आरम्भ कर दिया।

शहज़ादों की हत्या



इलाहाबाद के तीन नीम-वृक्ष जिन पर ८०० व्यक्ति लटकाए गए



अन्तिम प्रहर में

सम्राट बहादुरशाह ने ऐतिहासिक क्रान्ति की बाग-डोर अपने हाथों में ले ली। विभिन्न प्रान्तों से पलटनें और खजाने दिल्ली में जमा हो रहे थे। शहर के भीतर तोपे ढालने के कारखाने खुल गए थे, जहाँ हजारों मन बारूद तय्यार होती थी। बादशाह सलामत हाथी पर बैठकर शहर मे निकला करते थे और जनता तथा सिपाहियों को प्रोत्साहन दिया करते थे। गदर के आरम्भ में सम्राट की ओर से एक घोषणा-पत्र प्रकाशित किया गया, जिसमें लिखा गया था कि :—ऐ, हिन्दोस्तान के फरजन्दो ! अगर हम इरादा करलें तो बात की बात में दुश्मन का खात्मा कर सकते हैं और अपने दीनो-ईमान और अपने मुल्क को, जो हमें जान से भी ज्यादा प्यारे हैं, खतरे से बचा लेंगे।"

कुछ समय के बाद एक दूसरा एलान दक्षिण के बाजारों और छावनियो में हाथो-हाथ बाँटा गया, जिसमें लिखा था :—"तमाम हिन्दुओ और मुसलमानो के नाम—हम महज अपना दीनो-ईमान समझकर जनता के साथ शामिल हुए हैं। इस मौके पर जो कोई पस्तहिम्मती दिखलाएगा या भोलेपन की वजह से दगाबाज फिरंगियो के वादों एतबार करेगा, वह बहुत जल्द शर्मिंदा होगा और इंगिलस्तान के साथ वफादारी करने का उसे वैसा ही ईनाम मिलेगा जैसा लखनऊ के नवाबों को मिला। इसके अलावा इस बात की भी जरूरत है कि इस जंग मे तमाम हिन्दू और मुसलमान मिलकर काम करें और किसी मोअज्जिज नेता की हिदायतो पर चलकर इस तरह से काम करे कि अमनो-अमान कायम रहे और गरीब लोग खुश रहे, उनका रुतबा और उनकी शान बढ़े।"

लगभग अन्तिम और तीसरा एलान जो सम्राट बहादुरशाह की ओर से हुआ उसमें लिखा था :—"हिन्दोस्तान के हिन्दुओ और मुसलमानो उठो ! भाइयो उठो !! खुदा ने जितनी बरकतें इन्सान को अता की हैं, उनमें सबसे

कीमती बरकत आजादी की है। क्या वह जालिम नाकस, जिसने धोखा देकर यह बरकत हमसे छीन ली है, हमेशा के लिए हमको उससे महरूम रख सकेगा ? क्या खुदा की मरजी के खिलाफ इस तरह का काम हमेशा जारी रह सकता है ? नही, नही ! फिरंगियो ने इतने जुल्म किए हैं कि उनके गुनाहों का प्याला लबरेज हो चुका है। यहाँ तक कि अब हमारे पाक मजहब को खत्म करने की नापाक ख्वाहिश भी उनमे पैदा होगई है ! क्या तुम अब भी खामोश बैठे रहोगे ? खुदा अब यह नही चाहता कि तुम खामोश रहो, क्योंकि उसने हिन्दुओ और मुसलमानो के दिलो में अग्रेजो को अपने मुल्क से बाहर निकालने की खाहिश पैदा करदी है और खुदा के फजल से और तुम लोगों की बहादुरी के फैज से जल्दी ही अंग्रेजों को इतनी कामिल शिकस्त मिलेगी कि हमारे इस मुल्क हिन्दोस्तान में उनका जरा भी निशान नही रह जायगा। हमारी इस फौज में छोटे और बड़े की तमीज भुला दी जायगी और सबके साथ बराबरी का बर्ताव किया जायगा, क्योंकि इस पाक जग मे अपने दीनो-ईमान की हिफाजत के लिए जितने लोग तलवार खीचेंगे, वे तमाम बराबरी से एजाज पाने के हकदार होंगे; वे सब भाई-भाई हैं, उनमें छोटे बड़े का कोई फर्क नहीं है इसलिए मैं अपने तमाम हिन्दी भाइयो से अर्ज करता हूं कि उठो और खुदा के बताए हुए इस पाक फर्ज को पूरा करने के लिए मैदानेजंग में कूद पड़ो।"

× × × ×

२३ जून पलासी की शताब्दी का दिन था। करीब १२ बजे क्रान्तिकारियो ने अगरेजो पर अत्यन्त भीषण आक्रमण किया। ठीक समय पर पजाब से सिखों की सेना आगई और अंगरेज अपनी हार को बचा गये।

२ जुलाई १८५७ ई० को मोहम्मदबख्त खां के आधीन रुहेलखण्ड की सेना ने दिल्ली में प्रवेश किया। बहादुरशाह ने अपने पुत्र मिरजा मुगल के स्थान पर बख्तखां को सेनापति बनाया। उसने तमाम सेना को छह मास का वेतन पेशगी दे दिया था और सम्राट की सेवा में चार लाख रुपया उपस्थित किया। ३ जुलाई की परेड में लगभग बीस हजार सैनिक उपस्थित थे। भारतीयों के प्रबल आक्रमणों से गोरे सिपाहियो के हृदयों में निराशा गहरी होती चली गई।

दूसरी ओर अगरेजो ने भारत के शेष भाग में दमन आरम्भ कर दिया। देशी रियासतों के सिपाहियों ने भी विद्रोहियों का साथ दिया। अंगरेजों ने आँख मूँद कर अत्याचार आरम्भ कर दिए। गाँवों को जलाकर खाक करने लगे, स्त्री-बच्चों और बूढ़े-जवानों को मौत के घाट उतारने लगे। बीबीगढ़ में ब्राह्मणों से धरती पर बिखरे हुए रक्त को चटवाया गया। पजाब में अजनाले के थाने में ६६ लोगों को बन्द कर दिया गया, जो लगभग सभी मर गए। शेष २८२ सिपाहियों का शूटिंग किया गया और उनकी लाशें "काल्याँ दा खूह" नामक कुँए में भरदी गई।

इसी प्रकार इलाहाबाद के तीन नीम के वृक्षों से लटकाकर ८०० व्यक्तियों को फाँसी दी गई।

× × × ×

लेकिन अगरेजों के भाग्य नक्षत्र प्रबल थे। सितम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में क्रान्तिकारियो में अव्यवस्था फैल गई और बहादुर सेनापति बख्तखाँ ने सम्राट से भेट करते हुए कहा—"दिल्ली हाथ से निकल जाने पर भी हमारा कुछ नहीं बिगडा है। तमाम मुल्क में आग लगी हुई है। आप अगरेजों से शिकस्त मत मानिए। आप मेरे साथ यहाँ से चल दीजिए। यकीन है आखिरी फतह हमारी होगी।"

"बहादुर! मुझे तेरी हर बात का यकीन है और मैं तेरी हर राय को दिल से पसन्द करता हूँ। मगर जिस्म की कूबत ने जवाब दे दिया है। इसलिए मैं अपना मामला तकदीर के हवाले करता हूँ। मुझको मेरे हाल पर छोड़ दो और बिस्मिल्लाह करो। मैं न सही, मेरे खान्दान में से नहीं, न सही, तुम या और कोई हिन्दोस्तान की लाज रखे।" बादशाह ने उत्तर में कहा।

"आप इत्मीनान रखें बादशाह सलामत! हुमायूँ के मकबरे के जुनूब में मेरी फौज जमना की रेती में पडी हुई है। आप मेरे साथ चलो।" इतना कहकर बख्तखाँ ने बूढ़े बादशाह का हाथ थाम लिया।

"पनाहे दो आलम!" मिरजा इलाही बख्श ने कहा—"मुझे बख्त खाँ की नीयत पर शक है। यह पठान हैं और शायद मुगलों से अपनी कौम की पिछली शिकस्तों का बदला चुकाना चाहता है।"

बख्तखाँ की तलवार नंगी होगई लेकिन बहादुरशाह ने उसे रोक लिया और बख्त के साथ ही साथ भारत की आजादी का बख्त भी दूर होगया। क्रान्ति का दिलो-दिमाग समाप्त होगया।

मिरजा इलाहीबख्श को अंगरेजों ने कई लाख रुपया इसलिए दिया कि वह बादशाह को दिल्ली से बाहर न जाने दे। मकबरे से, बख्तखाँ के चले जाने के कुछ ही देर पश्चात् मिरजा की सूचना पर बहादुरशाह को गिरफ्तार कर लिया गया। बेगम जीनत महल, शहजादा जवाँबख्त और बादशाह को लाल किले में कैद कर दिया गया। दिल्ली फिर अंगरेजों की होगई।

\+ \+ \+ \+

"मिरजा इलाहीबख्श ! सरकार ने तय किया है कि तुमको और तुम्हारे खानदान के तमाम वारिसान को बारहसौ रुपया सालाना पेन्शन दी जाय।" जनरल विलसन ने कहा—

"मेहरबानी है सरकार की।" मिरजा ने विनम्रता से कहा।

"लेकिन यह तो बताओ कि मिरजा मुगल और मिरजा अखजर सुलतान कहाँ हैं ?" कप्तान हडसन ने कहा।

"वह सब लोग हुमायूँ के मकबरे में ही हैं। आप अभी चलिए न ?"

और हडसन अपने साथ इलाहीबख्श को लेकर मकबरे में पहुँचा। दो शहजादों के अतिरिक्त बादशाह का एक नाती मिरजा अबूबकर भी मकबरे में मौजूद था। हडसन ने इन सबको गिरफ्तार कर लिया। इलाहीबख्श ने तीनों शहजादों को आश्वासन दिया कि उनके साथ कोई बुरा बरताव नहीं किया जायगा।

तीनों शहजादों को रथों में सवार कराकर हडसन अपने सवारों और मिरजा इलाहीबख्श तथा उसके दो मुसाहिबों के सहित दिल्ली शहर की ओर चला।

आज जिस जगह चाँदनी-चौक है. वहाँ पहुँचकर हडसन ने रथों को रोक दिया।

"ठहर जाओ !" कप्तान हडसन की गंभीर वाणी सुनते ही तीनों रथ रोक दिये गए।

"आप लोग नीचे तशरीफ ले आइए।" तीनों शहजादों की तरफ अपनी आँखें नचाते हुए हडसन ने कहा।

बिना कुछ बोले—कहे तीनों राजकुमार उतरकर पृथ्वी पर खड़े होगए। आशंका से उनके हृदय धड़क रहे थे।

"आप लोग अपना लिबास उतार दीजिए।" कप्तान हडसन ने अपनी दूसरी आज्ञा प्रसारित की।

तीनो दीन-हीन शहजादों ने अपनी लिबास उतारकर दूर फेंक दी। इसी समय क्रोध से भरे हुए हडसन ने, पास ही खड़े हुए सिपाही के हाथ से बन्दूक छीनकर तीन फायरों में तीनों शहजादों को हमेशा के लिए धरती माता की गोद में सुला दिया।

"हाय! दगा" सिर्फ दो ही अलफाज उन शहजादों के मुँह से निकले और छाती पर गोलियाँ खाकर धराशायी होगए। मिरजा इलाहीबख्श इस दृश्य को नहीं देख सका—उसके नेत्रों में दो बूंद आँसू झलक आए परन्तु उसने कोनों में ही उन्हें रोक लिया। हडसन ने तलवार निकाल कर तीनों शहजादों के सिर काट लिए।

× × × ×

लाल किले का दरबारे आम और दरबारे खास जिसकी प्रतिभा से जगमगाया करता था, वही मुगल बादशाहत की अन्तिम ज्योति सम्राट बहादुर शाह अपने ही किले में बन्दी है। उनकी बेगम जीनतमहल उनको सान्त्वना दे रही है।

"बेगम! बावर्ची ने शहर की जो हालत बयान की है, वह बड़ी खौफनाक है। लाहौरी दरवाजे से चाँदनी चौक तक—तमाम शहर मुरदों का शहर नजर आरहा है। सिवाय अंगरेजी घोड़ों की टापों के अलावा और कोई आवाज नहीं आरही थी। कोई जिन्दा नहीं दिखाई दिया। सब तरफ मुरदों का बिछौना बिछा हुआ है। एक तरफ मुरदों की लाशों को कुत्ते खारहे हैं तो दूसरी तरफ लाशों के आस-पास गिद्ध जमा हैं जो उनके मांस को नोच-नोच कर स्वाद से खारहे हैं। हालत का बयान जबान की ताकत से बाहर है। कत्लेआम हुआ है जीनत महल!" बहादुरशाह ने भारी आवाज में कहा।

"घबराने से काम नही चलेगा बन्दापरवर ! सिर पर जो आफत पड़ी है उसे बर्दाश्त करना ही होगा। जो कौम हार जाती है, उसका अन्जाम यही होता है। यह कोई नई बात नही है।" जीनत महल बेगम ने कहा।

इसी समय सन्तरी ने सलाम दिया।

"क्यो सन्तरी !" बहादुरशाह ने पूछा।

"कप्तान हडसन साहब तशरीफ लाए है। आपसे मिलना चाहते है ? उनके साथ जनरल भी है।"

"अब इजाजत देने वाला बाकी नही है सन्तरी। उनसे कहो अपने जूते खटखटाते हुए वह दिल्ली के तख्त तक आ-जा सकते हैं।"

कुछ ही देर बाद कप्तान हडसन बादशाह सलामत के सामने था।

"मै पनाहेआलम की खिदमत में सलाम अर्ज करता हूँ।" कप्तान हडसन ने व्यग्य भरे स्वर में कहा।

"क्यों मजाक करते हो कप्तान ! किसी बेकस आदमी पर फब्तियाँ कसना अगरेज को ही जेब देता है। निशान शेरो का, काम चोरों का।" बहादुरशाह ने घृणा मिश्रित भाव से उत्तर दिया।

"जी नही, बात ऐसी नही है। कम्पनी सरकार तो आज भी आपको हिन्दोस्तान का बादशाह तसलीम करती है और आपको यह जानकर निहायत खुशी होगी कि पिछले कई साल से कम्पनी सरकार ने आपको नजर पेश नहीं की थी—वह खोल दी गई है और उसकी पहली किश्त आपके हुजूर मे भेजी गई है।" कप्तान हडसन ने कहा।

"शुक्रिया" बादशाह के औत्सुक्य ने बढ़ावा पाया।

कप्तान हडसन ने ताली बजाई तो एक अंगरेज सैनिक एक बडा सा थाल लेकर हाजिर हुआ जो एक रेशमी कपड़े से ढका हुआ था। इशारे से सिपाही ने, झुककर वह थाल बादशाह सलामत के सामने पेश कर दिया। बहादुरशाह ने रेशमी कपड़े को उठाकर देखा तो वह अवाक् रह गया। मिरजा मुगल, मिरजा अखजर और मिरजा अबूबकर के कटे हुए सिर थाल में रखे हुए थे।

"या अल्लाह !" एक चीख मार कर बेगम जीनतमहल धरती पर गिर पड़ीं और कप्तान हडसन तथा जनरल बिलसन ठठाकर जोरों से हँसने लगे।

"अलहम्दोलिल्लाह ! तैमूर की औलाद ऐसी ही सुर्ख रू होकर बाप के सामने आया करती थी।" और बादशाह सलामत के दोनों हाथ दुआ के लिए ऊपर उठ गए।

"इस थाल को उठाकर ले चलो।" हडसन ने कहा।

सैनिक ने थाल उठा लिया। दोनो अंगरेज अधिकारी बड़ी प्रसन्नता और अभिमान से कदम बढ़ाते हुए दरवाजे की ओर चल पडे। तीनों कटे हुए सिर किले के दरवाजे पर टाँग दिए गए और धड शहर की कोतवाली के द्वार पर लटका दिये। अगले दिन इन तीनों लाशों को जमुना में डलवा दिया गया।

किम्बदन्ती यह भी है कि यह शहजादे तीन नहीं बल्कि चार थे और चौथे का नाम था अबदुल्ला। कहा यह भी जाता है कि कप्तान हडसन ने इन चारों को मारकर तुरन्त अपने चुल्लू में भरकर उनका गरम-गरम खून भी पिया था। उसका कहना था कि यदि वह ऐसा न करता तो पागल हो जाता।

यद्यपि अगरेजी इतिहास में इस प्रकार 'रक्तपान' की कोई घटना वर्णित नहीं है परन्तु ख्वाजा हसन निजामी ने लिखा है कि—"मैंने दिल्ली के सैकड़ों लोगों के मुँह से इस बात को सुना और इसके अलावा मिरजा इलाहीबख्श के उन दो खास मुसाहिबों में से एक ने, जो मौके पर मौजूद थे और जिन्होंने इस घटना को अपनी आँखो से देखा था, खुद मेरे पिता से आकर यह तमाम वाकया सुनाया।"

शेष अत्याचारो के सम्बन्ध में लार्ड एलफिन्सटन ने सर जॉन लॉरेन्स को लिखा :—"मोहासरों के खत्म होने के बाद से हमारी सेना ने जो अत्याचार किए हैं, उन्हे सुनकर हृदय फटने लगता है। बिना मित्र या शत्रु में भेद किए ये लोग सबसे एकसा बदला ले रहे हैं। लूट में तो हम नादिरशाह से भी बढ़ गए। दिल्ली के बाशिन्दों के कत्लेआम का खुले एलान कर दिया गया, यद्यपि हम जानते थे कि उनमें से बहुत से हमारी विजय चाहते थे।"

× × ×

कर्नल बर्न को शहर का फौजी गवर्नर नियुक्त किया गया। उसने फौज का एक दस्ता इसलिए मुकर्रर किया कि जहाँ कहीं आबादी पाओ मर्द और बच्चों को, घरों के सामान सहित, पकड़ कर ले आओ। आगे-आगे पुरुष, सामान की पोटलियाँ सिरों पर रखे हुए, पीछे-पीछे नारियाँ रोती-धोती हुई और पैदल बच्चों को साथ लिए हुए। जिन महिलाओं को पैदल चलने की आदत नहीं थी, वे ठोकरें खा-खाकर गिरती थी, बच्चे गोद से गिर जाते थे और तब सिपाही क्रूरता से उन्हें आगे बढने के लिए धक्के देते थे।

कर्नल के सामने पेशी होती। कीमती सामान छीनकर लाहौरी दरवाजे से बाहर निकाल दिया जाता था।

कम्पनी की फौज आरही है—ऐसा सुनकर ही हजारों नारियों ने मुसीबत से बचने के लिए कुओं और तालाबों की शरण लेकर आत्महत्या करली। इस प्रकार की सैकड़ों नारियों को कुओं से निकाला गया जो जीवित थीं और इस कारण नहीं डूब सकीं कि कुंआ लाशों से भर गया था। उन्होने चीख-चीख कर कहा—खुदा के लिए हमें हाथ न लगाओ, गोली से मार डालो, हम शरीफ बहू-बेटियां हैं, हमारी इज्जत खराब मत करो।

दिल्ली की बड़ी जामामसजिद में सिख सिपाहियो की बारग बनाई गई। पाखाने और पेशाबघर भी इसी के अन्दर थे। मीनारों के नीचे हलवे और सूअर का गोश्त पकाया जाता था। एक मसजिद जीनतुल मसाजिद को गोरो का मिसकौट घर बनाया गया और नबाब हामिद अलीखाँ की मशहूर मसजिद में गधे बाँधे जाते थे। किले के नीचे एक बडी आलीशान मसजिद अकबराबादी थी, जो गिराकर बिल्कुल जमीन के बराबर करदी गई। इसी प्रकार मन्दिरों को भी भ्रष्ट किया गया।

क्रान्ति के आरम्भ में, लाल किले के अन्दर सम्राट बहादुरशाह के कुटुम्बियों की काफी संख्या थी। इनमें से अनेकों शहजादो को फाँसी पर लटका दिया। सम्राट शाहआलम के सुपुत्र मिरजा कैसर, को भी जो बहुत ही बूढ़े थे और क्रान्ति में उनके लिए कोई भाग लेना असम्भव था—बिना सोचे-समझे फाँसी पर लटका दिया गया।

सम्राट अकबरशाह का पोता, आजीवन गठिया का रोगी होने से जो खड़ा तक नहीं हो सकता था, उस शहजादे मिरजा मोहम्मदशाह को भी फाँसी पर चढा दिया। कितने ही शहजादों से चक्कियाँ पिसवाई गईं। उनको जेलों में बन्द रखा गया। काम से थक जाने पर कोड़ों की मार लगाई जाती।

बहादुरशाह की एक बेटी राबिया बेगम ने भूख से तंग आकर एक बावरची हुसैनी से शादी करली। दूसरी बेटी फातमा ने जनाने स्कूल में नौकरी करली—चन्द महीनों में हजारों हिन्दू और मुस्लिम महिलाएँ दर-दर की भिखारन होगईं।

\+ \+ \+ \+

"क्या लिखा है बादशाह सलामत !" जीनतमहल ने पूछा।

"अब मुझे बादशाह कहकर मत पुकारो जीनत ! इस लफ्ज को सुनकर मेरा दिल दर्द से भर जाता है—

न किसी की आँख का नूर हूँ, न किसी के दिल का करार हूँ।
जो किसी के काम न आसका वो मैं एक मुश्त गुबार हूँ।"

"मेरे लिए आप आज भी बादशाह हैं—मेरी दिल की दुनियाँ के—मेरे मालिक ! आप इस कदर नाउमीद क्यों होते हैं।" बेगम ने कहा।

"अब क्या उमीद बाकी है बेगम !

"न पहुँचा तू, न पहुँचा तालिबे दीदार तक अपने।
तेरी तकते ही तकते राह वक्ते वापिसी पहुँचा।"

"सच बात तो यह है मालिके दो आलम ! कि आजकल आपकी शायरी में जो दर्द है, वह कभी नहीं रहा—

बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी।
जैसी अब है तेरी महफिल कभी ऐसी तो न थी।।
लेगया छीन के कौन आज तेरा सब्रो करार।
बेकरारी तुझे ऐ दिल कभी ऐसी तो न थी।।

"हाँ बेगम ! अदब और शायरी का ताल्लुक दर्द से है। अदब दौलत की बरसात में मुरझा जाता है लेकिन गरीबी की धूप में खिलता है, पनपता है और फलता-फूलता है।

न थी हाल की जब हमें अपनी ख़बर रहे देखते औरों के ऐबो हुनर।
पड़ी अपनी बुराइयों पर जो नज़र तो निगाह में कोई बुरा न रहा।
'ज़फ़र' आदमी उसको न जानियेगा वोह हो कैसा ही साहबे फ़हमोज का—
जिसे ऐश में यादे खुदा न रही, जिसे तैश में खौफे खुदा न रहा॥"

"और आपकी उस दिन की फिलबदी तो मुझे जिन्दगी भर याद रहेगी मालिक! वह जो अगरेज था न आपके साथ? जब हम लोग यहाँ रगून में गिरफ्तार करके लाए गए थे—तब उसने कहा था—

दम-दमे में दम नहीं, अब खैर माँगो जान की।
ऐ 'जफ़र' बस हो चुकी शमशेर हिन्दुस्तान की॥

तब आपने फौरन ही मुँहतोड़ जवाब दिया—

हिन्दियो मे बू रहेगी जब तलक ईमान की।
तख्ते लन्दन पर चलेगी तेग़ हिन्दुस्तान की॥

"हाँ बेगम! अपने मुल्क और अपनी कौम की बेइज्जती मैं बर्दाश्त नही कर सका और बूढ़े का जोश उबल ही पड़ा।"

रगून के एक छोटे से मकान मे भारत का अन्तिम सम्राट बहादुरशाह तथा साम्राज्ञी जीनतमहल नजरबन्द हैं। जिस व्यक्ति की सेवा में हजारो दास-दासियाँ थे आज उसकी बेगम अपने हाथ से खाना पकाती है और बरतन साफ करती है,

+ + + +

सन् १८६३ के किसी महीने के एक दिन प्रातःकाल बहादुरशाह धरती पर बिछी हुई चटाई पर लेटे हुए अन्तिम श्वाँस लेरहे हैं। नाक का पाँसा फिर गया है। कोई मूनिसो-हमदम मरने वाले शहंशाह के पास नहीं है।

"ऐ हिन्दोस्तान! मैं दुनियाँ से जाता हूँ और तुझको खुदा के सुपुर्द करता हूँ, जिसने आज तैमूरी सल्तनत के चेहरे पर मौत का परदा ढक दिया—बेगम!"

"मालिक!"

"मेरी कब्र पर लिखवा देना, मलिका—

पसे मर्ग मेरी मज़ार पर जो दिया किसी ने जला दिया।
उसे आह दामनें वाद ने सरे शाम ही से बुझा दिया॥"

—एक हिचकी मौत की ओर,......अंगरेज की कैद से 'बहादुर' 'शाह' की तरह हमेशा के लिए रिहा होगए। जीनत महल चीख मार कर अपने 'शौहर' की छाती पर लोटकर 'जौहर' कर गईं।

× × × ×

धरती का देवता

"यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

—भगवान ने कहा, मेरे प्राकट्य के लिए कोई काल का नियम नहीं है। जब-जब ही वेदोक्त धर्म की, वर्णों और आश्रमों तथा मानव समाज के कर्त्तव्य की हानि होती है, और जब-जब उस धर्म के विपरीत अधर्म का अभ्युत्थान होता है, तब मैं स्वयं ही अपने संकल्प से पूर्वोक्त प्रकार से अपने को रच लेता हूँ। अपने ज्ञान से, अपने संकल्प से प्रकट होता हूँ। समस्त कल्याणमय, सम्पूर्ण ईश्वरीय स्वभाव से सम्पन्न, अपने ही रूप को, अपने संकल्प से, देव मनुष्यादि के सदृश आकार में, असाधारण होकर भी साधारणरूप में प्रकटित होता हूँ। 'ईश्वर अंश जीव अविनासी'—का सम्बन्ध शाश्वत है। अतएव भगवान अपने अंश किसी जीव को, धर्म संरक्षण के हेतु, पृथ्वी पर सृजन कर देते हैं। वह अमरों की भाँति जीता है और मर कर भी अमर हो जाता है। राग, भय और क्रोध उससे दूर रहते हैं। वही 'धरती का देवता' कहा जाता है और शताब्दियों के पश्चात् भगवान् की ऐश्वर्योपाधि से विभूषित हो जाता है।

× × × ×

आश्विन कृष्ण १३ सम्वत् १९२५ विक्रमी अर्थात् २ अक्टूबर १८६९ ई० को—एक युग के पश्चात् ही, करम-चन्द के यहाँ मोहनदास अवतरित हुए। पिछले जन्म की सचाई, ईमानदारी और देश को स्वतन्त्र देखने की लालसा निरन्तर बढ़ रही थी—'कस्तूरी' के रूप में 'भारती' उसके साथ थी।

+ + + +

हिंसा-रत विश्व के वक्षस्थल पर अहिंसा की विजय-वैजयन्ती फहराने वाले

मोहन ने पुनः 'आजादी का संग्राम' आरम्भ कर दिया। बीसियो वर्ष संघर्ष में व्यतीत होगए। बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों ने उसे पागल कहा परन्तु जनता ने उसे 'महात्मा' कहा—पुकारा—'बापू' के प्यारे शब्दों से, उसे अपने हृदयासनों पर बिठाया। जीवन के अन्तिम क्षण तक वह लड़ता रहा। लोभियों ने उसके नाम से लाभ उठाया, पिपासुओं ने यशोगान करके सुयश बटोरा, स्वार्थियों ने खाड की आड़ में विभव और वैभव का संचय किया परन्तु उस वीतराग ने भौतिकता के भूतो की चिन्ता नही की—वह तो किसी पावन उद्देश्य के लिए आया था। १९३७ ई० में भारत ने आंशिक स्वतन्त्रता के दर्शन किये और दस वर्ष बाद १९४७ ई० में भारत की भूमि स्वतन्त्र हो चुकी थी। हिंसा खिसिया गई, रावण हार चुका था और मगल-मय परमोद्देश्य समाप्त हो चुका था। उसकी प्रतिज्ञा थी कि स्वतन्त्र भारत की भूमि पर ही मोक्ष लाभ करूँगा। प्रतिज्ञा पूर्ण हुई।

\+ \+ \+ \+

३० जनवरी १९४८ ई० की सन्ध्या को, जब इस उपन्यास का लेखक हाथ-मुँह धोकर भोजन की ओर बढ रहा था, तब आलइण्डिया रेडियो दिल्ली ने शोक-मिश्रित स्वर में कहा—"हमें बडे दुख के साथ यह प्रसारित करना पड रहा है कि आज शाम को ५ बजे बिड़ला हाउस की प्रार्थना भूमि पर गाधीजी को किसी व्यक्ति ने गोली मार दी।"

"लेखक ने भरे कण्ठ से कहा—गाधीजी नही रहे। किसी दुष्ट ने उनको गोली मारदी।" और उसका सारा परिवार रो उठा।

× × × ×

आज कल वही सन् ५७ चल रहा है—सौ वर्ष बीते, तब आज के दिन ८ एप्रिल को 'मगल' यहाँ से चले गए थे उसके पश्चात् मोहन भी आए और चले गए।

'मंगल' की 'मोहन-भावना' 'भारती के भवन' मे 'कस्तूरी' के समान सदैव परिव्याप्त रहेगी।

: समाप्त :

लोकायन के पहले पाँच प्रकाशन

मंगल पाण्डे

इस उपन्यास में १४६८ ई० से १८५८ ई० तक का इतिहास और उसकी प्रमुख घटनाओं का चित्रण किया गया है। पुर्तगालियो तथा अंग्रेजों के अत्याचार मीर कासिम की हत्या, मीरन का कत्ल, हैदरअली की न्याय प्रियता, टीपू सुलतान का संघर्ष, क्लाइव आदि प्रमुखो की बेईमानियाँ और उन सबकी प्रतिक्रिया रूप मंगल पाण्डे का विद्रोह। भारती के द्वारा घर-घर में जागृति, अन्त में दोनो का तोपो से उड़ाया जाना—रोमांचकारी और रोमानी कथानक। सम्राट् बहादुरशाह के चारों बेटो का कत्ल—रंगून में शाह की नजरबन्दी और मृत्यु।

सबसे अन्त में १९५७ ई० का स्वर्णिम पृष्ठ। भारतीय गौरव की गाथा।

बहु रंगा टायटिल, पृष्ठ संख्या २५० से ऊपर। कई चित्र। केवल १९५७ प्रतियाँ छप गई हैं।

दूसरा उपन्यास

बटवारा

एक राजनैतिक उपन्यास—जिसमें हिन्दूभाई कुमार तथा मुसलिम बहिन रजिया की करुण कहानी है, दोनों ही कालिज के साथी हैं। परस्पर स्नेही परन्तु सियासत की तलवार जहाँ राष्ट्र के टुकडे कर देती है—वहाँ रजिया भी दूर चली जाती है। कुमार अपने हाथो उसका ब्याह कर देता है। करांची पहुँच कर रजिया तपेदिक की शिकार हो जाती है। कुमार भारत से परमिट माँगता है। उसे मिलता भी है, लेकिन उसी दिन एक तार द्वारा सूचना मिलती है कि रजिया नापाक दुनियाँ में शेष नहीं है। कुमार का हृदय टूट जाता है। अब वह किसी को बहिन नहीं बनाता—

"कभी खण्ड-खण्ड भारत चाहे एक हो जाए पर कुमार का टूटा हृदय कौन जोड सकता है—रजिया कब्र में से नहीं उठ सकती।" आँसुओं की गाथा।

बहुरंगा आवरण, सजिल्द, पृष्ठ २५०। मूल्य ४) [डाक व्यय सहित]

तीसरा उपन्यास

तलाक

अत्यन्त सामाजिक परन्तु गृहस्थ के आदर्शों को ऊँचा उठाने वाला। कानून की ओट लेकर व्यक्ति और शक्ति का संघर्ष, हिन्दू कोड बिल का उपयोग, साधारण सिपाही से मन्त्रित्व के स्तर तक पहुँचने वाले दम्भी मानव की आत्म-कथा। नारी के कोमल जीवन और उसकी मनोवैज्ञानिक अभि-व्यक्ति। हमारा दावा है कि भारतीय संस्कृति को सम्पन्न बनाने वाले इस उपन्यास को आप बार-बार पढ़ेंगे।

पृष्ठ संख्या २५० से ऊपर। बहुरंगा आवरण। मूल्य ४)

चौथा उपन्यास

जुगुप्सा

"नारी एक बहता हुआ पानी है, जिधर ढलकाव देखती है बह जाती है।"

'वह प्यार के योग्य है परन्तु विश्वास की पात्र नहीं।' एक विरोधी विचार धारा को उपन्यास में प्रश्रय मिला है। नारी मनोविज्ञान का गहरा अध्ययन और विश्लेषण उपस्थित किया गया है। सीमा बद्धता स्वीकार है, नारी स्वतन्त्र नही रहना चाहती, उसके मन से पुरातन का मोह आज भी नहीं गया। एक भावुक कवि और एक प्रमदा के जीवन के उज्ज्वल और धूमिल चित्र देखकर आप गदगद हो उठेंगे।

दो रंगा मुख पृष्ठ, सजिल्द, छपाई, सफाई आकर्षक, पृष्ठ संख्या लगभग २५० से अधिक। शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है। मूल्य ४) [डाक व्यय सहित]

पाँचवाँ उपन्यास

प्रियदर्शिनी

ऐतिहासिक उपन्यास। मेवाड की महारानी पद्मिनी के आत्म बलिदान और जौहर के पश्चात् क्या हुआ यह आज तक लगभग अंधकार में ही है। चित्तौड़ की पुनः प्राप्ति और मेवाड़ के महाराणाओं के अदम्य साहस, स्नेह तथा देश प्रेम से ओत प्रोत कथानक। कई वर्ष की खोज के पश्चात् प्रस्तुत होने वाला यह उपन्यास अपने ढंग का अकेला है। कई चित्र, पृष्ठ संख्या लगभग ५५०—सजिल्द और बहुरंगा मुख पृष्ठ।